जन्नत के हसीन मनाज़िर

हज़रत मौलाना
तारिक़ जमील साहब

जन्नती मालूमात से भरपूर
मुकम्मम मुदल्लल

जन्नत के हसीन मनाज़िर

(स्वर्ग के सुन्दर दृश्य)

लेखक
हज़रत मौलाना इमदादुल्लाह अनवर
उस्ताद जामिया क़ासिमुल उलूम मुलतान

सबीला पब्लिकेशन्स

यह किताब
आपको जन्नत में लेजाने
का एक बेहतरीन ज़रिया है।
इसको ध्यान से पढ़िए दीन
पर अमल कीजिए और
जन्नत के वारिस
बनिए।

विषय सूची

हसीन व ख़ूबसूरत आवाज़ में नग़मों का गायन

जन्नत के महल और कोठियाँ

	मुतफ़र्रिक़ चीज़ें	
1	हूरों की जन्नत में सैर व तफ़रीह	389
2	जन्नत की औरत अपने पति को दुनिया में देख लेती है	389
3	हूरें हिसाब व किताब के समय अपने पतियों को देख रही होंगी	380
4	हूरें बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रही होंगी	380
5	दुनिया के मियाँ-बीवी जन्नत में भी मियाँ-बीवी रहेंगे	381
6	कई शौहरों वाली औरत जन्नत में किसकी बीवी बनेगी?	382
7	दुनिया में जन्नती मर्दों और औरतों की सिफ़ात	384
	जन्नत के पेड़, बाग़ात और साए	
1	कुछ और आयतें	385
2	तमाम जन्नत पर साया करने वाला पेड़	386
3	हर पेड़ का तना सोने का है	387
4	जन्नत की खजूर	387
5	पेड़ों की कुछ और तफ़सील	388
6	जन्नत में पेड़ों की लकड़ियाँ नहीं होंगी	388
7	जन्नत मोतदिल होगी	389
8	तूबा पेड़	389
9	तूबा पेड़ वाले जन्नती कौनसे होंगे?	389
10	तूबा पेड़ क्या-क्या नेमतें ज़ाहिर होंगी	390
11	जन्नत की हर मन्ज़िल में तूबा की लड़ी झाँकती होगी	390
12	तूबा के फल और पोशाकें	391
13	तूबा पेड़ के साये में मिल बैठने के लिए फ़रिश्ते की दुआ	391
14	एक पेड़ की लम्बाई की मात्रा	391
15	शजरतुल् खुल्द	392

बरकत वाले कलिमात

हज़रत मौलाना सय्यिद नफ़ीसुल् हुसैनी साहिब दामत बरकातुहूम
ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहिब रायपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि वह्दहू वस्सलातु अला मन् ला नबिय्-य बअ्दहू

ज़ेरे नज़र किताब "जन्नत के हसीन मनाज़िर" हमारे मुख़्लिस और फ़ाज़िल दोस्त जनाब मौलाना इमदादुल्लाह अनवर साहिब की तालीफ़ है। मौलाना मौसूफ़ ने 260 क़दीम मआख़िज़ (स्त्रोतों) से यह किताब तरतीब दी है, अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से यह कठिन काम अन्जाम को पहुँचा है। इससे पहले अनेक किताबें मौलाना के क़लम से निकल चुकी है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से मक़बूले आम हुई हैं। उम्मीद है कि यह किताब भी पहले की तरह अल्लाह तआला की बारगाह में मन्ज़ूर व मक़बूल होगी और अहले इल्म व फ़ज़्ल से तारीफ़ वसूल करेगी।

अल्लाह तआला मौलाना इमदादुल्लाह साहिब को और हम सबको जन्नत की नेमतों से मालामाल फ़रमाये। अल्लाह तआला मौलाना मौसूफ़ की उम्र मुबारक को लम्बा फ़रमाये, जब तक दम में दम है उनको दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता करे और आख़िरत में हुज़ूर नबी करीम सल्ल० की शफ़ाअत से मालामाल फ़रमाये।

आमीन

अहक़र नफ़ीसुल हुसैनी
करीम पार्क लाहौर
8 रबीउल् अव्वल 1419 हिजरी

कलिमाते दुआ व बरकत

हज़रत मौलाना मुहम्मद इदरीस साहिब अन्सारी रह०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामिदंव्-व मुसल्लियंव्-व मुसल्लिमन

आज सुबह 19 रमज़ान मुबारक 1417 हिज्री ख़ानक़ाह नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिया ग़फ़ूरिया सादिक़ आबाद में अज़ीज़े ग्रामी मौलाना अल्-हाज इमदादुल्लाह अनवर साहिब तशरीफ़ लाए उनकी ज़बानी मालूम हुआ कि वह जन्नत और उसकी ख़ूबियों पर एक किताब लिखना चाहते हैं जिसका नाम "जन्नत और उसके हसीन मनाज़िर" रखने का इरादा है। उसके लिए उन्होंने क़दीम उलमा की बहुत-सी किताबें जमा की हैं और उनके बहुत-से मज़ामीन को इकट्ठा करने का इरादा किए हुए हैं। बड़ी ख़ुशी हुई, इस ज़माने में इस बुलन्द हौसले पर, दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला मौलाना के इस अज़ीम काम पर उनकी हर तरह से मदद फ़रमाये और इस काम पर हर तरह की बरकत नसीब फ़रमाये। आम लोगों और उलमा व तुलबा को उससे फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ बख़्शे और उन नेक आमाल पर जिसके सिले में अल्लाह तआला ने जन्नत में दाख़िल होने की ख़ुशख़बरियाँ दी हैं और उसके रसूल सल्ल० ने उसकी ख़ूबियों और पसन्दीदगी से उम्मत को आगाह फ़रमाया है, उसकी क़द्र और इज़्ज़त करने की हम सब को तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। मुझे और मेरे तमाम ताल्लुक़ वालों को अपनी ख़ास नज़दीकी और जन्नत में हज़रत नबी करीम सल्ल० का साथ नसीब फ़रमाये। ख़ुदा करे मेरी ज़िन्दगी में यह किताब अपनी तमाम ख़ूबियों के साथ मन्ज़रे आम पर आये और मैं भी उसके मुताले (अध्ययन) से अपनी आँखों और दिल को ठण्डा कर सकूँ।

फ़क़त वस्सलाम।

मुहम्मद इदरीस अन्सारी

तक़रीज़

उस्ताज़ुल उलमा हज़रत मौलाना अल्लामा मुहम्मद अमीन सफ़दर साहिब ओकाड़वी दामत बरकातुहुम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदूहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल् करीम। अम्मा बाद!

यह दुनिया अमल करने की जगह है। ईमान सही होने के बाद अल्लाह तआला न सिर्फ़ यह कि हर नेक अमल को जो नेक नीयती से किया गया हो, क़बूल फ़रमाते हैं बल्कि उसका अज्र कम से कम दस गुना भी इनायत फ़रमाते हैं। और जितना इख़्लास (नेक-नीयती) कामिल होता जाता है, अमल का अज्र भी बढ़ता जाता है यहाँ तक कि अल्लाह के नेक बन्दों की एक नेकी का अज्र सात सौ गुना बल्कि इससे भी ज़्यादा अल्लाह तआला जितना चाहें बढ़ा देते हैं। और यह अल्लाह तआला के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं। यह दुनिया आख़िरत की खेती है, यहाँ जो बोयेगा वही आख़िरत में काटेगा। नीम के पेड़ बोकर उनसे आम तोड़ने की उम्मीद करना एक धोखा और फ़रेब है।

दुनिया अमल करने की जगह में जो वक़्त हमें मिला है यह बहुत ही क़ीमती है। जब उम्र ख़त्म हो जाये और कोई दुनिया भर का बादशाह चाहे कि मेरी सारी दौलत और हुकूमत के बदले में मुझे सिर्फ़ एक साँस और लेने का वक़्त मिल जाये तो ऐसा सोचना भी बेवकूफ़ी की बात है, और ऐसा होना भी मुमकिन नहीं।

इनसान की मिसाल ऐसी है कि एक बादशाह ने तीन आदमियों को एक-एक घंटे का वक़्त दिया कि एक घंटे में तुम इस मैदान से जो चाहो समेट लो। इसमें सोना चाँदी और हीरे जवाहिरात भी हैं, इसमें साँप और बिच्छू वग़ैरह ज़हरीले जानवर भी हैं। और इसमें रेत के तूदे और कंकर-पत्थर भी हैं।

अब एक आदमी ने तो हीरे, जवाहिरात और सोना-चाँदी तलाश कर लिए। यह वह नेक-बख़्त आदमी है जिसने दुनिया की ज़िन्दगी नेकियों की तलाश में गुज़ार दी। फ़राईज़, वाजिबात, सुन्नतें और मुस्तहब्बात तक का पाबन्द रहा और मक्रूह व हराम से बचता रहा। दूसरे आदमी ने उस घंटे में साँप बिच्छू और दूसरे ज़हरीले जानवर अपने दामन में भर लिए और काँटों का बोझ सर पर लाद लिया। यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का वह ना-लायक़ बेटा है जिसने दुनिया की इस क़ीमती ज़िन्दगी को गुनाहों से भर लिया। यह शख़्स जब क़यामत के मैदान में नेक आदमियों के पास नेकियों के जवाहिरात देखेगा और उनसे अपनी मेहरूमी और फिर साँप-बिच्छूओं का दुख उठायेगा तो हसरत व अफ़सोस से हाथ मलेगा और रो-रोकर अफ़सोस करेगा कि मैंने दुनिया की क़ीमती ज़िन्दगी के बदले कितनी मुसीबतें इकट्ठी कर लीं। लेकिन उस वक़्त का रोना-धोना किसी काम न आयेगा। हाँ इस दुनिया में रो-धोकर अगर तौबा कर ले और गुनाहों को छोड़कर नेकियों की तरफ़ आ जाए तो न सिर्फ़ यह कि बाक़ी वक़्त कारामद हो जायेगा बल्कि ख़ुदा तआला पिछली कोताहियों को भी न सिर्फ़ माफ़ फ़रमा देंगे बल्कि उन गुनाहों को नेकियों से बदल देंगे। जैसा कि क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया है।

जब हम रोज़ाना अल्लाह तआला की क़ुदरतों को अपनी आँखों से देख रहे हैं कि हम गन्दी खाद ज़मीन में डालते हैं और ख़ुदा तआला उस गन्दगी को सेब, अनार, अंगूर और नारंगी के रंग और मज़ों में तब्दील फ़रमा देते हैं, इसी तरह वह गुनाहों की खाद से नेकियों को पैदा फ़रमा देते हैं।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: ऐ ग़ाफ़िल इनसान! यह ज़िन्दगी का हिस्सा बड़ा ही क़ीमती है। अगर तेरी सारी दुनियावी ज़िन्दगी को एक पेड़ से मिसाल दी जाए तो अगरचे तेरी ज़िन्दगी के पेड़ की सत्तर बहारें गुज़र चुकी हों, तू याद रख कि इस पेड़ की जड़ें अब भी तेरे हाथ में हैं। तू अब भी तौबा करके तौबा का पानी इस

ज़िन्दगी के पेड़ की जड़ों में डाल दे, इन्शा-अल्लाह सारे का सारा पेड़ हरा-भरा हो जायेगा।

ऐ ग़ाफ़िल इनसान! तौबा में देर तेरी तरफ़ से है। ख़ुदा तआला की तरफ़ से क़बूल करने में देर नहीं।

तीसरा आदमी वह है जिसने अपनी ज़िन्दगी ऐसे कामों में गुज़ार दी जिनपर अगरचे गुनाह न था, मगर कोई सवाब भी न मिला। उसने अपनी आख़िरत को तक़रीबन बरबाद कर लिया। हज़रत मौलाना रूम ने फ़रमाया कि एक आदमी एक दुकान से चीनी ख़रीदने गया, उस दुकान पर बाट मिट्टी को तोड़-तोड़कर खाने लगा। दुकानदार जो अन्दर चीनी लेने गया था, उसने देखा कि ग्राहक बाट की मिट्टी खा रहा है, तो वह अन्दर दूसरे काम में मशग़ूल हो गया कि जितनी मिट्टी खा जायेगा उतनी चीनी कम मिलेगी। और उसकी हिमाक़त पर अफ़सोस भी कर रहा था कि यह मिट्टी को चीनी के बदले में खा रहा है। हमारे दिल में उसकी बेवक़ूफ़ी आती है, मगर याद रहे कि जन्नत और दुनिया का मुक़ाबला चीनी और मिट्टी के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। वह इनसान कितना नादान है जो जन्नत को ज़ाया करके दुनिया की गन्दी मिट्टी फाँक रहा है।

बहरहाल यह दुनिया अमल करने की जगह है। इसके बाद आलमे बर्ज़ख़' है जिसे इन्तिज़ार का घर कहा जाता है। और आख़िरत मुस्तक़िल रहने की जगह है और आख़िरत में मोमिन का असल घर जन्नत है। हज़रत मौलाना इमदादुल्लाह अनवर सल्लमहुल्लाहु तआला ने हमें अपने असली घर से परिचित कराने के लिए बड़ी मेहनत फ़रमाई और बहुत-सी किताबों से जन्नत के ख़ूबसूरत मनाज़िर को जमा करके एक दिलचस्प गुलदस्ता तैयार फ़रमाया जिसका नाम भी "जन्नत के हसीन मनाज़िर" रखा।

वह कौन शख़्स है जिसको अपने घर से प्यार न हो। और कौनसा दिल है जिसमें अपने घर के हसीन मनाज़िर की तड़प न हो। मौलाना ने बहुत ही मेहनत और कोशिश से इस किताब को लिखा है।

क़ुरआन पाक की आयतों और नबी पाक की हदीसों के मुबारक अलफ़ाज़ दर्ज करके बहुत ही आसान-सा तर्जुमा भी फ़रमा दिया और बाक़ी इरशादात का सिर्फ़ तर्जुमा नक़ल फ़रमाया। सबसे अहम काम जो मौलाना ने फ़रमाया वह हवालों का है कि अगर कोई शख़्स इन हदीसों और वाक़िआत की असल देखना चाहे तो बिला-तकल्लुफ़ असल देख सकता है।

यहाँ यह बात भी ज़ेहन में रहनी चाहिए कि हदीसों के क़बूल करने में अक़ीदों का मेयार और है कि वह किस दर्जे और किस हैसियत की होनी चाहिएँ और आमाल के फ़ज़ायल और तरग़ीब व तरहीब (यानी नेक कामों का शौक़ दिलाने और बुरी बातों से डराने) में और है। इसमें मुहद्दिसीन हज़रात "गड़ी हुई हदीसों को छोड़कर बाक़ी सब" को क़बूल फ़रमाते हैं। इसी उसूल के तहत इस किताब में भी हदीसें जमा की गयी हैं।

हज़रत मौलाना ने इस किताब में ऐसी अजीब तरतीब रखी है कि आप किताब पढ़ते हुए यह बात शिद्दत से महसूस फ़रमायेंगे कि इस दुनिया के घर में जिसमें हमने साठ-सत्तर साल गुज़ारे हैं, हमें इस घर का भी ऐसा मुकम्मल तआरुफ़ नहीं हो सका जितना मौलाना ने इस किताब में करा दिया है। जन्नत कहाँ स्थित है, उसकी चारदीवारी, उसकी मिट्टी ईंटे, गारा, जन्नत के दिन-रात, जन्नत का साया, जन्नत की ख़ुशबूएँ जन्नत के दरवाज़े, जन्नत की चाबी, जन्नत की क्रन्सी (नेकी और उसकी क़ीमत) जन्नत में ख़ुदा की रहमतों के नज़ारे, जन्नत में क्या-क्या ऐलान होंगे। जन्नत के हासिल करने के लिए आपको क्या-क्या आमाल करने चाहियें। आप अपनी औलाद की तरबियत कैसे करें कि वे ख़ुद भी जन्नती बन जायें, बल्कि आपके मरने के बाद उनकी तरफ़ से आपको ऐसा बड़ा फ़ायदा पहुँचता रहे जिसकी असल क़द्र तो आपको वहीं जाकर मालूम होगी।

आप अपने माल को किस तरह ख़र्च करें कि वह दुनिया की क्रन्सी से जन्नत की क्रन्सी में तब्दील हो जाये और उस क्रन्सी से आप

अपने असली घर को और ज़्यादा सजा सकें। आप अपने समय का एक निज़ाम बनायें कि यह घर भी आबाद रहे मगर अपने असली घर की लगन भी ऐसी लग जाये कि उसके हासिल करने के लिए आप इस चार दिन की ज़िन्दगी में भरपूर कोशिश कर लें। इसके लिए आपको मुकम्मल रहनुमाई इस किताब में मिलेगी।

इस दौर में जबकि लोग रात-दिन दुनिया ही की फ़िक्र में लगे हुए हैं और अपने असली घर को अमली तौर पर बिल्कुल भूले हुए हैं, मौलाना ने असली घर की याद दिलाकर हमपर बहुत बड़ा एहसान फ़रमाया है। अल्लाह तआला मौलाना को बेहतरीन बदला अता फ़रमायो और इस मेहनत व कोशिश के सिले में उनके असली घर के दर्जों को और रोशन और चमकदार फ़रमायें। अब देखना है कि हम अपने फ़र्ज़ को कितना पूरा करते हैं कि असली घर के तआरुफ़ (परिचय) के बाद उसके हासिल करने के लिए भी अपनी कोशिश को तेज़ से तेज़ कर दें।

इस किताब का हर मुसलमान घर में होना ज़रूरी है ताकि असल घर जन्नत हर वक़्त याद रहे। दुआ है कि अल्लाह तआला मौलाना की इस मेहनत को क़बूल फ़रमायें और इस किताब को भी ख़ूब मक़बूल फ़रमायें। आमीन।

फ़क़त

मुहम्मद अमीन सफ़दर

28 जमादिउल ऊला सन् 1419 हिजरी

तक़रीज़

हज़रत मौलाना मुहम्मद तारिक़ जमील साहिब दामत बरकातुहू (तब्लीग़ी जमाअत)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ज़िन्दगी सीमित और इच्छाएँ असीमित असबाब सीमित और तमन्ना असीमित तो कैसे बेचारा इनसान सुख पाये। जो कुछ इनसान चाहता है वह इस दुनिया में पूरा होना नामुमकिन है।

लेकिन क्या यह मुमकिन है कि कोई दुनिया ऐसी हो जहाँ हर तमन्ना और हर ख़्वाहिश पूरी हो तो अल्लाह तआला ने अपने नबियों के ज़रिये ख़बर दी कि एक जहान (दुनिया) उसने ऐसा बनाया है जिसे नज़रों से छुपाया है जिसका नाम जन्नत है जहाँ हमेशा ज़िन्दा रहना है मौत नहीं है ख़ुशियाँ हैं ग़म नहीं जवानी है बुढ़ापा नहीं सेहत है बीमारी नहीं जहाँ हमेशा कि ज़िन्दगी है सुरूर है ऐश है मुल्क है तो बड़ा है बुलन्दी है ज़वाल नहीं हुस्न है तो बेमिसाल है जहाँ घर हैं तो सोने-चाँदी के जो घिरे हुए हैं बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले और गहरे सब्ज़ बाग़ों के साथ बहते चश्मे फैलते हुए साये उड़ते हुए परिन्दे झुके हुए गुच्छे पके हुए फल और हुस्न व ख़ूबसूरती में कामिल ज़िन्दगी की साथी हूरे-ऐन जैसे कि सीप में रखे हुए मोती।

अल्लाह तआला उस घर की दावत देता है। लेकिन उस घर में दाख़िल होने के लिए अपने अहकाम की पाबन्दी की सख़्त शर्त लगाता है। इस बात की सख़्त ज़रूरत थी कि कोई आलिम अल्लाह पाक की इस जन्नत को उर्दू ज़बान में परिचित कराता। चुनाँचे अल्लाह तआला हज़रत मौलाना इमदादुल्लाह अनवर साहिब को बेहतरीन बदला अता फ़रमाये जिन्होंने इस ज़रूरत को महसूस करके इसपर क़लम उठाया। अल्लाह करे अब लोग इसे पढ़कर जन्नत की तरफ़ क़दम उठाने वाले भी बन जायें। वस्सलाम।

तारिक़ जमील
2 जमादिउल उख़रा 1419 हिजरी

इरशादे ग्रामी

हज़रत मौलाना मुहम्मद अजमल क़ादरी साहिब

अल्हम्दु लिल्लाहि व सलामुन अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा।

अम्मा बाद।

हज़रत मौलाना इमदादुल्लाह अनवर साहिब मशहूर लेखक और आलिम हैं। नाचीज़ के साथी रहें हैं। पढ़ने ही के ज़माने से ख़ुदा की तरफ़ से बख़्शी हुई सलाहियतों के मालिक हैं ख़ूबसूरत उनवानात क़ायम करना और फिर बहुत मेहनत के साथ उन तमाम मामलात को इन्तिहा तक पहुँचाना आपका मिज़ाज है।

जितने अच्छे अन्दाज़ से जन्नत के हसीन मनाज़िर का मन्ज़र उन्होंने खींचा है यक़ीन है कि नौजवानों के लिए ज़रूर नेक आमाल की तरग़ीब (प्रेरणा) का ज़रिया बनेगा। मेरी दुआ है कि हक़ तआला के यहाँ और उसकी मख़्लूक़ के यहाँ "जन्नत के हसीन मनाज़िर" पहचानने के बदले अल्लाह उनको और हम सबको इन मनाज़िर (दृश्यों) को जल्द देखने वाला बना दे।

आमीन या रब्बल् आलमीन।

मुहम्मद अजमल क़ादर

19 जमादिउल ऊला 1419 हिजरी

तक़रीज़

हज़रत मौलाना मुहम्मद अकबर साहिब दामत बरकातुहूम शैखुल हदीस जमिया क़ासिमुल उलूम मुलतान

अल्हम्दु लिल्लाहि वह्दहू वस्सलातु वस्सलामु ला नबिय्-य बअ्दहू

यह किताब "जन्नत के हसीन मनाज़िर" हज़रत अल्लामा मौलाना इमदादुल्लाह अनवर साहिब की हसीन तालीफ़ है। मौलाना की लिखी हुई तमाम किताबें मेरी नज़र से गुज़री हैं, सब क़ाबिले रश्क हैं और इल्मी और अवामी हल्क़े के लिए पुरअसर हैं। मौलाना मौसूफ़ के इल्मी और तहक़ीक़ी ज़ौक़ से मैं अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ। आप तस्नीफ़ी मैदान के माहिर हैं। मुताला बहुत ज़्यादा है और तहक़ीक़ी ज़रूरियात पर आपकी गहरी निगाह है। बल्कि पुराने आलिमों की नायाब किताबों को जिनके मुताले और दीदार के लिए आँखें तरस्ती हैं, बड़ी मेहनत व कोशिश से तलाश करके तर्जुमे और नई किताब की शक्ल में पेश करके मुसलमानों को फ़ायदा उठाने का मौक़ा देते रहते हैं।

इसी ज़ौक़ को मद्दे नज़र रखते हुए "जन्नत के हसीन मनाज़िर" में पुराने आलिमों की सैकड़ों किताबों से ऐसे हसीन दृश्य आँखों के सामने पेश किए हैं कि अब तक उर्दू ज़बान में ऐसा उम्दा काम सामने नहीं आया।

इस किताब की सबसे अहम ख़ूबी यह है कि जन्नत से मुताल्लिक़ क़ुरआन, हदीस, सहाबा के अक़वाल, बुज़ुर्गों के हालात व अक़वाल और पुरानी किताबों में जो कुछ बिखरा हुआ मौजूद था उस सबको एक जगह ऐसे बेहतरीन और उम्दा अन्दाज़ में जमा कर दिया है कि अब यह कहना बिल्कुल बजा है कि इस मौज़ू (विषय) पर न तो अरबी ज़बान में और न ही उर्दू वग़ैरह में ऐसी किताब हमारी नज़र से गुज़री। और यह मौलाना के लिए बड़े ऐज़ाज़ की बात है। मैं अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करता हूँ कि वह इस मेहनत को क़बूल

फ़रमाये और तमाम मुसलमानों को इससे भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। और हज़रत मौलाना को ऐसी ही बेहतरीन और उम्दा किताबें लिखते रहने की सआदत नसीब फ़रमाये। क्योंकि ऐसे अहम और मुफ़ीद काम के करने की हिम्मत अल्लाह तआला ही की तरफ़ से अता की जाती है।

मुहम्मद अकबर
जामिया क़ासिमुल उलूम मुलतान
29 जमादिउल ऊला 1419 हिजरी

जन्नत के हसीन मनाज़िर के मुताल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें

(1) जहाँ कहीं तर्जुमे में अपनी तरफ़ से किसी बात का इज़ाफ़ा ज़रूरी मालूम हुआ तो ब्रेकिटों के दरमियान उसका इज़ाफ़ा कर दिया गया है और अगर फिर भी तफ़सील (व्याख़्या) की ज़रूरत हो या बात समझ में न आए तो उस जगह के बारे में आलिमों से मालूम कर लें।

(2) 'फ़ायदा' के उनवान के तहत हदीस या रिवायत के बारे में मुफ़ीद मालूमात और ज़रूरी बातों को अर्ज़ किया गया है। अगर तशरीह की ज़रूरत थी तो वह की गयी है। अगर किसी सवाल का जवाब देना ज़रूरी था तो उसका जवाब लिखा गया है। अगर हदीसों से कुछ ख़ास मालूमात हासिल होती थीं तो उनको वाज़ेह किया गया है।

(3) इस किताब में हर तरह की हदीसें बयान की गयी हैं, जो सनद के एतिबार से कुछ कमज़ोर थीं उनको भी लिया गया है क्योंकि यह फ़ज़ाइल की किताब है और इसका मक़सद नेक आमाल का शौक़ दिलाना और बुरे कामों से बचने की प्रेरणा देना है।

(4) अगर किसी हदीस पर मुहद्दिसीन ने कुछ कलाम किया है तो मुख़्तसर तौर पर कहीं-कहीं उसे भी पेश कर दिया गया है।

(5) जिस 'फ़ायदा' पर कोई हवाला नहीं है तो समझ लीजिए कि वह मुझ नाचीज़ (मौलाना इमदादुल्लाह अनवर) का लिखा हुआ है।

(6) अगर मज़मून, किताबत या तर्जुमे की कोई ग़लती हो तो इत्तिला करने की मेहरबानी करें।

(7) कुछ जगहों पर उन हदीसों को दोबारा लाया गया है जिनके दोबारा बयान किए बग़ैर वे स्थान अधूरे मालूम होते थे।

(8) इस किताब में हूरों और बीवियों के मुताल्लिक़ जो हदीसें आई हैं हमने उनको काफ़ी हद तक नक़ल कर दिया है। उनके जो मायने उर्दू में मुनासिब थे उनको दर्ज किया गया है। इन हदीसों या उनके तर्जुमे के बारे में अगर कोई यह ख़्याल करे कि उनमें किसी तरह की अश्लीलता है तो यह उसके अपने ज़ेहन की पैदावार है। हदीसों का जो मज़मून है उसके अन्दर किसी तरह की अश्लीलता नहीं।

(9) जन्नत में जाने की और नेक आमाल का शौक़ दिलाने की यह एक कोशिश है, ख़ुदा करे कि आप इस किताब को पढ़ने के बाद जन्नत के और इन इनामात के हक़दार बन सकें।

मुक़द्दिमा

بسم الله الرحمن الرحيم

لک الحمد اللهم جزيل الثواب جميل المآب سريع الحساب منيع الحجاب، منحت اهل الطاعة ورغبتهم فيها و اوجدت فيهم الا ستطا عة و اثبتهم عليها و خلقت لهم الجنان وسقتهم فضلا اليها و جعلت في الا عمال مفضو لا وفاضلا وجيها، فالرحمة وموجباتها منک والطاعة وثوابها صدرا عنک ومقاليد الجنان كلها بيديک والمبدأمنک والمصير اليک۔

رب فا حمد نفسک عنا لنفسک كما ينبغي لجلال وجهک وكمال قد سک فانا عن القيام بحق حمدک عاجزون ولعظمة جبروتک خاضعون واليک فيما منحت اهل قربک راغبون فجد علينا من خزائن جودک في روضات الجنات بما تعلقت بها آمال فانک واسع العطاء جزيل النوال۔

وصل اللهم اتم صلوة واكملها واشرفها وافضلها واعمها واشملها على الدليل اليک والمرغب فيما لديک محمد افضل خلقک اجمعين وعلى اله وصحبه الطيبين والطاهرين صلوةً لا يحصيها عدد ولا يقطعها امد وسلم تسليما كثير الى يوم الدين امابعد:

अल्लाह तआला ने इनसान को तमाम मख़्लूक़ात से अफ़ज़ल और बेहतर बनाया और अपनी इबादत करने की ज़िम्मेदारी इसपर डाल दी इस ज़िम्मेदारी में जिन्नात भी शरीक हैं। इनसान की पैदाईश के इस मक़सद की पासदारी करते हुए जो इनसान और जिन्नात

अल्लाह तआला की इबादत करेंगे और दुनिया में रहकर इस इम्तिहान में कामयाब हो जायेंगे अल्लाह तआला उनको अपनी रज़ा के साथ उनकी उजरत और मज़दूरी के तौर पर या उनके इनाम के तौर पर या उनके इकराम और सम्मान के तौर पर अपनी उस जन्नत में दाख़िल फ़रमायेंगे जिसका तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम वायदा फ़रमाते आये हैं। यह जन्नत क्या है? उसकी शान व बड़ाई और अजीब अजीब नेमतें और पाकीज़गी, ग़रज़ हर हुस्न व ख़ूबी के मुताल्लिक़ कुरआन करीम, हदीस शरीफ़, और आलिमों ने जो कुछ बयान फ़रमाया और निशानदेही फ़रमाई है, जिसको बहुत-सी इस्लामी किताबों से एक किताब की शक्ल में जमा करने की एक लम्बे समय तक रात-दिन एक करके जमा करने की सआदत हासिल हो रही है, और यह दिन देखना नसीब हुआ है कि आज अल्हम्दु लिल्लाह यह किताब की शक्ल में सामने है। और मुसलमानों की ख़िदमत में इसको पेश करने की तौफ़ीक़ हुई है।

अल्लाह तआला इस किताब को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमायें और मुझे तमाम मुताल्लिक़ीन और पढ़ने वालों को अपनी जन्नत के आला मुक़ामात पर फ़ाईज़ करते हुए अपनी तमाम सम्मानित नेमतों से मालामाल फ़रमायें।

अब मैं उस जन्नत के बनाने वाली ज़ात पाक का नाम लेकर उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ जन्नत के बारे में जमा किए हुए मज़ामीन को पढ़ने वालों की ख़िदमत में पेश करता हूँ। आप इस किताब को पूरी तवज्जोह से मुताला (अध्ययन) करके जन्नत में जाने की तैयारी फ़रमायें। ऐ रब्बे करीम! अपने नबी पाक पर बेशुमार दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा!

कुछ इस अन्दाज़ से करते हैं वह तशरीह जन्नत की
कि गोया हज़रत वाईज़ वहीं के रहने वाले हैं।

जन्नत को हासिल कीजिए

जन्नत की तिजारत के लिए अल्लाह तआला की दावत

अल्लाह तआला का पाक इरशाद है:

तर्जुमाः ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारत (कारोबार) बतलाऊँ जो तुमको एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले। (वह यह है कि) तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (जब ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा कि जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में (दाख़िल करेगा) जो हमेशा रहने के बाग़ों में (बने) होंगे यह बड़ी कामयाबी है।

(सूरः सफ़ आयत 10-11-12)

फ़ायदाः इस इरशाद में मोमिनों को अल्लाह तआला ने एक ऐसी तिजारत के बारे में बताया है जो दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में ले जाने वाली है, और वह है अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना, (जिहाद वग़ैरह में) अल्लाह की फ़रमाँबरदारी, अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करना। इससे मालूम हुआ कि अज़ाब से छुटकारा और जन्नत जैसी बड़ी दौलत, मोमिनों, मुजाहिदों और नेक आमाल करने वालों को अता की जाएगी। इन आयतों में इसी बात की तरग़ीब (प्रेरणा) है कि इनसान जन्नत के पाने और दोज़ख़ से बचने की तिजारत को अपना तरीक़ा व नियम बनाए यही तिजारत इनसान को आख़िरत में फ़ायदा देने वाली है।

जन्नत की तरफ़ दौड़ो

अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमाः और मग़फ़िरत (क्षमा) की तरफ़ दौड़ो जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से (नसीब) हो। और दौड़ो जन्नत की तरफ़ (यानी ऐसे नेक आमाल अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़फ़िरत कर दें) और तुमको जन्नत दे दी जाए। (और वह जन्नत ऐसी है) जिसकी लम्बाई-चौड़ाई ऐसी (तो) है (ही) जैसे सब आसमान और ज़मीन, (और ज़्यादा का इनकार नहीं, चुनाँचे हक़ीक़त में ज़्यादा होना साबित है, और) वह तैयार की गयी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए।

(सूरः आल इमरान आयत 133)

फ़ायदाः इस आयत में मुसलमानों को जन्नत की तरफ़ प्रेरित करते हुए उसकी तरफ़ दौड़ने का हुक्म दिया गया है और परहेज़गार ही हैं जो ख़ुदा के फ़रमाँबरदार और गुनाह से दूर रहने वाले हैं, उनके लिए तैयार की गयी है। आमाल जन्नत की क़ीमत नहीं हैं लेकिन अल्लाह तआला की आदत यही है कि वह अपनी मेहरबानी और फ़ज़्ल से उसी बन्दे को नवाज़ता है जो नेक आमाल करता है।

अल्लाह तआला जन्नत की तरफ़ बुलाता है

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः और अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत की तरफ़ बुलाता है।

(सूरः यूनुस आयत 25)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः 'दारुस्सलाम' से मुराद जन्नत है।(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम पेज 35)

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक सरदार ने एक घर बनाया और एक दस्तरख़्वान लगाया और एक बुलाने वाले (निमंत्रक) को भेजा तो जिसने उस बुलाने वाले को लब्बैक कहा (यानी क़बूल किया) वह उस घर में दाख़िल हो गया और दस्तरख़्वान से खाया और सरदार को राज़ी किया। पस सरदार "अल्लाह तआला" है और घर ""इस्लाम" है और

दस्तरख़्वान "जन्नत" है और बुलाने वाला "मुहम्मद" (सल्ल0) है।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम पेज 31)

तुम्हें क्या मालूम तुम्हारे लिए क्या-क्या इनाम छुपा रखे हैं

हदीसः हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैं जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की मुबारक मजलिस में हाज़िर हुआ, आपने उसमें जन्नत की तारीफ़ फ़रमाई और उसके गुण बताए यहाँ तक कि आपने उसके आख़िर में यह इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में वह कुछ है जिसको किसी आँख ने नहीं देखा और किसी कान ने नहीं सुना, और न किसी इनसान के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः उनके पहलू (करवटें) बिस्तरों से अलग होते हैं (चाहे इशा के फ़र्ज़ों के लिए या तहज्जुद के लिए भी, और सिर्फ़ अलग ही नहीं होते बल्कि) इस तरह (अलग होते हैं) कि वे लोग अपने रब को (अज़ाब के) डर और (जन्नत की) उम्मीद से पुकारते हैं, (यानी उनको जहन्नम से पनाह और जन्नत के हासिल होने की चिन्ता लगी रहती है), और हमारी दी हुई चीज़ों में से ख़र्च करते हैं। सो किसी आदमी को ख़बर नहीं, आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने में मौजूद है। यह उनके (नेक) आमाल का सिला मिला है।

(सूरः सज्दा आयत 16.17)

इस आयत में मुसलमानों को नेक आमाल के साथ जन्नत के पाने की तरग़ीब (प्रेरणा) दी है। ख़ास तौर पर रात को अल्लाह तआला की इबादत करने का ऐसा बड़ा अज्र (फल) बयान फ़रमाया है कि इसकी वजह से अल्लाह तआला तहज्जुद पढ़ने वालों और रात के वक़्त अल्लाह तआला के लिए इबादत और उसके ज़िक्र में जागने वालों के लिए जन्नत के ये बड़े-बड़े इनाम हैं, जैसा कि हदीस में आया है किः

हदीसः अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नेक बन्दो के

लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जो किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना और किसी इनसान के दिल में उसका ख़्याल तक नहीं गुज़रा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैः अगर चाहो तो (यह आयत) पढ़ लोः

तर्जुमाः सो किसी इनसान को ख़बर नहीं जो-जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने (जन्नत) में मौजूद है। (बुदूरे साफ़िरह पेज 477)

जन्नत का मुख़्तसर (संक्षिप्त) सा नज़ारा

हदीसः हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः कोई जन्नत की तैयारी के लिए तैयार है? क्योंकि जननत फ़ना (ख़त्म) होने वाली नहीं। काबा के रब की क़सम! यह ऐसा नूर है जो लहलहाने वाला है। ऐसा फूलों का दस्ता है जो झूम रहा है और ऐसा महल है जो ऊँचा और बुलन्द है। और ऐसी नहर है जो जारी रहने वाली है। ऐसा फल है जो पका हुआ तैयार है। ऐसी बीबी है जो बहुत ही सुन्दर और आकर्षक है। लिबास हैं जो बड़ी तायदाद में हैं। सलामती (अमन-शान्ति) के घर में रहने की जगह है। हमेशा के लिए मेवे हैं। हरी-भरी जगह है। ख़ुशी है। नेमत है। हसीन और बुलन्द मुक़ामात हैं। सहाबा किराम ने अर्ज़ कियाः हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल! हम उसके लिए तैयार हैं। फ़रमायाः 'इन्शा- अल्लाह' कह लो, सहाबा किराम ने इन्शा-अल्लाह कहा।

(सिफ़तुल्-जन्नत इब्ने अबिद्दुन्या पेज 11)

जन्नत के शौक़ में एक सहाबी का इन्तिक़ाल

हदीसः हज़रत इब्ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने क़ुरआन पाक की आयत "हल् अता अलल् इन्सानि हीनुम् मिनद्दहरि" तिलावत फ़रमाई। यह जिस वक़्त उतरी उस वक़्त आप सल्ल० के पास एक काले रंग वाला आदमी बैठा था

जो आपसे सवाल कर रहा था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे फ़रमायाः तुम्हारे लिए इतना काफ़ी है, हुज़ूर सल्ल0 पर बोझ न बनो। नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः ऐ इब्ने ख़त्ताब! इसे छोड़ दो। फ़रमायाः जब यह सूरः नाज़िल हुई उस समय यह आदमी आप सल्ल0 के पास मौजूद था। जब आपने यह सूरः उसके सामने पढ़ी और जन्नत के हालात पर पहुँचे तो उसने एक दम चीख़ मारी जिससे उसकी रूह निकल गयी। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः तुम्हारे साथी (या तुम्हारे भाई) की रूह जन्नत के शौक़ ने निकाली है।

(अत्तज़्किरतु फ़ी अहवालिल् मौत व उमूरिल् आख़िरति पेज 439)

जन्नत का इच्छुक जन्नत की मेहनत करे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः मैंने जन्नत की मिसाल नहीं देखी, जिसका चाहने वाला सो गया है, और न दोज़ख़ जैसी (अज़ाब और मुसीबत) देखी है जिससे भागने वाला भी सो गया है।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबूनुऐम जिल्द 1 पेज 57)

फ़ायदाः इसमें भी जन्नत के चाहने की ख़ूब तरग़ीब (शौक़ और प्रेरणा) दी गयी है।

जन्नत की उम्मीद रखने वाला जन्नत में जाएगा

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः जनाब नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः जन्नत में वही दाख़िल होगा जो उसकी उम्मीद रखेगा (इस लिए हम सब मुसलमानों को इसका उम्मीदवार रहना चाहिये)।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 59)

फ़ायदाः एक हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्ल0 से यह नक़ल फ़रमाया है कि जन्नत में उसके हरीस

(उम्मीद रखने वाले और कोशिश करने वाले) के सिवा कोई नहीं जाएगा। (सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 60)

इसलिए जन्नत में जाने की ख़ूब-ख़ूब हिर्स करनी चाहिये।

जन्नत पर ईमान लाना फ़र्ज़ है

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम नबी करीम सल्ल0 की मजलिस में बैठे थे कि आपके पास एक आदमी आया और कहने लगा या रसूलुल्लाह ईमान क्या चीज़ है? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यह कि तू ईमान लाए अल्लाह तआला पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, मौत पर, मौत के बाद ज़िन्दा होकर उठने पर, हिसाब व किताब पर, जन्नत पर, दोज़ख़ पर और हर तरह की (अच्छी और बुरी) तक़दीर पर।

(मुस्लिम जिल्द 1 पेज 38)

फ़ायदाः इस हदीसे पाक में दूसरे अक़ीदों के साथ-साथ जन्नत को ईमान का हिस्सा (भाग) क़रार दिया है। इसलिए जो आदमी जन्नत का इनकार करे वह मुसलमान नहीं हो सकता।

(शहर अक़ीदा तहाविय जिल्द 2 पेज 161)

और क़ुरआन पाक में या मज़बूत मुबारक हदीसों में जन्नत और उसके हालात के बारे में जो कुछ मौजूद है वह भी ईमान का एक हिस्सा है, उससे इनकार भी कुफ़्र है। कुछ पश्चिमी ज़ेहन रखने वाले नाम के खोजकर्ता जन्नत का और उसकी नेमतों का इनकार करते हैं उनको अपने ईमान की फ़िक्र करनी ज़रूरी है।

जन्नत के हालात में जो-जो इरशादात क़ुरआन करीम या मुबारक हदीसों में आए हैं, मैंने उनको एक जगह जमा करने की बहुत ज़्यादा कोशिश की है। इस मजमूए में जन्नत के लिए ईमान की ज़रूरियात को अच्छे ढंग से देखा जा सकता है।

जन्नत और जन्नत वालों की आपसी तलब

जन्नत वालों की तलबे जन्नत

जन्नत वाले जन्नत की तलब में अल्लाह तआला से इस तरह से दरख़्वास्त करते हैं और करेंगे जैसा कि कुरआन में इरशाद है:

तर्जुमा: ऐ हमारे परवर्दिगार! और हमको वह चीज़ (जन्नत) भी दीजिए जिसका हमसे अपने पैग़म्बर के ज़रिये से आपने वायदा फ़रमाया है, और हमको क़यामत के दिन रुस्वा न कीजिए। यक़ीनन आप वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करते। (सूरः अलि इमरान आयत 193,194)

जन्नत तलब करने का इनाम

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

हदीसः जो मुसलमान भी अल्लाह तआला से तीन बार जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है: ऐ अल्लाह! उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए। और जो आदमी अल्लाह के साथ दोज़ख़ से पनाह पकड़े तीन बार, तो दोज़ख़ कहती है ऐ अल्लाह! उसको दोज़ख़ में पनाह दे दीजिए। (हादिल् अर्वाह पेज 127)

फ़ायदाः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की एक हदीस में है: जिसने सात बार यूँ कहा "मैं अल्लाह तआला से जन्नत माँगता हूँ" तो जन्नत कहती है ऐ अल्लाह! इसको जन्नत में दाख़िल कर दीजिए।

(मुस्नद अबू दाऊद)

और एक हदीस अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से यूँ रिवायत की गयी है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआला से जन्नत की तलब और दोज़ख़ से पनाह बहुत ज़्यादा माँगा करो क्योंकि ये दोनों (जन्नत और दोज़ख़) सिफारिश भी करती है और उनकी सिफ़ारिश क़बूल भी की जाती है। बेशक जब कोई बन्दा

अल्लाह तआला से जन्नत को बहुत ज़्यादा तलब करता है तो जन्नत कहती है कि ऐ परवर्दिगार! आपका यह बन्दा आपसे मुझे तलब कर रहा है आप उसको मुझमें रहन की जगह दे दें। और दोज़ख़ भी (कहती है कि ऐ परवर्दिगार! तेरा यह बन्दा मुझसे तेरी पनाह माँग रहा है, आप इसको पनाह दे दें।)

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 99)

अल्लाह तआला का तिजारत का सामान बहुत क़ीमती है

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रिवायत करते हैं (कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः)

हदीसः जिसने (आख़िरत की मन्ज़िल से दूर जाने का) ख़ौफ़ किया उसने रात को (भी इबादत करके आख़िरत का) सफ़र किया और जिसने रात को सफ़र किया वह (अपनी) मन्ज़िल (मक़सूद) तक पहुँच गया। सुन लो! अल्लाह तआला का तिजारत का सामान बहुत क़ीमती है। सुन लो अल्लाह तआला का तिजारत का सामान (जन्नत) है। (तिर्मिज़ी हदीस 2450)

जहाँ तक हो सके जन्नत की तलब करो

जनाब कलीब बिन जरीर से रिवायत है कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 को इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

हदीसः जन्नत को अपनी पूरी कोशिश करके (यानी नेक आमाल के साथ) तलब करो और दोज़ख़ से अपनी पूरी कोशिश के साथ) (यानी गुनाहों से बचकर) भागो। क्योंकि जन्नत के तालिब को सोना (यानी लापरवाह होना) नहीं चाहिये और दोज़ख़ से भागने वाले को भी सोना (यानी गुनाह के वक़्त दोज़ख़ को भूलना) नहीं चाहिये। बेशक आख़िरत (जन्नत) आज (दुनिया में नफ़्स व शैतान की) ना-पसन्दीदा चीज़ों (पर अमल करने) में पोशीदा की गयी है, और दुनिया लज़्ज़तों और इच्छाओं का गहवारा है। ख़बरदार! यह तुम्हें आख़िरत से ग़ाफ़िल न कर दे। (हादिल् अर्वाह पेज 130)

खुदा का वास्ता देकर सिर्फ़ जन्नत माँगो

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह का वास्ता देकर कोई चीज़ न माँगी जाए सिवाए जन्नत के (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 1672)

फ़ायदाः इससे पढ़ने वाले खुद ही अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि जन्नत कितनी क़ीमती चीज़ है जिसको हमने दुनिया की इच्छाओं में बरबाद करना शुरू किया हुआ है। अल्लामा सख़ावी फ़रमाते हैं इस हदीस में यह मुराद नहीं कि और चीज़ न माँगे बल्कि मुराद जन्नत की अहमियत बताना है, वरना और नेमतें भी माँग सकता है।

दो बड़ी चीज़ों को मत भूलो

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना, आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम दो बड़ी चीज़ों को मत भूलना। हम (सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ किया, कौनसी दो बड़ी चीज़ें या रसूलुल्लाह? आपने इरशाद फ़रमायाः जन्नत और दोज़ख़।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 94)

जन्नत और दोज़ख़ का मुतालबा

हदीसः हज़रत अब्दलमलिक बिन अबीबशीर रिवायत बयान करते हैं (कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः)

तर्जुमाः कोई दिन नहीं गुज़रता मगर जन्नत और दोज़ख़ दोनों सवाल करती हैं। जन्नत कहती है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे फल तैयार हो चुके, मेरी नहरें जारी हो चुकीं, मैं अपने रहने वालों की मुश्ताक़ (यानी इन्तिज़ार करने वाली और तमन्ना करने वाली) हूँ। पस मेरे अन्दर रहने वालों को जल्दी से भेज दीजिए।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 122)

कुलसुम बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का वअज़

इमाम इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत कुलसुम बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिशाम बिन अब्दुल मालिक (बादशाह) के ज़माने में दमिश्क़ के मिम्बर पर खड़े होकर यह कहा थाः "जो शख़्स (अपने नफ़्स की इच्छाओं को छोड़कर) अल्लाह तआला (के अहकाम को) बरतरी देता है अल्लाह तआला भी उसको बरतरी अता करते हैं" उस बन्दे पर अल्लाह तआला रहम फ़रमाएँ जिसने अल्लाह तआला की नेमत के साथ उसकी फ़रमाँबरदारी में मदद हासिल की और उस नेमत से गुनाह पर मदद न पकड़ी, क्योंकि जन्नती पर कोई समय ऐसा नहीं आएगा मगर उसमें नेमत का और इज़ाफ़ा होता जाएगा, जिसको वह नेमत वाला जानता भी नहीं होगा। इसी तरह अज़ाब वाले पर कोई घड़ी ऐसी नहीं आएगी कि वह अज़ाब को नया समझेगा और उसको नहीं जानता होगा।

फ़ायदाः यह कुलसुम बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि हिशाम बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में मुतवल्ली रहे फिर उनको हिशाम ने पश्चिम में जिहाद पर भेजा और वहीं शहीद हो गये।

(सिफ़तुल्-जन्नत इब्ने कसीर पेज 150)

बुज़ुर्गों की एक जमाअत का अमल

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि पुराने बुज़ुर्गों की एक जमाअत अल्लाह से जन्नत तलब नहीं करती थी बल्कि वह यह कहती थीः "हमें इतना काफ़ी है कि वह हमें दोज़ख़ से नजात दे दे"

उन्हीं हज़रात में से एक हज़रत अबू सहबा सिला बिन अश्यम हैं, उन्होंने एक रात सेहरी तक नमाज़ पढ़ी फिर अपने हाथ उठाए और कहाः

"ऐ अल्लाह! मुझे दोज़ख़ से बचा, क्या मेरे जैसा जुर्रत कर सकता है कि वह आपसे जन्नत की तलब करे"

उन्हीं हज़रात में से एक हज़रत अता सलमी रहमतुल्लाहि अलैहि भी हैं, यह भी जन्नत का सवाल नहीं करते थे। उनसे हज़रत सालेह मुर्री रहमतुल्लाहि अलैहि ने अर्ज़ किया कि मुझे हज़रत अबान ने हज़रत अनस (बिन मालिक) से हदीस बयान की है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः (क़यामत के दिन) अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) इरशाद फ़रमाएँगेः मेरे बन्दे के आमालनामे में देखो। पस जिसको तुम देखो कि उसने मुझसे जन्नत तलब की है तो मैं उसको जन्नत अता करूँगा। और जिसने मेरे साथ दोज़ख़ से पनाह माँगी है मैं उसको पनाह दूँगा।

(हिल्यतुल्-औलिया जिल्द 6 पेज 175)

हज़रत अता ने जवाब दियाः मुझे तो इतना काफ़ी है कि वह मुझे दोज़ख़ से बचा ले। (हादिल अर्वाह पेज 129)

तंबीहः यह कुछ बड़े बुज़ुर्गों के ख़ास हालात हैं जिनपर डर ग़ालिब था, वरना हुक्म वही है जो आप ऊपर की हदीसों में पढ़ आए हैं कि जन्नत को भी तलब करना है और दोज़ख़ से पनाह भी माँगनी है। अल्लाह तआला ने हज़रत अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम का यह तरीक़ा नक़ल फ़रमाया हैः

तर्जुमाः ये (अम्बिया-ए-किराम) नेक कामों में दौड़ते थे और (जन्नत की) उम्मीद और (दोज़ख़ के) ख़ौफ़ के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और हमारे सामने दबकर रहते थे।

(सूरः अम्बिया आयत 90)

जन्नत को तीन हज़रात का शौक़ है

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः जन्नत हज़रत अली, हज़रत अम्मार (बिन यासिर) और हज़रत सलमान (फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु) का शौक़ रखती है।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुएम जिल्द 1 पेज 120)

जन्नत नफ़्स के ना-पसन्दीदा कामों के पीछे छुपी हुई है

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

जन्नत नफ़्स के ना-पस्न्दीदा चीज़ों के पीछे छुपाई गयी है और दोज़ख़ ख़्वाहिशों और लज़्ज़तों के पीछे छुपाई गयी है।

(मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 153)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब अल्लाह तआला ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा और फ़रमायाः तुम जन्नत को देखो, जो नेमतें मैंने उसमे जन्नत वालों के लिए तैयार की हैं उनको देखो। वह आए और जन्नत को देखा और उन नेमतों को जिनको अल्लाह तआला ने जन्नत वालों के लिए तैयार किया था, देखा। अल्लाह तआला के पास लौट गए और अर्ज़ कियाः मुझे आपके ग़लबे की क़सम! जो शख़्स भी इसका ज़िक्र सुनेगा वह ज़रूर इसमें दाख़िल होगा। अल्ला तआला ने जन्नत को हुक्म किया तो वह (नफ़्स के) ना-पसन्दीदा आमाल (कामों) यानी (वे काम जिनके करने से इनसान के नफ़्स को तकलीफ़ और परेशानी होती है) में छुप गयी। अल्लाह तआला ने (हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम) से फ़रमायाः अब उसके पास फिर जाओ और उसको देखो और जो कुछ (तकलीफ़ें) उसके रहने वालों के लिए तैयार की गयी हैं उनको देखो।

हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि जिब्राईल फिर गये (और देखा) तो वह ना-पसन्दीदा कामों में छुपी हुई थी। वह वापस अल्लाह मियाँ के पास लौट आए और अर्ज़ कियाः मुझे आपकी इज़्ज़त की क़सम! अब तो मैं डरता हूँ कि इसमें कोई एक भी दाख़िल नहीं हो सकेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः दोज़ख़ की तरफ़ जाइये और उसको भी

(देखिए) उन्होंने उसको देखा और जो कुछ अल्लाह तआला ने दोज़ख़ वालों के लिए तैयार किया था दोज़ख़ में उसको भी देखा, तो वह ऐसी नज़र आई कि उसका एक हिस्सा दूसरे पर बढ़-चढ़ रहा था। यह वापस आए और अर्ज़ किया कि मुझे आपके ग़लबे की क़सम! जो भी इसका ज़िक्र सुनेगा इसमें दाख़िल नहीं होगा। अल्लाह तआला ने उसको हुक्म दिया तो वह इच्छाओं और शहवतों में छुप गयी। फिर जब जिब्राईल ने उसकी तरफ़ पलटकर देखा तो अर्ज किया: मुझे आपके ग़लबे की क़सम! मुझे पक्का डर है कि इससे कोई भी नजात नहीं पा सकेगा, हर एक इसमें दाख़िल होगा।

(मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 332)

फ़ायदा: वाक़ई जन्नत और दोज़ख़ की हालत (स्थिति) ऐसी है मगर अल्लाह तआला ने अपने ऐसे हज़रात भी पैदा फ़रमाए हैं जो अल्लाह के फ़ज़्ल व तौफ़ीक़ से जन्नत वाले आमाल करके दोज़ख़ वाले आमाल से बचकर जन्नत में पहुँचेंगे। अल्लाह तआला हम सबको जन्नत में ऊँचे दर्जों पर फ़ाईज़ (पदासीन) फ़रमाएँ। आमीन

जन्नत और दोज़ख़ में ज़्यादातर कौनसे आमाल जाएँगे

हदीस: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: सबसे ज़्यादा जो चीज़ इनसान को दोज़ख़ में ले जाएगी वह दो जोफ़ हैं (जोफ़ उस चीज़ को कहते हैं जिसके अन्दर ख़ाली जगह हो यानी उसके अन्दर खोखलापन हो (1) शर्मगाह (2) मुँह। और ज़्यादातर जो चीज़ इनसान को जन्नत में ले जाएगी वह (1) अल्लाह तआला से तक़्वा इख़्तियार करना और (2) अच्छे अख़्लाक़ का बर्ताव करना है। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 392)

फ़ायदा: यह बात ज़ाहिर है कि दोज़ख़ में लेजाने वाले जितने काम हैं उनको इनसान आसानी से बग़ैर किसी मुश्किल के कर लेता है, लेकिन जब किसी नेक काम की बारी आती है तो उसका करना

इनसान के सरकश नफ़्स को बहुत नागवार लगता है और सुस्ती और काहिली से भी आदमी अपनी आख़िरत को तबाह कर लेता है। अल्लाह तआला दीन पर पूरे तौर पर चलने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, आमीन।

जन्नत के हक़दार हज़रात की सिफ़ात

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और दौड़ो अपने रब की मग़फ़िरत की तरफ़ और (दौड़ो) जन्नत की तरफ़ (यानी ऐसे नेक काम अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़फ़िरत कर दे और तुम्हें जन्नत इनायत कर दे। वह जन्नत ऐसी है जिसकी वुसअत ऐसी) (तो) है (ही) जैसे सब आसमान व ज़मीन (और ज़्यादा का इनकार नहीं। चुनाँचे हक़ीक़त में ज़ायद होना साबित भी है और) वह तैयार की गयी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए। ये ऐसे लोग (हैं) जो कि (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं फ़राग़त में भी और तंगी में भी और ग़ुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों (की ग़लतियों) से दरगुज़र करने वाले हैं, और अल्लाह तआला ऐसे नेकोकारों को महबूब रखता है।

और (इन ज़िक्र हुए हज़रात के एतिबार से दूसरे दर्जे के मुसलमान) ऐसे लोग (हैं) कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं जिसमें दूसरों पर ज़्यादती हो या (कोई गुनाह करके ख़ास) अपनी ज़ात का नुक़सान करते हैं तो (फ़ौरन) अल्लाह तआला (की बड़ाई और अज़ाब) को याद कर लेते हैं फिर अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं (हक़ वाले बन्दों से भी और अल्लाह तआला से भी) और वे लोग अपने बुरे कामों पर जमे नहीं रहते।

और वे (इन बातों को) जानते भी हैं (कि हमने फ़लाँ गुनाह किया है उसकी तौबा ज़रूरी है) उन लोगों की जज़ा (बदला) बख़्शिश है उनके रब की तरफ़ से, और (जन्नत के) ऐसे बाग़ हैं कि उनके (दरख़्तों और मकानों के) नीचे से नहरें चलती होंगी। वे उनमें

हमेशा-हमेशा रहने वाले होंगे, और (यह) अच्छा इनाम और बदला है उन काम करने वालों का। (वह काम इस्तिग़फ़ार और सही अक़ीदे का रखना है, और इस्तिग़फ़ार का नतीजा यह है कि इनसान आईन्दा नेक कामों की पाबन्दी करे, जिसकी तरफ़ आयत के उस टुकड़े से इशारा हो रहा है जिसमें कहा गया है कि वे अपने बुरे कामों पर जमे नहीं रहते। यानी यह नहीं कि तौबा भी करते रहें और बुरे काम भी बराबर किए जायें, बल्कि तौबा और इस्तिग़फ़ार के बाद यक़ीनन अच्छे और नेक कामों की ज़्यादा पाबन्दी करते हैं)।

(सूरः आलि इमरान आयत 133-136)

खुलासा यह कि जन्नत में नेक लोगों का दाख़िला होगा जो मोमिन भी हों और मुसलमान भी। जो लोग काफ़िर होने की हालत में मरेंगे वो अपने अच्छे कामों का बदला दुनिया में ही वसूल करके मरेंगे। उनके लिए आख़िरत में उनके नेक कामों का कोई अज्र व सवाब नहीं मिलेगा।

जन्नत दुनिया की तमाम तकलीफ़ें भुला देगी

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क़यामत के दिन मुसलमानों में से सबसे ज़्यादा दुखियारे को पेश किया जाएगा और उसके लिए हुक्म होगा कि इसको जन्नत में एक बार घुमा दो। चुनाँचे एक बार जन्नत में घुमाया जाएगा। फिर उससे पूछा जाएगाः क्या तूने (दुनिया, क़ब्र वग़ैरह में) कभी कोई तकलीफ़ देखी थी? वह (जन्नत को देखने से अपने तमाम दुख-तकलीफ़ें भूल जाएगा और) कहेगा, कभी नहीं।

जन्नत की नेमत के मुक़ाबले में मोमिन के दुनियावी दुख कोई हैसियत नहीं रखते

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम या किसी और नबी ने अर्ज़ कियाः

ऐ बारी तआला! यह आपकी तरफ़ से क्या है? आपके दोस्त ज़मीन में जाने के ख़ौफ़ में रहते हैं (भूखे रहते हैं) क़त्ल होते हैं, सूली चढ़ाए जाते हैं, उनके हाथ-पाँव काटे जाते हैं, उनको खाने पीने को कुछ नहीं मिलता, और इसी तरह से उनपर बहुत-सी मुसीबतों के पहाड़ टूटते रहते हैं। जबकि आपके दुश्मन ज़मीन पर अमन में हैं, न वे क़त्ल होते हैं, न सूली चढ़ते हैं, न उनके हाथ-पाँव काटे जाते हैं, और जो चाहते हैं खाते हैं और जो चाहते हैं पीते हैं, और इसी तरह दूसरे ऐश व आराम में पलते हैं?

अल्लाह तआला ने जवाब में फ़रमाया: तुम मेरे इस बन्दे को जन्नत की तरफ़ ले चलो ताकि यह उन नेमतों को देखे कि उन जैसी कभी नहीं देखी गई। यह सामने चुने हुए आबख़ोरे (प्याले) देखे, बराबर-बराबर बिछे हुए ग़ालीचे देखे और जगह-जगह फैले हुए मख़्मल के निहालचे (छोटे-छोटे ख़ूबसूरत बिस्तर और गद्दे) देखे, हूरों को देखे, फलों को देखे, और ऐसे ख़िदमतगारों को देखे गोया कि वे मोती के दाने हैं ग़िलाफ़ के अन्दर।

फिर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: जब मेरे बन्दों की आख़िरी मन्ज़िल यह हो उनको दुनिया के दुख क्या तकलीफ़ पहुँचाएँगे। फिर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया (अब) मेरे (इस) बन्दे को (बाहर से) दोज़ख़ की सैर कराने के लिए ले चलो। तो उसको दोज़ख़ की तरफ़ लाया गया। उसके सामने दोज़ख़ की तरफ़ से एक गर्दन निकली (जिसको देख कर) यह बन्दा बेहोश हो गया। फिर जब होश आया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: जो कुछ मैंने अपने दुश्मनों को दुनिया में दिया है उससे उनको कोई नफ़ा न होगा, जब उनका अन्जाम यह हो। उस अल्लाह के बन्दे ने अर्ज़ किया (बिल्कुल उस काफ़िर को दुनिया की नेमतों का) कोई (फ़ायदा) नहीं।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 65-66)

जन्नत की बड़ाई

हदीस: हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते

हैं कि रसूले अकरम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला का वास्ता देकर सिर्फ़ जन्नत का सवाल किया जाए। (हादिल अर्वाह पेज 353)

फ़ायदाः अल्लाह तआला की ज़ात इतनी बड़ाई और शान वाली है जिसका कोई हद व हिसाब नहीं। उसका वास्ता देकर छोटी-मोटी चीज़ माँगने से हुज़ूर सल्ल0 ने मना फ़रमाया है। हाँ! अगर आपको उसके वास्ते से सवाल करना है तो फिर उसके वास्ते से जन्नत माँगी जाए। इस हदीस से जन्नत की अज़्मत (बड़ाई और शान) का पता चलता है।

नोटः इस हदीस में जो मना किया गया है वह कोई ज़रूरी और वाजिबी हुक्म नहीं। अल्लाह का वास्ता देकर दूसरी नेमतें और अज़ाब से पनाह भी माँगना जायज़ है। (अल्लामा सख़ावी का क़ौल यही है)।

जन्नत की मामूली-सी झलक भी क्या है?

हदीसः हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूले अकरम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जितना (एक क़तरा) कोई नाखुन (किसी चीज़ में डुबोकर) उठाता है उतना ही जन्नत में ज़ाहिर हो जाए तो उसकी वजह से तमाम आसमान ज़मीन के किनारे जगमगा उठें।

(तिर्मिज़ी हदीस 2528)

एक कोड़े जितना जन्नत का हिस्सा दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं के जनाब रसूले अकरम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम्हारे कोड़े की मिक़्दार (मात्रा) जितना जन्नत का हिस्सा दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है।

(तिर्मिज़ी हदीस 3292)

खुलासा: हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम जोज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि जन्नत की सिफ़तों और ख़ूबियों को सामने रखकर बतौर रग़बत और शौक़ दिलाने के जन्नत का नक़्शा कुछ इस तरह से खींचते हैं, लिखते हैं कि:

ऐसे बड़ी शान वाले घर की बड़ाई और महानता का क्या पूछिये जिसको अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने मुबारक हाथों से बनाया हो और अपने प्यारे बन्दों और आशिक़ों का ठिकाना बनाया हो। उसको अपनी रहमत, शान और रज़ामन्दी से पुर किया हो। उसकी नेमतों को बड़ी कामयाबी क़रार दिया हो। उसकी बादशाही को बड़ी हुकूमत बनाया हो। उसमें ख़ूबियों को पूरे तौर पर मख़्सूस कर दिया हो। उसको हर क़िस्म के ऐब, आफ़तों और नुक़सान से पाक कर दिया हो। अगर तू उसकी ज़मीन और ख़ाक का पूछे तो वह कस्तूरी और ज़ाफ़रान की है।

अगर तू उसकी छत का पूछे तो अर्शे रहमान की है।

अगर तू उसकी लिपाई के गारे का पूछे तो वह ख़ुशबूदार कस्तूरी का है।

अगर तू उसकी बजरी का पूछे तो वह मोतियों और जवाहिरों की है।

अगर तू उसकी इमारत का पूछे तो उसकी एक ईंट चाँदी की है और एक सोने की है।

अगर तू उसके पेड़ों का पूछे तो उनमें से हर एक पेड़ का तना सोने और चाँदी का है, न कि लकड़ी का।

अगर तू उसके फल का पूछे तो मटकों की तरह (बड़े-बड़े) हैं। झाग से ज्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

अगर तू उनके पत्तों का पूछे तो वे एक बारीक और नफ़ीस पोशाकों से भी कहीं ज़्यादा हसीन हैं।

अगर तू जन्नत की नहरों को पूछे तो कुछ नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायक़ा (स्वाद) बदस्तूर क़ायम है। और कुछ नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिए ख़ूब मज़ेदार होंगी और कुछ नहरें साफ़-सुथरे शहद की हैं।

अगर तू उनके खाने का पूछे तो वे मेवे हैं जौनसे चाहें पसन्द कर लेंगे और गोश्त होगा उड़ते जानवरों का, जिस क़िस्म का जी चाहेगा।

अगर तू उनके पीने की चीज़ों का पूछे तो वह 'तस्नीम' 'ज़न्जबील' और 'काफ़ूर' पियेंगे।

और अगर तू उनके बरतनों का पूछे तो वो सोने-चाँदी के होंगे, शीशे की तरह साफ़ (कि अन्दर की चीज़ें बाहर से नज़र आएँगी)।

अगर तू जन्नत के दरवाज़ों की चौड़ाई का पूछे तो दरवाज़ों के दो पटों के दरमियान चालीस साल का फ़ासला है उसपर एक दिन ऐसा आने वाला है कि हुजूम की वजह से भीड़ लगी होगी।

अगर तू जन्नत के पेड़ों की हवा चलने का पूछे तो वह अपने सुनने वालों को मस्त कर देगी।

अगर तू उनके साये का पूछे तो उनमें से एक ही पेड़ ऐसा है कि बहुत तेज़ (घुड़) सवार सौ साल तक उसके साये में चलता रहे तब भी उसको तय न कर सके।

अगर तू जन्नत की चौड़ाई और कुशादगी का पूछे तो सबसे कम दर्जे का जन्नती अपनी बादशाहत, तख़्त महलों और बाग़ों में दो हज़ार साल की मसाफ़त (दूरी) तक चलता रहे।

अगर तू जन्नत के ख़ेमों और कुब्बों का पूछे तो (उनमें का) हर एक ख़ेमा ऐसे ख़ोलदार मोती का बना हुआ है, तमाम ख़ेमों में मजमूई तौर पर उसकी लम्बाई साठ मील है।

अगर तू उसके बालाख़ानों और कोठियों का पूछे तो ये ऐसे बालाख़ाने हैं जो एक-दूसरे पर बनाए गये हैं और उनके नीचे नहरें बहती हैं।

अगर तू उनके महलों की बुलन्दियों का सवाल करे तो तू निकलने वाले सितारे को देख ले या आसमान के किनारे में ग़ुरूब होने वाले सितारे को देख ले जो मुश्किल से नज़र आता है।

अगर तू जन्नत वालों के लिबास को पूछे तो वह रेशम और

सोने का होगा।

अगर तू उसके बिछौनों का पूछे तो उनका स्तर मोटे रेशम का है जो बड़े सलीक़े से बिछाया गया है।

अगर तू उनकी मसहरियों का पूछे तो वे ऐसे तख़्त हैं जिनपर सोने के नगीने से शाही मसहरियो की छत बनी हुई है, न तो उनमें कोई फटन है न सुराख़।

अगर तू जन्नत वालों की उम्र का पूछे तो वे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल पर 33 साल की उम्र में होंगे।

अगर तू जन्नत वालों के चेहरों का और उनके हुस्न का पूछे तो वो चाँद की शक्ल के होंगे।

अगर तू उनके गीत का पूछे तो उनकी बीवियाँ 'हूरे-ऐन' उम्दा आवाज़ में गायेंगी और उनसे ज़्यादा ख़ूबसूरत आवाज़ फ़रिश्तों और अम्बिया किराम अलैहिमुस्सलाम की होगी और उन सबसे उम्दा और बुलन्द रब्बुल-आलमीन के ख़िताब का हुस्न होगा।

अगर तू जन्नत वालों की सवारियों का पूछे जिनपर वे सवार होकर एक-दूसरे की मुलाक़ात और ज़ियारतें करेंगे तो वे बहुत ही शान व शौकत और आला दर्जे की सवारियाँ होंगी जिनको अल्लाह तआला ने अपनी मर्ज़ी से जिस चीज़ से चाहा पैदा किया है, ये जन्नत वाले उनपर सवार होकर जहाँ चाहेंगे जन्नतों की सैर करेंगे।

अगर तू उनके ज़ेवर और लिबास की सजावट व सिंघार का पूछे तो कंगन तो सोने और आला दर्जे के मोतियों के होंगे और सरों पर शाही ताज होंगे।

अगर तू जन्नत वालों के छोकरों का पूछे तो वे ऐसे हमेशा रहने वाले ऐसे लड़के होंगे गोया कि वे (अपने हद से ज़्यादा हुस्न व ख़ूबसूरती में) हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।

अगर तू उनकी दुल्हनों और बीवियों का हाल पूछे तो वे नौजवान औरतें होंगी हम-उम्र, जिनके अंगों में जवानी की चमक घूमती होगी। गुलाब और सेब जैसे गाल होंगे, तरतीब से लगे हुए मोमियों की

शक्ल दाँतों में समाई होगी, कमर नर्म व नाज़ुक होगी, जब चेहरे का जलवा दिखाए तो सूरज उसके मुखड़े की चमक-दमक में लहलहता हो, जब मुस्कुराए तो बिजली उसके दाँतों से चमक उठे। जब तेरा उससे हैरानी और मदहोशी में सामना हो तो दो ख़ूबसूरत सितारों के मुक़ाबले में तू जो जी में आए कह सकता है।

जब वह जन्नती से कलाम करेगी तो तू दो महबूबों (प्यार व मुहब्बत करने वालों) की आपसी बातचीत के सम्बन्ध में क्या गुमान करता है? जन्नती उस जन्नती दुलहन के गाल के बीच में देखेगा जैसे साफ़-सुथरे आईने में किसी चीज़ को देखा जाता है। गोश्त के अन्दर से हड्डी के अन्दर का हिस्सा भी नज़र आएगा, न तो उसके सामने उसकी खाल पर्दा बनेगी न उसकी हड्डी और न ही उसकी पोशाकें। अगर (जन्नत की यह औरत) ज़मीन पर झाँक ले तो आसमान व ज़मीन की फ़िज़ा खुशबू से भर दे और तमाम मख़्लूक़ात की ज़बानों को कलिम-ए-तकबीर और तस्बीह पुकारने पर बे-साख़्ता मजबूर कर दे और उसकी वजह से दुनिया के दोनों किनारे सज जाएँ और अपने ग़ैर के देखने से तमाम आँखों को बन्द करा दें। और हाँ! सूरज की रोशनी को ऐसी मांद (फीकी और धूमिल) कर दे जिस तरह से सूरज सितारों की रोशनी को फीका कर देता है, और पूरी ज़मीन पर बसने वाले सब अल्लाह तआला पर ईमान ले आएँ। उसके सर का दुपट्टा दुनिया और इसकी सब चीज़ों से ज़्यादा क़ीमती है और उससे सोहबत तमाम ख़्वाहिशों से ज़्यादा लड़ पाने वाली है, जितना ज़मानों पर ज़माने बीतते जाएँगे वह हुस्न व ख़ूबसूरती में तरक़्क़ी करती चली जाएगी। लम्बा ज़माना गुज़रने पर भी उसकी मुहब्बत और मिलाप में बढ़ोतरी होती चली जाएगी। वह गर्भ, पैदाईश, माहवारी व निफ़ास (बच्चे की पैदाइश के बाद आने वाले ख़ून) से पाक होगी। नज़ला, बलग़म, पेशाब पाख़ाना और दूसरी गन्दगीयों से भी पाक होगी। उसकी जवानी न जाएगी, उसका लिबास पुराना न होगा, न उसका हुस्न बूढ़ा होगा न उसकी सोहबत की चाश्नी से दिल भरेगा। उसकी

(नाज़ व अदा वग़ैरह) की निगाह बस अपने शौहर की तरफ़ ही रहेगी चुनाँचे वह किसी ग़ैर का लालच न करेगी। ऐसे ही जन्नती मर्द की निगाह (और चाहत) उस हूर की तरफ़ रहेगी और यही उसकी ख़्वाहिश की इन्तिहा होगी कि अगर यह उसकी तरफ़ नज़र करे तो उसको खुश कर देगी।

अगर हुक्म करे तो मानेगी, अगर उससे दूर जाए तो उसकी हिफ़ाज़त करेगी। यह ऐसी है जिसको किसी और इनसान और जिन्न ने हाथ न लगाया होगा। जब जन्नती उस हूर को देखेगा। उसका दिल उसके दीदार की लज़्ज़त और मस्ती से उछल-उछल जाएगा और जब वह जन्नतियों से बात करेगी तो उसके कानों में अल्फ़ाज़ का रस घोल देगी।

और अपना जलवा दिखाएगी तो महल और बालाख़ाने को चमका देगी।

अगर तू उनकी उम्र को पूछे तो हम-उम्र और जवानी की सब से मुनासिब उम्र में होगी।

अगर तू उनके हुस्न और ख़ूबसूरती का हाल पूछे तो क्या तूने सूरज और चाँद देखा है?

अगर तू आँख की सियाही का पूछे तो साफ़-सुथरी सफ़ेदी में ख़ूबसूरत सियाही है। ख़ूबसूरत गहराई में।

अगर तू उनके क़दों का पूछे तो क्या तूने ख़ूबसूरत टहनियाँ देखी हैं?

अगर तू उनके रंग-रूप का पूछे तो गोया कि वे याक़ूत व मर्जान (यानी क़ीमती हीरों और मोमियों की तरह) हैं।

अगर तू उनके जिस्म की ज़ाहिरी बनावट का पूछे तो वे औरतें हैं गोरी रंगत वाली, जिनमे ख़ूबियाँ और ख़ूबसूरतियाँ सब जमा कर दी गयी हैं। उनको ज़ाहिरी व बातिनी ख़ूबसूरती से संवारा गया है। वे दिलों की बहार हैं, आँखों की ठंडक हैं।

अगर तू उसके साथ ऐश व मस्ती और मुबाशरत (सोहबत

करने) की लज़्ज़त का और वहाँ के मज़े का पूछे तो वे प्यार करने वाली, शौहरों पर जान देने वाली, शौहरों के हुक़ूक़ को बेहतरीन ढंग से उसी तरह से अदा करने वाली हैं जिस ज़ौक़ से वे चाहत करेंगे।

तुम्हारा उस औरत के बारे में क्या ख़्याल है जब शौहर के सामने मुस्कुराए और अपनी मुस्कुराहट से जन्नत जगमगा डाले। अगर वह एक महल से दूसरे महल में जाए तो तू यह कहे कि यह (हुस्न का) एक सूरज है जो अपने आसमान के एक बुर्ज में दाख़िल हुआ है। जब उससे बातचीत की जाएगी तो उसकी बात की सुन्दरता पर क़ुरबान अगर वह सीने से लगाए तो उससे मिलने की लज़्ज़त और गले मिलने की क्या इन्तिहा है। अगर वह सुरीली आवाज़ से गाना गाएगी तो आँखों और कानों को लुभा देगी। अगर वह मुहब्बत-प्यार से मेलजोल करेगी और अपने से फ़ायदा पहुँचाएगी, तो ऐसी प्यार भरे ताल्लुक़ वाली और फ़ायदा पहुँचाने वाली को ख़ुश-आमदीद। अगर वह बोसा (चुंबन) दे तो उसके बोसे से ज़्यादा कोई चीज़ दिलपसन्द नहीं। अगर उससे सोहबत की जाएगी तो उससे ज़्यादा लज़्ज़त और मस्ती कहीं नहीं होगी।

यह तो जन्नत और उसकी हूरों का हाल रहा, अगर तू 'यौमे मज़ीद' का पूछे और परवर्दिगारे आलम की ज़ियारत और चेहरे का तो उसकी कोई सिफ़त और शान बयान नहीं की जा सकती यह चीज़ तो सिर्फ़ देखने से ताल्लुक़ रखती है। इसका बयान 'अल्लाह के दीदार' के बयान में मुलाहज़ा फ़रमाएँ।

जन्नत कहाँ है?

(1) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: नबी करीम सल्ल0 ने (वह्य लाने वाले) फ़रिश्ते को एक और बार भी (असल सूरत में) देखा 'सिद्रतुल-मुन्तहा' के पास, उसके पास 'जन्नत-मावा' है। (सूरः नज्म आयत 13-15)

फ़ायदा: 'सिद्रतुल-मुन्तहा' 'सिद्रह' बेरी के पेड़ को कहते हैं

और 'मुन्तहा' के मायने हद और इन्तिहा के हैं। चुनाँचे हदीसों में आया है कि यह सातवें आसमान पर एक बेरी का पेड़ है, अल्लाह की तरफ़ से जो अहकाम और रिज़्क़ वग़ैरह आते हैं वे पहले 'सिद्रतुल-मुन्तहा' तक पहुँचते हैं फिर वहाँ से फ़रिश्ते ज़मीन पर लाते हैं। इसी तरह से जो आमाल ऊपर जाते हैं वे भी सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुँचते हैं, फिर वहाँ से ऊपर उठा लिए जाते हैं। दुनिया में इसकी मिसाल डाकख़ाने जैसी समझ लें कि ख़तों का आना-जाना वहाँ से होता है। इसी मुक़ाम (स्थान) की तरफ़ इशारा करते हुए अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया "अिन्दहा जन्नतुल् मअ्वा" यानी उसके पास ही "जन्नतुल्-मअ्वा" है। "मअ्वा" के मायने रहने की जगह के हैं। चूँकि जन्नत नेक बन्दों के रहने की जगह है इसलिए उसे जन्नतुल्-मअ्वा फ़रमाया है। (बयानुल् क़ुरआन 11-72)

(2) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और तुम्हारा रिज़्क़ और जो तुम से (जन्नत का) वायदा किया गया, आसमान में (ऊपर) है। (सूरः ज़ारियात आयत 22)

मशहूर ताबिई मुफ़स्सिर हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि 'व मा तू-अदून' से जन्नत मुराद लेते हैं और फ़रमाते हैं कि हमने इस आयत की तफ़सीर के बारे में आलिमों से यही पढ़ा है।

(हादिल अरवाह पेज 96)

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह तआला की मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा शान वाले नबी हज़रत अबुल-क़ासिम (यानी हुज़ूरे पाक) सल्ल0 से सुना है कि आपने इरशाद फ़रमायाः "बेशक जन्नत आसमान में है"।

(हादिल् अर्वाह पेज 96)

जन्नत आसमान में है

फ़ायदाः अरबी में 'समा' ऊपर को भी कहते हैं। चूँकि क़यामत के बाद आसमान व ज़मीन बाक़ी नहीं रहेंगे। जन्नत वाले बुलन्द दर्जों

में होंगे और दोज़ख़ वाले हद से ज़्यादा पस्ती में होंगे, चुनाँचे विभिन्न रिवायत को जमा करने से यही मालूम होता है कि जन्नत ऊपर होगी और दोज़ख़ नीचे होगी, मगर जन्नत वाले दोज़ख़ियों को जब चाहेंगे देख सकेंगे। (इमदादुल्लाह अनवर)

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हुए सुनाः

तुर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जे हैं उनमें से हर दो दर्जों के बीच आसमान व ज़मीन के दरमियानी फ़ासले जितना फ़ासला है, और उन सब दर्जों में से आला दर्जा फ़िरदौस है। अर्श उस पर होगा।

(सिफ़तुल् जन्नत इब्ने कसीर पेज 38)

फ़ायदाः जन्नत के दर्जे ऊपर को होंगे इसलिए जन्नतुल-फ़िरदौस वाला दर्जा सबसे ऊपर और अर्श के नीचे होगा। इसलिए जब इनसान अल्लाह तआला से दुआ करे तो नबी करीम सल्ल० इरशाद फ़रमाते हैं कि वह अल्लाह से जन्नतुल-फ़िरदौस का सवाल करे।

फ़ायदाः एक हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि कुरआन के हाफ़िज को अल्लाह तआला कयामत के दिन इरशाद फ़रमाएँगेः

तर्जुमाः कुरआने पाक की तिलावत करते जाओ और ऊपर चढ़ते जाओ, तुम्हारी वही मन्जिल होगी जहाँ तुम आख़िरी आयत तिलावत करोगे। (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 1464)

फ़ायदाः कुरआन के हाफ़िज़ों के लिए बड़ी खुशख़बरी है कि कुरआन के हिफ़्ज़ की बरकत से उनको हुक्म होगा कि जन्नत में आला से आला मुक़ाम हासिल करने के लिए कुरआन की तिलावत करते चले जाओ। जहाँ तक तुम अपने हिफ़्ज़ से पढ़ सको वही तुम्हारा आख़िरी मुक़ाम होगा। इसलिए (इस किताब के) पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि जो हज़रात हाफ़िज़ नहीं हैं वे कुरआन पाक को हिफ़्ज़ करके जन्नत के आख़िरी मुक़ामात हासिल कर लें और जो हिफ़्ज़ कर चुके हैं वे उसको ख़ूब याद रखें ताकि वे उस मज़बूत हिफ़्ज़ के ज़रिये से जन्नत का आला मुक़ाम हासिल कर सकें। हमने

हिफ़्ज़ और कुरआन के हाफ़िज़ों की बड़ाई और शान के सम्बन्ध में एक जामे और शानदार किताब तैयार की है अगर पढ़ने वाले हज़रात उसका अध्ययन करें तो उम्मीद है कि उनको कुरआन के हिफ़्ज़ की फ़ज़ीलत हासिल होगी बल्कि अपने घर में, रिश्तेदारों और मिलने वालों को भी हिफ़्ज़ की दौलत नसीब होगी। इन्शा-अल्लाह।

जन्नत पैदा हो चुकी है

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः और मग़फ़िरत की तरफ़ दौड़ो जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से नसीब हो और (दौड़ो) जन्नत की तरफ़ (यानी ऐसे नेक काम करो जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़फ़िरत कर दें और तुमको जन्नत इनायत हो) और वह जन्नत ऐसी है जिसकी वुसअत ऐसी (तो) है (ही) जैसे सब आसमान और ज़मीन (और ज़्यादा का इनकार नहीं, चुनाँचे हक़ीक़त में ज़ायद होना भी साबित है, और) वह तैयार की जा चुकी है ख़ुदा से डरने वालो के लिए।

(सूरः अल इमरान आयत 133)

फ़ायदाः इस आयत के आख़िरी हिस्से में स्पष्ट रूप से मौजूद है कि जन्नत तैयार की जा चुकी है और सूरः 'नज्म' की आयत 13 से 15 तक की रू से तमाम अहले सुन्नत उलमा का मुत्तफ़िक़ा अक़ीदा है कि जन्नत बनायी जा चुकी है। (हादिल अरवाह पेज 35, 36, 40)

इस मज़मून की मुकम्मल तफ़सील दूसरे मज़ामीन (विषयों) की हदीसों में मौजूद है। पूरी किताब का अध्ययन करने से इसकी मालूमात हासिल की जा सकती हैं।

इमाम इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैंः जन्नत और दोज़ख़ अब भी मौजूद हैं। जन्नत नेकों के लिए तैयार की गयी है और दोज़ख़ काफ़िरों के लिए जैसा कि कुरआन करीम ने इसको स्पष्ट किया है और रसूलुल्लाह सल्ल0 की हदीसें सिलसिलेवार बयान की गयी हैं। यही अक़ीदा 'अहले सुन्नत वल्-जमाअत' का है। जो लोग यह कहते

हैं कि जन्नत और दोज़ख़ क़यामत के दिन पैदा होंगी उनको हदीसों की सही जानकारी नहीं है। (निहाया इब्ने कसीर)

हुज़ूर सल्ल0 ने मेराज में जन्नत को देखा है

हदीसः मैं हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं जन्नत मे चल रहा था कि अचानक एक नहर पर पहुँचा जिसके दोनों किनारे ख़ोलदार मोती के क़ुब्बे थे। मैंने पूछा यह क्या है? (हज़रत जिब्राईल ने) फ़रमायाः यह वह कौसर (नहर) है जो आपको आपके परवर्दिगार ने अता फ़रमायी है।

(सिफ़तुल जन्नत पेज 189)

फ़ायदाः इस मसले में कम-ज़्यादा सैकड़ों दलीलें हदीसों में बयान की गयी हैं। हमने बतौर ख़ुलासा सिर्फ़ एक आयत और एक हदीस के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया है। जिन हज़रात को इस बारे में ज़्यादा तफ़सील को देखना मक़सद हो वे इन किताबों में देख सकते हैंः 'निहाया इब्ने कसीर जिल्द दो' 'अल्-बअस वन्नुशूर इमाम बैहक़ी' और 'हादिल् अर्वाह इब्ने क़य्यिम' और जन्नत के वजूद पर मुतफ़र्रिक़ दलीलें इस किताब में भी बहुत-सी जगह ज़िक्र की गयी हैं उनको देखा जा सकता है।

अब तो मुझे सिर्फ़ जन्नत चाहिये

अजीब क़िस्सा

मुहम्मद बिन सिमाक फ़रमाते हैं कि बनी उमय्या में मूसा इब्ने मुहम्मद बिन सुलैमान हाशमी सबसे ज़्यादा अय्याश और बे-फ़िक्र था। रात-दिन खाने-पीने पहनने और ख़ूबसूरत बाँदियों के साथ मशगूल होने और आराम-तलबी और शरीर पालने के सिवा कोई काम दीन व दुनिया का नहीं करता था। और शक्ल व सूरत के एतिबार से भी अल्लाह तआला ने उसे इस दर्जे अच्छा बनाया था कि देखने वाला बे-इख़्तियार सुब्हानल्लाह बोल उठता था। चेहरा ऐसा रोशन था जैसे चौदहवीं रात का चाँद।

ग़रज़ यह कि अल्लाह तआला ने उसको हर तरह की दुनिया की नेमत अता की थी, साल भर में तीन लाख तीन हज़ार दीनार (लगभग एक अरब इक्यासी करोड़ अस्सी लाख रुपये) की आमदनी थी। उसने बालाख़ाना (चौबारा) अपने रहने के लिए बना रखा था और उसके दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं। एक तरफ़ की ख़िडकी तो मेन रास्ते की तरफ़ खुलती थी जिससे शाम को बैठकर आने-जाने वालों की सैर करता था और दूसरी तरफ़ की ख़िड़की बाग़ में थी। उस तरफ़ बैठकर बाग़ से दिल बहलाता था, और उस बालाख़ाने के अन्दर एक हाथी दाँत का कुब्बा चाँदी की मेख़ों से जड़ा हुआ और सोने से मुलम्मा किया हुआ था, और उसमें एक बहुत ही क़ीमती तख़्त था, उसपर वह बैठता और बदन पर बहुत ही क़ीमती कपड़े और सरपर मोतियों का जड़ाऊ अमामा (पगड़ी) होता, इधर-उधर भाई-बिरादर और मज़लिस के यार-दोस्तों का जमघटा और पीछे ग़ुलाम व ख़ादिम खड़े रहते और कुब्बे से बाहर गाने वाली औरतें रहतीं।

कुब्बे में और उन औरतों में एक पर्दा लटका हुआ था। जब चाहता उन्हें देखता और जब राग को दिल चाहता तो पर्दा हिला देता

वे गाना शुरू कर देतीं, और जब बन्द करना चाहता तो पर्दे की तरफ़ इशारा कर देता वे चुप हो जाती थी। मतलब यह कि इसी काम में उसकी रात गुज़रती थी। रात को मजलिस के यार-दोस्त अपने-अपने घर चले जाते थे और जिसके साथ चाहता था तन्हाई का वक़्त गुज़ारता था और सुबह को शतरंज और नरद (चौसर की बाज़ी) खेलने वालों का अखाड़ा जमता। कोई उसके सामने बीमारी या मौत या किसी ऐसी चीज़ का जिससे ग़म पैदा हो ज़िक्र न करने पाता। अजीब-अजीब क़िस्से और वाक़िआत जिनसे हंसी और दिल्लगी हो उसके सामने होतीं और हर रोज़ नई-नई पोशाकें और तरह-तरह की खुशबूएँ इस्तेमाल करता, इसी हाल में उसे सत्ताईस साल गुज़र गए।

एक रात का क़िस्सा है कि वह अपने मामूल के अनुसार अपनी मस्ती में मशगूल था और कुछ हिस्सा रात का गुज़रा था कि एक बहुत ही दर्दनाक आवाज अपने गाने वालों की आवाज़ जैसी सुनी और उसके सुनने से उसके दिल पर एक चोट-सी पड़ी और अपनी उस तफ़रीह को छोड़कर उसकी तरफ़ ध्यान लगाया और गाने वालों को हुक्म दिया कि गाना बन्द करो और कुब्बों की खिड़की से वह आवाज़ सुनने के लिए मुँह निकाला। कभी तो वह आवाज़ कान में आ जाती और कभी न आती। अपने गुलामों को आवाज़ दी कि इस आवाज़ देने वाले को यहाँ ले आओ और खुद शराब के नशे में चूर था। गुलाम उसकी तलाश के लिए निकले और आहिस्ता-आहिस्ता उस तक पहुँचे। देखा कि एक जवान है, बहुत ही कमज़ोर है, उसकी गर्दन बिल्कुल सूख गयी है और रंग पीला और होंठ खुश्क, बिखरे बाल, पेट और पीठ दोनों एक और दो फटी पुरानी चादरें ओढ़े हुए नंगे पाँव मस्जिद में खड़ा अपने पाक परवर्दिगार के सामने मुनाजात कर रहा है।

उन्होंने उसे मस्जिद से निकाला और ले गये और कुछ बातचीत उससे न की। उसे लेजाकर सामने खड़ा कर दिया। उसने देखकर पूछा यह कौन है? सबने कहा, हुज़ूर यह वही आवाज़ वाला है जिसकी

आवाज़ आपने सुनी। पूछा यह कहाँ था? कहा कि मस्जिद में खड़ा हुआ नमाज़ में क़ुरआन पढ़ता था। उससे पूछा तुम क्या पढ़ रहे थे। कहा, मैं अल्लाह का कलाम पढ़ रहा था। कहा, ज़रा हमको भी सुनाओ, उसने अऊज़ु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह के बाद सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन की आयत नम्बर बाईस से लेकर अट्ठाईस तक पढ़ीं जिनका तर्जुमा यह है।

तर्जुमाः यानी बेशक बन्दे आराम में होंगे। तख़्तों पर बैठे (सैर) देख रहे होंगे। तू पहचानेगा उनके चेहरों पर ताज़गी नेमत की। उनको पिलाई जाएगी ख़ालिस शराब जो मुहर बन्द होगी। उसकी मुहर (बजाए मोम के) मुश्क की होगी। और उस शराब में रग़बत में रग़बत करने वालों को चाहिये कि रग़बत करें और उसमे तस्नीम मिली हुई होगी। वह एक चश्मा है जिससे मुक़र्रब (अल्लाह के ख़ास और क़रीबी) बन्दे पियेंगे।

ये आयतें पढ़कर और तर्जुमा सुनाकर उसने कहाः अरे धोखे में पड़े हुए वहाँ की नेमतों का क्या बयान है। वह कहाँ और तेरा यह कुब्बा और मजलिस कहाँ वहाँ तख़्त हैं उनपर बिछौने ऊँचे-ऊँचे होंगे और उनके स्तर इस्तबूरक़ के होंगे और सब्ज़ क़ालीनों और क़ीमती बिछौनों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे। और वहाँ दो नहरें बहती हैं। उसमें हर मेवे की दो क़िस्में हैं, न वहाँ के मेवे कभी ख़त्म होंगे न उनसे कोई जन्नती को रोकने वाला होगा। जन्नत की ऐश में रहेंगे और वहाँ कोई बेहूदा बात न सुनेंगे और उसमें ऊँचे-ऊँचे तख़्त हैं और आबख़ोरे (प्याले) रखे हुए हैं और तकिये एक लाईन में रखे हुए हैं और मख़्मली निहालचे (छोटे-छोटे ख़ूबसूरत बिस्तर और गद्दे) बिखरे पड़े होंगे। हमेशा साये और चश्मों में रहेंगे और जन्नत के फल हमेशा रहने वाले हैं। यह सब तो मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के लिए है।

अब काफ़िरों की सुनिये! उनके लिए आग है और आग भी ऐसी कि जिसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे और अज़ाब कभी हल्का न किया जाएगा। उसी में ना-उम्मीद पड़े रहेंगे और जब उन्हें मुँह के बल

घसीटेंगे तो उनसे कहा जाएगा: यह अज़ाब चखो, यानी उन पर तरह-तरह का अज़ाब होगा।

जब उस हाशमी ने यह सुना तो बे-इख़्तियार उठा और उस जवान से लिपटकर चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा और अपने सब लोगों से कहा कि मेरे पास से चले जाओ और खुद उस जवान को लेकर घर के सहन में आकर एक बोरिये पर बैठ गया और अपनी जवानी के बेकार जाने पर अफ़सोस और हसरत और नफ़्स को मलामत करता रहा और वह जवान नसीहत करता रहा। सुबह तक दोनों इसी में लगे रहे। हाशमी ने अल्लाह तआला से अहद किया कि कभी हक़ तआला की नाफ़रमानी न करूँगा और अपनी तौबा को उसने सबके सामने ज़ाहिर कर दिया और मस्जिद में बैठ रहा। हर वक़्त अल्लाह की इबादत में रहने लगा और तमाम सोना-चाँदी कपड़े बेचकर सदक़ा कर डाले और तमाम नौकर-चाकर अलग कर दिए। और हड़पी हुई तमाम जायदादें उनके मालिकों को वापस कर दीं और कुल जायदाद, बाँदी गुलाम बेच डाले और जिसको आज़ाद करना चाहा आज़ाद कर दिया और मोटे कपड़े पहन लिए और जौ की रोटी खाने लगा।

फिर तो यह हालत हो गयी कि सारी रात जागकर गुज़ारता। दिन को रोज़ा रखता और बड़े-बड़े नेक आदमी उसकी ज़ियारत को आते और उससे कहते कि भाई अपने नफ़्स को इतनी सख़्ती में न रख, कुछ आराम भी दे। अल्लाह तआला करीम व रहीम है, थोड़े से काम की भी क़द्रदानी फ़रमाता है। वह जवाब देता भाईयो! मैंने बड़े-बड़े गुनाह किए हैं। रात-दिन अल्लाह की नाफ़रमानी में रहा हूँ और यह कहकर ख़ूब रोता।

आख़िरकार पैदल नंगे पाँव और बदन पर एक बहुत मोटा कपड़ा पहने हुए हज के लिए गया और सिवाए एक प्याले और तोशेदान के कोई चीज़ साथ न ली। इसी हालत में चलते-चलते मक्का को पहुँचा और हज किया और वहीं रहा और मर गया। मक्का में रहने के ज़माने में यह हालत थी कि रात को हजरे-अस्वद के पास

जाकर रोता चिल्लाता और कहता कि ऐ मेरे परवर्दिगार! ऐ मेरे मौला! मेरी सैकड़ों तन्हाईयाँ ग़फ़लत में गुज़र गईं और कितने ही साल गुनाहों में बरबाद हो गए। ऐ मेरे मौला! मेरी नेकियाँ तो सब जाती रहीं और हसरत व नादामत बाक़ी रह गई। अब जिस दिन आपसे मिलूँगा और मेरा आमालनामा खोला जाएगा और दफ़्तर के दफ़्तर गुनाहों और बुराईयों के ज़ाहिर होंगे, उस रोज़ क्या होगा और किस तरह मुँह दिखाऊँगा। ऐ मेरे मौला! अब मैं तेरे सिवा किससे कहूँ और किसकी तरफ़ दौड़ूँ? किस पर भरोसा करूँ? मेरे मौला! मैं इस क़ाबिल तो हूँ नहीं कि जन्नत का सवाल करूँ मैं तो आपके असीम दरिया-ए-रहमत और आपके फ़ज़्ल व अता के बादल से यह सवाल करता हूँ कि मेरी ख़ताओं को बख़्श दीजिए। आप ही मग़फ़िरत वाले हं।

(रौज़ुर्रयाहीन मिन हिकायातिस्सालिहीन इमाम याफ़ई यमनी)

माँ के बदले में जन्नत के महल की ख़रीदारी

जाफ़र बिन सुलैमान रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बार मेरा और मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि का बसरे में गुज़र हुआ। फिरते-फिरते एक आलीशान महल पर पहुँच। अन्दर गए तो देखा कि उसपर मिस्त्री और मज़दूर लगे हुए हैं और एक तरफ़ एक बहुत ही ख़ूबसूरत नौजवान हमने कभी ऐसा हसीन शख़्स न देखा था, उस महल के बनाने का इन्तिज़ाम कर रहा है और राजगीरों और मज़दूरों से कह रहा है कि फ़लाँ-फ़लाँ काम इस तरह करो। यह देखकर मुझसे मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, देखते हो यह जवान कैसा हसीन है और इस मकान के बनाने का कितना इच्छूक है। मुझ तो इसकी हालत पर रहम आता है और जी यह चाहता है कि इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ करूँ कि इसको अपना मक़बूल और ख़ालिस बन्दा बना ले। क्या अजब है कि यह नौजवान जन्नत के जवानों में से हो जाए।

हम इस बातचीत से निपट कर उस जवान के पास गए और

सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया मगर मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि को उसने न पहचाना। कुछ देर बाद जब उसने पहचाना तो अदब के लिए खड़ा हो गया और बहुत आव भगत की और अर्ज़ किया: हज़रत कैसे तकलीफ़ फ़रमाई? मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि इस महल में तुम्हारा किस क़द्र माल ख़र्च करने का इरादा है। कहा कि एक लाख दिरहम। मालिक रहमतुललाहि अलैहि ने कहा यह सब माल तुम मुझे नहीं दे सकते कि मैं इसे मौक़े पर ख़र्च करूँ और तुम्हारे लिए इससे बेहतरीन महल का ज़िम्मेदार हो जाऊँ और सिर्फ़ महल ही नहीं बल्कि उसके साथ उसका सामान, बाँदी गुलाम, ख़ादिम, सुर्ख़ याक़ूत के कुब्बे ख़ेमे सब होंगे और महल की मिट्टी ज़ाफरान और मुश्क की होगी और तेरे इस महल से पायदार और बहुत बड़ा होगा। हमेशा-हमेशा क़ायम रहेगा और उसको किसी बनाने वाले का हाथ न लगा होगा सिर्फ़ अल्लाह तआला के 'कुन' (हो जा) फ़रमाने से बना होगा।

उस जवान ने कहा आप मुझे आज रात की मोहलत दीजिए और कल सुबह फिर तशरीफ़ लाईए। मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, बहुत बेहतर। जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि को तमाम रात उस जवान का ख़्याल रहा। जब सुबह होने के क़रीब हुई तो अल्लाह तआला से उसके लिए ख़ूब दुआ फ़रमाई और सुबह ही हम दोनों फिर उसके पास पहुँचे देखा कि जवान महल के दरवाज़े पर बैठा है। जब उसने मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा बहुत खुश हुआ और कहा कल का वायदा भी याद है? मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, हाँ याद है। क्या तुम ऐसा करोगे? कहा हाँ ज़रूर! यह कहकर उसने माल के तोड़े मंगाए और उनके सामने रख दिए और दवात, क़लम और काग़ज़ मंगाया। मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने उस काग़ज़ पर इस मज़मून का इक़रार नामा लिख दिया।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! यह तहरीर इस ग़रज़ से है कि

मालिक बिन दीनार फ़लाँ बिन फ़लाँ के लिए अल्लाह तआला से एक ऐसा-ऐसा महल इतनी रक़म के मुआवज़े में उस महल के दिलाने का ज़ामिन (गारंटी लेने वाला) हो गया है। और अगर उस महल में इससे ज़्यादती हो तो वह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है और इस माल के मुआवज़े में मैंने इसके लिए एक और महल जन्नत में इसके महल से ज़्यादा बड़ा ख़रीद लिया है, और वह महल अल्लाह तआला के साये में और नज़दीक होगा। फ़क़त।

यह लिखकर उस जवान के हवाले किया और वह सब माल ले आए और दिन भर में सबका सब बाँट दिया। शाम को मालिक रहमतुललाहि अलैहि के पास रात के गुज़ारने के अलावा कुछ न था। इस बात को चालीस दिन न गुज़रे थे कि एक दिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि सुबह को नमाज़ से फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अचानक मेहराब पर जो नज़र पड़ी तो वही काग़ज़ जो उन्होंने जवान को लिखकर दिया था रखा हुआ है। खोलकर देखा तो उसके पीछे पीछे बिना सियाही के यह लिखा हुआ है कि:

"यह अल्लाह अज़ीज़ हकीम की रतफ़ से मालिक बिन दीनार के लिए बराअत और ख़त से फ़ारिग़ होने के लिए है। जिस महल की तुमने हमारे ऊपर ज़मानत की थी वह हमने उस जवान को दे दिया। सत्तर हिस्से और ज़्यादा दे दिया। मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि यह देखकर हैरान रह गए और उसे लेकर उस जवान के घर गए। देखा तो उसका दरवाज़ा सियाह है और घर से रोने की आवाज़ आ रही है। हमने जवान का हाल पूछा तो मालूम हुआ कि वह कल मर गया है। फिर हमने नहलाने वाले को बुलाकर पूछा कि क्या तुमने उस जवान को ग़ुस्ल दिया है? उसने कहा, हाँ! मैंने ही दिया है। मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने पूछा, अच्छा बयान करो उसकी मौत किस तरह हुई। कहा, उसने मरने से पहले मुझसे यह कहा जब मैं मर जाऊँ मुझको तुम ग़ुस्ल व कफ़न देना और एक पर्चा दिया और यह कहा कि इस पर्चे को कफ़न में रख देना। मैंने उस पर्चे को कफ़न में रख दिया

और उसे दफ़न कर दिया। मालिक ने वह पर्चा जो मेहराब से मिला था निकाल कर दिखाया। वह देखकर फ़ौरन बोल उठा कि ख़ुदा की क़सम! वह यही पर्चा था जो मैंने कफ़न के अन्दर रख दिया था। उसके बाद एक जवान खड़ा हुआ और मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि से कहा मैं आपको दो लाख दिर्हमत देता हूँ आप मेरे लिए भी ऐसे महल के कफ़ील (ज़मानती) हो जाईए। फ़रमाया, हो गया जो होना था, वह बात गयी। अल्लाह तआला जो चाहता है वह करता है। उसके बाद मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि जब कभी उस जवान को याद करते थे, रोते थे और उसके लिए दुआ फ़रमाते थे। (रौज़ुर्रयाहीन)

ज़िन्दगी में जन्नत के घर की इत्तिला

एक शख़्स कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने मुझसे कहा कि मैंने ख़्वाब देखा है कि एक शख़्स मुझसे कह रहा है कि हम तेरा घर बना चुके हैं अगर तू उसे देखेगा तो तेरी आँखें ठंडी होंगी और एक हफ़्ते के अन्दर-अन्दर उसे साफ़ करने और धूनी देने का मैंने हुक्म दे दिया है और उस मकान का नाम दारुस्सुरूर है। तू ख़ुश हो जा। रिवायत करने वाला कहता है कि जब सातवाँ दिन आया और वह जुमे का दिन था। वह शख़्स सवेरे-सवेरे उठकर वुज़ू के लिए नहर पर गया। नहर में उतरना चाहता था कि पाँव फिसला और नहर में डूब गया। नमाज़ के बाद हमने उसे निकाल कर दफ़नाया। तीन दिन के बाद मैंने उसे ख़्वाब में देखा कि सब्ज़ रेशम का लिबास पहने हुए था। मैं ने उससे हाल पूछा तो कहने लगा कि हक़ तआला ने मुझे दारुस्सरूर में उतारा जो मेरे लिए तैयार फ़रमाया था। मैंने पूछा वह कैसा मकान है? उसकी कुछ तारीफ़ तो करो। कहा, अफ़सोस उसकी कोई तारीफ़ कर ही नहीं सकता। काश! मेरे बाल-बच्चों को भी मालूम होता कि उनके लिए भी मेरे क़रीब मकान बनाए गए हैं जिनमें हर ख़्वाहिश की चीज़ मौजूद है। मरे भाईयों के लिए भी है और तू भी उन्हीं लोगों में है। रेहाना रहमतुल्लाहि अलैहि के शेर हैं:

او امل ان افوز بخير دار		الهى لا تعذبنى فانى
فيا طوبى لهم فى ذى الجوار		وانت مجاور الابرار فيها

तर्जुमाः इलाही! तू मुझे अज़ाब न कर क्योंकि मैं जन्नत में पहुँचने की उम्मीदवार हूँ तू जिस जन्नत में नेकों का पड़ोसी है जिनको ऐसा पड़ोसी मिले वे बड़े ही खुशनसीब हैं। (रौजुर्रयाहीन)

जन्नत की इत्तिला हो तो शौक़ से जान निकल जाए

नक़ल है कि हज़रत यहया इब्ने ज़करिया अलैहिस्सलाम ने एक रात पेट भरकर जौ की रोटी खाई और अपने विर्द और वज़ीफ़ों के बिना सो गए। हक़ तआला ने उनकी तरफ़ "वह्य" की (यानी पैग़ाम भेजा) कि ऐ यहया! क्या तुमने मेरे दरबार से अच्छा कोई और दरबार पा लिया है, और मेरी संगत से कोई अच्छी और संगत पा ली है? क़सम है मेरी इज़्ज़त व जलाल की अगर तुम्हें जन्नतुल-फ़िरदौस की ज़रा भी इत्तिला हो जाए तो तुम्हारा जिस्म पिघला जाए और रूह जन्नतुल-फ़िरदौस के शौक़ में निकल जाए, और अगर जहन्नम की कुछ ख़बर हो जाए तो तुम्हारी आँखों से आँसू के साथ पीप निकले और बजाए टाट के लोहा पहनने लगो। कुछ लोगों के शे'र हैं।

ان من يطلب الكثير فقير		اقتنع بالقليل يحيى غنيا
لمن يطلب النجاة كثير		ان خبز الشعير بالماء والملح

तर्जुमाः थोड़े पर सब्र कर, अमीराना ज़िन्दगी बसर होगी। क्योंकि ज़्यादा का इच्छुक हर वक़्त मोहताज और फ़क़ीर रहता है। नमक के पानी के साथ जौ की रोटी नजात चाहने वाले के लिए बहुत है। (रौजुर्रयाहीन)

एक मुल्क ऐसा भी है जो वीरान हो और न उसका मालिक मरे

पहले ज़माने में एक बादशाह ने एक शहर बसाया और बहुत ही

ख़ूबसूरत बनवाया और उसको बेहतरीन बनाने और सजाने में बहुत-सा माल ख़र्च किया। फिर उसने खाना पकावाकर लोगों की दावत की और कुछ आदमी दरवाज़े पर बिठलाए कि जो निकले उससे पूछा जाए कि इस मकान में कोई कमी तो नहीं है। चुनाँचे सबने यही जवाब दिया कि इसमें कोई कमी नहीं है। आख़िर में कुछ लोग कम्बल ओढ़े हुए आए उनसे भी सवाल किया गया कि तुमने इसमें कोई ऐब देखा? कहा, दो कमियाँ हैं। पासबानों ने उन्हें रोक लिया और बादशाह को ख़बर की। बादशाह ने कहा कि मैं एक ऐब पर भी राज़ी नहीं हूँ उन्हें हाज़िर करो। पासबानों ने उन कम्बल वालों को बादशाह के सामने हाज़िर किया। बादशाह ने पूछा कि वे दो ऐब क्या हैं? कहने लगे कि यह मकान उजड़ जाएगा और इसका मालिक मर जाएगा। बादशाह ने सवाल किया कि क्या ऐसा भी कोई मकान है कि कभी वीरान न हो न उसका मालिक मरे? उन्हों ने कहा, हाँ है, जन्नत और उसकी नेमतों का ज़िक्र किया और शौक़ दिलाया, और दोज़ख़ और उसके अज़ाब से डराया और हक़ तआला की इबादत के लिए तरग़ीब दी (प्रेरित किया) उसने उनकी दावत क़बूल कर ली और अपना मुल्क छोड़कर भाग गया और अल्लाह तआला से तौबा की। (रौज़ुर्रयाहीन)

एक हूर और उसकी हसीन बाँदियाँ

शैख़ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बार हमने जिहाद की तैयारी की। मैंने अपने साथ वाले साथियों से कहा कि जिहाद के फ़ज़ाईल में हर एक शख़्स दो-दो आयतें पढ़ने के लिए तैयार हो जाए। तो एक शख़्स ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः यानी बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जान और माल इस क़ीमत पर ख़रीदे कि उनके लिए जन्नत है।

(सूरः तौबा आयत 111)

यह आयत सुनकर एक लड़का जो चौदह-पन्द्रह साल की उम्र का था और उसका बाप बहुत-सा माल छोड़कर मर गया था, खड़ा

हुआ और कहाः ऐ अब्दुल वाहिद! क्या अल्लाह तआला ने मुसलमानों की जान व माल जन्नत के बदले में ख़रीद ली? शैख़ ने फ़रमाया, हाँ बेशक उसने ख़रीदी। उसने कहा तो मैं गवाह करता हूँ कि मैंने अपना माल व जान जन्नत के बदले में बेच दी। मैंने कहा देख ख़ूब सोच-समझ ले। तलवार की धार बड़ी तेज़ होती है और तू बच्चा है। मुझे डर है कि शायद तुझसे सब्र न हो सके और तंग आ जाए। उसने जवाब में कहा या शैख़! मैं अल्लाह से मामला करूँ और फिर तंग आ जाऊँ इसका क्या मतलब है? ख़ुदा तआला को गवाह करके कहता हूँ कि मैंने अपना सब माल व जान बेच डाली। शैख़ ने कहा मैं इतनी बात कहकर बहुत ही शर्मिन्दा और नादिम हुआ और अपने जी में कहा कि देखो इस बच्चे की कैसी अक़्ल है और हमको बावजूद बड़े होने के अक़्ल नहीं।

मुख़्तसर यह कि उस लड़के ने अपने घोड़े और हथियार और कुछ ज़रूरी ख़र्च के सिवा कुल माल सदक़ा कर दिया। जब चलने का दिन हुआ तो वह सबसे पहले हमारे पास आया और कहा या शैख़ अस्सलामु अलैकुम! शैख़ कहते हैं मैंने सलाम का जवाब देकर कहा ख़ुश रहो! तुम्हारा सौदा फ़ायदे वाला हुआ। फिर हम जिहाद के लिए चले। उस लड़के की यह हालत थी कि रास्ते में दिन को रोज़ा रखता और रात भर नमाज़ में खड़ा रहता और हमारी और हमारे जानवरों की ख़िदमत करता रहता। जब हम सोते थे तो हमारे जानवरों की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) करता था। जब हम रोम के शहर के नज़दीक पहुँचे तो हमने देखा कि वह जवान चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा है कि ऐ ईना मरज़िया तू कहाँ है? मेरे साथियों ने कहा कि शायद यह पागल हो गया।

मैंने उसे बुलाकर पूछा कि भाई किसे पुकार रहे हो और ईना मरज़िया कौन है? उसने सारी हालत बयान की कि मैं कुछ ऊँघ की-सी हालत में था कि मेरे पास एक आदमी आया और कहा कि ईना मरज़िया के पास चलो। मैं उसके साथ-साथ हो लिया। वह मुझे बाग़ में ले गया। क्या देखता हूँ कि नहर जारी है, पानी बहुत साफ़

चमकदार है। नहर के किनारे बहुत हसीन-हसीन लड़कियाँ हैं जो क़ीमती ज़ेवर पहने हुए हैं। जब उन्होंने मुझे देखा तो ख़ुश हुईं और आपस में कहने लगीं कि यह ईना मरज़िया का शौहर है। मैंने उन्हें सलाम करके पूछा कि तुम में ईना मरज़िया कौन-सी है? उन्हों ने कहा हम तो उसकी बाँदियाँ और ख़िदमत करने वाली हैं, वह तो आगे है।

मैं आगे गया तो एक बहुत ही ज़्यादा बेहतरीन बाग़ में लज़ीज़ (स्वादिष्ट) व ज़ायक़ेदार दूध की नहर बहती देखी और उसके किनारे पर पहली औरतों से ज़्यादा हसीन औरतें देखीं। उन्हें देखकर तो मैं बेक़ाबू हो गया। वे मुझे देखकर बहुत ख़ुश हुईं और कहा कि यह ईना मरज़िया का शौहर है। मैंने पूछा वह कहाँ है? कहा वह आगे है। हम तो उसकी सेवक हैं तुम आगे जाओ। मैं आगे गया देखा तो एक नहर ख़ालिस मज़ेदार शराब की बह रही है और उसके किनारे ऐसी हसीन व ख़ूबसूरत औरतें बैठी हैं कि उन्होंने पहली सब औरतों को भुला दिया। मैंने सलाम करके उनसे पूछा कि ईना मरज़िया क्या तुम में है? उन्होंने कहा कि नहीं! हम सब तो उसकी बाँदियाँ हैं, वह आगे है, तुम आगे जाओ।

आगे गया तो एक चौथी नहर ख़ालिस शहद की बहती देखी और उसके किनारे की औरतों ने पिछली सब औरतों को भुला दिया। मैंने उनसे भी सलाम करके पूछा कि ईना मरज़िया क्या तुम में है? उन्हों ने कहा कि ऐ अल्लाह के वली! हम तो उसकी बाँदियाँ और सेवक हैं, तुम आगे आओ। मैं आगे चला तो क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद मोती का ख़ेमा है और उसके दरवाज़े पर एक हसीन लड़की खड़ी है और वह ऐसे बेहतरीन-बेहतरीन ज़ेवर व लिबास से सजी हुई है कि मैंने आज तक कभी नहीं देखा। जब उसने मुझे देखा तो ख़ुश हुई और ख़ेमे में पुकार कर कहा ऐ ईना मरज़िया! तुम्हारा शौहर आ गया। मैं ख़ेमे के अंदर गया तो देखा कि जड़ाऊ सोने का तख़्त बिछा हुआ है, उस पर ईना बैठी हुई अपने जलवे बिखेर रही है। मैं उसे देखते ही फ़रेफ़्ता हो गया।

उसने देखते ही कहा आपका आना मुबारक है ऐ अल्लाह के वली! अब तुम्हारे यहाँ आने का वक़्त क़रीब आ गया है। मैं दौड़ा और चाहा कि उसे गले से लगा लूँ। उसने कहा ठहरो अभी वक़्त नहीं आया और अभी तुम्हारी रूह में दुनियावी ज़िन्दगी बाक़ी है। आज रात इन्शा-अल्लाह तुम यहीं रोज़ा इफ़्तार करोगे। मैं यह ख़्वाब देखकर जाग उठा और अब मेरी यह हालत है कि सब्र नहीं होता।

शैख़ अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अभी ये बातें ख़त्म नहीं हुई थीं कि दुश्मन का एक गिरोह आया और उस लड़के ने आगे बढ़कर उनपर हमला कर दिया और नौ काफ़िरों को मारकर शहीद हुआ तो मैं उसके पास आया और देखा कि वह ख़ून में लतपत है और खिलखिला कर ख़ूब हंस रहा है। थोड़ी देर न गुज़री थी कि उसकी जान निकल गयी। (रौज़ुर्रयाहीन)

जन्नत की नेमतों को मुकम्मल करने के असबाब

जन्नत में सबसे ज़्यादा नेमतों में वे लोग होंगे जो ख़ुद को दुनिया में हराम से बचाएँगे। जिसने दुनिया में शराब पी वह जन्नत में शराबे तहूर से मेहरूम रहेगा। जिसने दुनिया में रेशम पहना वह जन्नत में रेशम पहनने से मेहरूम रहेगा। जिसने दुनिया में सोने-चाँदी के बरतनों में खाया वह उनमें जन्नत में नहीं खा-पी सकेगा। जैसा कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः ये दुनिया में काफ़िरों और मुश्रिकों के लिए हैं और तुम्हारे लिए आख़िरत में हलाल हैं।

(बुख़ारी, लिबास के बयान में, हदीस 5831)

हाँ1 अगर कोई मुसलमान दुनिया में इन हराम चीज़ों के इस्तेमाल का मुजरिम हुआ, फिर उसने तौबा कर ली तो उसको जन्नत में वे नेमतें अता की जाएँगी।

पस जिस शख़्स ने अपनी आराम व राहत की और मज़े की हर चीज़ को इस्तेमाल किया वह जन्नत में (किसी न किसी दर्जे से) उनसे

मेहरूम रहेगा जैसा कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने इसकी वज़ाहत फ़रमाई है। इसी वजह से हज़रते सहाबा किराम और उनके पैरोकार हज़रात इससे बहुत डरते रहते थे।

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि उनको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा जब वह अपने घर वालों के लिए गोश्त ख़रीद कर ले जा रहे थे। आपने पूछा यह क्या है? हज़रत जाबिर रज़ि0 ने फ़रमाया, गोश्त है, इसको मैंने घर वालों के लिए एक दिर्हम में ख़रीदा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः तुममें से जो भी किसी चीज़ को दिल चाहे ख़रीद लेता है क्या तुमने अल्लाह तआला से नहीं सुना वह फ़रमा रहे हैंः

तर्जुमाः तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके।

(सूरः अहक़ाफ़ आयत 20) (किताबुज़्-ज़ुहद इमाम अहमद पेज 153)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बसरा (शहर) से हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक वफ़्द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। ये वफ़्द वाले हज़रात कहते हैं कि हम रोज़ाना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में जाते और उनकी पानी में भीगी हुई रोटी देखते। कभी हम उसको घी लगी हुई देख लेते, कभी तेल लगी हुई देख लेते कभी दूध में भीगी हुई देख लेते, कभी हम गोश्त के सूखे टुकड़े देख लेते जिनको कूटकर पानी में उबाला होता था और बहुत कम हमने ताज़ा गोश्त देखा था।

एक दिन आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम मेरे खाने को पसन्द नहीं कर रहे हो। अल्लाह की क़सम! अगर मैं चाहूँ तो तुमसे ज़्यादा रंगीन खाने खा सकता हूँ और उम्दा खाने तैयार करा सकता हूँ। लेकिन अल्लाह से सुना है उसने उस क़ौम पर नुक्ताचीनी (आलोचना) की है जिन्होंने यह काम किया है। और

फ़रमाया है:

तर्जुमाः तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके।

(सूरः अहक़ाफ़ आयत 20) (किताबुज़ जुहद पेज 143)

फ़ायदाः इस आयत का ताल्लुक़ काफ़िरों के साथ है। वे चूँकि अपनी ज़िन्दगी में ख़ुद-मुख़्तार होकर अपनी ज़िन्दगी को मनमानी इच्छाओं को पूरी करने और लज़्ज़त हासिल करने में गुज़ार देते हैं, यहाँ तक कि इतने आज़ाद हो जाते हैं कि ख़ुद अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) के वजूद और उसके अहकाम के भी इनकारी हो जाते हैं और हलाल व हराम में कोई तमीज़ नहीं करते, इसलिए वे आख़िरत की हर नेमत से मेहरूम रखे जाएँगे। बल्कि कुफ़्र और शिर्क की सज़ा में हमेशा दोज़ख़ में जलेंगे।

और जो मुसलमान हज़रात हैं वे भी इस्लाम व ईमान की हालत में अपने आपको इस्लामी आमाल व अख़लाक़ और नफ़्स की लज़्ज़त में जितना आज़ाद करके दुनियावी ज़िन्दगी में मस्ती करेंगे उनके लिए जन्नत में उनकी उतनी ही नेमतों में कमी होती चली जाएगी। इसी वजह से सहाबा किराम सादा ज़िन्दगी गुज़ारते थे और ऐश व आराम की ज़िन्दगी से दूर रहते थे, क्योंकि उनकी नज़र में दुनिया की ज़िन्दगी में लज़्ज़त हासिल करने की कोई चीज़ नहीं थी। उनकी निगाहें आख़िरत पर, जन्नत की नेमतों पर, अल्लाह की रज़ा और दीदार पर टिकी हुई थीं। इस वजह से वे इस्लाम की तालीम और दूसरे मामलों में तमाम मुसलमानों से बढ़े हुए थे।(इमदादुल्लाह अनवर)

दो ख़ास जन्नतों की शान

अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमाः अल्लाह तआला का अर्श पानी पर था।(सूरः हूद आयत 7)

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने लिए एक जन्नत बनाई, फिर

उससे नीचे एक और जन्नत बनाई, फिर उसको एक ही लुअ्लुअ् (क़ीमती मोती और हीरे) से जोड़ दिया, फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः और उन दो जन्नतों के नीचे दो जन्नतें और हैं।

(सूरः रहमान आयत 62)

यह जन्नत वह है जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः कोई शख़्स नहीं जानता जो उनके लिए आँखों की ठंडक छुपाई गई है, यह बदला है उन नेक कामों का जो वे करते थे।

(सूरः सज्दा आयत 17)

यही वह जन्नत है जिसकी मख़्लूकात को जानकारी नहीं कि उसमें क्या है। इन जन्नत वालों के पास रोज़ाना तोहफ़ा और मुबारकबाद पहुँचा करेगी। (सिफ़तुल् जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 203)

बड़ी बादशाहत

दस लाख ख़ादिमों के साथ सफ़र

हदीसः हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों में अदना दर्जे का जन्नती वह है जो सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होगा, जिसके पर सोने के होंगे (और) हमेशा रहने वाले दस लाख ख़िदमतगार लड़के साथ होंगे। ऐ मुख़ातब! अगर तू उस जगह को देखे तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत दिखलाई दे। (बुदूरे साफ़िरह पेज 2149)

फ़रिश्ते भी उसके पास इजाज़त लेकर दाख़िल होंगे

क़ुरआन पाक की आयतः

"व इज़ा रऐ-त सुम्-म-रऐ-नईमंव् व-मुल्कन् कबीरा"

के तहत हज़रत अबू सुलैमान (दारानी) फ़रमाते हैं कि बड़ी

बादशाहत यह है कि जन्नती के पास रब्बुल-इज़्ज़त का क़ासिद तोहफ़े और हदिये लेकर आएगा मगर उसके पास नहीं पहुँच सकेगा जब तक कि अन्दर आने की उससे इजाज़त न ले लेगा। यह दरबान से कहेगा कि तुम अल्लाह के दोस्त से इजाज़त ले दो क्योंकि मैं उस तक (बग़ैर इजाज़त) नहीं जा सकता। वह दरबान दूसरे दरबान से कहेगा और उसी तरह दरबान के बाद और दरबान होंगे तो वह उसको आने की इजाज़त देगा। उस जन्नती के महल से दारुस्सलाम तक एक दरवाज़ा ऐसा होगा जिससे वह अपने परवर्दिगार के पास जब चाहेगा बग़ैर इजाज़त के जा सकेगा। पस बड़ी बादशाहत यही है कि रब्बुल-इज़्ज़त का क़ासिद भी उस जन्नती के पास उसकी इजाज़त के बग़ैर नहीं जा सकेगा जबकि जन्नती अपने रब के पास जब चाहेगा हाज़िर हो सकेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2148)

हुस्न व पाकीज़गी की कोई सिफ़त बयान नहीं की जा सकती

ऊपर बयान हुई क़ुरआन पाक की सूरः दह्र की आयत नम्बर बीस के मुताल्लिक़ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इससे अल्लाह तआला का मक़सद यह है कि कोई भी उसकी तारीफ़ करने वाला उसके हुस्न और पाकीज़गी की तारीफ़ नहीं कर सकता। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 138)

बादशाहों की मन्ज़िलें

हदीसः हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जन्नत की दीवार एक ईंट सोने से और एक ईंट चाँदी से खींची फिर उसमें नहरें निकालीं और दरख़्त गाड़े। जब फ़रिश्तों ने जन्नत के हुस्न को देखा तो कहा (ऐ जन्नत!) तुझे बादशाहों की मन्ज़िल (यानी उतरने की जगहें) मुबारक हो।

(बतरानी)

नोटः इसकी और ज़्यादा तफ़सील जन्नत के गुलामों, ख़िदमतगारों, हूरों वग़ैरह के बाब (अध्याय) में बल्कि पूरी किताब में मुलाहज़ा फ़रमाएँ। इस किताब में ज़िक्र हुई जन्नत की नेमतों का एक अदना-सा हिस्सा भी आज किसी बड़े से बड़े हाकिम को हासिल नहीं है। मगर फिर भी उसकी शान और बड़ाई के क़सीदे पढ़े जाते हैं। जब कोई मुसलमान जन्नत की तमाम आला व अफ़ज़ल नेमतें पूरे तौर पर हासिल करेगा उसकी बादशाही का क्या मुक़ाम होगा।

जन्नत बेहतरीन बदला और बड़ा अज्र है

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

(1) तर्जुमाः बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औरतें (यानी इस्लाम के अहकाम पर अमल करने वाले और अमल करने वालियाँ और ईमान के अक़ीदों के मुताबिक़ अक़ीदा रखने वाले मर्द और औरतें (यानी वे नेक आमाल अपनी ख़ुशी से करने वाले हों ज़बरदस्ती से नहीं) सच्चे मर्द और सच्ची औरतें (यानी नीयत और अमल में सच्चे हों दिखावटी और मुनाफ़िक़ न हों) और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें (इसमें आजिज़ी जो घमण्ड के विपरीत है वह भी दाख़िल है, और नमाज़ और इबादतों में दिल की तवज्जोह और बदन के अंगों से भी दाख़िल है) और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें (इसमें ज़कात और नफ़्ली सदक़े सब दाख़िल हैं) और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें (इसमें रोज़ा फ़र्ज़ और नफ़िल सब आ गया) और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और ख़ूब ज़्यादा अल्लाह की याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें (जो वाजिब और फ़र्ज़ ज़िक्रों के अलावा नफ़्ली अज़्कार भी अदा करते हैं) उन सबके लिए अल्लाह तआला ने मग़फ़िरत और बड़ा अज्र (जन्नत) तैयार कर रखा है।

(सूरः अहज़ाब आयत 35-बयानुल् कुरआन 9-50)

(2) तर्जुमाः (तुम इस बात को ख़ूब जान लो कि) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है (कि देखें कौन उनकी मुहब्बत को तरजीह) (वरीयता) देता है और कौन अल्लाह तआला की मुहब्बत को तरजीह देता है। सो तुम उनकी मुहब्बत को तरजीह मत देना और अगर उनके मुनाफ़े की तरफ़ नज़र जाए तो तुम इस बात को भी याद रखो कि अल्लाह तआला के पास (उन लोगों के लिए जो अल्लाह तआला का तरजीह देते हैं) बड़ा भारी अज्र (और इनाम मौजूद) है (जिसके सामने ये फ़ना होने वाले मुनाफ़े कोई हैसियत नहीं रखते)। (सूरः अनफ़ाल आयत 15)

फ़ायदाः कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने बहुत-सी जगहों पर मुख़्तलिफ़ नेक आमाल के बदले में बड़ा अज्र अता करने का वायदा फ़रमाया है। हम उनका ज़िक्र यहाँ मुख़्तसर तौर पर पढ़ने वालों के सामने पेश करते हैं।

(1) वे लोग जो अल्लाह के रास्ते मे जिहाद करते हैं और शहीद हो जाते हैं या नमाज़ी बनते हैं उनके लिए बड़ा अज्र (जन्नत) है। (सूरः निसा आयत 74)

(2) जो लोग ईमान लाने के बाद परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं उनके लिए भी बड़ा अज्र है। (सूरः आलि इमरान आयत 179)

(3) जो ईमान लाए और नेक अमल किए उनके लिए भी मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है। (सूरः मायदा आयत 9)

(4) जो लोग रसूले अकरम सल्ल0 के पास अपनी आवाज़ों को पस्त (नीची और हल्की) रखते हैं उन्हीं लोगों के दिलों का अल्लाह तआला नें तक़्वे (परहेज़गारी) के साथ इम्तेहान लिया है, उनके लिए भी मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है। (सूरः हुजुरात आयत 3)

(5) जिन लोगों ने गुनाहों से तौबा की और अपनी इस्लाह की (यानी खुद को सुधार लिया) अल्लाह के साथ मज़बूती से जुड़े रहे, अपने दीन को ख़ालिस अल्लाह के लिए इख़्तियार किया।

(सूरः निसा आयत 146)

(6) इल्म में पक्के और मज़बूत हज़रात और वे हज़रात जो हुज़ूर सल्ल0 पर और आप सल्ल0 से पहली शरीअतों पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, ज़कात देते हैं, अल्लाह तआला और आख़िरत पर ईमान रखते हैं। (सूरः निसा आयत 162)

(7) सहाबा किराम के लिए (सूरः फ़तह आयत 29)

(8) जो तन्हाई में ख़ुदा के ख़ौफ़ से गुनाह करने से डरे।

(सूरः यासीन आयत 111, सूरः मुल्क आयत 12)

(9) सदक़ा ख़ैरात करने वाले के लिए (सूरः हदीद आयत 11-18)

(10) सब्र करने वाले नेक लोगों के लिए (सूरः हूद आयत 10-11)

फ़ायदाः इन ज़िक्र हुए आमाल में कुछ तो ऐसे हैं जिनका मजमूई तौर पर (यानी कुल मिलाकर) एक मुसलमान में पाया जाना ज़रूरी है, और बाज़ फ़ज़ीलत और बड़ाई के दर्जे के हैं, अगर वे न भी पाए जायें तब भी जन्नत में दाख़िला मिल जाएगा, लेकिन ऐसे ज़िक्र हुए आमाल पर जन्नत के बड़े अज्र व बदले का वायदा यक़ीनी है।

दुनिया को ऐश व आराम का सामान समझने वालों के लिए इबरत

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और ये (काफ़िर) लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर (और इसके ऐश व आराम पर) इतराते हैं, और (उनका इतराना बिल्कुल फ़ुज़ूल और ग़लती है क्योंकि) यह दुनियावी ज़िन्दगी (और इसका ऐश व आराम) आख़िरत के मुक़ाबले में एक मामूली सामान के अलावा और कुछ नहीं। (सूरः रअद आयत 26)

अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमाः और नहीं ज़िन्दगी दुनिया की मगर सामान धोखे का।

(सूरः अल इमरान आयत 185)

अल्लाह तआला ने इस आयत में दुनिया की हालत को बहुत

मामूली घटिया, फ़ना होने वाली, बहुत कम और ख़त्म होने वाली है।

हदीस शरीफ़ में इस तरह आया है। आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह की क़सम! दुनिया आख़िरत के मक़ाबले में नहीं है मगर इस तरह कि जैसे तुम में से कोई शख़्स अपनी उंगली को दरिया में डुबोए फिर देख ले उस (डुबोने वाले) के पास (वह उंगली) कितना (पानी) लाई है। (मुस्लिम शरीफ़ किताबुल-हज पेज 55)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि की नसीहत

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः आप फ़रमा दीजिए (की) दुनिया का ऐश व आराम बहुत मामूली-सा है।

हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहमत फ़रमाए जिसने इस आयत के मुताबिक़ दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारी। दुनिया सारी की सारी शुरू से लेकर आख़िर तक ऐसी है जैसे कोई शख़्स सो गया और अपनी नींद में वह देखा जो उसे पसन्द था, फिर आँख खुल गयी। एक शायर कहता हैः

शे'रों का तर्जुमा

(1) मौत ने हर वक़्त कफ़न बाँध रखा है और हम उससे ग़फ़लत में हैं जिसका हम से मुतालबा किया गया है।

(2) दुनिया और उसकी ज़ेब व ज़ीनत (चमक-दमक) की तरफ़ हरगिज़ मैलान न करना और इसके ख़ूबसूरत नाज़ो-अन्दाज़ से दूर भागना।

(3) (तुम्हारे) वे दोस्त कहाँ हैं? तुम्हारे पड़ोसियों का क्या हुआ? वे लोग कहाँ गए जो उनमें रहते थे?

(4) उनको मौत ने (मौत का) ना-पसन्दीदा प्याला पिला दिया (और) उनको मिट्टी के पाटों के नीचे रेहन रख दिया।

जन्नत की तामीर

जन्नत की ज़मीन, गारा, कंकर और इमारत

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की तामीर की एक ईंट सोने की है और एक चाँदी की। उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान की है और गारा कस्तूरी का है।

(हादिल अरवाह पेज 184)

हदीसः मेराज की लम्बी हदीस में है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो उसमें चमकदार मोतियों के गुम्बद थे और उसकी ज़मीन कस्तूरी की थी।

(हादिल अरवाह पेज 184)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से इब्ने सय्याद ने जन्नत की मिट्टी के बारे मे पूछा तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः नर्म व मुलायम व सफ़ेद रोशन, ख़ालिस कस्तूरी की मिट्टी है। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 1928)

फ़ायदाः पहली हदीस में जन्नत की मिट्टी को ज़ाफ़रान से और गारे को कस्तूरी से बयान किया गया है जबकि दूसरी हदीस में जन्नत की मिट्टी को कस्तूरी से बयान किया गया है।

इसका एक मतलब तो यह है कि जन्नत की मिट्टी भी पाकीज़ा है और उसका पानी भी पाकीज़ा है। इसलिए इन दोनों को आपस में मिलाकर एक नई ख़ुशबू पैदा की गई, जिसको कस्तूरी कहा गया।

दूसरा मतलब यह है कि जन्नत की मिट्टी रंग क एतिबार से ज़ाफ़रान होगी और ख़ुशबू के एतिबार से कस्तूरी होगी और यह बहुत ही ख़ूबसूरत चीज़ है कि उसकी ख़ुशनुमाई और चमक-दमक ज़ाफ़रानी रंग हो और ख़ुशबू कस्तूरी जैसी हो। (हादिल अरवाह पेज 174)

जन्नत की ज़मीन हमवार है

हज़रत उबैद बिन उमैर फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन हमवार है, उसकी नहरें ज़मीन को चीरकर नहीं चलतीं।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुएम जिल्द 2 पेज 169)

जन्नत की ज़मीन पर रहमत की हवा चलने से जन्नती के हुस्न में बेइन्तिहा इज़ाफ़ा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की ज़मीन सफ़ेद है जिसके मैदान काफ़ूर की चट्टानें हैं। जिनको रेत के टीलों की तरह कस्तूरी ने घेर रखा है। उसमें जारी नहरें चलती हैं। उसमें जन्नती जमा होंगे बड़े दर्जे के भी और छोटे दर्जे के भी, और आपस में एक-दूसरे से मुलाक़ातों और एक-दूसरे का तआरुफ़ (परिचय) कराएँगे। (उनपर) अल्लाह तआला रहमत की हवा चलाएँगे तो वह रहमत उन जन्नतियों को कस्तूरी की ख़ुशबू से मदमस्त कर देगी। फिर जब जन्नती मर्द अपनी बीवी के पास लौटेगा और वह अपने हुस्न और पाकीज़गी में और बढ़ चुका होगा। वह कहेगी जब आप मेरे पास से गए थे तो मैं आप (के हुस्न) पर फ़रेफ़्ता हो रही थी लेकिन अब मेरी आप (के हुस्न) पर फ़रेफ़्ता होने की हद हो गयी है। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 20)

जन्नत की तामीरें

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अर्ज़ किया गया, या रसूलुल्लाह! जन्नत की तामीर किस तरह की है? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक ईंट चाँदी की है और एक ईंट सोने की है। उसका गारा ख़ुशबू उड़ाने वाली कस्तूरी का है। उसके कंकर चमकदार मोती

और याकूत के हैं और उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान की है।

(इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 95)

जन्नत की ज़मीन चाँदी की है

फ़ायदाः हज़रत मुजाहिद (मशहूर ताबिई मुहद्दिस व मुफ़स्सिर) रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 52)

ऊपर की रिवायतों में गुज़रा है कि जन्नत की मिट्टी ज़ाफ़रान और कस्तूरी की होगी और हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाह अलैहि के इस इरशाद में है कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की होगी। इन दोनों में जोड़ यह है कि ज़मीन तो चाँदी ही की होगी मगर ऊपर की मिट्टी ज़ाफ़रान और कस्तूरी की होगी। (और ज़्यादा इल्म तो अल्लाह ही को है।)

लोट-पोट होने की जगह

हदीसः हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की ज़मीन पर लोट-पोट होने की जगह (बनायी गयी) है कस्तूरी से, तुम्हारे जानवरों की ज़मीन पर लोट-पोट होने की तरह की। (मजूमउज़्ज़वाइद जिल्द 10 पेज 412)

जन्नत की चारदीवारी

सोने-चाँदी और कस्तूरी की दीवार

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत की चारदीवारी एक ईंट सोने और एक ईंट चाँदी से बनाई गई। उसके दर्जे याकूत और लुअ्लुअ् (यानी कीमती हीरे-जवाहिरात) के हैं।

(मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जिल्द 11 पेज 416)

जन्नत के इर्द-गिर्द सात फ़सीलें और आठ पुल

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के ईद-गिर्द सात फ़सीलें (चारदीवारियाँ) और आठ पुल हैं जिन्होंने तमाम जन्नत को घेरे में ले रखा है। सबसे पहली चारदीवारी चाँदी की है और दूसरी सोने की है, तीसरी सोने और चाँदी की है, चौथी लुअ्लुअ् की है, पाँचवीं याकूत की है, छठी ज़बर्जद की है, सातवीं ऐसे नूर की है जो चमक रहा है। हर दो फ़सीलों के दरमियान पाँच सौ साल का फ़ासला है। और उसके आठ दरवाज़े हैं एक याकूत का है और एक ज़बर्जद का है। दरवाज़े के हर दो पटों के दरमियान चालीस साल के सफ़र का फ़ासला है।

(वस्फ़ुल् फ़िरदौस जिल्द 9 पेज 7)

जन्नत की दीवार

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः बेशक अल्लाह ने जन्नत की एक दीवार खींची है जिसकी एक ईंट सोने की है एक ईंट चाँदी की है। फिर नहरों को उसमें खींचकर चलाया है और जन्नत में पेड़ लगाए हैं। जब फ़रिश्तों ने जन्नत के हुस्न और चमक-दमक को देखा तो कहने लगे (ऐ जन्नत!) बादशाहों (यानी मुसलमानों) के महलों की तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। (अल्-बअ्सु वन्नुशूर पेज 288)

जन्नत की ज़मीन चाँदी की है आईने की तरह

हज़रत अबू ज़मील ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल किया कि जन्नत की ज़मीन किस चीज़ की है? आपने फ़रमाया (यह) चिकनी सफ़ेद चाँदी से बनाई गई है गोया कि वह आईना है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1773)

फ़ायदाः हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसे ही नक़ल किया गया है कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1775)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत की दीवार की एक ईंट सोने की है और एक ईंट चाँदी की है। उसके दर्जे चमकदार मोती और याकूत के हैं। उसके छोटे कंकर लुअ्लुअ् (चमकदार मोती) के हैं और मिट्टी ज़ाफ़रान की है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1776)

उहुद पहाड़ जन्नत का एक सम्मानित अंग होगा

हदीसः हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः उहुद (पहाड़) जन्नत के अरकान में से एक रुक्न है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1778)

फ़ायदाः अल्लामा मनावी रुक्न का मतलब बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि उहुद पहाड़ जन्नत के जवानिब (हिस्सों और किनारों) में से एक बड़ी जानिब होगा। या यह मायने हैं कि उहुद पहाड़ की असल (जड़) जन्नत में है और यह वापस जन्नत में लौटा दिया जाएगा और जन्नत के अरकान में से एक रुक्न (यानी बड़ा किनारा और हिस्सा) बन जाएगा। या यह मायने हैं कि चूँकि उहूद पहाड़ हुज़ूर सल्ल0 और सहाबा किराम (और औलिया-अल्लाह) से मुहब्बत करता है और जो जिसके साथ दुनिया में मुहब्बत करता है वह उसके साथ जन्नत में होगा इसलिए यह पहाड़ उन पाकबाज़ हज़रात के साथ मुहब्बत करने की वजह से जन्नत में एक रुक्न की हैसियत से रखा जाएगा। (फ़ैज़ुल क़दीर मनावी जिल्द 1 पेज 185)

उहूद पहाड़ जन्नत के दरवाज़े पर होगा

हदीसः हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यह उहुद पहाड़ हमसे मुहब्बत करता है और हम इससे मुहब्बत करते हैं (यह क़यामत के दिन) जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर होगा। (जामे सग़ीर जिल्द 1 पेज 185)

जन्नते अद्न की ज़मीन, कंकर और तामीर वग़ैरह

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जन्नते अद्न को अपने मुबारक हाथों से पैदा किया, उसकी एक ईंट सफ़ेद चमकदार मोती की है और एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की है, और एक ईंट सब्ज़ ज़बर्जद की है। उसका गारा कस्तूरी का है, उसकी ख़ुश्क घास ज़ाफ़रान की है, उसके कंकर चमकने वाले मोती हैं और उसकी ख़ाक अंबर की है।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 20)

जन्नत का मौसम, साये और हवाएँ

जन्नत में न गर्मी होगी न सर्दी न सूरज न चाँद

अल्लाह पाक के इरशादः "और साया होगा लम्बा" की तफ़सीर में हज़रत अमर बिन मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमातें हैं कि उस साये की लम्बाई सत्तर हज़ार साल के (सफ़र के) बराबर होगी।(बैहक़ी)

हज़रत शुऐब बिन जीहान रह0 फ़रमाते हैं कि मैं और हज़रत अबुल आलिया रियाही सूरज निकलने से पहले (कहीं जाने के लिए घर वग़ैरह से) निकले तो उन्हों ने फ़रमाया कि मुझे बता दिया गया है कि जन्नत (की रोशनी) ऐसी होगी फिर उन्होंने यह आयत पढ़ीः

وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ

तर्जुमाः और साया होगा दराज़ यानी लम्बा। (बैहक़ी)

न धूप होगी न सर्दी

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत दरमियानी होगी, न तो उसमें गर्मी होगी न सर्दी होगी। (इब्ने मुबारक)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में जन्नती हज़रात न धूप महसूस करेंगे न ठंडा।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नऐम जिल्द 1 पेज 128)

हवा मुश्क उठाएगी

हदीसः हज़रत मालिक से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब दक्षिण की हवा जन्नत में चलेगी तो मुश्क के टीले बिखेर देगी। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 183)

जन्नत का रंग, नूर और रौनक

जन्नत का रंग सफ़ेद है

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमातें हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम सफ़ेद (रंग) इख़्तियार करो क्योंकि अल्लाह तआला ने जन्नत को सफ़ेद पैदा किया है। पस चाहिये कि तुम्हारे ज़िन्दा लोग सफ़ेद रंग पहनें और उसी में अपने मुर्दों को कफ़न दिया करो।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 1 पेज 164)

अल्लाह की क़सम जन्नत चमकने वाला नूर है

हदीसः हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जन्नत का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमः काबे के रब की क़सम! यह (जन्नत) एक तरह का फूलों का गुलदस्ता है, मस्त कर देने वाला, और नूर है चमकने वाला।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुएम जिल्द 2 पेज 53)

जन्नत की रौनक़ और रोशनी

हदीसः हज़रत आमिर बिन सईद अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो नेमतें जन्नत में हैं अगर उनमें से इतनी मात्रा भी

ज़ाहिर हो जाए जितना कि नाखुन के साथ लगकर कोई चीज आती है तो उसकी वजह से आसमानों और ज़मीन के किनारे जगमगा उठें। और अगर जन्नतियों में से कोई शख़्स झाँक ले और ज़ाहिर हो जाए तो उसकी रोशनी सूरज की रोशनी को इस तरह से फीकी कर दे जिस तरह से सूरज सितारों की रोशनी को फीकी और बेचमक कर देता है।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 54)

बग़ैर धूप की रोशनी

हज़रत ज़मील बिन सिमाक के वालिद ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा जन्नत का नूर कैसा होगा? आपने फ़रमाया कि तुमने वह वक़्त नहीं देखा जो सूरज निकलने से पहले होता है? जन्नत का नूर भी ऐसा ही होगा मगर उसमें न धूप होगी न सर्दी होगी। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 54)

आगे-पीछे से नूर चलता होगा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जिस दिन (क़यामत में) आप सल्ल0 मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा। (सूरः हदीद आयत 130)

फ़ायदाः यह फ़ज़ीलत मुसलमानों को उनके नेक आमाल की वजह से क़ियामत के दिन अता होगी और यह मालूम है कि अल्लाह तआला मुसलमानों को जो फ़ज़ीलत और शान अता करेंगे उसको किसी न किसी शक्ल में क़ायम-दायम रखेंगे। जन्नत में दाख़िल होने के बाद वापस नहीं लेंगे। इसलिए जन्नत में जन्नतियों का पूरा जिस्म नूर से चमकता होगा, या तो ये नूर उनके हसीन जिस्मों का होगा या उनके नेक आमाल का होगा या जन्नत का होगा। (इमदादुल्लाह अनवर)

जन्नती के जिस्म की रोशनी

हज़रत मुहम्मद बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

जन्नत में बिजली की तरह की एक चमक नज़र आएगी तो (निचले दर्जे के जन्नती हज़रात की तरफ़ से) पूछा जाएगा, यह क्या था? (उनको) बताया जाएगा कि यह आला दर्जे के लोगों में से जन्नती है जो एक बालाख़ाने से दूसरे बालाख़ाने की तरफ़ मुन्तक़िल हुआ है।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 55)

जन्नत की मुख़्तलिफ़ सिफ़तें

हदीसः हज़रत सईद बिन मुसैयब से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत सफ़ेद चमकदार है, उसके रहने वाले सफ़ेद रंग के होंगे, उसके रहने वाले सोएँगे नहीं, न उसमें सूरज होगा न चाँद, न अंधेरा करने वाली रात होगी और न ही उसमें ठंड या गर्मी होगी जो जन्नतियों को तकलीफ़ पहुँचाए। (वस्फुल फ़िरदौस पेज 10)

जन्नत के सुबह व शाम और रात-दिन

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः और उनको उनका खाना सुबह शाम मिला करेगा।

(सूरः मरियम आयत 62)

हज़रत ज़ह्हाक रहमतुल्लाहि अलैहि ऊपर ज़िक्र हुई आयत की तफ़सीर (व्याख़्या) में फ़रमातें हैं, अल्लाह तआला ने जन्नतियों के लिए गर्दिश करने वाली इसी तरह की घड़ियाँ बनाई हैं जैसी दुनिया की घड़ियां गर्दिश करती हैं, बग़ैर सूरज के और चाँद के और रात के और दिन के। बस सिर्फ़ आख़िरत का नूर होगा जिसमें अल्लाह तआला ने सुबह, दोपहर और शाम को मुकर्रर किया है क्योंकि सुबह, दोपहर और शाम से लोग लुत्फ़ उठाते (आनन्दित होते) हैं। चुनाँचे जब अल्ललाह तआला अपने औलिया की ख़्वाहिश को तेज़ करेंगे और उनको रिज़्क़ की लज़्ज़त के ज़ायके बख़्शना चाहेंगे तो उनके सामने सुबह व शाम की गर्दिश कर देंगे।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 219)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जन्नत में सुबह व शाम नहीं होंगे मगर उनके पास (सुबह व शाम के खाने) रात दिन की मिक्दार के मुताबिक़ पेश किये जाएँगे।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 220)

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नत वालों को हर घड़ी रिज़्क़ पहुँचाया जाएगा, सुबह व शाम भी दीगर घड़ियों की तरह की दो घड़ियाँ होंगी, वहाँ रात नहीं होगी बल्कि रोशनी और नूर होगा। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 221)

सुबह व शाम कैसे मालूम होंगे?

हज़रत ज़ुहैर बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नत में रात नहीं होगी। ये लोग हमेशा नूर में रहेंगे। उनके लिए रात की मिक्दार (मात्रा) पर्दे छोड़ देने से मालूम होगी और दिन की मिक्दार पर्दे उठा देने से मालूम होगी। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 223)

जन्नत के लैम्प और फ़ानूस

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से पूछा गया कि जन्नतियों के लैम्प और चिराग़ कैसे होंगे? तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यह अर्श से लटकने वाले फ़ानूस होंगे। अर्श के ऊपर से जन्नतियों के लिए रोशनी फैलाएँगे। न तो उनका नूर बुझेगा और न ही उनको देखने से जन्नहियों की आँखें चुन्धियाऐंगी।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 214)

खुशबू

जन्नत की खुशबू कितने फ़ासले से महकती है?

हदीसः हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की ख़ुशबू सौ साल के फ़ासले से पाई जाएगी।
(सिफ़तुल जन्नत शरीफ़ हदीस 3165)

एक रिवायत में है कि चालीस साल के फ़ासले तक महसूस होगी। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3165)

कौनसे लोग जन्नत की ख़ुशबू से मेहरूम रहेंगे

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस (मुसलमान) ने किसी (काफ़िर 'ज़िम्मी') जिससे उसकी हिफ़ाज़त का मुआहदा किया है, को क़त्ल किया वह जन्नत की ख़ुशबू नहीं सूँघ सकेगा, जबकि उसकी ख़ुशबू सत्तर साल की मासाफ़ात (फ़ासले-दूरी) से महसूस होगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1835)

एक हदीस में यूँ है कि जन्नत की ख़ुशबू पाँच सौ साल के फ़ासले से महसूस होगी। (हाकिम जिल्द 1 पेज 44)

हदीसः हज़रत मअ्क़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुलल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स को अल्लाह तआला अपनी रिआया का हाकिम बनाए मगर उसने रिआया को नेकी की तलक़ीन न की, (यानी उनको नेकी की तरफ़ प्रेरित न किया) तो वह जन्नत की ख़ुशबू नहीं पा सकेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

तर्जुमाः जिस शख़्स ने अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ (अपने वालिद होने की) निस्बत की तो वह जन्नत की ख़ुशबू नहीं सूँघ सकेगा जबकि जन्नत की ख़ुशबू पाँच सौ साल के फ़ासले से महसूस होगी। (इब्ने माजा हदीस 2611)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की ख़ुशबू पाँच सौ साल के फ़ासले से सूँघी जाएगी मगर उसकी ख़ुशबू को नेक अमल का एहसान जतलाने वाला

और माँ-बाप का नाफ़रमान और हमेशा शराब पीने वाला नहीं सूँघ सकेगा। (तबरानी सग़ीर जिल्द 1 पेज 145)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बहुत-सी औरतें (बारीक या मुख़्तसर या तंग लिबास पहनती हैं और वे इस हालत में) नंगी (शुमार होती हैं, ख़ुद गुनाह की तरफ़) माईल होती हैं और (दूसरों को गुनाह की तरफ़) माईल करती हैं। ये जन्नत में दाख़िल नहीं होंगी और न उसकी ख़ुशबू पा सकेंगी जबकि उसकी ख़ुशबू पाँच सौ साल की मसाफ़त (दूरी) से पाई जाएगी।

(मुवत्ता इमाम मालिक हदीस 913)

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की ख़ुशबू एक हज़ार साल के फ़ासले से भी सूँघी जा सकेगी। अल्लाह की क़सम! उसको माँ बाप का नाफ़रमान और क़ता-रहमी करने वाला और वह आदमी जो घमण्ड की वजह से अपनी चादर और शलवार को (ज़मीन पर) घसीटता होगा, नहीं सूँघ सकेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1841)

हदीसः हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो औरत अपने शौहर से बिना वजह तलाक़ की माँग करेगी तो उस पर जन्नत की ख़ुशबू तक सूँघना हराम है।

(अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 2226)

हदीसः हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी इस हालत पर मरता है कि उसके दिल में एक मिस्क़ाल (मिस्क़ाल साढ़े चार माशे वज़न को कहते हैं। अरब में सोने का एक सिक्का भी राईज था) के बराबर भी घमण्ड मौजूद हो तो उस आदमी के लिए जन्नत हलाल नहीं होगी, न तो वह उसकी ख़ुशबू सूँघ सकेगा और न ही उसको देख सकेगा।

(मुस्नद अहमद जिल्द 4 पेज 151)

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आख़िरी ज़माने में एक क़ौम ऐसी होगी जो काला ख़िज़ाब करेगी जैसे कबूतरों के पोटे होते हैं, ये जन्नत की ख़ुशबू नहीं सूँघ सकेंगी। (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 4312)

फ़ायदाः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जन्नत की ख़ुशबू ज़मीन पर पाई है जबकि जन्नत सब आसमानों से ऊपर है।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर पेज 144)

फ़ायदाः इन बुरे आमाल की वजह से जन्नत की ख़ुशबू से मेहरूम रहने का मतलब यह है कि ये लोग जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेंगे। हाँ! जब ये जहन्नम में सज़ा पा चुकेंगे या अल्लाह की रहमत से इनकी बख़्शिश हो जाएगी या ये उन बुरे कामों से दुनिया में तौबा कर लेंगे और उनका गुनाह माफ़ हो जाएगा तो उनको जन्नत की ख़ुशबू भी पहुँचेगी और ये जन्नत में भी जाएँगे।

फ़ायदाः यह जन्नत की ख़ुशबू का अलग-अलग फ़ासलों से पाया जाना हदीसों में आया है। यह विभिन्न लोगों के आमाल और दर्जों के हिसाब से है, या अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर निर्भर है, वह जिसको जितने फ़ासले से चाहे जननत की ख़ुशबू पहुँचा दे या जन्नत की ख़ुशबू से पर्दे हटा दे।

जन्नत हमेशा रहेगी

आयत (1) अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः और पस वे लोग जो नेकबख़्त हैं वे जन्नत में होंगे (और) वे उसमें (दाख़िल होने के बाद) हमेशा-हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन क़ायम हैं (अगरचे जन्नत में जाने से पहले कुछ सज़ा गुनाहों की भुगत चुके हों वे भी जन्नत से कभी न निकलेंगे) हाँ! अगर ख़ुदा को ही (निकालना) मन्ज़ूर हो तो दूसरी बात है। (मगर यह

यक़ीनी है कि ख़ुदा यह बात कभी न चाहेगा, पस निकलना भी कभी न होगा) वह अल्लाह की तरफ़ से ऐसा अतिया होगा जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा। (सूरः हूद आयत 108)

आयत (2) अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः बेशक यह (जन्नत) हमारी अता है जिसको कभी ख़त्म ही नहीं होना। (सूरः सॉद आयत 54)

आयत (3) अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः उस (जन्नत) का फल और साया हमेशा रहेगा।

(सूरः रअद आयत 135)

आयत (4) अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः और वे (जन्नती) उस (जन्नत) से निकाले नहीं जाएँगे।

(सूरः हिज्र आयत 48)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा वह हमेशा जन्नत में रहेगा, कभी उकताएगा नहीं, और हमेशा रहेगा कभी मरेगा नहीं।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 370)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः (जन्नत में दाख़िल होने के बाद जन्नतियों को) एक मुनादी ऐलान करेगा कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी है कि तुम सेहतमन्द रहोगे कभी बीमार न होगे, और तुम्हारे लिए यह भी ख़ुशख़बरी है कि तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, और तुम्हारे लिए यह भी ख़ुशख़बरी है कि तुम नाज़ और नेमतों में रहोगे कभी दुख न देखोगे। अल्लाह तआला का इसी के बारे में इरशाद है कि उन (जन्नत वालों) को पुकार कर कहा जाएगा कि यह जन्नत तुमको दी गई है तुम्हारे (अच्छे और नेक) आमाल के बदले में। (सूरः आराफ़ आयत 43)

(अल्-बअ़्सु वन्नुशूर पेज 488)

जन्नत के दरबान और मुहाफ़िज़

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: और जो लोग अपने रब से डरते थे वे गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किये जाएँगे, यहाँ तक कि जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेगे और उसके दरवाज़े (पहले से) खुले हुए होंगे (ताकि दाख़िल होने में ज़रा भी देर न लगे) और वहाँ के मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते) उनसे (बतौर सम्मान और तारीफ़ के) कहेंगे 'अस्सलामु अलैकुम' तुम मज़े में रहो, और इस (जन्नत) में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ। (सूरः जुमर आयत 73)

फ़ायदा: जन्नत के तमाम मुहाफ़िज़ और दरबान फ़रिश्तों के सरदार फ़रिश्ते का ज़िक्र इस हदीस में आप पढ़ेंगे जो सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल0 के लिए ख़ुद जन्नत का दरवाज़ा खोलेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

एक हदीस और इस मज़मून की ज़िक्र की जाती है जिससे जन्नत के दरबानों का इल्म हासिल होता है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जन्नत के सब दरबान दाख़िले के लिए पुकारेंगे

हदीस: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स (अपने माल में से) अल्लाह के रास्ते (जिहाद या हर नेक मौक़े) में जोड़ा करके (यानी जो चीज़ दे उसका जोड़ा करके दे जैसे दो ऊँट दो बकरियाँ वग़ैरह या कोई चीज़ भी दे और उसके साथ कोई और चीज़ भी मिला दे जैसे रुपये दे तो उनके साथ कपड़ा भी) दे दे, उसको हर दरवाज़े से जन्नत के दरबान पुकारेंगे कि ऐ फ़लाँ! इधर से दाख़िल हो।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 1897)

फ़ायदा: जन्नत के सबसे बड़े ख़ज़ानची, मुहाफ़िज, मुन्तज़िम

निगराँ, दरबान का नाम रिज़वान फ़रिश्ता है, उसका यह रिज़वान का नाम रिज़ा से निकाला गया है।

अदना जन्नती के हज़ार इन्तिज़ाम संभालने वाले और उनका हुस्न

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आख़िर में जन्नत में दाख़िल होने वाला चल रहा होगा कि अचानक वह एक तरह का नूर देखेगा और सज्दे में गिर पड़ेगा। उससे पूछा जाएगा तुझे क्या हुआ? वह कहेगा क्या यह मेरे रब ने मेरे सामने तजल्ली नहीं फ़रमाई? अचानक उसके सामने एक मर्द खड़ा होगा, वह अर्ज़ करेगा, नहीं! (यह आपका रब नहीं बल्कि) महलों में से एक महल है और मैं आपके ख़िदमतगार निगरानों में से एक ख़िदमतगार निगराँ हूँ और आपके लिए मेरे जैसे एक हज़ार सेवक हैं। फिर वह जन्नती उस ख़िदमतगार के आगे-आगे चलेगा, वह अपने अदना दर्जे के महल में दाख़िल होगा और वह जिस चीज़ पर निगाह डालेगा (उसकी उम्दगी और ख़ूबसूरती की वजह से) उसकी नज़र उसके तमाम मुल्क (जन्नत) तक पहुँच जाएगी और उस जन्नती की बादशाहत सौ साल के सफ़र करने के बराबर होगी।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 441)

जन्नत का रास्ता

जन्नत का रास्ता एक है

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः यह दीन (इस्लाम और इसके तमाम अहकाम) मेरा रास्ता है जो कि (बिल्कुल) सीधा रास्ता है। सो इस राह पर चलो और दूसरी राहों पर मत चलो कि वे राहें तुमको अल्लाह की राह से जुदा कर

देंगी। (सूरः अनआम आयत 153)

फ़ायदाः इस मुबारक आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह का दीन एक है बाक़ी मज़हब और गुमराही के रास्ते बहुत हैं, सिर्फ़ अल्लाह के दीन यानी इस्लाम में नजात (मुक्ति) है, दूसरे किसी मज़हब में नहीं।

हदीसः चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हमारे सामने एक लकीर खींची और फ़रमाया यह अल्लाह का रास्ता है। फिर आपने उस लकीर के दाएँ और बाएँ बहुत-सी लकीरें खींचीं और फ़रमाया, ये भी रास्ते हैं और इनमें से हर एक रास्ते से शैतान गुमराह करता है। फिर आपने ऊपर ज़िक्र हुई (उपरोक्त) आयत पढ़कर (अपनी इस मिसाल को स्पष्ट) किया। (इब्ने हब्बान मवारिदुज़्ज़मआन)

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल0 हमारे सामने तशरीफ़ लाए और फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने ख़्वाब में देखा मानों कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम मेरे सिरहाने के पास हैं और मीकाईल अलैहिस्सलाम मेरे पाँव के पास। उन दोनों में से एक ने अपने साथी से कहा तुम इन (मुहम्मद सल्ल0) के लिए मिसाल बयान करो। उसने (आप सल्ल0 से मुख़ातब होकर) कहा, अपने कानों की पूरी तवज्जोह से सुनो और अपने दिल की तवज्जोह से ग़ौर करो, आपकी मिसाल और आपकी उम्मत की मिसाल उस बादशाह की मिसाल जैसी है जिसने एक महल बनाया हो, उसमे कई कमरे बनाए हों, फिर दस्तरख़्वान बिछाया हो, फिर एक क़ासिद (दूत) को रवाना किया हो कि वह लोगों को खाने की तरफ़ बुलाए। पस उनमें से कुछ लोगों ने क़बूल किया हो और कुछ लोगों ने इनकार किया हो।

पस बादशाह तो अल्लाह है और महल इस्लाम है, और घर जन्नत है। और ऐ मुहम्मद! आप रसूल (क़ासिद) हैं। पस जिसने आपकी दावत पर लब्बैक कही वह इस्लाम में दाख़िल हो गया और

जो इस्लाम में दाख़िल हो गया वह जन्नत में दाख़िल हो गया, और जो जन्नत में दाख़िल हो गया उसने उससे खाया जो कुछ उसमें मौजूद है।
(तिर्मिज़ी शरीफ़ मिसाल के बयान में हदीस 2860)

जन्नत और दोज़ख़ का मुनाज़र

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत और दोज़ख़ ने आपस में झगड़ा किया तो दोज़ख़ ने कहाः मुझे ज़ालिम जाबिर और घमण्डी लोगों के साथ तरजीह दी गयी है (कि अल्लाह उन लोगों को मेरे अन्दर दाख़िल फ़रमाएँगे) और जन्नत ने कहा मैं भी कम नहीं हूँ मेरे अन्दर भी कमज़ोर और दुनिया के एतिबार से घटिया (समझे जाने वाले) लोग दाख़िल होंगे। अल्लाह तआला ने (फ़ैसला करते हुए) दोज़ख़ से फ़रमायाः तू मेरा अज़ाब है। मैं तेरे साथ जिसे चाहूँगा अज़ाब दूँगा। और जन्नत से फ़रमाया तू मेरी रहमत है। मैं तेरे साथ जिसे चाहूँगा रहमत से नवाज़ूँगा। और हाँ तुम में से हर एक के लिए पूरा-पूरा भराव है। पस दोज़ख़ की (क़यामत के दिन) यह हालत होगी कि वह सैर होने (यानी भरने) का नाम न लेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसमें अपना पाँव मुबारक रखेंगे और फ़रमाएँगे बस! बस! तो वह उस वक़्त जाकर सैर होगी और उसका एक हिस्सा दूसरे में सिमट जाएगा। मगर अल्लाह तआला किसी पर ज़ुल्म नहीं करेंगे (कि दोज़ख़ को भरने के लिए नाहक़ तौर पर लोगों को दोज़ख़ में डालें।) और जन्नत की यह हालत होगी कि उस (को रिझाने) के लिए एक नई मख़्लूक़ पैदा करेंगे। (बुदूरे साफ़िरह पेज 399)

जन्नत कौनसे दिनों में खोली जाती है

जन्नत के दरवाज़े दो दिन खुलते हैं

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के दरवाज़े हर सोमवार और जुमेरात में खोले जाते हैं। (अदबे मुफ़रद पेज 411)

जन्नतुल फ़िरदौस हर सोमवार और जुमेरात को खुलती है

शिमूर बिन अतिया रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथ से पैदा किया और उसको वह हर जुमेरात को खोलते और फ़रमाते हैं: तू मेरे औलिया (दोस्तों) के लिए अपनी पाकीज़गी में और बढ़ जा। मेरे औलिया (दोस्तों) के लिए हुस्न में और बढ़ जा। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 28)

हज़रत शिमूर बिन अतिया रहमतुल्लाहि अलैहि ही फ़रमाते हैं। कि जन्नतुल फ़िरदौस हर जुमेरात और सोमवार को खोली जाती है फिर उस शख़्स की बख़्शिश कर दी जाती है जो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक नहीं करता और उस शख़्स की बख़्शिश नहीं होती जिसके दरमियान और उसके भाई के बीच दुश्मनी हो।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 28)

जन्नत के दरवाज़े

कुरआन पाक में दरवाज़ों का ज़िक्र

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

तर्जुमाः 1. और जो लोग अपने रब से डरते थे वे गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ (शौक़ दिलाकर जल्दी) रवाना किये जाएँगे यहाँ तक कि जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े (पहले से) खुले हुए पाएँगे। (ताकि जन्नत में दाख़िल होने में ज़रा भी देर न लगे।) (सूरः जुमर आयत 73)

तर्जुमाः 2. हमेशा रहने के बाग़ात हैं जिनके दरवाज़े उन (जन्नतियों) के लिए खुले हुए होंगे (सूरः सॉद आयत 50)

तर्जुमाः 3. और फ़रिश्ते उनके पास हर (दिशा के) दरवाज़े से आते होंगे। (सूरः रअद आयत 23)

फ़ायदाः क़ुरआन पाक की उपरोक्त तीनों आयतों में सिर्फ़ जन्नत के दरवाज़ों का ज़िक्र किया गया है उनकी तायदाद (संख्या) नहीं बतलाई गई। तायदाद की वज़ाहत हदीसों में आई है जिसको आगे बयान किया जाता है:

आठ दरवाज़े

हदीसः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। सात बन्द हैं एक तौबा के लिए खुला हुआ है, यहाँ तक कि सूरज पश्चिम की तरफ़ से निकले।

(बुदूरे साफ़िरह पेज 492)

हदीसः हज़रत उतबा बिन अब्द फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के आठ दरवाज़े हैं और जहन्नम के सात।

फ़ायदाः इन दोनों हदीसों में जन्नत के आठ दरवाज़ों का ज़िक्र किया गया है। कुछ आलिमों ने जन्नत के आठ और जहन्नम के सात दरवाज़ों से यह बात निकाली है कि चूँकि अल्लाह की रहमत उसके ग़ज़ब से बढ़ी हुई है इसलिए जन्नत के दरवाज़े जहन्नम के दरवाज़ों से ज़्यादा हैं, क्योंकि जन्नत अल्लाह की रहमत है और दोज़ख़ अल्लाह का अज़ाब है।

अब आगे और बहुत-सी हदीसें बयान की जाती हैं जिनमे जन्नत के आठ दरवाज़ों का उमूमी तौर पर ज़िक्र पाया जाता है। चूँकि उनके साथ हर दरवाज़े के बारे में अमल की कोई न कोई ख़ुसूसियत वग़ैरह मौजूद है इसलिए विभिन्न उनवानों के तहत उनको ज़िक्र किया जा रहा है।

जन्नत के दरवाज़ों के नाम

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।

1. बाबुल-मुसल्लीन (नमाज़ियों का दरवाज़ा)
2. बाबुस्साईमीन (रोज़ेदारों का दरवाज़ा)
3. बाबुस्सादिक़ीन (सादिक़ीन का दरवाज़ा)
4. बाबुल-मुतसद्दिक़ीन (सदक़ा-ख़ैरात करने वालों का दरवाज़ा)
5. बाबुल-क़ानितीन (आजिज़ी और विनम्रता दिखाने वालों का दरवाज़ा)
6. बाबुज़्ज़ाकिरीन (ख़ुदा का ज़िक्र करने वालों का दरवाज़ा)
7. बाबुस्साबिरीन (सब्र करने वालों का दरवाज़ा)
8. बाबुल-ख़ाशिईन (आजिज़ी करने वालों का दरवाज़ा)
9. बाबुल-मुतवक्किलीन (अल्लाह पर तवक्कुल और भरोसा करने वालों का दरवाज़ा)। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 16)

फ़ायदाः शुरू हदीस में जन्नत के आठ दरवाज़े बयान किये गये हैं जबकि उनकी तफ़सील में नौ दरवाज़ों का ज़िक्र है। या तो बाबुल क़ानितीन और बाबुल ख़ाशिईन से एक ही दरवाज़ा मुराद है और इसके नाम दो बयान किये गये हैं या रिवायत करने वाले को ग़लती लगी है।

जन्नत के विभिन्न दरवाज़े

बाबे रय्यान

हदीसः हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसका नाम रय्यान है। उससे सिर्फ़ रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे। जब उनमें का आख़िरी शख़्स दाख़िल हो चुकेगा तो उसको बन्द कर दिया जाएगा। फिर उससे कोई दाख़िल न हो सकेगा। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 458)

फ़ायदाः रोज़ा तो नमाज़ पढ़ने वाले हज़रत भी रखते हैं शायद कि उस दरवाज़े से रोज़ेदारों के गुज़रने की तख़्सीस उन रोज़ेदारों के लिए होगी जो हमेशा रोज़ा रखने वाले होंगे या ख़ूब आदाब और

तक़ाज़ों के मुताबिक़ फ़र्ज़ रोज़े रखते होंगे।

मुख़्तलिफ़ आमाल के दरवाज़ों के नाम

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने अपने माल में से अल्लाह के रास्ते में दो चीज़ें मिलाकर सदक़ा की उसको जन्नत के सब दरवाजों से दाख़िला के लिए पुकारा जाएगा जबकि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। जो शख़्स नमाज़ियों में से होगा उसको बाबुस्सलात से बुलाया जाएगा। जो रोज़ेदारों में से होगा उसको बाबुर्रय्यान से बुलाया जाएगा। जो सदक़ा करने वालों में से होगा उसको बाबुस्सदक़े से बुलाया जाएगा। जो मुजाहिदीन में से होगा उसको बाबुल-जिहाद से बुलाया जाएगा।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! उनमें से ज़रूर किसी न किसी को किसी दरवाज़ें से बुलाया जाएगा। कोई ऐसा शख़्स भी होगा जिसको उन सब दरवाज़ों से बुलाया जाएगा? आपने इरशाद फ़रमायाः हाँ! और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप उनमें से हैं। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 268)

नोटः दो चीज़ें मिलाकर सदक़ा करने के मायने यह हैं कि जो चीज़ सदक़े में दें उसको जोड़ा करके दें। अगर दो मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) चीज़ें भी मिलाकर सदक़े में देंगे तो यह भी इस हदीस का मिस्दाक़ होगा।

बाबुल-फ़रह

बच्चों को ख़ुश रखने वाले का दरवाज़ा

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसका नाम बाबुल-फ़रह है, उससे वही दाख़िल होगा जो बच्चों को ख़ुश रखेगा।

(मुस्नदुल् फ़िरदौस दैलमी हदीस 4985)

बाबुज़्ज़ुहा

चाश्त की नमाज़ पढ़ने वालों का दरवाज़ा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसका नाम बाबुज़्ज़ुहा है। जब क़यामत का दिन होगा एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा। कहाँ हैं वे लोग जो हमेशा चाश्त की नमाज़ पढ़ने की पाबन्दी करते थे? यह आप हज़रात का दरवाज़ा है। अल्लाह तआला की रहमत के साथ इससे दाख़िल हो जाओ। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1734)

हर अमल का एक दरवाज़ा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हर तरह के अमल करने वाले के लिए जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है, उसी अमल की वजह से उनको उससे बुलाया जाएगा। (मस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 449)

जो अमल ज़्यादा होगा उसी दरवाज़े से जन्नती को पुकारा जाएगा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः जब क़यामत का दिन होगा इनसान उसके ज़्यादा अमल के लिहाज़ से पुकारा जाएगा। अगर उसकी नमाज़ अच्छी थी तो उससे पुकारा जाएगा। उसका जिहाद अच्छा था उससे पुकारा जाएगा। अगर उसका रोज़ा अच्छा था तो उससे पुकारा जाएगा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाहु! क्या वहाँ कोई शख़्स ऐसा भी होगा जिसको दो अमलों के साथ पुकारा जाएगा? आप

सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया हाँ! आप होंगे। (मुस्नद बज़्ज़ार)

जन्नत के दरवाज़ों की कुल तायदाद

आलिमों की एक जमाअत की तहक़ीक़ यह है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं: 1. बाबुस्सलात 2. बाबुल-जिहाद 3. बाबुस्सदक़ा 4. बाबुर्रय्यान 5. बाबुत्तौबा (इसका नाम बाबे मुहम्मद और बाबुर्रहमत भी है) 6. बाबुल-काज़िमीनल्-ग़ैज़ 7. बाबुर्राज़ीन 8. बाबे ऐमन (इसमें से वे लोग दाख़िल होंगे जिनका हिसाब-किताब न होगा।)

हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने नवादिरुल-उसूल में इन बाबों का इज़ाफ़ा किया है:

1. बाबुल-हज 2. बाबुस्सिला 3. बाबुल-उमरह्।

ये कुल ग्यारह दरवाज़े हो गये।

एक दरवाज़ा 'बाबुज़्ज़ुहा' है, एक 'बाबे-उम्मते मुहम्मदिया' है। ये कुल तेरह हो गए। एक दरवाज़ा 'बाबुल-फ़रह' है। इसी तरह से अल्लामा कुरतबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अठ्ठारह दरवाज़े गिनाए हैं।

(तज़किरतुल कुरतबी जिल्द 2 पेज 457-459)

आपने ज़िक्र हुई हदीसों में एक हदीस यह भी पढ़ी है कि हर तरह के नेक अमल करने वाले के लिए जन्नत का एक मख़्सूस दरवाज़ा होगा। इससे मालूम होता है कि कुछ बड़े नेक आमाल के लिए उनकी शान की बड़ाई की वजह से कुछ दरवाज़े ऐसे भी हैं जिनकी वज़ाहत तफ़सील के साथ मुबारक हदीसों में बयान नहीं की गयी, या यह कि जो दरवाज़े हदीसों में ज़िक्र हुए हैं, दरवाज़े तो उतने ही हों मगर दीगर नेक आमाल में आगे निकल जाने वालों को भी ज़िमनी तौर पर उन्हीं दरवाज़ों से गुज़ारा जाए और शान बढ़ाने के लिए उन्हीं आमाल के साथ उन दरवाज़ों के भी नाम रख दिये जाएँ। मुकम्मल इल्म तो अल्लाह ही को है।

दरवाज़ों का हुस्न व ख़ूबसूरती

अल्लाह तआला का इर्शाद "मुफ़त्त-हतुल् लहुमुल्-अब्वाबु" यानी

जन्नतियों के लिए जन्नत के दरवाज़े खुले होंगे।

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि उनका बाहर का हिस्सा अन्दर से और अन्दर का हिस्सा बाहर से नज़र आता होगा। जब उनको कहा जाएगा कि खुल जाओ, बन्द हो जाओ, कुछ बोलो तो वे इन बातों को समझते होंगे और जन्नतियों से बातचीत करते होंगे।

(तफ़सीर हसन बसरी जिल्द 4 पेज 390)

फ़ायदाः इब्ने जरीर तबरी रहमतुल्लाहि अलैहि और हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी ऐसी ही तफ़सीर फ़रमाई है।

(तफ़सीरे तबरी जिल्द 23 पेज 112-हादिल अरवाह पेज 173)

हुज़ूर सल्ल0 जन्नत का कुन्डा खटखटाएँगे

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाहसल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के दरवाज़े का कुन्डा सबसे पहले मैं हिलाऊँगा और इसमें कोई फ़ख़्र (गर्व) और घमण्ड की बात नहीं।

(तिर्मिज़ी हदीस 3616)

फ़ायदाः शफ़ाअत की लम्बी हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

मैं जन्नत के दरवाज़ों का कुन्डा पकड़ूंगा और उसको खटखटाऊँगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3148)

यह हदीस इस बात में बिल्कुल साफ़ है कि जन्नत के दरवाज़े के कुन्डे का जिस्म है जिसको खटखटाया जाएगा और उसमे हरकत पैदा होगी। (हादिल अरवाह पेज 92)

जन्नत का दरवाज़ा खटखटाने का वज़ीफ़ा

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जिस शख़्स नेः

"ला इला-ह इल्लल्लाहुल् मलिकुल् हक़्कुल् मुबीन"

को रोज़ाना सौ बार पढ़ा वह मोहताजी से बचा रहेगा, क़ब्र की

वहशत से बचा रहेगा, ग़िना (मालदारी) हासिल होगी और इसी के साथ जन्नत का दरवाज़ा खटखटाएगा।

(तारीख़े बग़दाद जिल्द 12 पेज 385)

जन्नत में दाख़िले के वक़्त बाबे उम्मत पर हुजूम

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी पाक सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरी उम्मत का वह दरवाज़ा जिससे वे जन्नत में दाख़िल होंगे, उसकी चौड़ाई बहुत तेज़ सवार के तीन रात दिन के लगातार सफ़र के बराबर है। फिर उन लोगों की उस दरवाज़े पर (हुजूम की वजह से) ऐसी भीड़ होगी कि क़रीब होगा कि उनके कन्धे उतर जाएँ।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2548)

फ़ायदाः बाबे उम्मत का एक नाम 'बाबुर्रहमत' भी है, और इस उम्मत से मुराद हुज़ूर सल्ल0 की वह उम्मत है जिन्होंने आपको माना और आपकी पैरवी की। (फ़ैज़ुल्क़दीर जिल्द 3 पेज 192)

एक हदीस में यह भी आया है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जनाब नबी करीम सल्ल0 से नक़ल करते हैं:

तर्जुमाः मेरे पास हज़रत जिब्राईल तशरीफ़ लाए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे जन्नत का वह दरवाज़ा दिखाया जिससे मेरी उम्मत दाख़िल होगी। (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 4652)

जन्नत के दरवाज़ों की चौड़ाई

सात लाख आदमी एक ही वक़्त में दाख़िल हो सकेंगे

हदीसः हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 नेफ़रमायाः

तर्जुमाः मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार या सात लाख इन दोनों अददों (संख्याओं) में से एक में रिवायत करने वाले को शक है। एक दूसरे को थाम-थामकर जन्नत में दाख़िल होंगे। उन्होंने एक-दूसरे को

हाथ से पकड़ रखा होगा। उनमें का पहला शख़्स उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल न होगा जब तक कि उनमें का आख़िरी शख़्स दाख़िल न होगा। उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद जैसे होंगे। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 373)

फ़ायदाः इस हदीस से मालूम होता है कि सत्तर हज़ार या सात लाख जन्नती एक साथ जन्नत के दरवाज़े से दाख़िल होंगे, इसी से जन्नत के दरवाज़े की वुस्अत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि एक दरवाज़े से एक ही समय में सात लाख आदमियों के गुज़रने की गुंजाइश है।

हर दरवाज़े के दो पटों के बीच चालीस साल चलने की दूरी

हदीसः हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। उसके हर दरवाज़े के दो पटों के बीच चालीस साल (तक सफ़र करने) का फ़ासला है।

(ज़वायद अल-मुरूज़ी जिल्द 1 पेज 535)

हदीसः हज़रत मुआविया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के (दरवाज़ों के) पटों में से दो पटों के बीच चालीस साल (चलने) का फ़ासला हैं उसपर एक दिन ऐसा भी आने वाला है कि उसपर ख़ूब हुजूम होगा। (मुस्अद अहमद 5/3)

दो दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासला

हदीसः हज़रत लक़ीत बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु की शक्ल में जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! जन्नत और जहन्नम क्या हैं? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तेरे माबूद की क़सम! दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं। उनमें से हर दो दरवाज़ों के बीच सवार आदमी सत्तर साल तक चल सकता

है, और जन्नत के आठ दरवाज़े हैं उनमें से हर दो दरवाज़ों के बीच सवार आदमी सत्तर साल तक चल सकता है।

(मोअजम तबरानी कबीर जिल्द 19 पेज 213)

फ़ायदाः याद रहे कि यह एक दरवाज़े के दरमियानी दो पटों का फ़ासला नहीं बल्कि ऊपर नीचे के दो दरवाज़ों के बीच का फ़ासला बताना मक़सद है। उपरोक्त उनवान से भी यही बात समझे।

जन्नत के दरवाज़े ऊपर नीचे को हैं

जिस तरह से जन्नत के दर्जे एक-दूसरे के ऊपर हैं। उनके दरवाज़े भी इसी तरह से हैं। चुनाँचे ऊपर की जन्नत का दरवाज़ा भी निचली जन्नत से ऊपर है। और जैसे ही कोई जन्नत ऊँची होगी उतनी ही ज़्यादा फैली हुई और चौड़ी होगी। और सबसे ऊपर वाली सबसे ज़्यादा चौड़ी और खुली हुई होगी और जन्नत के दरवाज़ों की वुस्अत (चौड़ाई और समाई) जन्नत की वुस्अत के एतिबार से होगी। शायद कि इसी वजह से जन्नत के दरवाज़ों के हर दो पटों के दरमियानी फ़ासले के बयान में इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) पाई जाती है, क्योंकि कुछ दरवाज़े कुछ के ऊपर हैं। (हादिल अरवाह पेज 93)

हर मोमिन की जन्नत के चार दरवाज़े होंगे

हज़रत फ़ज़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हर मोमिन के लिए (उसकी) जन्नत के चार दरवाज़े होंगे। एक दरवाज़े से उसकी ज़ियारत के लिए फ़रिश्ते हाज़िर हुआ करेंगे। एक दरवाज़े से उसकी हूरे-ऐन बीवियाँ दाख़िल होंगी। एक दरवाज़ा उसके और दोज़ख़ियों के दरमियान बन्द रहेगा। जब वह चाहेगा उसको खोलकर उनकी तरफ़ देख लेगा ताकि उसके लिए (जन्नत की) नेमत की क़द्र में बढ़ौतरी हो। एक दरवाज़ा उसके और दारुस्सलाम के दरमियान पर्दा और रोक होगा, यह जब चाहेगा उससे अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो सकेगा।

(हादिल अरवाह पेज 92)

मोमिन को दोज़ख़ का मुआयना कराने की वजह

अल्लाह की मोमिनों को दोज़ख़ के दिखाने की क्या हिक्मत हो सकती है इसके बहुत-से जवाब दिए गए हैं:

1. ताकि वह जन्नत की क़द्र को और उस ख़तरनाक अज़ाब को जो उनसे हटाया गया, को पहचानें क्योंकि नेमत का सम्मान और अदब दानिश्मन्दी के लिहाज़ से वाजिब है।
2. यह भी वजह बताई गयी है कि दोज़ख़ ने अपने परवर्दिगार से शिकायत की थी कि या रब! मैंने तो आपकी नाफ़रमानी कभी नहीं की। फिर आपने मुझे ज़ालिमों और घमण्डियों (काफ़िरों वग़ैरह) का घर क्यों बना दिया? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं सबसे पहले तुम्हें अम्बिया और नेक लोगों की ज़ियारत कराऊँगा (और तू उनको पुलसिरात से गुज़रते वक़्त देख लेगी।)
3. एक जवाब यह भी दिया गया है कि ताकि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमरूद की आग से जो नजात अता की उस (की आग की तरह) का मोमिन लोग अपनी आँखों से मुआयना कर लें।
4. एक जवाब यह भी दिया गया है कि ताकि काफ़िर मोमिनों की आन-बान भी देख लें कि उनके असली जोहर (ईमान और नेक आमाल) की वजह से न तो उनमें आग कोई असर पैदा कर रही है और न उनको ख़राब कर रही है।
5. एक जवाब यह भी दिया गया है कि ताकि मोमिन हज़रात अल्लाह तआला की कुदरत के कमाल को देख सकें (आग में से गुज़रने के बावजूद वह उनपर अपना कोई असर नहीं कर सकी) और एक गिरोह दोज़ख़ में आह व फ़रियाद कर रहा है और एक गिरोह से ख़ुद आग फ़रियाद कर रही है (कि ये अल्लाह वाले मुझसे फ़ौरन निकल जाएँ ऐसा न हो कि मेरी

अज़ाब व तकलीफ़ की ताक़त कम या ख़त्म हो जाए)।

(कन्ज़ुल मदफ़ून पेज 133)

जन्नत के दरवाज़े की एक तहरीर

क़र्ज़ा देने वाले का सवाब सदक़ा देने वाले से ज़्यादा है

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस रात मुझे मेराज कराई गई मैंने जन्नत के दरवाज़े पर यह लिखा हुआ देखा "सदक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना" मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछाः क़र्ज़ में ऐसी कौनसी बात है कि वह सवाब के एतिबार से सदक़ा करने से बढ़ा हुआ है? फ़रमायाः क्योंकि माँगने वाला माँगता है जबकि उसके पास कुछ मौजूद होता है, जबकि क़र्ज़ लेने वाला क़र्ज़ा नहीं माँगता मगर ज़रूरत के वक़्त। (तज़ाकिरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 459)

हदीसः हज़रत उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक शख़्स जन्नत में दाख़िल हुआ तो उसने जन्नत के दरवाज़े पर यह लिखा हुआ देखा "सदक़े का अज्र दस गुना है और क़र्ज़ा देने का अठ्ठारह गुना"। (तबरानी)

फ़ायादाः यह जन्नत में दाख़िल होने वाले शख़्स ख़ुद हुज़ूर सल्ल0 ही हैं जैसा कि ऊपर की हदीस इसकी ताईद कर रही है।

फ़ायदाः जो शख़्स सदक़ा, ख़ैरात और ज़कात कसरत से (यानी ख़ूब अधिक) निकालेगा और ज़रूरतमन्दों को क़र्ज़ा मुहैया (उपलब्ध) कराएगा वह इन्शा-अल्लाह जन्नत के "बाबुस्सदक़ा" से जन्नत में दाख़िल होगा।

जन्नत के आमाल

जन्नत की चाबी

जन्नत की चाबी कलिमा तय्यिबा है

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की चाबी **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** की गवाही देना है। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 38)

चाबी के दन्दाने

हज़रत वहब बिन मुनब्बह् से सईद बिन रमाना ने पूछा क्या "ला इला-ह इल्लल्लाहु" जन्नत की चाबी नहीं है? उन्होंने फ़रमाया क्यों नहीं! लेकिन हर चाबी के दन्दाने होते हैं (कलिमा तय्यिबा के दन्दाने सही अक़ीदे और नेक आमाल हैं।) जो शख़्स जन्नत के दरवाज़े पर चाबी (कलिमा) के दन्दाने (नेक आमाल) के साथ आया तो उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और जो शख़्स दरवाज़े पर चाबी को दन्दानों के साथ न लाया उसके लिए दरवाज़ा नहीं खुलेगा।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 39)

जिहाद की तलवारें जन्नत की चाबियाँ हैं

हज़रत यज़ीद बिन शजरा रह0 फ़रमाते हैं (जिहाद की) तलवारें जन्नत की चाबियाँ हैं। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 40)

नमाज़ जन्नत की चाबी है

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः नमाज़ की चाबी वुज़ू है और जन्नत की चाबी नमाज़ है। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 521)

'ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि' जन्नत का दरवाज़ा (चाबी) है

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा (अमल, चाबी) के बारे में न बताऊँ? मैंने अर्ज़ किया क्यों नहीं? फ़रमायाः **"ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि"** (जन्नत का दरवाज़ा है।) (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3576)

एक वाक़िआ

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हज़रत मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम (यानी मौत का फ़रिश्ता) एक शख़्स (की रूह निकालने) के लिए आए और उसके बदन के अंगों में से हर अंग में तलाश किया तो उनमें कहीं कोई नेकी न पाई। फिर उसका दिल चीरकर देखा तो उसमें भी कोई नेकी न मिली। फिर उसका जबड़ा खोलकर देखा तो उसकी ज़बान के एक किनारे के साथ यह कलिमा चिपका हुआ था। वह **'ला इला-ह इल्लल्लाहु'** पढ़ रहा था। तो उस फ़रिश्ते ने कहा तेरे लिए जन्नत वाजिब हो गई क्योंकि तूने कलिमा-ए-इख़्लास (यानी कलिमा-ए-तय्यिबा कलिमा-ए-तौहीद) पढ़ लिया है। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 522)

बाप जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना आपने इरशाद फ़रमायाः वालिद (बाप) जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है। (यानी जो अपने वालिद को दुनिया में ख़ुश करेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा)।

(बुदूरे साफ़िरह् हदीस 1756)

एक दरवाज़े पर लिखी हुई इबारत

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 का इरशाद हैः

तर्जुमाः जिस रात मुझे मेराज कराई गई मैंने जन्नत के दरवाज़े पर यह लिखा हुआ देखाः "सदक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ा देने का अठ्ठारह गुना"। मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछाः क़र्ज़ा देना सदक़ा देने से अफ़ज़ल क्यों है? उन्होंने अर्ज़ किया क्योंकि सवाल करने वाला जब माँगता है तो आम तौर पर उसके पास कुछ मौजूद होता है, जबकि क़र्ज़ा माँगने वाला क़र्ज़ा ज़रूरत ही के वक़्त तलब करता है। (इब्ने माजा हदीस 2431)

मिस्कीनों और फ़क़ीरों से मुहब्बत

हदीसः जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः मसाकीन और फ़क़ीरों से मुहब्बत करना जन्नत की चाबी है। (इत्तिहाफ़ुस्-सादतिल मुत्तक़ीन जिल्द 9 पेज 283)

फ़ायदाः मिस्कीन वह है जिसकी मिल्कियत में कुछ न हो। और फ़क़ीर वह है जिसके पास 'ज़कात के निसाब' से कम माल हो।

जन्नत के दरवाज़ों से गुज़रने के हक़दार बनाने वाले आमाल

ईमान का इनाम

हदीसः हज़रत बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी इस हालत में मरा कि वह अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान रखता था उससे कहा जाएगा जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिससे चाहे जन्नत में दाख़िल हो जा।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 9)

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल गए

हदीसः हज़रत जरोर (बिन अब्दुल्लाह बिजली रहमतुल्लाहि अलैहि) से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी इस हालत में मरा कि उसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया था (और) नाहक़ किसी को क़त्ल न किया था तो जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाएगा। (बुदूरे साफ़िरह पेज 495)

सही अकीदे रखने वाला मुसलमान जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो सकेगा

हदीसः हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने यह कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और उसकी बन्दी के बेटे हैं और उसका कलिमा हैं। हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम की तरफ़ जिसको (हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के वास्ते से) पहुँचाया और अल्लाह की तरफ़ से एक जान (दार चीज़) हैं। जन्नत (भी) हक़ है और दोज़ख़ (भी) हक़ है। आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहेगा उसे अल्लाह तआला दाख़िल फ़रमाएँगे।

(बुदूरे साफ़िरह पेज 493)

अच्छी तरह से वुज़ू करने वाला

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः तुम में से जिसने वुज़ू किया (और वुज़ू के हिस्सों तक) पानी को अच्छी तरह से पहुँचाया और वुज़ू से फ़राग़त पर कहा (मैं

गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं) तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। उनमें से जिससे चाहेगा दाख़िल हो जाएगा। (हादिल अरवाह पेज 86)

तीन क़िस्म के मक़्तूल लोगों का अन्जाम

हदीसः हज़रत उक्बा बिन अब्दे सलमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मक़्तूल (क़त्ल किए जाने वाले) तीन तरह के हैं:

1. वह आदमी जिसने अपनी जान और अपने माल के साथ ख़ुदा की राह में जिहाद किया, यहाँ तक कि (अल्लाह के) दुश्मनों से मुठभेड़ हो गयी और उनसे जिहाद किया, यहाँ तक कि शहीद कर दिया गया। यह इम्तिहान लिया हुआ शहीद है जो ख़ेमे में अल्लाह के अर्श के नीचे होगा। इससे इम्बिया किराम नुबुव्वत के दर्जे के अलावा फ़ज़ीलत न रखते होंगे। (लेकिन शहादत के दर्जे को जितना भी ऊँचा मान लिया जाए मगर नुबुव्वत का दर्जा शहादत के इस दर्जे से बेमिसाल आला व अफ़ज़ल है।)
2. और एक वह आदमी है जिसने अपने नफ़्स से गुनाहों और ख़ताओं को दूर हटा दिया और अपने नफ़्स और माल के साथ जिहाद किया यहाँ तक कि जब वह अल्लाह के दुश्मनों के आमने-सामने हुआ और उनसे जंग की यहाँ तक कि शहीद हो गया। यह अपने गुनाहों और ख़ताओं की तहारत के तहत (यानी उनसे सफ़ाई हासिल कर रहा) होगा और यह तलवार ख़ताओं को मिटाने वाली है, और दाख़िल किया जाएगा जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगा क्योंकि उसके आठ दरवाज़े हैं और जहन्नम के सात दरवाज़े हैं और उनमें से बाज़े बाज़ों से अफ़ज़ल है।

3. और एक आदमी मुनाफ़िक़ है जिसने अल्लाह की राह में अपनी जान और माल से जिहाद किया। जब दुश्मन से टक्कर हुई उससे जंग की यहाँ तक कि क़त्ल कर दिया गया। पस यह दोज़ख़ में जाएगा क्योंकि (जो तलवार उसकी गर्दन पर चली है) उसके निफ़ाक़ को नहीं मिटा सकती। (अल्-बअ्सु वन्नुशूर पेज 257)

जन्नत के आठों दरवाज़े खोलने वाले आमाल

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब नबी करीम सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी पाँचों नमाज़ें अदा करता है, रमज़ान मुबारक के रोज़े रखता है, ज़कात निकालता है, सात बड़े गुनाहों से बचता है तो उसके लिए क़यामत के दिन जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1740)

फ़ायदाः सात बड़े गुनाहों की तफ़सील हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की दूसरी रिवायत में इस तरह से है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सात बड़े गुनाह हैं (सहाबा किराम ने) अर्ज़ किया वे कौनसे हैं? फ़रमाया (वे हैं) अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक (माबूद) बनाना। किसी इनसान को क़त्ल करना जिस (के क़त्ल) को अल्लाह तआला ने हराम क़रार दिया है, मगर हक़ में, (जैसे किसी के क़त्ल के बदले में या इस्लाम दीन से फिर जाने की सज़ा में और या शादीशुदा होने की हालत में ज़िना करने की सज़ा में)। पाकदामन औरत पर ज़िना की तोहमत लगाना, काफ़िरों के मुक़ाबले में जिहाद के दिन भाग जाना। सूद खाना, यतीम का माल (नाहक़ तौर पर) खाना और (दारुल-कुफ़्र में) लौट जाना। (जामे सग़ीर हदीस 6450)

फ़ायदाः इन बड़े गुनाहों के अलावा भी बड़े गुनाह हैं जिनको आपने मौक़े के एतिबार से इरशाद फ़रमाया और दीन के आलिमों ने

उनको अपनी-अपनी किताबों में एकत्र फ़रमाया। तफ़सील के लिए 'अज़्ज़वाजिर अल्लामा इब्ने हज्र मक्की 'रिसाला अल-कबाईर' अल्लामा इब्ने नजीम और 'अल-कबाईर' अल्लामा ज़हबी मुलाहज़ा फ़रमाएँ।

बचपन में मरने वाले बच्चे जन्नत के दरवाज़ों पर मिलेंगे

हदीसः हज़रत उक़्बा बिन अब्द सलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने आप सल्ल0 से सुना है कि आपने फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस मुसलमान के तीन बच्चे नाबालिग़ होने की हालत में मर जाएँ तो वे उसको जन्नत के आठों दरवाज़ों पर मिलेंगे, उनमें से जिससे वह चाहेगा (जन्नत में) दाख़िल हो सकेगा।

(अल्-बअ्सु वन्नुशूर पेज 258)

प्यासे को पानी पिलाना

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिसने प्यासे को पानी पिलाया और उसे सैराब कर दिया उसके लिए जन्नत के सब दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसे कहा जाएगा, उनमें से (जिससे चाहे) दाख़िल हो जा। (और) जिसने किसी मोमिन को खाना खिलाया यहाँ तक कि उसे सेर कर दिया अल्लाह तआला उसे जन्नत के दरवाज़ों में से उस दरवाज़े से दाख़िल करेंगे जिससे कोई दाख़िल न हो सकेगा, सिवाय उसके जो (अमल में) उस जैसा होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1744)

तीन कामों का बदला

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तीन (अमल) ऐसे हैं जो शख़्स उनको ईमान के साथ (क़यामत के दिन) लाया, जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगा दाख़िल होगा, और जिस 'हूरे-ऐन 'को तलब करेगा वह उसको दी जाएगी। (वे तीन अमल ये हैं:)

1. जिसने अपने क़र्ज़ख़्वाह (क़र्ज़ देने वाले) को उसका क़र्ज़ इज़्ज़त के साथ अदा किया।
2. अपने (मक़्तूल के) क़ातिल को माफ़ किया।
3. और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस बार सूरः इख़्लास पढ़ी।

हज़रत अबू बक्र ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! (अगर कोई) इनमें से एक काम कर ले तो? फ़रमायाः और (अगर कोई) इनमें से एक काम कर ले तो भी। (बुदूरे साफ़िरह पेज 1784)

दो बेटियों या बहनों या फूफियों या ख़ालाओं की ज़िम्मेदारी उठाने का इनाम

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस (मुसलमान) की दो बहनें हों या दो बेटियाँ हों या दो फूफियाँ हों या दो ख़ालाएँ हों और उसने उनकी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा किया तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1751)

चालीस हदीसों को याद करने का इनाम

हदीसः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिसने मेरी उम्मत के लिए चालीस हदीसें याद कीं (या महफ़ूज़ कीं या पहुँचाई) जिनसे अल्लाह तआला ने उनको नफ़ा पहुँचाया (क़यामत के दिन) उसे कहा जाएगा जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जा। (हिलयतिल् औलिया जिल्द 4 पेज 189)

औरत के चार कामों का इनाम

हदीसः जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो औरत पाँचों नमाज़ें पढ़ती रही, रमज़ान मुबारक के रोज़े रखती रही, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करती रही और अपने

शौहर की फ़रमाँबरदारी करती रही, उसे (क़यामत के दिन) कहा जाएगा, जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1746)

एक नेकी की क़द्र व क़ीमत

एक नेकी हदिया करने से दोनों जन्नत में

इमाम ग़ज़ाली तहरीर फ़रमाते हैं कि एक शख़्स को क़यामत के दिन पेश किया जाएगा। उसको अपने लिए कोई ऐसी नेकी नहीं मिलेगी जिससे उसकी तराज़ू भारी हो सके। चुनाँचे उसकी तराज़ू बराबर-बराबर रहेगी। अल्लाह तआला अपनी रहमत से उसको फ़रमाएँगे लोगों के पास जाओ। उस शख़्स को ढूँढो जो तुम्हें एक नेकी दे दे और मैं उसके बदले में तुझे जन्नत में दाख़िल कर दूँ। चुनाँचे वह तमाम मख़्लूक़ात के पास जाएगा और किसी एक आदमी को भी ऐसा न पाएगा जो उससे इस मामले में बात करे। बस वह यही कहेगा मुझे डर है कि मेरा आमालनामा हल्का न हो जाए इसलिए मैं इस नेकी का आपसे ज़्यादा मोहताज हूँ। वह मायूस हो जाएगा तब उसको एक शख़्स कहेगा तू क्या ढूँढता है? वह कहेगा सिर्फ़ एक नेकी। हालाँकि मैं ऐसी क़ौम के पास से भी गुज़रा हूँ कि उनके पास हज़ार (हज़ार) नेकियाँ थीं लेकिन उन्होंने मुझे देने से कन्जूसी की। उसको वह शख़्स कहेगा मैं अल्लाह तआला के सामने हाज़िर था और मैंने अपने आमालनामें में सिर्फ़ एक नेकी पाई थी। मेरा यक़ीन है कि वह कोई मेरी ज़रूरत पूरी नहीं कर सकती, उसको तुम मुझसे बतौर हदिये (तोहफ़े और उपहार) के ले जाओ। वह उस नेकी को लेकर ख़ुशी और सुरूर के साथ चल पड़ेगा तो अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे तेरा क्या हाल है? हालाँकि अल्लाह तआला उसके हाल को ख़ूब जानते होंगे। वह अर्ज़ करेगा ऐ परवर्दिगार! मेरे साथ ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ। फिर अल्लाह तआला उसके उस साथी को पुकारेंगे जिसने उसको नेकी दी थी और उससे फ़रमाएँगे मेरा करम तेरे करम से बड़ा और अज़ीम है। अपने इस भाई के हाथ को पकड़ो और दोनों

जन्नत में चले जाओ।

(तज़किरा फ़ी अहवालिल् मौता व उमूरिल् आख़िरत पेज 319)

अपने बाप को एक नेकी देने वाले की बख़्शिश

इसी तरह से एक शख़्स के अमल की तराज़ू के दोनों पलड़े बराबर हो जाएँगे। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे तुम जन्नत वालों में से नहीं और न ही दोज़ख़ वालों में से हो। उस वक़्त एक फ़रिश्ता एक काग़ज़ लेकर आएगा और उसको तराज़ू के एक पलड़े में रखेगा। उस काग़ज़ में "उफ़" लिखी होगी, तो यह टुकड़ा नेकियों पर भारी हो जाएगा क्योंकि यह (माँ-बाप की) नाफ़रमानी का ऐसा कलिमा है जो दुनिया के पहाड़ों से भी ज़्यादा भारी हो जाएगा इसलिए उसको दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म किया जाएगा।

कहते हैं कि वह शख़्स माँग करेगा कि उसको अल्लह तआला के पास वापस ले चलें। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे उसको लौटा लाओ। फिर अल्लाह तआला पूछेंगे नाफ़रमान बन्दे! किस वजह से तुम मेरे पास वापस आनें को कह रहे थे। वह अर्ज़ करेगा इलाही! आपने तो देख लिया मैं दोज़ख़ की तरफ़ जा रहा हूँ और इससे बचने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं। मैं अपने बाप का नाफ़रमान था हालाँकि वह भी मेरी तरह दोज़ख़ में जा रहा है। आप उसकी वजह से मेरे अज़ाब को बढ़ा दें और उसको दोज़ख़ से छुटकारा दे दें। फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला हंस पड़ेंगे और फ़रमाएँगे तूने दुनिया में उसकी नाफ़रमानी की और आख़िरत में उसके साथ नेक सुलूक किया। अपने बाप का हाथ पकड़ो और दोनों जन्नत में चले जाओ।

(तज़किरतुल क़ुरतबी पेज 319)

जन्नत और उसकी क़ीमत

जन्नत की एक क़ीमत जिहाद है

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों को और उनके मालों को इस बात के बदले में ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी (और खुदा के हाथ माल व जान बेचने का मतलब यह है कि) वे लोग अल्लाह की राह में (यानी वह सौदा जिहाद करना है, चाहे उसमें क़ातिल होने की नौबत आए या क़त्ल हो जाने की) इस (क़िताल पर (उनसे जन्नत का) सच्चा वायदा किया गया है। तौरात में (भी) और इन्जील में (भी) और क़ुरआन में (भी) और (यह बात मानी हुई है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने वायदे को कौन पूरा करने वाला है। (और उसने इस सौदे पर जन्नत का वायदा किया है) तो (इस हालत में) तुम लोग (जो कि जिहाद कर रहे हो) अपने इस सौदे (जिसका ज़िक्र हुआ) पर जिसका तुमने (अल्लाह तआला से) मामला ठहराया है खुशी मनाओ (क्योंकि इस सौदे पर तुमको वादे के अनुसार जन्नत मिलेगी) और यह (जन्नत मिलना) बड़ी कामयाबी है (तुमको यह सौदा ज़रूर करना चाहिये)। (सूरःतौबा आयत 111)

कलिमा तय्यिबा

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा जन्नत की क़ीमत क्या है? आपने इरशद फ़रमायाः 'ला इला-ह इल्लल्लाहु'। (सिफ़तुल जन्नत इब्नु नुऐम जिल्द 1 पेज 77)

फ़ायदाः यानी कलिमा तय्यिबा पढ़ना और फिर उसके तमाम तक़ाज़ों पर अमल करना। चुनाँचे इस छोटे-से जवाब में शरीअत की पूरी तफ़सील छुपी हुई है वरना अगर कोई जबान से कलिमे का विर्द (जाप) करेगा और काम कुफ़्र व शिर्क के करे तो वह दोज़ख़ में जाएगा और इसी तरह से सब काम इस्लाम के किए लेकिन कोई-सा एक अक़ीदा कुफ़्र का रखता था तो वह भी दोज़ख़ में जाएगा।

(इमदादुल्लाह अनवर)

जन्नत के काम

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह की ख़िदमत में एक देहाती हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप मुझे ऐसे अमल की तालीम दे दें, जब मैं उसपर अमल करूँ तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। आपने फ़रमायाः अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक मत करो, फ़र्ज़ नमाज़ें क़ायम करो, फ़र्ज़ ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो।

तो उसने कहा उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है मैं इस तरीक़े से कभी कोई चीज़ नहीं बढ़ाऊँगा और न इससे कुछ कम करूँगा। जब वह पीठ फेरकर जाने लगा तो जनाब नबीं करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी को यह बात अच्छी लगे कि वह जन्नत वाले लोगों में से किसी आदमी को देखे तो वह इसको देख ले।

(बुख़ारी शरीफ़ पेज 210)

मरते वक़्त कलिमा तय्यिबा

हदीसः हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी इस हालत में मरा कि वह यक़ीन रखता था कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्लिम शरीफ़ पेज 15,16,18)

फ़ायदाः इस हदीस की तशरीह (व्याख्या) में अभी पीछे गुज़रा हदीस का फ़ायदा फिर पढ़ लें और इस हदीस के अलफ़ाज़ "और वह यक़ीन रखता था" यह बता रहा है कि उसका अक़ीदा कलिमा तय्यिबा के अनुसार ठीक था। वह उन ठीक अक़ीदों की बिना पर जन्नत में जाएगा। या कोई इजमाली (मुख़्तार) तौर पर सही अक़ीदा रखता था मगर ईमानी बातों से मुताल्लिक़ ज़्यादा तफ़सील का उसको इल्म नहीं

हो सका। वह भी जन्नत में जाएगा। इस हदीस में उस मय्यित के लिए भी खुशखबरी है जिसके घर वाले मौत के वक़्त कलिम-ए-शहादत की तलक़ीन के बजाए मुर्दे के फ़िराक़ (जुदाई) और वक़्त गम में रोना व पीटना शुरू कर देते हैं और मय्यित कलिमा तय्यिबा अदा नहीं कर सकी तो ऐसी सूरत में मरने वाला सही अक़ीदा लेकर दुनिया से जाएगा और जन्नत में दाखिल होगा।

मरते वक़्त कलिमा पढ़ने वाला जन्नत में

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः जिस इन्सान का आख़िरी कलाम 'ला इला-ह इल्लल्लाहु होगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। (अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 3116)

फ़ायदाः इस हदीस का यह मतलब नहीं है कि ज़िन्दगी में चाहे जितने गुनाह भी किये हों बस अगर आख़िर में कलिमा पढ़ लिया तो सीधे जन्नत में चले गए। नहीं! बल्कि अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर निर्भर है चाहे तो बख़्श दे और सीधा जन्नत में पहुँचा दे और चाहे तो गुनाहों की सज़ा देने के बाद जन्नत में दाख़िल करे। हाँ! वह शख़्स जो मरने के वक़्त ही मुसलमान हुआ और कलिमा पढ़ा तो उसके इस कलिमे की बरकत से तमाम गुनाह जो कुफ़्र की हालत में किए कुफ़्र समेत मिट जाएँगे और वह सीधा जन्नत में जाएगा।

सही अक़ीदों की बरकत से जन्नत के तमाम दरवाज़े खुल जाएँगे

हदीसः हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, और हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसको

अल्लाह ने मरियम पर डाला था और वह अल्लाह की तरफ़ से रूह थे, और बेशक जन्नत हक़ है और बेशक दोज़ख़ हक़ है तो उसको अल्लाह जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिस से चाहेगा दाख़िल कर देगा। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3435)

कलिमे पर एतिक़ाद रखने वाले को ख़ुशख़बरी

हदीसः नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने जूते मुबारक अता फ़रमाए और इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे ये दोनों जूते ले जाओ और उस दीवार के पीछे जिससे तुम्हारी मुलाक़ात हो (और) वह यह गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका दिल इसपर यक़ीन रखता हो तो तुम उसको जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाओ। (मुस्लिम शरीफ़ पेज 31)

फ़ायदाः मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस तवील अलफ़ाज़ में नक़ल की गयी है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर निकलकर यह ख़ुशख़बरी सुना ही रहे थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और नाराज़गी का इज़हार किया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को पकड़कर हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किया और पूछा, क्या आपने इसका हुक्म फ़रमाया है? आपने फ़रमाया, हाँ! तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अगर यह हो गया तो लोग भरोसा करके बैठ रहेंगे (नेकी के काम छोड़ देंगे)। नबी करीम सल्ल0 ने यह ऐलान रुकवा दिया।

इसलिए अब भी हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तदबीर को अमल में लाइये, तवक्कुल करके बैठ जाने के बजाए नेक अमल करने की कोशिश फ़रमाइये, क्योंकि जन्नत तो अल्लाह की रहमत से मिलती है मगर जन्नत में दर्जों की तरक़्क़ी उमूमन इन्हीं नेक आमाल की कसरत (अधिकता) की वजह से मिलेंगे जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है:

हदीसः यानी जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होंगे तो वे

उसमें अपने आमाल की फ़ज़ीलत के हिसाब से दाख़िल होंगे। ज़्यादा और अफ़ज़ल आमाल वाले अफ़ज़ल दर्जों में दाख़िल होंगे, कम और अदना आमाल वाले अदना दर्जों में दाख़िल होंगे।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2549)

रहमत और बख़्शिश

जन्नत में दाख़िला अल्लाह की रहमत से होगा

अल्लाह की रहमत की वुसअत

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: और मेरी रहमत ने तमाम चीज़ों को घेर रखा है (बावजूद इसके कि उनमें बहुत-सी मख़्लूक़ सरकश और नाफ़रमान है जो इसकी मुस्तहिक़ (पात्र) नहीं, मगर उनपर भी एक तरह की रहमत है चाहे दुनिया में ही सही, पस मेरी रहमत ग़ैर-मुस्तहिक़ों के लिए भी आम है) मैं इस रहमत को पूरे तौर पर उन लोगों के लिए ज़रूर लिखूँगा जो ख़ुदा तआला से डरते हैं और ज़कात देते हैं, और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। (सूरः आराफ़ आयत 156)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला ने जिस दिन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया यह लिख दिया था कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से ज़्यादा है। और एक रिवायत में (यह भी इज़ाफ़ा) है कि (अल्लाह तआला ने अपना यह फ़ैसला लिखकर) अपने पास अर्श पर रख दिया है। (निहाया फ़िल्-फ़ितनि वल्-मलाहिम पेज 251)

क़यामत में रहमत की वुसअत

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमया:

तर्जुमा: अल्लाह तआला की सौ रहमते हैं, उनमें से मख़्लूक़ात

के दरमियान सिर्फ़ एक रहमत नाज़िल की है। उसकी एक रहमत की वजह से तमाम वहशी जानवर अपनी औलाद पर शफ़्क़त का मामला करते हैं, और निन्नानवे रहमतें अल्लाह तआला ने बाद के लिए रख छोड़ी हैं उनके साथ क़यामत के दिन अपने बन्दों पर रहमत का मामला करेंगे। (निहाया फ़िल्-फ़ितन पेज 250)

आख़िरत में अज़ाब किसको होगा?

हदीसः जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः माँ अपने बच्चे को कभी आग में नहीं डालती। इसके बाद हुज़ूरे अकरम सल्ल0 ख़ूब रोते रहे। फिर आपने अपना सर मुबारक उठाकर हमारी तरफ़ तवज्जोह की और इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तबारक व तआला अपने बन्दों में से किसी को अज़ाब नहीं देंगे (यानी दोज़ख़ में नहीं डालेंगे) मगर सरकश घमण्डी को, और वह जो कलिमा **'ला इला-ह इल्लल्लाहु'** पढ़ने से इनकार करे।

(निहाया फ़िल्-फ़ितन पेज 250)

फ़ायदाः यह हदीस सनद के हिसाब से कमज़ोर है। अगर इसका मज़मून दुरुस्त हो तो इस हदीस को पढ़कर पढ़ने वाले ख़ुदा की रहमत को देखकर गुनाहों में मुलव्विस न हों वरना रहमत के सहारे पर गुनाहों पर सरकशी करने वालों में शरीक हो जाएँगे और सरकश पर रहमत न होने और दोज़ख़ में जाने का बयान आप इसी हदीस में पढ़ चुके हैं।

शैतान को भी रहमत की उम्मीद होने लगेगी

हदीसः हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। दीन के मामले में गुनाह में मुलव्विस होने वाला और अहमक़ हिमाक़त में मुब्तला भी ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। और मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वह शख़्स भी जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा जिसके चूतड़ों को आग जला देगी। और मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है

अल्लाह तआला क़यामत के दिन इतने बड़े पैमाने पर रहमत का मामला फ़रमाएँगे कि शैतान को भी रहमतत की उम्मीद होने लगेगी कि शायद उसको भी रहमत हासिल हो जाए।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 253)

मोमिन की बख़्शिश का बहाना

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला क़यामत के दिन गुनाहगार बन्दे को अपने क़रीब बुलाएँगे और उसपर अपने बाज़ू का पर्दा डालेंगे और तमाम मख़्लूक़ात से उसको छुपा लेंगे, और पर्दे ही में उसका आमालनामा अता करेंगे और फ़रमाएँगे (ऐ आदम के बेटे! अपने) आमालनामें को पढ़ो। वह (अपने आमालनामे को पढ़ते हुए) नेकी को पढ़ेगा। उसकी वजह से उसका चेहरा रोशन हो जाएगा और दिल ख़ुश हो जाएगा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ मेरे बन्दे! क्या तुम्हें (इस नेकी का इल्म है तो वह अर्ज़ करेगा हाँ!) ऐ परवर्दिगार मैं (इसको) जानता हूँ। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मैंने तुमसे इस नेकी को क़बूल किया तो वह सज्दे में गिर पड़ेगा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे अपना सर उठाओ, इस नेकी को अपने आमालनामे में रहने दो। फिर वह शख़्स (आमालनामा पढ़ते हुए अपने) गुनाह के पास से गुज़रेगा तो उसकी वजह से शर्म के मारे ख़ुद ही उसका चेहरा सियाह हो जाएगा और उससे उसका दिल घबरा जाएगा। अल्लाह तआला पूछेंगे ऐ मेरे बन्दे! इस (गुनाह) को पहचानते हो? वह अर्ज़ करेगा हाँ! या रब! पहचानता हूँ। तो अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मैं इस गुनाह को तुमसे ज्यादा जानता हूँ मैंने इसको तुम्हारी ख़ुशी के लिए माफ़ किया।

चुनाँचे वह बन्दा नेकी के पास से गुज़रता रहेगा, उसकी नेकी क़बूल होती रहेगी। वह सज्दे में जाता रहेगा और गुनाह के पास से गुज़रता रहेगा। उसका गुनाह माफ़ किया जाता रहेगा और वह (उसके शुक्राने में) सज्दे में गिरता रहेगा। पस मख़्लूक़ात उसकी किसी हालत

(शर्मिन्दगी और खुशी) को नहीं देखेंगे सिवाए सज्दों के, यहाँ तक कि मख़्लूक़ात एक-दूसरे को आवाज़ लगाएगी: खुशख़बरी हो उस बन्दे के लिए जिसने अल्लाह तआला की कभी नाफ़रमानी नहीं की क्योंकि उसको इस स्थिति का पता न चलेगा कि उस मोमिन का उसके और अल्लाह तआला के दरमियान क्या मामला गुज़रा, और यह अल्लाह तआला के सामने रुका रहा है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 850)

फ़ायदा: अल्लामा इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में मुसलमानों का दाख़िला अल्लाह तआला की रहमत की वजह से होगा जैसा कि हुज़ूर सल्ल0 का इरशाद है कि तुम में से कोई शख़्स जन्नत में अपने आमाल की बिना पर दाख़िल नहीं होगा।

(इत्तिहाफ़ुस्सादा जिल्द 2 पेज 197)

लेकिन जन्नत के आला दर्जे नेक आमाल की कसरत (ज़्यादती) के मुताबिक़ अता किये जाएँगे जैसा कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में बयान किया गया है कि:

तर्जुमा: जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होंगे उसमें अपने नेक आमाल के रुतबों के मुताबिक़ जगह पाएँगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2549)

अल्लाह की रहमत पर यक़ीन रखने वाला नौजवान

वाक़िआ: हज़रत अबू ग़ालिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबू उमाम रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में मुल्के शाम में आता जाता रहता था। एक दिन मैं हज़रत अबू उमामा के पड़ोसी नौजवान के पास गया जो बीमार हो रहा था, उसके पास उसका चचा भी मौजूद था। वह उस नौजवान से कह रहा था ऐ ख़ुदा के दुश्मन! मैंने तुम्हें यह काम करने को नहीं कहा था। मैंने तुझे इस काम से नहीं रोका था।

उस नौजवान लड़के ने कहा ऐ चचा जान! अगर अल्लाह तआला मुझे मेरी माँ के सुपुर्द कर दें तो वह मेरे साथ क्या मामला करेगी? चचा ने कहा वह तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगी तो लड़के ने

कहा मेरा परवर्दिगार अल्लाह तआला मेरी माँ से ज़्यादा शफ़ीक़ और उससे ज़्यादा मुझपर मेहरबान है। बस यही बात कहते ही उसकी जान निकल गई।

जब उसके चचा ने उसके कफ़न-दफ़न का इन्तिज़ाम किया और उसपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और इरादा किया कि उसको क़ब्र में उतारे तो मैं भी उसके चचा के साथ क़ब्र में उतरा! जब उसने लहद को ठीक किया तो उसकी चीख़ निकल गई और घबरा गया। मैंने उससे पूछा तुम्हें क्या हुआ? उसने बताया कि उसकी क़ब्र बहुत कुशादा और चौड़ी हो गई और नूर से भर गई है। मैं उसी से डर गया था।

(तज़किरतुल क़ुरतबी 2/357)

दो दोज़ख़ियों पर रहमत

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

जो लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे उनमें से दो शख़्सों की चीख़-पुकार बहुत बढ़ जाएगी। अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाएँगे कि इन दोनों को दोज़ख़ से बाहर निकालो। जब उनको दोज़ख़ से बाहर निकाल लिया जाएगा तो अल्लाह तआला उन दोनों से पूछेंगे तुम्हारी चीख़-पुकार किस वजह से बढ़ गयी है? वे अर्ज़ करेंगे हमने यह इसलिए किया है ताकि आप हमपर रहम करें। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मेरी रहमत तुम्हारे लिए यह है कि तुम यहाँ से चले जाओ और जहाँ पर तुम दोज़ख़ में थे अपने आपको वहीं गिरा दो।

वे चल पड़ेंगे। उनमें से एक तो अपने आपको दोज़ख़ में गिरा देगा तो उसके लिए दोज़ख़ ठंडी सलामत बना दी जाएगी, और दूसरा आदमी (दोज़ख़ के किनारे) खड़ा हो जाएगा। अपने आपको (दोज़ख़ में) नहीं गिराएगा। अल्लाह तआला उससे पूछेंगे तुम्हें किस चीज़ ने मना किया? तूने अपने आपको क्यों नहीं गिराया जिस तरह से तेरे साथी ने(अपने आपको दोज़ख़ में) गिरा लिया है? वह अर्ज़ करेगा ऐ

मेरे रब! मुझे आपसे उम्मीद नहीं है कि आप मुझे दोज़ख़ से निकालने के बाद दोबारा उसमें डालेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे हम तेरे साथ तेरी उम्मीद का मामला करेंगे। चुनाँचे ये दोनों अल्लाह तआला की रहमत की वजह से जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 356)

एक और दोज़ख़ी जन्नत में

हदीसः हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

जब क़यामत का दिन होगा और अल्लाह तआला मख़्लूक़ के फ़ैसले से निमट जाएँगे और सिर्फ़ दो आदमी बच जाएँगे उनको दोज़ख़ में जाने का हुक्म दिया जाएगा तो (उनके अल्लाह तआला से रुख़सत हो जाने के बाद) उनमें से एक वापस मुँह मोड़कर देखेगा, अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि इसको वापस बुलाओ। उसको वापस लाया जाएगा और उससे पूछा जाएगा तूने वापस मुँह मोड़कर क्यों देखा है? वह अर्ज़ करेगा मुझे आपसे यह उम्मीद थी कि आप मुझे जन्नत में दाख़िल करेंगे, तो उसको जन्नत में दाख़िल करने का हुक्म दे दिया जाएगा। वह (ख़ुशी में आकर) कहेगा मुझे मेरे परवर्दिगार ने इतना अता किया है कि अगर मैं तमाम जन्नत वालों की दावत करूँ तो जो कुछ मेरे पास (मेरी जन्नत में) है उससे कुछ भी कम न हो। (हदीस को रिवायत करने वाले हज़रत फ़ुज़ाला और हज़रत उबादा) फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्ल0 ने इस हदीस को ज़िक्र किया तो आपका चेहरा अनवर ख़ुशी से दमक उठा था। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 358)

दाख़िले के मनाज़िर

जन्नत का वीज़ा जन्नत की रजिस्ट्री

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: हरगिज़ ऐसा नहीं! (बल्कि) नेक लोगों (के जन्नती होने) का शाही फ़रमान इल्लिय्यीन में (लिखकर रख दिया गया) है और आपको क्या मालूम इल्लिय्यीन में रखा हुआ शाही फ़रमान क्या है? वह एक सहीफ़ा है लिखा हुआ (जिसके जारी होने के वक़्त) अल्लाह के क़रीबी (फ़रिश्ते और अम्बिया) मौजूद थे। (कि उस शख़्स को हम जन्नत में दाख़िल करेंगे।)

(सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन आयत 18-21) (हादिल अरवाह पेज 103)

जन्नत का पासपोर्ट (दाख़िले का इजाज़त नामा)

हदीसः हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कोई शख़्स भी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा मगर (इस) इजाज़त नामे के साथः

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हाज़ा किताबुम् मिनल्लाहि लि-फ़ुलानिब्नि फ़ुलानिन् उद्ख़ुलूहु जन्नतन् आलियतन् क़ुतूफ़ुहा दानियतन्

तर्जुमाः बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़लाँ के बेटे के लिए इजाज़त नामा है। (ऐ फ़रिश्तो!) इसको उस जन्नत में दाख़िल कर दो जो बड़ी शान वाली है, और उसके मेवे झुके हुए हैं। (यानी उसकी नेमतें आसानी से हासिल होने वाली हैं।)

(तबरानी कबीर हदीस 6191)

फ़ायदाः अल्लामा क़ुरतबी इस हदीस को नक़ल करने के बाद फ़रमाते हैं कि शायद यह इजाज़त उन मुसलमानों के लिए है जो हिसाब के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे।

जन्नतियों को अपने मकानों और ठिकानों की पहचान

अल्लाह तआला इरशद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः जो लोग अल्लाह की राह (यानी जिहाद) में मारे जाते हैं, अल्लाह तआला उनके आमाल को हरगिज़ बेकार नहीं जाने देगा।

अल्लाह तआला उनको (मन्ज़िले) मक़सूद तक पहुँचा देगा और उनकी हालत (क़ब्र और हश्र और पुलसिरात और आख़िरत के तमाम मौक़ों में) दुरुस्त रखेगा और उनको जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उनको पहचान करा देगा (कि हर जन्नती अपने-अपने मुक़र्ररा मकान पर बग़ैर किसी तलाश और तफ़्तीश के बेतकल्लुफ़ जा पहुँचेगा।)

(सूरः मुहम्मद आयत क्र-6)

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले अपने घरों को और अपने महलों को इस तरह से पहचानेंगे कि भूलेंगे नहीं, मानों जैसे जब से यह पैदा किए गए उन्हीं महलों में रह रहे थे। उन महलों का पता किसी से नहीं पूछेंगे।

(तफ़सीर मुजाहिद जिल्द 2 पेज 598)

हज़रत मुक़ातल बिन हयान रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हमें यह बात पहुँची है कि वह फ़रिश्ता जो इनसानों के आमाल की हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार है वह जन्नत में आगे-आगे चलेगा और जन्नती उसके पीछे-पीछे चलेगा यहाँ तक कि वह जन्नती अपनी आख़िरी मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा और फ़रिश्ता उस जन्नती को हर उस चीज़ की पहचान करा देगा जो उसको अल्लाह तआला ने जन्नत में अता की होगी। फिर जब वह अपनी मन्ज़िल (घर और ठिकाने) में और अपनी बीबियों के पास दाख़िल होगा तो यह फ़रिश्ता वापस आ जाएगा। (यह तफ़सीर कमज़ोर दर्जे की है)।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 48)

अपनी बीवियों और घरों को जन्नती ख़ुद-बख़ुद जानते होंगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है, तुम दुनिया में अपनी बीवियों और घरों को जन्नत वालों से ज़्यादा नहीं पहचानते जितना कि वे अपनी बीवियों और महलों को पहचानते

होंगे, जब वे जन्नत में दाख़िल होंगे।

(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 3 पेज 276)

नोटः ऊपर ज़िक्र हुई रिवायतों में बज़ाहिर इख़्तिलाफ़ नज़र आता है कि जन्नत वाले अपनी मन्ज़िल (ठिकाने और घर) को खुद पहचानेंगे या उनको बताया जाएग। इसके बारे में तफ़सील यह है कि जन्नत वाले खुद-बखुद अपनी मन्ज़िल और बीवियों को अल्लाह के हुक्म से जानते होंगे लेकिन कुछ ख़ास जन्नती ऐसे होंगे जिनके आदर और सम्मान के लिए आगे-आगे फ़रिश्ता चलता होगा और ख़ुशी और सुरूर को बढ़ाने के लिए निशानदेही करता होगा।

जन्नत में दाख़िले के ख़ूबसूरत मनाज़िर और स्वागत

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः जिस दिन हम नेक लोगों को वफ़्द की शक्ल में रहमान का मेहमान बनाएँगे। (सूर5 मरियम आयत 85)

इस आयत के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से यह सवाल किया कि वफ़्द तो सवार लोगों को कहा जाता है? जनाब नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। जब ये जन्नती लोग अपनी क़ब्रों से उठेंगे तो उनके स्वागत में सफ़ेद ऊँट (सवारी के लिए) पेश किये जाएँगे जिनके पर लगे होंगे और उनपर सोने के कजावे (सजे) होंगे। उनके जूतों के तस्में नूर से चमकते होंगे। उन ऊँटों का हर क़दम जहाँ तक नज़र पहुँचेगी वहाँ पर पड़ता होगा। इस तरह से ये जन्नत तक पहुँचेगें अचानक सुर्ख़ याक़ूत का कुन्डा सोने के किवाड़ों पर नज़र आएगा और ये फ़ौरन ही जन्नत के दरवाज़े के एक पेड़ पर पहुँचेंगे जिसकी जड़ से दो चश्मे फूट रहे होंगे।

जब ये उनमें से एक चश्मे से पियेंगे उनके चेहरों पर नेमतों की चमक-दमक बिजली की तरह चमकेगी और जब दूसरे चश्में से (गुस्ल और) वुज़ू करेंगे तो उनके बाल कभी परागन्दा (ख़राब हालत में) नहीं

होंगे। फिर ये जन्नत के कुन्डे को किवाड़ पर हिलाएँगे तो काश! कि ऐ अली तुम उस किवाड़ के कुन्डे के हिलने की आवाज़ को सुन लो (कि कितना राहत और सुरूर से भरी होगी) तो उस कुन्डे के हिलने की आवाज़ हर हूर तक पहुँचेगी जिससे उसको मालूम होगा कि उसका शौहर अब आया ही चाहता है। वह जल्दी में फुर्ती के साथ उठेगी और अपने मुतवल्ली (ज़िम्मेदार फ़रिश्ते) को रवाना करेगी तो वह उस जन्नती के लिए (उसकी विशेष जन्नत का) दरवाज़ा खोलेगा।

अगर अल्लाह तआला उस जन्नती को (मैदाने महशर में अपनी ज़ियारत कराके) अपनी पहचान न कराते तो वह मुतवल्ली के नूर और ख़ूबसूरती व शान को देखकर (उसको खुदा समझकर) सज्दे में गिर जाता। इसलिए वह फ़रिश्ता बताएगा कि मैं आपके कामों का मुतवल्ली (ज़िम्मेदार) और ख़ादिम बनाया गया हूँ।

फिर वह उस जन्नती को अपने पीछे-पीछे लेकर चलेगा तो वह उस फ़रिश्ते के पीछे-पीछे चलता हुआ अपनी बीवी के पास पहुँच जाएगा। वह जल्दी से उठेगी और ख़ेमे से निकलकर उससे लिपट जाएगी और कहेगी आप मेरी मुहब्बत हैं मैं आपकी मुहब्बत हूँ। मैं राज़ी रहने वाली हूँ और कभी नाराज़ नहीं हूँगी। मैं नेमतों और लज़्ज़तों में क़ायम दायम रहूँगी कभी बूढ़ी नहीं हूँगी। फिर वह ऐसे महल में दाख़िल होगा जिसकी बुनियाद से लेकर छत तक एक लाख हाथ की ऊँचाई होगी जो लुअ्लुअ् और याक़ूत (यानी मोतियों) के पहाड़ पर बनाया गया होगा। उसके कुछ सतून लाल होंगे और कुछ सतून सब्ज़ होंगे और कुछ सतून ज़र्द होंगे। उनमें से कोई सतून भी दूसरे सतून की शक्ल जैसा नहीं होगा!

फिर वह (जन्नती) अपने सजे हुए तख़्त के पास आएगा तो उस पर एक (ख़ास) तख़्त होगा जिस पर सत्तर पलंग (अलग-अलग) सजे होंगे, जिन पर सत्तर दुल्हने होंगी। हर दुल्हन पर सत्तर पोशाकें होंगी (फिर भी) उनकी पिंडली का गूदा खाल (और पोशाकों) के अन्दर से नज़र आता होगा। जन्नती उनके साथ सोहबत को एक रात की

मिक़्दार में पूरा कर सकेगा। उन जन्नतियों के महलों के नीचे नहरें बहती होंगी। ऐसे पानी की नहरें जो पवित्र और साफ़ होंगी, उसमें कोई गदलापन नहीं होगा और कुछ नहरें साफ़-सुथरे शहद की होंगी जो शहद की मक्खियों के पेट से नहीं निकलता होगा, और कुछ नहरें ऐसी शराब की होंगी जो पीने वाले के लिए पूरे तौर पर मज़ेदार होगी उसको लोगों ने अपने पाँव तले रोंदकर नहीं निचोड़ा होगा, और कुछ नहरें ऐसे दूध की होंगी जिनका ज़ायक़ा (स्वाद) कभी नहीं बदलेगा, और यह जानवरों के पेटों से नहीं निकला होगा।

जब ये खाने की ख़्वाहिश करेंगे उनके पास सफ़ेद रंग के परिन्दे आएँगे अपने परों को ऊपर उठाएँगे तो यह उनको चारों तरफ़ से खाएँगे जिस क़िस्म (के खाने) चाहेंगे। फिर (जब जन्नती खा चुके होंगे तो) वे उड़कर चले जाएँगे। जन्नत में फल भी होंगे (बोझ से) झुके हुए। जब जन्नती उनकी इच्छा करेंगे तो वह टेहनी ख़ुद ही उनकी तरफ़ मुड़ जाएगी तो वे जिस तरह के फल चाहेंगे खाएँगे, खड़े होकर चाहे बैठकर चाहे टेक लगाकर। इसी के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद हैः और उन जन्नतों के मेवे झुके हुए हैं। और उन जन्नत वालों के ख़ादिम मोतियों की तरह (सुन्दर और हसीन होंगे)।

(हादिल अरवाह पेज 198)

शानदार ऊँटों की सवारियाँ

क़ुरआन पाक की आयतः

तर्जुमाः जिस दिन हम नेक लोगों को वफ़्द की शक्ल में रहमान का मेहमान बनाएँगे। (सूरः मरियम आयत 85)

की तफ़सीर में हज़रत नोमान बिन सअद रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं, तुम्हें मालूम होना चाहिये अल्लाह की क़सम! उन हज़रात को वफ़्द की शक्ल में पैदल नहीं चलाया जाएगा बल्कि उनके पास ऐसे ऊँट लाए जाएँगे जिनकी तरह के कभी किसी मख़्लूक़ ने नहीं देखे। उनके कजावे सोने के होंगे और लगामें ज़बर्जद की होंगी

(ये इस शान व शौकत के साथ) उनपर सवार होकर आएँगे और अपनी-अपनी जन्नत का दरवाज़ा खटखटाएँगे। (हादिल अरवाह पेज 199)

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिन लोगों ने अल्लाह से तक़्वा (परहेज़गारी और अल्लाह का डर) इख़्तियार किया उनको जन्नत की तरफ़ गिरोह-दर-गिरोह लाया जाएगा। जब ये जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुँचेंगे वहाँ पर एक पेड़ को देखेंगे जिसकी जड़ से दो चश्में बह रहे होंगे। ये लोग उनमें से किसी एक की तरफ़ ऐसी तेज़ी की साथ जाएँगे मानो कि उनको वहाँ जाने का हुक्म दिया गया है। ये उससे पियेंगे तो जो कुछ उनके पेटों में तकलीफ़, गन्दगी या बीमारी होगी, ख़त्म हो जाएगी। फिर ये चश्में की तरफ़ जाएंगे और उससे गुस्ल करेंगे तो उन पर नेमतों की बहार आ जाएगी और उनके शरीरों में उसके बाद कोई बदलाव नहीं होगा और न ही उनके बाल परागन्दा (बिखरे हुए और परेशान) होंगे (बल्कि ऐसे महसूस होंगे) मानों कि उन्होंने तेल लगा (कर बालों को सुलझा) रखा है। फिर ये जन्नत के दरबानों तक पहुँचेंगे तो वे (दरबान बतौर सम्मान और तारीफ़ के) कहेंगेः

अस्सलामु अलैकुम! तुम मज़े में रहो, इसलिए (इस) जन्नत में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ। (सूरः ज़ुमर आयत 73)

फिर उनका स्वागत लड़के करेंगे और वे इस तरह से उनके चारों तरफ़ घूमते होंगे जिस तरह से दुनिया वालों के बच्चे (ख़ुशी के मारे) उस दोस्त के चारों तरफ़ घूमते हैं जो काफ़ी समय के बाद वापस आया हो, और यह कहेंगे कि आप ख़ुश हो जाइए उस इनाम व सम्मान से जो अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए तैयार किया है। फिर उन लड़कों में से एक लड़का उस जन्नती की 'हूरे-ऐन' बीवियों में से किसी एक के पास जाकर कहेगा वह फ़लाँ आ गया है। फिर वह उस जन्नती का वह नाम लेगा जिसके साथ वह दुनिया में बुलाया और पुकारा जाता था। वह कहेगी क्या तूने उसको देखा है? वह कहेगा (हाँ! हाँ!) मैंने उसको देखा है, वह मेरे पीछे आ रहा है। चुनाँचे उन हूरों में से हर

एक ख़ुशी से उछलकर उठेगी यहाँ तक कि अपने दरवाज़े की चौखट तक आ जाएगी।

जब यह जन्नती अपने (एक) महल तक पहुँचेगा तो उसकी तामीर की बुनियाद पर निगाह दौड़ाएगा तो क़ीमती मोती की चट्टान होगी जिसके ऊपर सब्ज़ और ज़र्द और लाल और हरे रंग का एक महल क़ायम होगा। फिर वह अपनी निगाह महल की छत पर डालेगा तो वह बिजली की तरह (रोशन और चमकदार) होगी। अगर अल्लाह तआला ने उसको देखकर बरदाश्त करने की जन्नती में ताक़त न रखी होती तो वह (बिजली की चमक से) अपनी आँखों के कन्धे होने की तकलीफ़ से दोचार हो जाता। फिर वह अपना सर घुमाएगा तो अपनी बीवियों को देखेगा और चुने हुए आबख़ोरों (प्यालों) को देखेगा और बराबर बिछे हुए ग़ालीचों को देखेगा और जगह-जगह फैले हुए रेशम के निहालचों (छोटे-छोटे ख़ूबसूरत बिस्तर और गद्दों) को देखेगा। फिर यह उन नेमतों को देखकर और टेक लगाकर कहेगाः

अल्लाह का शुक्र है जिसने हमको यहाँ तक पहुँचा दिया। अगर अल्लाह तआला हमें हिदायत अता न करते तो हम यहाँ तक कभी न पहुँच सकते थे।

फिर (जब सब जन्नती अपनी-अपनी जन्नतों में पहुँच जाएँगे तो) एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा तुम यहाँ ज़िन्दा रहोगे कभी नहीं मरोगे, तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार नहीं होगे। (हादिल अरवाह पेज 199)

जन्नत में मौत होती तो ख़ुशी से मर जाते

हज़रत हमीद बिन बिलाल फ़रमाते हैं कि हमें यह बयान किया गया है कि जब इनसान जन्नत में दाख़िल होगा तो उसकी शक्ल जन्नत वालों की-सी बना दी जाएगी और उनका लिबास पहनाया जाएगा और उनके ज़ेवर पहनाए जाएँगे और उसको उसकी बीवियाँ और ख़िदमत करने वाले दिखा दिये जाएँगे तो वह ख़ुशी से ऐसा

मतवाला होगा कि अगर मौत आना होती तो वह खुशी से मतवाला होने से मर जाता, लेकिन उसको कहा जाएगा क्या तूने अपनी इस खुशी की दीवानगी को देखा है, यह तेरे लिए हमेशा क़ायम रहेगी (बल्कि और बढ़ेगी कम कभी न होगी)। (हादिल अरवाह पेज 200)

सत्तर हज़ार ख़ादिम स्वागत करेंगे

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान जैली रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब इनसान पहलले-पहल जन्नत में दाख़िल होगा तो सत्तर हज़ार ख़ादिम उसका स्वागत करेंगे (उनकी शक्लें ऐसी होंगी) मानो कि वे (बिखरे हुए) मोती हैं। (हादिल अरवाह पेज 201)

अबू अब्दुर्रहमान मआफ़री रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नती के लिए उसके स्वागत में दो लाईनें बनायी जाएँगी, वह उन लड़कों और ख़ादिमों की उन दोनों लाईनों के आख़िरी किनारों को (लम्बी लाईन होने की वजह से) नहीं देख सकेगा, यहाँ तक कि जब यह उनके बीच से गुज़रेगा तो ये ख़ादिम उसके पीछे-पीछे चलेंगे।

(हादिल अरवाह पेज 201)

फ़रिश्ता जन्नत की सैर कराएगा

हज़रत ज़ह्हाक रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब मोमिन जन्नत में दाख़िल होगा तो उसके आगे एक फ़रिश्ता दाख़िल होगा जो उसको जन्नत की गलियों की सैर कराएगा और उससे कहेगा देख लें आप जितना देख सकते हैं। वह कहेगा मैंने चाँदी और सोने के बहुत सारे महल और बहुत-से हमदम साथी देखे हैं। फ़रिश्ता उसको कहेगा ये सब आपके लिए हैं। यहाँ तक कि जब यह उनके पास पहुँचेगा तो वे हर दरवाज़े से उसका स्वागत करेंगे और कहेंगे हम आपके लिए हैं, हम आपके लिए हैं। फिर वह फ़रिश्ता उस जन्नती को कहेगा चलिये। फिर पूछेगा आपने (अब) क्या देखा तो वह कहेगा कि मैंने ख़ेमों की शक्ल में रहने की बहुत-सी जगह और बहुत-से हमदम साथी देखे हैं। वह कहेगा ये सब आपके लिए हैं। जब यह उनके क़रीब जाएगा तो वे

सब उसका स्वागत करेंगे और कहेंगे हम आपके लिए हैं, हम आपके लिए हैं। (हादिल अरवाह पेज 301)

बिना दाढ़ी के, बिना बालों के, सुर्मा लगी हुई आँखों वाले और तीस साल की उम्र में होंगे

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः जन्नती जन्नत में इस हालत में जाएँगे कि उनके शरीरों पर बाल नहीं होंगे। उनकी दाढ़ी भी नहीं होगी, आँखों की पुतलियाँ और सुर्मा लगाने की जगहें सुरमगीं होंगी। तीस साल की उम्र में होंगे।

(मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 550)

फ़ायदाः यानी मर्दों और औरतों के सिर्फ़ सर के बाल होंगे बाक़ी शरीर बालों से साफ़ होगा।

जन्नत में जाने की इजाज़त पर ख़ुशी से अक़्ल जाने का ख़तरा होगा

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ादिम हज़रत कसीर बिन अबी कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हर एक जन्नती इनसान के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर (नियुक्त) किया जाएगा। जब जन्नती को जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई जाएगी और बताया जाएगा कि आपके लिए जन्नत का फ़ैसला किया गया है तो फ़रिश्ता उसके दिल पर हाथ रखेगा अगर वो ऐसा न करे तो जो बे-इन्तिहा ख़ुशी उस मोमिन को पहुंचेगी उस ख़ुशी के मारे जो चीज़ उसके सर में है (यानी अक़्ल) वह निकल जाए (और इनसान दीवाना हो जाए)।

जन्नत में दाख़िले के बाद के ऐलानात व इनामात

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब नबी अकरम

सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक मुनादी (ऐलान करने वाला) आवाज़ लगाएगा तुम्हारे लिए यह तय किया गया है कि तन्दरुस्त (स्वस्थ) रहोगे, कभी बीमार न होगे। और तुम्हारे लिए यह भी तय किया गया है कि तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे। और तुम्हारे लिए यह भी तय किया गया है कि नेमतों ही में रहोगे कभी ख़स्ताहाल नहीं होगे। अल्लाह तआला का इसके बारे में इरशाद है किः

उन (जन्नत वालों) से पुकार कर कहा जाएगा कि यह जन्नत तुमको दी गयी है तुम्हारे(सही अक़ीदों और नेक आमाल) के बदले में।

हदीसः हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब नबी पाक सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः जब जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएँगे तो एक आवाज़ लगाने वाला पुकार कर कहेगा ऐ जन्नत वालो! तुम्हारे लिए अल्लाह के पास एक वायदा है। वे पूछेंगे कौनसा वायदा? क्या उसने हमारी नेकियों को वज़नी नहीं किया और हमारे चेहरों को रोशन नहीं किया और हमें जन्नत में दाख़िल नहीं किया और हमें दोज़ख़ से छुटकारा नहीं दिया? तो अल्लाह तआला अपना पर्दा हटाएँगे और वे अल्लाह तआला का दीदार (दर्शन) करेंगे। खुदा की क़सम! अल्लाह तआला ने जन्नत वालों को अपने दीदार से ज़्यादा महबूब कोई नेमत ऐसी अता नहीं फ़रमाई जो जन्नत वालों को उससे ज़्यादा महबूब हो। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 181)

हज़रत अबू तमीमा बुजैनी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना जबकि आप बसरा के मिम्बर पर ख़ुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे। आप कह रहे थे कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन जन्नत वालों के पास एक फ़रिश्ता रवाना करेंगें वह फ़रिश्ता पूछेगा ऐ जन्नत वालो! जो वायदा अल्लाह तआला ने तुमसे किया था उसको तुमसे पूरा कर दिया? तो वे ग़ौर करेंगे फिर ज़ेवरों, नहरों, पोशाकों, पाकीज़ा बीवियों को देखेंगे तो कहेंगे कि हाँ! अल्लाह तआला ने जो वायदा हमसे किया था उसको हमारे

लिए पूरा फ़रमा दिया है। (अल्लाह की मुहब्बत के जोश में) जन्नती यह बात तीन बार कहेंगे। फिर दोबारा देखेंगे तो जिस-जिस चीज़ का वायदा उनसे किया गया था उससे कोई चीज़ कम नहीं पाएँगे। फिर कहेंगे हाँ! (अल्लाह तआला ने अपना वायदा हमसे पूरा फ़रमाया है)। वह फ़रिश्ता कहेगा कि एक नेमत बाक़ी रह गई है, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

वे लोग जिन्होंने नेक आमाल किए उनके लिए 'अल-हुस्ना' और 'ज़ियादा' है। (सूरः यूनुस आयत 26)

सुन लो! 'अल-हुस्ना' जन्नत है और 'ज़ियादा' अल्लाह पाक के चेहरे मुबारक की ज़ियारत और दीदार है।

(तफ़सीर तबरी जिल्द 11 पेज 67)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआला जन्नतियों से फ़रमाएँगे ऐ जन्नत वालो! वे अर्ज़ करेंगे हम हाज़िर हैं ऐ हमारे परवर्दिगार! अल्लाह तआला पूछेंगे क्या राज़ी हो गये? वे अर्ज़ करेंगे हम क्यों न राज़ी हों जबकि आपने हमे वह कुछ अता फ़रमाया जो आपने अपनी मख़्लूक़ में से किसी और को अता नहीं किया। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे में तुम्हें इससे भी अफ़ज़ल नेमत अता करना चाहता हूँ। वे पूछेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! इससे ज़्यादा अफ़ज़ल और कौनसी नेमत है? अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे मैं तुमपर कभी नाराज़ी और गुस्सा नहीं करूँगा। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 4549)

काफ़िरों की जन्नत वाली मन्ज़िलें मुसलमानों को विरासत में दे दी जाएँगी

हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम में से हर एक आदमी की दो मन्ज़िलें (ठिकाने और घर) हैं। एक मन्ज़िलल जन्नत में है और एक दोज़ख़ में है। जब कोई

(काफ़िर) मर जाता है और दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है तो जन्नत वाले उसकी (जन्नत की) मन्ज़िल के वारिस हो जाते हैं। इसी के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है कि यही लोग वारिस हैं (जो जन्नतुल-फ़िरदौस के वारिस बनेंगे)। (तफ़सीर तबरी जिल्द 5 पेज 18)

जन्नत की विरासत से कौन महरूम होगा?

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स अपने वारिस को मीरास देने से भागेगा अल्लालह तआला जन्नत में उसकी मीरास को ख़त्म कर देंगे।

(इब्ने माजा हदीस 2703)

फ़ायदाः यानी जो शख़्स किसी वारिस को उसके विरासत के हक़ से मेहरूम करेगा अल्लाह तआला उसको जन्नत का वारिस नहीं बनाएँगे। हाँ! अगर तौबा कर ले और वारिस को उसका हक़ अदा कर दे तो माफ़ी हो सकेगी।

जन्नत में दाख़िल होने के बाद शुक्र के कलिमात

हज़रत अब्दुलाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होकर अपनी-अपनी जगहों पर पहुँच जाएँगे तो यह कहेंगे कि सब तारीफ़े उस अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमसे रंज व ग़म को दूर किया। उस रंज व ग़म से उनका मतलब यह होगा कि हमने मैदाने हश्र में जो ख़ौफ़ व दहशत, ज़लज़ले, सख़तियाँ देखी हैं (उनसे महफ़ूज़ रहने और जन्नत जैसी ऐश भरी मन्ज़िलों में पहुँच जाने पर हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं) उसके बाद वे कहेंगे बेशक हमारा रब बख़्शिश करने वाला क़द्रदान है। उसने हमारे बड़े-बड़े गुनाह माफ़ कर दिये और हमारे नेक आमाल की क़द्रदानी करते हुए हमें आराम व राहत अता की।

(सिफ़तुलल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 120)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि दोनों

जहाँ के सरदार नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हर दोज़ख़ी को उसके जन्नत का ठिकाना दिखाया जाएगा तो वह कहेगा काश! अल्लाह तआला मुझे हिदायत दे देते (और मैं इसमें दाख़िल हो जाता)। चुनाँचे उस जन्नत से मेहरूमी की हसरत उसपर सवार रहेगी। हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि (इसी तरह से) हर जन्नती को उसका दोज़ख़ का ठिकाना दिखाया जाएगा तो वह कहेगा अगर अल्लाह तआला मुझे हिदायत न देते (तो मैं आज इस जगह दोज़ख़ में होता)। पस यह उसके लिए शुक्र की बात होगी। (तफ़सीर तबरी जिल्लद 8 पेज 134)

जन्नत वालों की मन्ज़िलें

नबियों, औलिया और शहीदों के ठिकाने और मन्ज़िलें

नबी करीम सल्ल० की आलीशान जन्नत

हदीसः जनाब अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब तुम मुअज़्ज़िन से (अज़ान) सुनो तो वैसे ही (कलिमात) कहो जो वह कहे, फिर मुझपर दुरूद भेजो, फिर मेरे लिए अल्लाह तआला से (मक़ाम) वसीले का सवाल करो क्योंकि यह जन्नत में एक दर्जा है जो अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ़ एक बन्दे के लायक़ है और मुझे उम्मीद है कि वह मैं हूँगा। पस जिस (मुसलमान) ने मेरे लिए (मक़ाम) वसीले की दुआ की उसके लिए (क़यामत के दिन मेरी) सिफ़ारिश लाज़िम (ज़रूरी) होगी। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 168)

नबियों, शहीदों और सिद्दीक़ीन की जन्नत

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः 'जन्नते अद्न' में सिर्फ़ अम्बिया-ए-किराम, शहीद और हज़राते सिद्दीक़ीन दाख़िल होंगे। उस जन्नत में ऐसी-ऐसी नेमतें होंगी

जिनको किसी शख़्स ने नहीं देखा और न किसी इनसान के वहम व गुमान में उनका ख़्याल गुज़रा होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2144)

जन्नत में शहीद के मुकामात

हदीसः हज़रत मिक्दाम बिन मअदी-करब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला के यहाँ शहीद के लिए छः इनाम हैं। ख़ून के पहले क़तरे के गिरते ही उसकी मग़फ़िरत कर दी जाती है। जन्नत में उसका ठिकाना दिखा दिया जाता है। उसको ईमान की पोशाक पहना दी जाती है। उसको क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ कर दिया जाता है। (क़यामत के दिन) बड़ी घबराहट के वक़्त अमन में होगा। उसके ताज का एक मोती दुनिया और जो कुछ इसमें है से ज़्यादा क़ीमती है। उसकी शादी बहत्तर (72) 'हूरे-ऐन' से की जाएगी और उसके सत्तर क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ में उसकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) क़बूल की जाएगी। (और उनको उसकी शफ़ाअत की वजह से जन्नत में दाख़िल किया जाएगा)।

फ़ायदाः सिद्दीक़ वे हज़रात हैं जो अल्लाह तआला और उसके रसूलों पर किसी मुख़बिर की ख़बर देने से ईमान लाते हैं, सिवाए ईमानी नूर के जिसको वे अपने दिल में मौजूद पाते हैं और किसी दलील की वजह से ईमान नहीं लाते। उनके ईमान लाने में कोई तरद्दुद और शक नहीं होता। (जामे करामाते औलिया जिल्द 1 पेज 86)

सिद्दीक़ की एक तारीफ़ यह की गयी है कि जिसके क़ौल और फ़ेल (करनी और कथनी) में अन्तर न हो।

(मौलाना मुहम्मद इदरीस अन्सारी रह0)

एक तारीफ़ यह की गई कि सिद्दीक़ वे हज़रात हैं जो मारिफ़त (अल्लाह तआला को पहचानने) में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के क़रीब हैं, और उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स किसी चीज़ को दूर से देख रहा हो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा कि क्या

आपने अल्लाह तआला को देखा है? आपने फ़रमाया मैं किसी ऐसी चीज़ की इबादत नहीं कर सकता जिसको न देखा हो। फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला को लोगों ने आँखों से तो नहीं देखा लेकिन उनके दिलों ने ईमान के हक़ाईक़ (तथ्यों) के ज़रिये देख लिया है। इस देखने से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की मुराद इसी क़िस्म का देखना है कि उनका इस तरह जानना एक तरह से देखना है।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन जिल्द 2 पेज 471)

शहीद कौन हैं?

और शहीद वे हज़रात हैं जो मक़सूद को दलीलों और तथ्यों के ज़रिये से जानते हैं, देखने से नहीं। उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स किसी चीज़ को आईने में क़रीब से देख रहा हो।

(तफ़सीर मआरिफ़ुल क़ुरआन जिल्द 2 पेज 471)

शहीद की एक तारीफ़ यह भी है कि अल्लाह तआला ने उनको मुक़ामे शहादत (अल्लाह तआला की तजल्लियों को देखने) से सरफ़राज़ (सम्मानित) फ़रमाया और उनको अपने क़रीबी हज़रात में से बनाया है। यह इल्म की बिसात की बुनियाद पर अल्लाह तआला के साथ हाज़िर होने वालों में शामिल होते हैं। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः गवाही दी अल्लाह तआला ने इसकी कि सिवाए उस ज़ात के कोई माबूद होने के लायक़ नहीं, और फ़रिश्तों ने भी और इल्म रखने वालों ने भी। और माबूद भी इस शान के हैं कि एतिदाल (इन्साफ़) के साथ इन्तिज़ाम रखने वाले हैं। (सूरः आलि इमरान आयत 18)

इस आयत में अल्लाह तआला ने उन इल्म वालों को फ़रिश्तों के साथ इल्म की बिसात की बिना पर जमा किया है। बस ये हज़रात अल्लाह की बारगाह से तौहीद की सच्चाई और हमेशा की इनायत के वारिस हुए हैं। उनकी शान अजीब और अनोखा मामला होता है। ये वे शहीद हैं जिनको अल्लाह तआला ने इस आयत में आम करके ज़िक्र किया है ये हज़रात अल्लाह तआला को जानने वाले हैं और उस

इल्म के बाद ईमान लाते हैं जो अल्लाह तआला ने (अपने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिये से) नाज़िल फ़रमाया है और सिद्दीक़ नूर में शहीद से ज़्यादा मुकम्मल होता है क्योंकि उसका अल्लाह तआला की वहदानियत (एक होने) का इक़रार करना इल्म से होता है ईमान से नहीं होता, इसलिए यह एक तरह से ईमान में सिद्दीक़ से कम मर्तबा है, और इल्म के मर्तबे में सिद्दीक़ से ऊपर है। पस हया रुतबा इल्म में बढ़ा हुआ है और ईमान व तस्दीक़ के रुतबे में सिद्दीक़ से कम है।

(जामे करामाते औलिया जिल्द 1 पेज 87)

ऊपर बयान हुई हदीस के सबसे पहले मिस्दाक़ अल्लाह के रास्ते में जिहाद में शहीद होने वाले हैं। ऊपर हमने जिन हज़रात का ज़िक्र किया जिनकी हमने ऊपर तारीफ़ लिखी है, वे भी इन दर्जों के हक़दार हो सकते है। वल्लाहु अअ्लम।

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला हर रात की दूसरी घड़ी में 'जन्नते अद्न की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाते हैं। यह (जन्नते अद्न) अल्लाह तआला का (बनाया हुआ) ऐसा घर है जिसको न तो किसी आँख ने देखा है और न ही किसी इनसान के वहम व गुमान में आया है। यह उसका ठिकाना है और उसके साथ इनसानों में से कोई नहीं रह सकता सिवाए तीन क़िस्म के हज़रात केः

1. अम्बिया अलैहिमुस्सलाम
2. हज़राते सिद्दीक़ीन
3. शहीद हज़रात (तफ़सीर तबरी जिल्द 8 पेज 139)

एक शहीद का तीन हूरों से निकाह

मुहम्मद वर्राक़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुबारक नाम के एक हब्शी थे। वह जायज़ काम किया करते थे, हम उनसे कहा करते थे ऐ मुबारक! तुम निकाह नहीं करोगे? तो वह जवाब देते थे कि मैं अल्लाह तआला से सवाल करता हूँ कि हूर से मेरा निकाह कर दें।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हम एक जहाज में शरीक हुए जिसमें दुश्मन हमपर हमलावर हुआ और उसमें मुबारक शहीद हुए। जब हम उनपर से गुज़रे तो हमने देखा कि उनका सर अलग पड़ा था और धड़ एक तरफ़ था, और वह पेट के बल गिरे हुए थे। उनके हाथ सीने के नीचे थे। हमने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला ने कितनी हूरों के साथ तुम्हारा ब्याह किया, उन्होंने सीने के नीचे से हाथ निकाल कर तीन उंगलियों से इशारा किया, यानी तीन हूरों से। (रौज़ुर्रयाहीन)

हज़रत ख़दीजा, हज़रत मरियम और हज़रत आसिया के दर्जे

हदीसः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सवाल किया कि हमारी अम्माँ ख़दीजा रज़ियल्लाहु अनहा (जन्नत में) किस दर्जे में है? आपने फ़रमायाः क़सब (चमकदार मोती याक़ूत के साथ सजे हुए चमकदार ज़बरजद) के महल में जिसमें न तो कोई फ़ुज़ूल बात है न किसी तरह की उकताहट, हज़रत मरियम और आसिया के साथ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, क्या उस क़सब (सरकण्डे) के महल में? फ़रमाया नहीं! बल्कि वह 'दुर्र' 'लुअ्लुअ्' और 'याक़ूत' (यह आला दर्जे के मोती हैं) के जड़ाऊ वाले महल में हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2145)

कुछ बुज़ुर्गों के दर्जे

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि के एक शागिर्द फ़रमाते हैं जब इमाम अहमद बिन हम्बल ने वफ़ात पाई तो मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा कि वह अकड़कर चल रहे हैं। मैंने कहा ऐ भाई! यह कैसी चाल है? फ़रमाया कि यह दारुस्सलाम (जन्नत) में ख़ादिमों (अल्लाह के बर्गुज़ीदा हज़रात) की चाल है। मैंने कहा हक़ तआला ने तुम्हारे साथ क्या मामला किया? फ़रमाया मेरी मग़फ़िरत फ़रमाई और सोने के जूते पहनाए और इरशाद हुआ कि यह सब उस बात का

इनाम है जो तुमने कहा था कि कुरआन अल्लाह का कलाम है 'हादिस' (ख़त्म होने वाला) नहीं है। और हुक्म हुआ कि जहाँ चाहो चलो-फिरो। मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो देखता हूँ कि सुफ़ियान सौरी के दो सब्ज़ पर हैं और एक दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर उड़ते फिरते हैं और यह आयत तिलावत करते हैं:

यानी तारीफ़ व शुक्र है उस अल्लाह बड़ी शान वाले का जिसने हमसे अपना वायदा पूरा किया, और हमें जन्नत की ज़मीन का वारिस बनाया। हम जन्नत में जहाँ चाहते हैं दाख़िल होते हैं नेक अमल करने वालों की बड़ी अच्छी जज़ा (बदला) है।

मैंने पूछा कि अब्दुल-वाहिद वर्राक़ रह० की क्या ख़बर है? फ़रमाया मैंने उन्हें दिया-ए-नूर में नूर की कश्ती पर सवार होकर हक़ तआला की ज़ियारत करते छोड़ा है। मैंने कहा हज़रत बशर बिन हारिस का क्या हाल है? कहने लगे वाह! वाह! उनकी तरह कौन हो सकता है। मैंने उन्हे हक़ तआला की तरफ़ देखा कि हक़ तआला उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाते थे कि ऐ शख़्स! तू नहीं जानता कि तेरा क्या मर्तबा है, और ऐ वह शख़्स जो न पीता था अब पी ले, और ऐ वह शख़्स जो नहीं खाता था अब सेर हो ले। (रौज़ुर्रयाहीन)

सिर्फ़ अल्लाह का दीदार करने से होश आएगा

बाज़ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि मैंने हज़रत मारूफ़ कर्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा कि वह गोया अर्श के नीचे हैं और हक़ तआला फ़रिश्तों से फ़रमा रहे हैं: यह कौन है? उन्होंने जवाब दिया, आप ख़ूब जानते हैं ऐ परवर्दिगार! फ़रमाया यह मारूफ़ कर्ख़ी हैं जो मेरी मुहब्बत के नशे में बेहोश थे और मेरे दीदार के बग़ैर उन्हें होश नहीं आएगा। (रौज़ुर्रयाहीन)

नूर की कुर्सी और मोतियों की बारिश

इमाम रबी बिन सुलैमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं मैंने इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि को वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा और पूछा

ऐ अबू अब्दुल्लाह! अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या सुलूक किया? फ़रमाया मुझे नूर की कुर्सी पर बैठाकर मुझपर चमकते हुए ताज़ा मोती निछावर किये। (रौज़ुर्रयाहीन)

नूरानी लिबास और ताज

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने शैख़ अबू इसहाक़ इब्राहीम इब्ने अली इब्ने यूसुफ़ शीराज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि को वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा कि बहुत ही सफ़ेद लिबास पहने और ताज ओढ़े हुए थे। मैंने पूछा हज़रत यह सफ़ेद लिबास कैसा है? कहा यह इबादत की बुज़ुर्गी है। मैंने कहा और ताज? कहा कि वह इल्म की इज़्ज़त है। (रौज़ुर्रयाहीन)

आधी जन्नत का वारिस

बाज़ बुज़ुर्गों से रिवायत है कि उन्होंने बशर बिन हारिस को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा और सवाल किया हक़ तआला ने आपके साथ क्या मामला किया? फ़रमाया अल्लाह ने मेरी मग़फ़िरत की और आधी जन्नत मेरे लिए हलाल कर दी और इरशाद फ़रमाया तू दुनिया में खाता-पीता न था अब ख़ूब खा-पी ले। और फ़रमाया ऐ बशर मैंने तेरी इज़्ज़त व सम्मान लोगों के दिलों में पैदा कर दिया था कि अगर इसके शुक्रिये में तू अंगारों पर सज्दा करे तो भी उसका हक़ अदा न कर सके।

एक रिवायत में यह भी है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब मैंने तुम्हारी रूह क़ब्ज़ की उस वक़्त दुनिया में तुम से ज़्यादा मेरा कोई प्यारा न था। (इमाम याफ़ई रौज़ुर्रयाहीन के लेखक फ़रमाते हैं कि) इससे हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के उस क़ौल की ताईद होती है कि बशर ने अपना कोई सानी नहीं छोड़ा। (रौज़ुर्रयाहीन)

जन्नत का सब से बेहतरीन दर्जा

हुज़ूर सल्ल0 का मक़ाम वसीला

हदीसः हज़रत अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है

कि उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना, आपने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: जब तुम मुअज़्ज़िन से (अज़ान) सुनो तो वैसे ही जवाब दो जैसे वह (अज़ान) कहे। फिर मुझपर दुरूद भेजो क्योंकि जो शख़्स मुझपर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआला उसपर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं। फिर मेरे लिए वसीले का सवाल करो क्योंकि यह जन्नत में एक ऐसा दर्जा है जो अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ़ एक बन्दे को हासिल होगा और मुझे उम्मीद है कि वह (बन्दा) मैं हो ऊँगा।

पस जिस शख़्स ने मेरे लिए वसीले की दुआ की उसके लिए (मेरी) शफ़ाअत साबित हो गयी। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 384)

वसीले की दुआ यह है

हदीस: हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया:

'अल्लाहुम्-म रब्-ब हाज़िहिद् दअ्वतित्ताम्माति वस्सलातिल् क़ाई-मति आति मुहम्म-द निल्-वसील-त वल्-फ़ज़ील-त वब्अस्हु मक़ाममम् महमू-द निल्लज़ी व-अत्-तहू''

तो क़यामत के दिन उसके लिए शफ़ाअत (यानी नबी पाक की सिफ़ारिश) लाज़िम हो जाती है। (मक़ामे महमूद से 'शफ़ाअते उज़मा' मुराद है)। (बुख़ारी शरीफ़ महदीस 614)

हुज़ूर सल्ल० का दीवाना हुज़ूर के साथ

हदीस: हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक शख़्स नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बोला या रसूलुल्लाह अल्लाह की क़सम! आप मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा प्यारे हैं। आप मुझे घर वालों से भी ज़्यादा प्यारे हैं। आप मुझे मेरी औलाद से भी ज़्यादा प्यारे हैं। और फ़लाँ चीज़ से भी ज़्यादा प्यारे हैं। मैं अपने घर में बैठा हुआ था फिर मैंने आपको याद किया और सब्र न हो सका तो आपके पास चला आया। और आपकी ज़ियारत कर ली लेकिन जब

मैं अपनी मौत और आपकी वफ़ात को याद करता हूँ तो मुझे मालूम होता है कि आप जब जन्नत में दाख़िल होंगे तो आपको अम्बिया किराम अलैहिमुस्सलाम की जन्नत की मन्ज़िलों में फ़ाईज़ किया जाएगा, और मैं जब जन्नत में दाख़िल हूँगा तो मुझे डर है कि आपकी ज़ियारत नहीं कर सकूँगा (तो नबी पाक सल्ल0 ने उसकी यह बात सुनकर), उसको कोई जवाब न दिया यहाँ तक कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम यह आयत लेकर नाज़िल हुएः

तर्जुमाः और जो शख़्स अल्लाह और रसूल की ताबेदारी करेगा तो ऐसे हज़रात भी उन हज़रात के साथ होंगे जिनपर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया है यानी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शहीद हज़रात और नेक लोग, और ये हज़रात बहुत अच्छे साथी हैं।

(सूरः निसा आयत 69)। (तबरानी सग़ीर जिल्द 1 पेज 26)

फ़ायदाः हुज़ूर सल्ल0 के जन्नत के दर्जे को वसीला इसलिए कहा गया है कि अल्लाह तआला के अर्श के सबसे क़रीब दर्जों में से है। और हाँ! लुग़त में वसीले का शब्द क़ुर्ब (निकटता) के मायने से निकला है। (हादिल अरवाह पेज 117)

अदना जन्नती की मन्ज़िलें और दर्जे

हदीसः हज़रत मुग़ीरा बिन शुअबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाब नबी करीम सल्ल0 से रिवायत किया हैः

तर्जुमाः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने परवर्दिगार से सवाल किया कि जन्नत में सबसे अदना दर्जे का कौनसा जन्नती होगा? अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह शख़्स जो जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल हो जाने के बाद पेश होगा। उसको हुक्म होगा कि तू भी जन्नत में दाख़िल हो जा। वह अर्ज़ करेगा या रब! किस तरह जबकि लोग अपनी-अपनी मन्ज़िलों तक पहुँच गए हैं और अपने-अपने इनामात और मुक़ामात हासिल कर चुके हैं? उससे कहा जाएगा क्या तू इसपर राज़ी है कि तुझे दुनिया के बादशाहों में से किसी एक

बादशाह की बादशाहत के बराबर जन्नत दे दी जाए? वह अर्ज़ करेगा ऐ रब! मैं राज़ी हूँ।

फिर अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे तुम्हें यह भी दिया और इतना और, और इतना और। (जब अल्लाह तआला पाँचवीं बार इस तरह फ़रमाएँगे) तो वह बोल उठेगा या रब! मैं राज़ी हो गया। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे (जा) यह सब तेरे लिए है और इसका दस गुना और भी, और तेरा वह भी है जो तेरा दिल चाहे, और तेरी आँखों को लज़्ज़त पहुँचे।

वह अर्ज़ करेगा मैं राज़ी हो गया (मैं राज़ी हो गया)। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ रब! उन जन्नतियों में से आला दर्जे का कौन होगा? इरशाद फ़रमाया वे लोग जो मेरी मुराद हैं जिनको मैंने चाहा हैं, उनकी और उनपर (उन मुस्तहिक़ लोगों के लिए तक़सीम करके) मुहरें लगा दी हैं, जिनको न किसी आँख ने देखा है न किसी कान ने सुना है, और न ही किसी इनसान के दिल से उनका कोई ख़्याल गुज़रा है। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 189)

कम दर्जे का जन्नती अपनी जन्नत को हज़ार साल के फ़ासले से देखेगा

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे का जन्नती वह होगा जो अपने बाग़ात को, अपनी बीवियों को, अपनी नेमतों को, अपने ख़िदमतगारों को, दुल्हनों के कमरे और शाही तख़्तों को, एक हज़ार साल की दूरी तक देखेगा। और उनमें से आला दर्जे का जन्नती वह होगा जो अल्लाह तआला के चेहरे मुबारक को सुबह व शाम देखता होगा। (और सबसे आला दर्जे पर वह जन्नती होगा जो जब चाहेगा अल्लाह तआला का दीदार कर सकेगा)। फिर जनाब नबी करीम सल्ल0 ने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः उस दिन कुछ चेहरे (जन्नत की नेमतों से) तरोताज़ा होंगे, अपने परवर्दिगार का दीदार करते होंगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2553)

अदना दर्जे के जन्नती की शान दबदबा और क़द्र सम्मान

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुलह सल्ल0 सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे के जन्नती के जन्नत के सात दर्जे होंगे। यह छठे पर रहता होगा। इसके ऊपर सातवाँ दर्जा होगा। इसके तीन सौ प्याले होंगे। इसके सामने रोज़ाना सुबह व शाम सोने-चाँदी के तीन सौ प्याले खाने के पेश किये जाएँगे। हर एक प्याले में ऐसे क़िस्म का खाना होगा जो दूसरे में नहीं होगा और जन्नती उसके शुरू में ऐसी ही लज़्ज़त पाएगा जैसी कि उसके आख़िर से, और वह यह कहता होगा या रब! अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं तमाम जन्नत वालों को खिलाऊँ और पिलाऊँ। जो कुछ मेरे पास है उसमे कमी न होगी। उसकी 'हूरे'ऐन' में से बहत्तर बीवियाँ होंगी। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 537)

दस हज़ार ख़ादिम

हदीसः हज़रत बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तमाम जन्नतियों में से सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसकी ख़िदमत में दस हज़ार ख़ादिम लगे होंगे। हर एक के हाथ में दो-दो प्याले होंगे एक सोने का दूसरा चाँदी का। फिर हर एक में ऐसे रंग का खाना होगा कि उस तरह का दूसरे मे नहीं होगा। उनके आख़िर वाले में से भी वह वैसे ही (दिलचस्पी से) खाएगा जिस तरह उनके शुरू वाले मे से खाएगा। उसके आख़िर वाले में से ऐसी खुशबू और लज़्ज़त पाएगा जैसी कि उसके शुरू वाले में से पाएगा। फिर उसका यह खाना ख़ालिस मुश्क बनकर (पसीने की शक्ल में)

निकलेगा, न तो ये पेशाब करते होंगे न पख़ाना, न ही बलग़म फेंकते होंगे, भाई-भाई होंगे, तख़्तों पर एक दूसरे के सामने बैठते होंगे।

(मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 401)

अदना दर्जे के जन्नती के लिए इस पूरी ज़मीन के बराबर जन्नत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि जन्नत में आख़िर में दाख़िल होने वाला वह शख़्स होगा जिसके पास से उसका परवर्दिगार गुज़रेगा और उसे हुक्म देगा खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जा। वह अल्लाह तआला के सामने तेवरी चढ़ाकर मुतवज्जेह होकर अर्ज़ करेगा, आपने मेरे लिए क्या छोड़ा है? अल्लाह तआला फ़रमाएँगे हाँ! तेरे लिए इतना (दुनिया के बराबर) है जिसपर सूरज निकलता था या छुपता था। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 402)

अदना दर्जे के जन्नती के सात महल

हदीसः नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में से अदना दर्जे का शख़्स वह होगा जिसके सात महल होंगे, एक महल सोने का होगा, एक महल चाँदी का होगा, एक महल मोती का होगा, एक महल ज़मर्रुद का होगा, एक महल याकूत का होगा, एक महल ऐसा होगा जिसको आँखें नहीं देख सकेंगी। एक महल अर्श के रंग का होगा। हर महल मे ज़ेवरात और पोशाकें और 'हूरे-ऐन' होंगी जिनको अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। (तज़किरतुल क़ुरतबी पेज 491)

दस लाख ख़ादिम

हदीसः हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत किया गया है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से रिवायत हैः

तर्जुमाः अदना दर्जे का जन्नती वह होगा जो अपने दस लाख ख़ादिमों के साथ सवार होता होगा। (तज़किरतुल क़ुरतबी पेज 491)

अस्सी हज़ार ख़ादिम, बहत्तर बीवियाँ और अज़ीमुश्शान कुब्बा

हदीसः हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी और उसके लिए एक कुब्बा लुअ्लुअ् और याकूत और ज़बर्जद का क़ायम किया जाएगा (जिसकी लम्बाई) जाम्बिया (सीरिया मुल्क में दमिश्क़ शहर के पास एक शहर का नाम है) से सन्आ (यमन मुल्क की राजधानी जितनी होगी) (सिफ़तुल जन्नत इब्ने इबी दुनिया पेज 211)

एक हज़ार अज़ीमुश्शान महल

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है कि आपने फ़रमया, अदना दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके एक हज़ार महल होंगे। हर दो महलों के बीच एक साल तक चलने का फ़ासला होगा। जन्नती उनके दूर के हिस्सों को भी वैसे ही देखता होगा जिस तरह से उनके क़रीब के हिस्सों को देखता होगा। हर महल में 'हूरे-ऐन' होगी। फूलदार पौधे होंगे (ख़िदमत करने वाले) लड़के होंगे। जिस चीज़ की वह इच्छा करेगा उसको पेश कर दी जाएगी।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 508)

और ज़्यादा तफ़सील के लिए जन्नत के महलों, ख़ादिम और हूरों वग़ैरह के बाबों को मुलाहज़ा फ़रमाएँ। उनमें भी अलग-अलग तौर पर अदना और आला दर्जों के जन्नतियों के मुख़्तलिफ़ इनामों और नेमतों का हसीन ज़िक्र मौजूद है।

कम अमल वाली औलाद और बीवी अपने ज़्यादा अमल वाले बाप और शौहर के दर्जे में जन्नत में जाएँगे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया, हम उनकी औलाद को भी उनके साथ शामिल कर देंगे, और हम उनके अमल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे। हर शख़्स अपने आमाल में बंधा रहेगा। (सूरः तूर आयत 21)

औलाद माँ-बाप के जन्नत के दर्जे में होगी

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला मोमिन की औलाद को मोमिन के दर्जे में उसके साथ मिला देंगे अगरचे वह (नेक) अमल में उससे कम दर्जा हों ताकि (उनके क़रीब करने से) उसकी आँखें ठंडी हों। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः जो कुछ हम औलाद को दर्जे में बुलन्द करेंगे वह माँ-बाप (के रुतबे और आमाल) से कम करके नहीं देंगे। (सूरः तूर आयत 21)

(हाकिम जिल्द 2 पेज 468)

औलाद और बीवी, बाप और शौहर के दर्जे की जन्नत में

हदीसः शुरैक सालिम अफ़्तस से, वह सईद बिन जुबैर से, वह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं। शुरैक (रिवायत बयान करने वाले) फ़रमाते हैं कि मेरा गुमान है कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस हदीस को हुज़ूर सल्ल० से नक़ल किया था कि आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब आदमी जन्नत में दाख़िल होगा तो अपने माँ-बाप और बीवी-बच्चों के बारे में पूछेगा (कि वे कहाँ हैं?) तो उसको बतलाया जाएगा कि वे (नेक आमाल करके) आपके दर्जे तक या आपके अमल तक नहीं पहुँचे तो वह अर्ज़ करेगा या रब! मैंने तो अपने लिए और उनके लिए (सबके लिए) अमल किया था (ताकि आप अपने फ़ज़्ल के साथ उनको भी मेरे साथ जन्नत में जगह अता करें) चुनाँचे उन सब हज़रात को उस जन्नती के साथ दर्जों में पहुंचा

दिया जाएगा। फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः वे लोग जो ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया (तो हम उनकी औलाद को भी उनके साथ जन्नत में) शामिल कर देंगे। (सूरः तूर आयत 21)।

(तबरानी फ़िस्सग़ीर पेज 640)

कम-अमल माँ-बाप ज़्यादा अमल वाली औलाद की जन्नत के दर्जे में

हज़रत कलबी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि अगर माँ-बाप औलाद के मुक़ाबले में ऊँचे दर्जे में होंगे तो उनकी औलाद को उनके माँ-बाप के दर्जे में पहुँचाया जाएगा। और अगर बेटे माँ-बाप से मर्तबे में बढ़े हुए होंगे तो माँ-बाप को उन बेटों के दर्जे में पहुँचाया जाएगा। (हादिल अरवाह पेज 482)

औलाद अपने माँ-बाप में से बेहतर के दर्जे में होगी

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से मोमिनों की औलाद के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया वे अपने माँ-बाप में से बेहतर के पास होंगे। अगर बाप माँ से बेहतर था तो वे बाप के साथ होंगे, और अगर माँ बाप से बेहतर थी तो वे माँ के साथ होंगे।

(बुदूरे साफ़िरह् हदीस 1717)

औलाद की दुआ से दर्जों में तरक़्क़ी हासिल होगी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला नेक आदमी का जन्नत में दर्जा बुलन्द फ़रमाएँगे तो वह अर्ज़ करेगा ऐ रब! मेरे लिए यह दर्जा कहाँ से बढ़ गया? तो वह इरशाद फ़रमाएँगे कि तुम्हारे लिए तुम्हारे बेटे के

इस्तिग़फ़ार की वजह से (तुम्हारा दर्जा बुलन्द किया गया है)।

(मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 509)

फ़ायदाः यह हदीस असल में तो हक़ीक़ी औलाद की दुआ और इस्तिग़फ़ार के लिए आई है। अगर औलाद के मायने में रूहानी औलाद को इसके तहत में शामिल कर दिया जाए तो अल्लाह तआला की बारगाह में पूरी उम्मीद है कि वह रूहानी औलाद जैसे शागिर्द और मुरीद बल्कि आम मोमिन की दुआ से भी मोमिन का दर्जा जन्नत में बढ़ाया जाएगा अगर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से उनकी दुआ को क़बूल फ़रमाएँगे बहुत-से बुज़ुर्गों के तुफ़ैल आम मोमिनों का भी बेड़ा पार हो जायेगा। (इमदादुल्लाह अनवर)

शफ़ाअत से जन्नत हासिल करने वाले

फ़ायदाः कुछ दोज़ख़ियों को अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करेंगे। कुछ को नबी करीम सल्ल० की सिफ़ारिश की वजह से जन्नत में दाख़िल करेंगे, कुछ को औलिया-ए-किराम की सिफ़ारिश की वजह से, कुछ को आलिमों की सिफ़ारिश की वजह से, कुछ को शहीदों की शफ़ाअत की वजह से, कुछ को हाफ़िज़ों की सिफ़ारिश की वजह से जन्नत में दाख़िल करेंगे। और जन्नत वालों के दर्जों को हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और औलिया वग़ैरह की सिफ़ारिश से भी तरक़्क़ी दी जाएगी।

जन्नत के दर्जे

तायदाद, शान व बड़ाई, हक़दार मोमिनों के दर्जे मुख़्तलिफ़ हैं

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बस ईमान वाले तो ऐसे होते हें कि जब (उनके सामने अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है तो (उसकी बड़ाई के ख़्याल से) उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं तो वे आयतें उनके ईमान को और ज़्यादा (मज़बूत)

कर देती हैं, और वे लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं, जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, और हमने उनको जो कुछ दिया है वे उसमें से ख़र्च करते हैं (ज़कात व सदक़ात वग़ैरह में, बस) सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास, और (उनके लिए) मग़फ़िरत है, और इज़्ज़त का रिज़्क़ है। (सूरः अनफ़ाल आयत 2-4)

हज़रत ज़ह्हाक '6 लहुम द-रजातुम् मिम्मा अमिलू" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि बाज़े जन्नती बाज़ों से बढ़े हुए होंगे। जिस जन्नती को फ़ज़ीलत बख़्शी गई होगी वह तो अपने कम दर्जे वाले को देख सकेगा और कम दर्जे का जन्नती आला दर्जे वाले को नहीं देख सकेगा। (ताकि उसको यह सदमा न हो कि) उस पर भी लोगों में से किसी को फ़ज़ीलत बख़्शी गयी है। (हादिल अरवाह पेज 110)

फ़ायदाः इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं कि अपने से बड़े दर्जे वाले जन्नती की ज़ियारत भी न हो सकेगी, ज़ियारत ज़रूरत होगी मगर उसकी तफ़सील जन्नत वालों की आपसी मुलाक़ात के बाब में पढ़िए।

आला दर्जे के बाज़ मोमिनों के मुक़ामात

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले अपने ऊपर बालाख़ानों में रहने वालों को अपने आमाल की कमी-बेशी की वजह से ऐसे देखेंगे जिस तरह से (लोग) पूरब या पश्चिम के किनारों में ग़ायब होने वाले चमकदार सितारे को देखते हैं। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या ये अम्बिया किराम की मनाज़िल होंगी जिनमें उनके सिवा कोई नहीं पहुँच सकेगा? फ़रमाया क्यों नहीं! मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (बालाख़ानों में) वे लोग रहेंगे जो अल्लाह पर (कामिल और आला दर्जे का) ईमान लाए और (पूरे तौर पर) उसके रसूलों की तस्दीक़ की। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3256)

आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत करने वालों के दर्जे

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आपस में (अल्लाह के लिए) मुहब्बत करने वाले (मुसलमानों) को जन्नत के बालाख़ानों में से ऐसे (बुलन्द और ऊपर) देखा जाएगा जैसे पूरब या पश्चिम में निकलने वाले सितारे को देखा जाता है। उन (बालाख़ानों) को देखकर पूछा जाएगा ये हज़रात कौन हैं? तो यह कहा जाएगा ये हज़रत ख़ालिस अल्लाह के लिए आपस में मुहब्बत करते थे। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 83)

जन्नत के सौ दर्जे

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जे हैं। अगर तमाम जहान उनमें से किसी एक में जमा हो तब भी वह दर्जा उनसे बड़ा रहे। यानी भरे नहीं।

(मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 29)

जन्नत के दर्जे क़ुरआन की आयतों के बराबर हैं

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क़ुरआन का हाफ़िज़ जब जन्नत में दाख़िल होगा (तो उसको) कहा जाएगा पढ़ता जा और चढ़ता जा। वह पढ़ेगा और हर आयत की जगह एक दर्जा और ऊपर चढ़ेगा यहाँ तक कि उसको जितना याद होगा उसका आख़िरी हिस्सा भी पढ़ लेगा। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 192)

फ़ायदाः इससे मालूम हुआ कि हाफ़िज़े क़ुरआन (जो क़ुरआन पर अमल भी करता हो) जन्नत के ऊँचे दर्जों पर फ़ाईज़ (पदासीन) होगा बशर्तेकि उसको क़ुरआन पाक का काफ़ी हिस्सा याद हो, लापरवाही से भूल न जाए।

साथ ही इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत के दर्जे सौ से ज़्यादा हैं और अगर सौ दर्जे हैं जैसा कि दूसरी हदीसों में आया है तो फिर उन सौ दर्जों में और बहुत-से दर्जे होंगे जिनकी तरफ़ इस हदीस शरीफ़ में वज़ाहत फरमाई गयी है।

मुजाहिदों के दर्जे

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जों में हर दो दर्जों के बीच आसमान व ज़मीन के फ़ासले के बराबर फ़ासला है, या आसमान व ज़मीन से भी ज़्यादा फ़ासला है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! ये दर्जात किनके लिए होंगे? फ़रमाया अल्लाह के रास्ते (यानी इस्लाम) में जिहाद करने वालों के लिए। (हादिल अरवाह पेज 114)

फ़ायदाः इस हदीस का असल मिस्दाक़ मुजाहिद हज़रात हैं। जो लोग इस्लाम की तरक़्क़ी और बुलन्दी के लिए दुनिया में जितने तरीक़ों से मेहनत कर रहे हैं दूसरे दर्जे में वे भी इसको मिस्दाक़ हैं।

जन्नत के दो दर्जों का दरमियानी सफ़र

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जे हैं (उनमें से) हर दर्जे का दरमियानी फ़ासला सौ साल चलने के बराबर है। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 292)

फ़ायदाः एक हदीस में जनाब रसूले अकरम सल्ल0 का इरशाद है कि जन्नत के हर दो दर्जों का दरमियानी फ़ासला आसमान व ज़मीन के फ़ासले के बराबर है। (मुस्नद अहमद जिल्द 5 पेज 316)

और एक हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हर दो जन्नतों के बीच पाँच सौ साल का फ़ासला है।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 67)

फ़ायदाः ऊपर की हदीस और इस हदीस में सौ साल और पाँच सौ साल में आपस में कोई टकराव और मुख़ालफ़त नहीं है यह हल्की और तेज़ चाल पर मौक़ूफ़ होगा।

अदना दर्जे के जन्नती के दर्जे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे के जन्नती के सात दर्जे होंगे। यह उनमें से छठे दर्जे में होगा, सातवाँ दर्जा इससे ऊपर होगा।

मालूम हुआ कि निचले दर्जे अदना दर्जे के जन्नतियों के लिए होंगे। सातवें दर्जे से जन्नत के आला दर्जे शुरू होते हैं।

सबसे आला दर्जा

हदीसः हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जे हैं। हर दो दर्जों के दरमियान आसमान व ज़मीन के फ़ासले जितना फ़ासला है, और फ़िरदौस उनमें सब से आला दर्जे की है, उससे ऊपर अर्श है। उसी से जन्नत की चारों नहरें फूटेंगी। पस जब तुम अल्लाह तआला से सवाल करो तो उससे फ़िरदौस माँगा करो। (मुसनद अहमद जिल्द 5 पेज 316)

जन्नतुल फ़िरदौस अर्श से कितनी क़रीब है

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम अल्लाह तआला से फ़िरदौस माँगा करो क्योंकि यह जन्नत का बेहतरीन हिस्सा है। इस (फ़िरदौस) के रहने वाले जन्नती अर्श की चरचराहट (की आवाज़ें) सुनेंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1699)

जन्नत के दर्जे किस चीज़ के हैं?

हदीसः जनाब नबी करीम सल्ल0 इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जन्नत के सौ दर्जे हैं। उनमें के हर दर्जे का दरमियानी फ़ासला आसमान व ज़मीन के फ़ासले के बराबर है। उनमें से पहले दर्जे के घर, कमरे, उसके दरवाज़े पलंग और उनके ताले (सब) चाँदी के होंगे, और दूसरे दर्जे के घर, कमरे, उसके दरवाज़े, उसके पलंग और उसके ताले सोने के होंगे। और तीसरे दर्जे के घर, उसके कमरे, उसके दरवाज़े उसके पलंग और उसके ताले याकूत, लुअ्लुअ् और ज़बर्जद (यानी मोतियों) के होंगे। और बाकी सत्तानवे दर्जे किस चीज़ से बने हैं सिवाए

अल्लाह के कोई नहीं जानता। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1701)

दर्जों को बुलन्द करने वाले आमाल

हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: क्या मैं तुम्हें वह अमल न बताऊँ जिससे अल्लाह तआला ख़ताएँ मिटाते हैं और दर्जे बुलन्द करते हैं? (सहाबा किराम ने) अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्यों नहीं! फ़रमाया वुज़ू को सर्दी और तकलीफ़ के वक़्त अच्छी तरह से करना। मस्जिद तक ज़्यादा क़दम करके जाना। नमाज़ पढ़कर अगली नमाज़ के इन्तिज़ार में रहना। यह है गुनाहों से बचने का मौका और तरीक़ा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1703)

जन्नत में हाफ़िज़ का दर्जा

हदीस हज़रत इब्ने अमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: क़ुरआन के हाफ़िज़ को फ़रमया जाएगा पढ़ते जाओ (और जन्नत के दर्जे) चढ़ते जाओ, और (क़ुरआन इस तरह से) तरतील से (ठहर-ठहरकर) पढ़ो जिस तरह से तुम दुनिया में तरतील के साथ पढ़ा करते थे। बेशक (जन्नत में) तुम्हारी मन्ज़िल उस आख़िरी आयत पर होगी जिसको तुम पढ़ोगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1705)

फ़ायदा इसलिए क़ुरआन के हाफ़िज़ों को चाहिये कि वे क़ुरआन पाक को दुनिया में ख़ूब याद रखें और अपनी औलाद को भी क़ुरआन का हाफ़िज़ बनाएँ अल्लाह तआला औलाद के क़ुरआन को हिफ़्ज़ करने की बरकत से आपको जन्नत के आला दर्जे नसीब फ़रमाएँगे जैसा कि आप इस किताब में पढ़ेंगे।

क़ुरआन पढ़ने वाले ग़ैर-हाफ़िज़ के दर्जे

हदीस जो शख़्स हर रात में दस आयतें पढ़ेगा उसके लिए (सवाब का) एक क़िन्तार लिखा जाएगा और एक क़िन्तार (का सवाब) दुनिया और जो कुछ उसमें है सबसे बेहतर है। जब क़यामत का दिन होगा तो तेरा रब फ़रमाएगा पढ़ और चढ़, हर आयत के बदले में एक दर्जा है,

यहाँ तक कि वह अपनी हिफ़्ज़ की हुई आख़िरी आयत तक पहुँच जाएगा तो तेरा रब बन्दे से फ़रमाएगा ले, तो बन्दा रब तआला के हाथ से पकड़ लेगा औ कहेगा या रब! आप ही ख़ूब जानते हैं (कि मैं क्या लूँ) तो अल्लाह तआला फ़रमाएँगे यह हमेशा रहने वाली जन्नत और ये (हमेशा रहने वाली) नेमतें ले। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1797)

हर आयत जन्नत का एक दर्जा है

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पाक की हर आयत जन्नत का एक दर्जा है और तुम्हारे (दुनियावी) घरों के लिए चिराग़ है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1706)

क़ुरआन की आयतों की संख्या से ऊपर जन्नत का कोई दर्जा नहीं

हदीसः हज़रत आयशा रिज़यल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के दर्जों की तायदाद क़ुरआन पाक की आयतों कीतायदाद के बराबर है, उससे ज़्यादा कोई दर्जा नहीं।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1708)

फ़ायदाः अल्लामा क़रतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जिस शख़्स ने तमाम क़ुरआन पाक याद कर लिया उसने आख़िरत के तमाम दर्जों को हासिल कर लिया, और जिसने उसे थोड़ा-सा पढ़ा तो वह जन्नत के दर्जों में भी उसी क़द्र बुलन्द हो सकेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 488)

दोस्तों में अफ़ज़ल अमल वाले का दर्जा

हदीस हज़रत अबुल-मुतवक्किल नाजी रहमुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत का हर दर्जा दूसरे दर्जे से ऊपर जैसे आसमान व ज़मीन के दरमियान (की शक्ल) है, इनसान कभी अपनी नज़र बुलन्द करेगा तो उसको एक बिजली चुंधिया देगी। क़रीब होगा कि उसकी नज़र को उचक ले। तो वह उससे घबराकर पूछेगा कि यह क्या है?तो (उसको)

कहा जाएगा यह तुम्हारे फ़लाँ भाई का नूर है। वह कहेगा मेरा फ़लाँ भाई! हम दोनों दुनिया में इकट्ठे (नेक) अमल करते थे फिर उसको इतनी फ़ज़ीलत बख़्शी गयी? उसको कहा जाएगा कि वह अमल के ऐतिबार से तुझसे बढ़ा हुआ था। फिर उस जन्नती के दिल में भी रिज़ा डाल दी जाएगी यहाँ तक कि यह राज़ी हो जाएगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1709)

फ़ायदाः हज़रत औफ़ बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने जन्नत के लिए एक मख़्लूक पैदा की है (इनसानों में से) उनको इतनी अताएँ करेंगे कि वे सेर हो जाएँगे। उनके ऊपर आला दर्जों में भी लोग होंगे जब ये उनकी देखेंगे ये उनको पहचान लेंगे और अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! ये तो हमारे भाई हैं हम इनके साथ रहते थे, इनको आपने (क्यों) फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है? तो उनसे कहा जाएगा हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं! ये लोग भूखे होते थे जब तुम पेटअ भरे होते थे, और ये प्यासे होते थे जब तुम सैराब होते थे, ये खड़े होकर (रातों को) इबादत करते थे जब तुम सोए हुए होते थे, और ये बे-घर होते थे जबकि तुम घरों में महफ़ूज़ होते थे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1710)

दुनियावी तकलीफ़ों से दर्जे बुलन्द होते हैं

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः किसी शख़्स की अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ी क़द्र व इज़्ज़त होती है लेकिन वह उस रुतबे पर (अपने) अमल से नहीं पहुँच पाता तो अल्लाह तआला उसको उसकी ना-पसन्दीदा तकलीफ़ में मुब्तला कर देते हैं यहाँ तक कि वह उस रुतबे पर पहुँच जाता है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1711)

ग़मगीनों का ख़ास दर्जा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक दर्जा ऐसा है जिसको ग़मज़दा लोगों के सिवा कोई नहीं पा सकेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1712)

जन्नत का एक ख़ास दर्जा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक दर्जा ऐसा है जिसको तीन तरह के लोगों के सिवा कोई हासिल नहीं कर सकेगाः

1. इन्साफ़ करने वाला हाकिम
2. सिला-रहमी करने वाला
3. बाल-बच्चोंदार सब्र करने वाला। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1712)

जुमे की बरकत से दर्जों में तरक़्क़ी

हदीसः हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जुमे की नमाज़ में हाज़री दिया करो और इमाम के क़रीब बैठा करो क्योंकि आदमी दूर होता जाता है यहाँ तक कि जन्नत में भी पीछे कर दिया जाएगा अगरचे उसमें दाख़िल हो चुकेगा।

(अबू दाऊद शरीफ़ हदीस 1198)

दुनियावी दर्जों की बुलन्दी से जन्नत के दर्जों में कमी

हदीसः हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो बन्दा यह पसन्द करता है कि दुनिया में उसका दर्जा बुलन्द कर दिया जाए तो उसको दर्जे पर विराजमान कर दिया जाता है मगर अल्लाह तआला उसको आख़िरत के बड़े और लम्बे (चौड़े) दर्जे से गिरा देते हैं। फिर जनाब नबी अकरम सल्ल० ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः और आख़िरत के बड़े दर्जे हैं और बड़ी फ़ज़ीलत है।

(सूरः बनी इस्राईल आयत 21)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1719)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया गया है कि कोई बन्दा भी जो दुनिया की कोई चीज़ पा लेता है, अल्लाह के नज़दीक उसके दर्जों में कोई कमी आ जाती है अगरचे अल्लाह तआला

उस पर करम करने वाला है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1720)

गुलाम और आक़ा के दर्जों का फ़र्क़

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आदमी और उसका गुस्ल (बाज़ी बार इकट्ठे) जन्नत में दाख़िल होंगे लेकिन उसका गुलाम उससे बड़े दर्जे पर होगा तो वह आदमी कहेगा या रब! यह तो दुनिया में मेरा गुलाम था (फिर इसको मुझसे बड़ा दर्जा क्यों अता किया?) उससे कहा जाएगा यह तुमसे ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र किया करता था।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1721)

लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि हर बार गुलाम ही बाज़ी ले जाए। कभी आक़ा आगे कभी गुलाम आगें

दिल-पसन्द खाने पर जन्नत के दर्जों की कमी

हज़रत इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जो शख़्स कोई ऐसा लुक़्मा खाए जो उसको खुश कर दे और या कोई एक ऐसा घूँट (किसी चीज़ का) पी ले जो उसको खुश कर दे, उसकी वजह से उसका आख़िरत का हिस्सा कम हो जाता है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1722)

फ़ायदाः इस इरशाद से मालूम होता है कि दुनिया की नेमतों की लज़्ज़त आख़िरत की नेमतों को कम करने वाली है इसी लिए बहुत-से बुज़ुर्ग दुनियावी लज़्ज़तों से अलग रहकर अल्लाह की इबादत ही में मशग़ूल रहते थे और गुज़ारे की रोज़ी पर सब्र करते थे।

तीन लोग आला दर्जे नहीं पा सकते

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तीन चीज़ें जिसमें होंगी वह बुलन्द दर्जों तक नहीं पहुँच सकताः

1. जिसने कहानत (ज्योतिषी का पेशा किया या अमल किया या उसपर विश्वास) किया।

2. या तीर निकालने के ज़रिये से अपने लिए ख़ैर या शर का फ़ैसला किया।

3. या कुर्आ-अन्दाज़ी करके या कोई परिन्दा उड़ाकर अपने सफ़र का शगून लिया। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1723)

फ़ायदाः आजकल नजूमियों और पामिष्टों का धन्धा बहुत-से मुल्कों में बड़े ज़ोर से चल रहा है और कुछ अख़्बारों में एक मुस्तक़िल विषय बनाम 'आपका यह सप्ताह कैसा गुज़रेगा' छपता है। उसका पढ़ना ठीक नहीं और उसपर यक़ीन करना हराम बल्कि कुफ़्र है। इसलिये आप भी ग़ौर करें कहीं आप तो इसमें मुब्तला नहीं।

मुजाहिद का बुलन्द दर्जा

हदीसः हज़रत कअब बिन मुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिसने तीर से खुदा के दुश्मन का मुक़ाबला किया अल्लाह तआला उसका एक दर्जा बुलन्द करेंगे। सुन लो! यह तेरी माँ का (बनाया हुआ) कुब्बा नहीं है (बल्कि उसके) दो दर्जों के दरमियान सौ साल का फ़ासला है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1725)

दर्जे बुलन्द कराने के आमाल

हदीसः जिस शख़्स को यह बात अच्छी लगती है कि उसके लिए जन्नत की अज़मत (बड़ाई और सम्मान) को दोगुना किया जाए और उसके लिए दर्जों को बुलन्द किया जाए तो उसे चाहिये कि अपने ज़ुल्म करने वाले को माफ़ करे और जो मेहरूम करे उसको दे, और जो क़ता-रहमी करे (यानी रिश्ते और ताल्लुक़ को तोड़े) उससे जोड़े।

फ़ायदाः इस तरह की एक रिवायत तबरानी और बज़्ज़ार में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से भी नक़ल की गई है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1727)

औलाद के इस्तिग़फ़ार से दर्जों की तरक़्क़ी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं (मुर्दा)

इनसान का एक दर्जा बुलन्द किया जाता है तो वह अर्ज़ करता है ऐ रब! यह मेरा दर्जा कहाँ से बुलन्द हो गया? उसको कहा जाता है तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार की वजह से। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 185)

अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले सत्तर दर्जा बुलन्द दर्जों में

हज़रत मुहीरीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुजाहिदीन को घर बैठने (जिहाद न करने) वालों पर अपनी तरफ़ से बड़े अज्र के दर्जों से नवाज़ा है। फ़रमाया यह (दर्जात) सत्तर दर्जा (बुलन्द) हैं। हर दो दर्जों के दरमियान तेज़-रफ़्तारी से दौड़ने वाले घोड़े के सत्तर साल की दूरी जितनी फ़ासला है।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 189)

आलिम की आबिद पर फ़ज़ीलत के दर्जे

हदीसः हज़रत अब्दुलह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आलिम की आबिद पर सत्तर दर्जे फ़ज़ीलत है (और) हर दर्जे के दरमियान घोड़े के सत्तर साल तक तेज़ दौड़ने का फ़ासला है।

(मजमउज़्ज़वायद जिल्द 1 पेज 122)

जन्नत के ज़्यादा दर्जे क्यों

अल्लामा नेशापूरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नत के दर्जे आठ और दोज़ख़ के सात इसलिए हैं कि जन्नत अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है और दोज़ख़ अल्लाह तआला का इन्साफ़ है। और फ़ज़्ल हमेशा इन्साफ़ से ज़्यादा ही हुआ करता है।

और यह वजह भी है कि दोज़ख़ सज़ा है और सज़ा में इज़ाफ़ा करना ज़ुल्म है, और सवाब में इज़ाफ़ा होता रहता है और एक वजह यह भी है कि ख़ैर के दर्जे आठ हैं और बुराई के सात।

(कन्ज़ुल मदफ़ून पेज 134)

जन्नतों की तायदाद

जन्नतुल फ़िरदौस चार हैं

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जो अल्लाह तआला के सामने पेश होने से डर गया (और गुनाह करने से रुक गया तो उसके लिए) दो जन्नतें हैं। (एक सोने की और एक चाँदी की)। (सूरः रहमान आयत 46)

इसके बाद अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः इन (पिछली) दो जन्नतों के नीचे दो जन्नतें और हैं।

(सूरः रहमान आयत 62)

इन आयतों से मालूम होता है कि जन्नतों की तायदाद चार है जैसा कि इससे अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने भी दलील पकड़ी है। इसकी दलील में नीचे लिखी हुई हदीस भी देखें:

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः दो जन्नते ऐसी है कि उनके बरतन, उनके ज़ेवर और जो कुछ उनमें है सोने का है। और दो जन्नतें ऐसी हैं कि उनके बरतन, उनके ज़ेवर और जो कुछ उनमें है, चाँदी का बना हुआ है। जन्नत वालों के दरमियान और उसके दरमियान कि वह अपने परवर्दिगार का दीदार करें, सिर्फ़ एक किब्रियाई (अल्लाह की बड़ाई) की चादर होगी, अल्लाह के चेहरे मुबारक पर जन्नते अद्न में। (मुस्नद अहमद जिल्द 4 पेज 416)

फ़ायदाः इस हदीस शरीफ़ से मालूम होता है कि जन्नतुल-फ़िरदौस की तायदाद चार है, उनमें दो जन्नतें सोने की होंगी और दो चाँदी की। ये चार जन्नतें ऊँचे दर्जे की होंगी इसलिए कि उनके और अल्लाह तआला के दरमियान किब्रियाई की चादर होगी। उन जन्नतों वाले जब चाहेंगे अल्लाह तआला का दीदार कर सकेंगे। और बहुत-सी दूसरी रिवायतों में आप पढ़ेंगे कि अक्सर जन्नतें ऐसी हैं जिनमें अल्लाह तआला के दीदार का एक वक़्त मुक़र्रर होगा, तो मालूम हुआ कि वे जन्नतें उनके अलावा हैं।

जन्नतुल फ़िरदौस की शान शौकत

हदीसः हज़रत अमर बिन सलामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस का मैदान अपने हाथ मुबारक से बनाया। फिर उस पर ख़ालिस सोने की ईंट से और खूब महकने वाली मुश्क की ईंट से उसको बनया। उसमें अच्छी क़िस्म के मेवों के पेड़ लगाए। उत्तम खुशबू पैदा की, उसमें नहरें चलाईं। फिर हमारे परवर्दिगार ने अपने अर्श पर (अपनी शान के मुताबिक़) जलवा फ़रमाया और उसकी तरफ़ देखा और फ़रमाया, मुझे मेरे ग़लबे की क़सम! तुझ में हमेशा शराब पीने वाला और ज़िनाकारी पर डटा रहने वाला दाख़िल नहीं हो सकेगा। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 440)

जन्नत की नहरें फ़िरदौस पहाड़ से निकलती हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में फ़िरदौस एक पहाड़ है, उसी से जन्नत की नहरें निकलती हैं।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 21)

अल्लाह तआला जन्नतुल फ़िरदौस को हर रात हुस्न में इज़ाफ़े का हुक्म देते हैं

हदीसः हज़रत हस्सान बिन आतिया फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला जन्नतुल फ़िरदौस की तरफ़ हर रात सेहरी के वक़्त नज़र करते हैं और (उसको) हुक्म देते हैं कि अपने हुस्न के साथ और ज़्यादा हसीन हो जाए। बेशक वही लोग कामयाब हैं जो मोमिन हैं। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 21)

जन्नतुल फ़िरदौस अर्श के नीचे है

हदीसः जनाब सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम अल्लाह तआला से जन्नतुल फ़िरदौस का सवाल किया करो क्योंकि यह जन्नत का उम्दा और आला हिस्सा है, इसी से जन्नत की नहरें फूटती हैं और ये जन्नतुल फ़िरदौस वाले (अर्श के क़रीब होने की वजह से) अर्श की चरचराहट की आवाज़ भी सुनेंगे।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 21)

फ़ायदाः अल्लामा क़ुरतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं। कहा गया है कि जन्नतें सात हैं:

1. दारुल-जलाल 2. दारुस्सलाम 3. दारुल-ख़ुल्द 4. जन्नते अद्न 5. जन्नतुल-मअ्वा 6. जन्नते नईम 7. जन्नतुल फ़िरदौस।

और यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ चार हैं। हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु की पिछली हदीस की बिना पर अल्लामा हलीमी अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु की पिछली हदीस की बिना पर अल्लामा हलीमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी इसी को इख़्तियार किया और फ़रमाया है कि दो जन्नतें मुक़र्रबीन (अल्लाह के ख़ास और क़रीबी हज़रात) की होंगी, और दूसरे दर्जे की दो जन्नतें हज़रात अस्हाबे-यमीन (यानी दाएँ वालों) की, लेकिन हर जन्नत में कई दर्जे, मन्ज़िलें और दरवाज़े होंगे।

(बुदूरे साफ़िरह पेज 484)

जन्नत के नाम और उनकी ख़ुसूसियतें (विशेषताएँ)

ज़ात के एतिबार से एक जन्नत है मगर सिफ़तों के एतिबार से उसके कई नाम हैं। जिस तरह से अल्लाह तआला के पाक नाम, क़ुरआन पाक के नाम, नबी करीम सल्ल0 के नाम, क़यामत के नाम, और दोज़ख़ के नाम बहुत हैं मगर मक़सूद उनमें एक ही ज़ात होती है (मगर हाँ उसके दर्जे बहुत हैं)।

(1) जन्नत

यह जन्नत का मशहूर नाम है जो उस घर और उसकी तमाम तरह की नेमतों, लज़्ज़तों, राहतों सुरूर और आँखों की ठंडकों पर इस्तेमाल होता है। जन्नत अरबी में बाग़ को कहते हैं और बाग़ भी ऐसा जिसके पेड़ और पौधे घने हों और दाख़िल होने वाला उनमें छुप जाए।

(2) दारुस्सलाम

अल्लाह तआला ने जन्नत का एक नाम दारुस्सलाम भी रखा है। देखिए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः मोमिनों के लिए उनके रब के पास दारुस्सलाम है।

(सूरः अनूआम आयत 127)

और एक जगह इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः और अल्लाह तआला (लोगों को) दारुस्सलाम की तरफ़ बुलाता है। (सूरः यूनुस आयत 25)

जन्नत इस नाम की सबसे ज़्यादा हक़दार है क्योंकि यह हर आफ़त और मक्रूह (ना-पसन्दीदा) चीज़ से अमन व सलामती का घर है। यह अल्लाह तआला का घर है क्योंकि अल्लाह का एक नाम "सलाम" भी है। जिसने उसको सलामती वाला बनाया है और उसमें रहने वालों को अमन और हिफ़ाज़त अता की है। ये जन्नत वाले आपस में भी "सलाम" का तोहफ़ा पेश करेंगे और फ़रिश्ते भी उनके सामने जिस दरवाज़े से दाख़िल होंगे वे भी उनको "सलामुन् अलैकुम" कहेंगे, और रब्बे रहीम की तरफ़ से भी सलाम पेश किया जाएगा, और जन्नत वाले दुरुस्त बात करेंगे उसमें बेकार, बेहूदा और बेकारपन नहीं होगा।

(3) दारुल् ख़ुल्द

जन्नत का यह नाम इसलिए रखा गया है क्योंकि जन्नत वाले हमेशा के लिए उसमें रहेंगे। वहाँ से कभी न निकलेंगे। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः अता है (तेरे रब की) ख़त्म न होने वाली।(सूरः हूद आयत 108)

बाज़े वे लोग जो जन्नत के हमेशा रहने के क़ायल नहीं वे गुमराही में हैं। वे क़ुरआन पाक को सही तरीक़े से पढ़कर हिदायत हासिल करें।

(4) दारुल् मुक़ाम

अल्लाह तआला जन्नत वालों की ज़बानी क़ुरआन पाक में इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमसे ग़म को दूर किया है। बेशक हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला और क़द्र-दान है, जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के मुक़ाम (दारुल-मुक़ामा) में ला उतारा, जहाँ पर न हमें कोई परेशानी पहुँचेगी और न कोई हमको ख़स्तगी पहुँचेगी। (सूरः फ़ातिर आयत 34-35)

हज़रत मुक़ातल इस आयत में दारुल-मुक़ामा की तफ़सीर दारुल ख़ुलूद के साथ करते हैं जिसमें जन्नती हमेशा रहेंगे। न उनको मौत आएगी और न ही उनको उससे निकाला जाएगा।

(5) जन्नतुल् मअ्वा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः 'सिद्रतुल-मुन्तहा' के पास ही जन्नतुल मअ्वा है।

(सूरः नज्म आयत 15)

अरबी में 'मअ्वा' ठिकाने को कहते हैं यानी रहने की जगह सिर्फ़ जन्नत है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि यही वह जन्नत है जहाँ तक हज़रत जिब्राईल और फ़रिश्ते हज़रत जाकर रुकते हैं, और हज़रत मुक़ातल और कलबी कहते हैं कि यह वह जन्नत है जिसमें शहीदों की रूहें जाकर रहती हैं।

हज़रत कअब कहते हैं कि जन्नतुल् मअ्वा वह जन्नत है जिसमें सब्ज़ रंग के परिन्दे रहते हैं। उन्हीं में शहीदों की रूहें चरती फिरती हैं। हज़रत आयशा और हज़रत ज़र बिन हुबैश फ़रमाते हैं कि यह दूसरी जन्नतों की तरह एक जन्नत है। लेकिन दुरुस्त यह है कि यह भी जन्नत के नामों से एक नाम है जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जो शख़्स अपने रब के सामने पेश होने से डर गया और नफ़्स को उसकी ख़्वाहिशें से बाज़ रखा, बस जन्नत ही उसका ठिकाना है। (सूरः नाज़िआत आयत 40-41)

(6) जन्नाते अद्न

यह भी जन्नत का एक नाम है और सही यह है कि यह तमाम जन्नतों का मजमूई नाम है। और सब जन्नतें जन्नाते अद्न हैं। अल्लाह

तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः उन जन्नाते अद्न में जिनका रहमान ने अपने बन्दों से ग़ायबाना वायदा फ़रमाया है। (वे उसकी वायदा की हुई चीज़ को ज़रूर पहुँचेंगे)। (सूरः मरियम आयत 61)

और इरशाद है:

तर्जुमाः जन्नती जन्नाते अद्न (हमेशा की जन्नतों) में पाकीज़ा घरों में रहेंगे। (सूरः सफ़ आयत 12)

फ़ायदाः हज़रत अब्दुल मलिक बिन हबीब क़रतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि 'दारुल् जलाल' और 'दारुस्सलाम' अल्लाह की तरफ़ मन्सूब हैं, लेकिन जन्नते अद्न जन्नत का दरमियानी और बुलन्द हिस्सा है और तमाम जन्नतों से ऊँची है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि यह अल्लाह तआला का घर है जिससे उसका अर्श सजा हुआ है। बाक़ी जन्नतें उसके इर्द-गिर्द हैं, लेकिन यह उन सबसे अफ़ज़, बेहतर और ज़्यादा क़रीब है। (वस्फुल फ़िरदौस पेज 20)

(7) दारुल् ह-यवान

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक 'दारुल् आख़िरत' ही 'दारुल् ह-यवान' है।

(सूरः अन्कबूत आयत 64)

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन की व्याख्या करने वाले आलिमों) के नज़दीक दारुल् आख़िरत से मुराद दारुल् ह-यवान और दारुल् हयात मुराद है। यानी जन्नत में हमेशा वाली ज़िन्दगी होगी मौत नहीं आएगी। इस आयत का एक मतलब यह भी है आख़िरत की ज़िन्दगी ही असल ज़िन्दगी है, उसमें न कभी फ़तूर आएगा न कभी फ़ना, यानी जन्नत की ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी की तरह नहीं होगी।

(8) फ़िरदौस

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए

उनकी मेहमानी के लिए जन्नतुल् फ़िरदौस (फ़िरदौस के बाग़) होंगे।

(सूरः कहफ़ आयत 10)

फ़िरदौस एक ऐसा नाम है जो तमाम जन्नत पर भी बोला जाता है और जन्नत के अफ़ज़ल और आला दर्जे पर भी बोला जाता है। हज़रत लैस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि फ़िरदौस अंगूरों के बाग़ वाली जन्नत है। हज़रत ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि यह एक ऐसी जन्नत है जो पेड़ों से लिपटी हुई है (यानी बहुत पेड़ों वाली है और घने पेड़ों वाली है)।

अगरचे फ़िरदौस बोलकर तमाम जन्नत मुराद ली जा सकती है मगर दर'असल यह जन्नत के आला और बुलन्द दर्जे का नाम है इसी लिए जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

जब तुम अल्लाह तआला से (जन्नत का) सवाल करो तो उससे जन्नतुल् फ़िरदौस माँगा करो। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2531)

(9) जन्नातुन्-नईम

अल्लाह ने जन्नातुन्-नईम का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया हैः

तर्जुमाः बेशक वे लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल किए उनके लिए जन्नातुन्-नईम (नेमतों वाली जन्नतें) हैं। (सूरः लुक़मान आयत 8)

यह भी तमाम जन्नतों का मजमूई नाम है क्योंकि जन्नत के खाने, पीने, लिबास, और सूरतें पाकीज़ा हवाएँ और ख़ूबसूरत मनाज़िर बड़े मकानात वग़ैरह जैसी ज़ाहिरी और बातिनी नेमतों सब पर आधारित है।,

(10) अल्-मक़ामुल्-अमीन

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक ख़ुदा से डरने वाले 'मक़ामें अमीन' (अमन की जगह) में रहेंगे। यानी बाग़ों में और नहरों में।

(सूरः दुख़ान आयत 51-52)

आगे अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः वहाँ इतमीनान से हर तरह के मेवे मंगाते होंगे।

(सूरः दुख़ान आयत 55)

इन दोनों जगहों में अल्लाह तआला ने मकान और खाने पीने के अमन को जमा फ़रमाया है। चुनाँचे वे न मकान से निकलने का ख़ौफ़ करेंगे, न नेमतों से अलैहदगी का, और न मौत का।

(11) मक़अदे सिद्क़

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

तर्जुमाः बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों में और नहरों में होंगे एक मक़अद् मुक़ाम (मक़अदे सिद्क़) में। (सूरः क़मर आयत 5455)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने जन्नतों का नाम मक़अदे सिद्क़ ज़िक्र किया है। (हादिल अरवाह पेज 131-138)

(12) तूबा

हज़रत सईद बिन मसजूह रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हिन्दी ज़बान में जन्नत का नाम तूबा है। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 22)

जन्नत अद्न और दारुस्सलाम की अफ़ज़लियत

हदीसः इब्ने अब्दुल-हकम रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः 'जन्नते अद्न' जन्नत के बाक़ी दर्जों से नौ लाख गुना बड़ी है, और जन्नत 'दारुस्सलाम' जन्नते अद्न से नौ लाख गुना बड़ी है।[1] (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 22)

(1) जन्नत के इन तमाम नामों के मुताल्लिक़ पूरी तफ़सील 'हादिल अरवाह' पेज 131-138 से ली गयी है। और बाज़ मुक़ामात पर अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह0 के बयान किए हुए मज़ामीन और हदीसों के हवाले बाज़ किताबों से नक़ल कर दिये गये हैं।

अल्लाह तआला ने कुछ जन्नतों को अपने हाथ से बनाया सबसे अफ़ज़ल जन्नत

जिस तरह से अल्लाह तआला ने तमाम फ़रिश्तों में से हज़रत जिब्राईल को, तमाम इनसानों में से हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को, आसमानों में से ऊपर वाले आसमान को, शहरों में से मक्का को महीनों में से

'अश्हुरे हुरुम' (शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा के महीनों) को, रातों में से लैलतुल-क़द्र को, दिनों में से जुमे को, रात में से उसके दरमियानी हिस्से को, वक़्तो में से नमाज़ के वक़्तों को फ़ज़ीलत बख़्शी है, उसी तरह से अल्लाह तआला ने जन्नतों में से एक जन्नत को अपने लिए चुना। उसको अपने अर्श से निकटता की ख़ुसूसियत (विशेषता) बख़्शी, अपने हाथ से उसमें पौधे लगाए और वह जन्नत तमाम जन्नतों की सरदार कहलाई। अल्लाह की ज़ात पाक है जो चाहती है मख़्लूक़ात की तमाम क़िस्मों में से किसी एक को अफ़ज़लियत का शर्फ़ (सम्मान व इज़्ज़त) बख़्शती है।

किन चीज़ों को अल्लाह तआला ने अपने हाथ मुबारक से पैदा किया

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने तीन चीज़ें अपने हाथ मुबारक से पैदा फ़रमाईः

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपने हाथ से बनाया।
2. तौरात को अपने हाथ से लिखा
3. और जन्नतुल-फ़िरदौस को अपने हाथ से पैदा किया।

फिर फ़रमाया मुझे मेरे ग़लबे और जलाल की क़सम! इसमें शराब का आदी और 'दय्यूस' दाख़िल नहीं हो सकेगा। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम शराब के आदी को तो जानते हैं। यह दय्यूस कौन है।? फ़रमाया वह शख़्स जो बदकारी को अपनी बीवी में बरक़रार रखे। (यानी अगर उसकी बीवी या बेटी बदकारी के रास्ते पर चले तो वह उस पर रज़ामन्द रहे और उसको ग़लत रास्ते से न रोके और उसके अज़ादाना ज़िन्दगी गुज़ारने पर नाराज़ न हो)। (हदिल अरवाह पेज 145)

हज़रत शिमर बिन आतिया फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक ने जन्नतुल् फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया। वह उसको हर जुमेरात को खोलता है और हुक्म देता है तू मेरे औलिया (दोस्तों) के लिए पाकीज़गी

और उम्दगी के लिहाज़ से और बढ़ (ज़ायद हो) जा। (हादिल अरवाह पेज 146)

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जन्नते अद्न को अपने हाथ मुबारक से बनाया, उसकी एक ईंट सफ़ेद मोती की है और एक ईंट सुर्ख़ याकूत की है, और एक सब्ज़ ज़बर्जद की है। उसका गारा कस्तूरी का है। उसकी बजरी लुअ्लुअ् मोती है और उसकी घास ज़ाफ़रान की है। फिर अल्लाह तआला ने उससे फ़रमया (अब) तू बोल। उसने कहा बेशक वही लोग कामयाब हुए जो मोमिन हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे मेरे ग़लबे और जलाल की क़सम! कोई बख़ील तेरे अन्दर दाख़िल होकर मेरा पड़ोसी नहीं बनेगा। फिर जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः और जो शख़्स तबीयत के बुख़्ल से महफ़ूज़ रखा गया, पस ऐसे ही लोग कामयाब होंगे।(सूरः हश्र आयत 9)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1668)

फ़ायदाः इन हादीसों से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस जिसका दूसरा नाम जन्नते अद्न है को अपने हाथ मुबारक से पैदा किया है और यही सब जन्नतों से अफ़ज़ल जन्नत है। ख़ुशख़बरी है उन हज़रात के लिए जो उसके लायक़ नेक अमल करके उसके वारिस बनेंगे और बुलन्द अर्श और उसके दरमियान कोई फ़ासला न होगा। ये जब चाहेंगे अल्लाह तआला की ज़ियारत कर सकेंगे। दुआ है कि अल्लाह तआला आप पढ़ने वालों को और इस नाचीज़ मुअल्लिफ़ (किताब के लेखक) को इस जन्नत का वारिस बनाए। (आमीन)

जन्नत वालों की तायदाद और सफ़ें

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों की (क़यामत के दिन) एक सौ बीस सफ़ें होंगी (उनमें से) मेरी उम्मत की अस्सी सफ़ें होंगी।

(सिफ़तुल्-जन्नत अबू नुएम पेज 239)

नोटः आजकल 'ग़ैर-मुक़ल्लिद जो अपने आपको 'अहले हदीस' कहते हैं, 'अहले सुन्नत वल्-जमाअत' हनाफ़ियों को यह कहते फिरते हैं

कि आप मुक़ल्लिद हैं इसलिए मुशरिक हैं और मुशरिक की बख़्शिश नहीं होगी। वे दोज़ख़ में जाएँगे, सिर्फ़ हम जन्नत में जाएँगे। अगर वे अपनी अक़्ल से काम लें तो यह हदीस स्पष्ट तौर पर बता रही है कि सबसे ज़्यादा तायदाद उम्मते मुहम्मदिया की जन्नत में जाने वाली होगी और उनकी अस्सी सफ़ें होंगी। इस तायदाद का आप पहली उम्मतों से मुक़ाबला (तुलना) करके देख लें कि उम्मते मुहम्मदिया तायदाद में उनसे कितनी ज़्यादा है। क्या ये तमाम ग़ैर-मुक़ल्लिद मिलकर पिछली उम्मतों की तायदाद का मुक़ाबला कर सकते हैं जबकि ये पैदा ही अंग्रेज़ के दौर से हुए हो और मक्के मदीने में तेरहवीं सदी से पहले इनका कोई वजूद न मिलता हो, और अहले सुन्नत वल्-जमाअत हनफ़ी हज़रात ने दूसरी सदी से लेकर तक़रीबन बारहवीं सदी तक लगातार मक्के और मदीने के मर्कज़ों में इमामत और हुकूमत की हो। अल्लाह तआला उनको हिदायत अता फ़रमाये और आम पब्लिक को उनकी तरफ़ से पेश किये जाने वाले रसूलुल्लाह के नाम से सिर्फ़ ज़बानी दावे से महफ़ूज़ रखे। उनकी हक़ीक़त को समझने के लिए मुनाज़िरे इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीन साहिब सफ़्दर ओकाड़वी दामत बरकातुहुम की किताबों और रिसालों का अध्ययन करें जो उनको समझने के लिए बहुत काफ़ी हैं।

सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले
बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होने वाले
सत्तर हज़ार हिसाब के जन्नत में जाने वाले

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से यह इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः मेरी उम्मत में से एक जमाअत जन्नत में दाख़िल होगी यह (तायदाद में) सत्तर हज़ार होंगे। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। हज़रत उकाशा बिन मिहसन रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्हों ने अपने ऊपर धारीदार चादर ले रखी थी, अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह अल्लाह तआला से दुआ करें कि वह मुझे उन हज़रात में शामिल कर दे। आप सल्ल0 ने दुआ फ़रमायी कि ऐ अल्लाह! इसको उन

हज़रात में शमिल कर दे। फिर अन्सार सहाबा में से एक आदमी खड़ा हुआ उसने भी अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला से दुआ करें कि वह मुझे भी उनमें शामिल कर दे। आपने इरशाद फ़रमाया, उकाशा तुमसे आगे निकल गया। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 6542)

चौदहवीं के चाँद की तरह चेहरे रोशन होंगे

हदीसः हज़रत सहल इब्ने सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार हज़रात का हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फ़रमया, या सात लाख का, ये जन्नत में इस हालत में दाख़िल होंगे कि उनमें से हर एक ने एक-दूसरे को पकड़ रखा होगा यहाँ तक उनका पहला शख़्स आख़िरी शख़्स के साथ ही जन्नत में दाख़िल होगा। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह होंगे।(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 6543)

सत्तर हज़ार अल्लाह तआला की तीन लपें मुसलमानों की बग़ैर हिसाब जन्नत में

हदीसः अबू उमामा बाहिली रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना, आप इरशाद फ़रमा रहे थेः

तर्जुमाः मेरे रब ने मेरे साथ वायदा फ़रमाया है कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएँगे, न तो उनका हिसाब होगा न उनको अज़ाब होगा, (और) हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और अल्लाह तआला की लपों में से तीन लपें (मुसलमानों से बग़ैर हिसाब के और बग़ैर सज़ा के जन्नत में जाएँगे)। (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2437)

फ़ायदाः अल्लाह तआला की लपों का कोई मख़्लूक़ अन्दाज़ा नहीं कर सकती इसलिए इस हदीस से कसरत से उम्मते मुहम्मदिया की बख़्शिश की ख़ुशख़बरी मिलती है।

चार अरब नव्वे करोड़ मुसलमान बग़ैर हिसाब जन्नत में

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार (मुसलमान मर्द व औरतें बग़ैर हिसाब व अज़ाब के) जन्नत में जाएँगे और उन सत्तर हज़ार में से हर एक के साथ सत्तर हज़ार (चार अरब नव्वे करोड़) लोग और भी (बिना-हिसाब जन्नत में जाएँगे)। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 407)

बग़ैर हिसाब जन्नत में जाने वालों की पूरी तायदाद का अल्लाह तआला को मालूम है

हदीसः हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया मेरे अल्लाह ने मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार हज़रात ऐसे अता फ़रमाए हैं जो जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल होंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया (या रसूलुल्लाह!) आपने अल्लाह तआला से इससे ज़ायद का मुतालबा नहीं किया? आपने इरशाद फ़रमाया मैंने ज़ायदा मुतालब किया था तो अल्लाह तआला ने मुझे (सत्तर हज़ार में से) हर आदमी के साथ सत्तर हज़ार अता फ़रमाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि आपने अल्लाह तआला से इससे भी ज़ायद का मुतालबा नहीं फ़रमाया? तो आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया मुझे इतना अता फ़रमाया है, फिर आपने अपने दोनों बाज़ू फैला दिए। फिर फ़रमाया यह अल्लाह तआला की तरफ़ से होगा। (हिशाम कहते हैं) हम नहीं जानते कि उसकी तायदाद कितनी होगी। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 414)

ये सत्तर हज़ार कौन हज़रात होंगे

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया मेरे सामने तमाम उम्मतों को पेश किया गया। पस मैंने एक नबी को देखा जिसके साथ सिर्फ़ एक मामूली-सी जमाअत थी और एक नबी को देखा जिसके साथ सिर्फ़ एक या दो आदमी थे। और एक नबी को देखा जिसके साथ कोई शख़्स (भी उनको मानने वाला) नहीं था। फिर अचानक मेरे सामने एक बहुत बड़ी उम्मत को पेश किया गया, मैंने सोचा कि यह मेरी उम्मत है लेकिन मुझे कहा गया कि यह मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम है। आप उफ़ुक़

(आसमान व ज़मीन के मिलने वाले लम्बे और चौड़े किनारे) की तरफ़ देखें। जब मैंने देखा तो वह बहुत ही बड़ी उम्मत थी।

फिर मुझे कहा गया आप दूसरे उफ़ुक़ की तरफ़ भी देखें तो उधर भी बहुत ही बड़ी उम्मत थी। मुझे फ़रमाया गया कि आपकी उम्मत यह है। उनमें से सत्तर हज़ार वे हज़रात हैं जो जन्नत में बग़ैर हिसाब किये और अज़ाब दिये बग़ैर दाख़िल होंगे। फिर आप सल्ल0 उठकर घर में तशरीफ़ ले गए। सहाबा किराम ने उन हज़रात के बारे में जो जन्नत में बग़ैर हिसाब व अज़ाब के दाख़िल होंगे सोचना शुरू कर दिया। उनमें से किसी ने कहा कि शायद ये वे हज़रात होंगे जो इस्लाम की हालत में पैदा हुए और अल्लाह तआला के साथ (किसी को) शरीक नहीं ठहराया होगा। इस तरह से सहाबा ने कई चीज़ों का ज़िक्र किया तो हुज़ूर सल्ल0 उनके पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया तुम किस गुफ़्तगू में मशगूल हो? उन्होंने आप से अर्ज़ किया तो आपने इरशाद फ़रमाया ये वे लोग होंगे जो (दुनिया में) न तो दम करते थे और न दम करने को ख़ुद तलब करते थे, और न शगून पकड़ते थे बल्कि अपने परवर्दिगार पर भरोसा और तवक्कुल करते थे। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 220-374)

फ़ायदा: अल्लामा इब्ने क़य्यिम और अल्लामा क़ुरतबी ने दम करने पर बहस की है और हदीस से साबित किया कि जायज़ दम और झाड़-फूँक करना-कराना दुरुस्त है। (हादिल अरवाह पेज 177)

ये हज़रात हिसाब शुरू होने से पहले जन्नत में जाएँगे

हदीस: जब क़यामत का दिन होगा तो लोगों की एक जमाअत खड़ी होगी जो आसमान व ज़मीन के किनारे को (अपनी अधिकता की वजह से) भर रही होगी। उनकी चमक-दमक सूरज की तरह होगी। आवाज़ दी जाएगी: नबी उम्मी कहाँ है? इस पर हर नबी उठने के लिए हरकत में आएगा। फिर कहा जाएगा यह हज़रत मुहम्मद और उनकी उम्मत हैं। फिर एक और जमाअत उठेगी जो (आसमान व ज़मीन के) उफ़ुक़ (किनारों) को भर रही होगी। उनका नूर आसमान के हर सितारे की तरह होगा। कहा जाएगा: नबी उम्मी कहाँ है? तो उसके लिए हर

नबी उठना चाहेगा (मगर यह भी उम्मते मुहम्मदिया ही होगी) फिर (अल्लाह तआला) दो लपें भरेंगे और कहा जाएगा ऐ मुहम्मद! यह एक लप तेरे लिए है और ऐ मुहम्मद! यह मेरी तरफ़ से तेरे लिए है। (यानी उन दो लपों को जिनमें आने वाले आदमियों की तायदाद अल्लाह तआला जानते हैं बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल किया जायेगा।) फिर आमाल की तराज़ू क़ायम (स्थापित) की जायेगी और हिसाब शुरू किया जाएगा। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 480)

उम्मत की बख़्शिश के लिए एक लप ही काफ़ी है

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमया:

तर्जुमाः मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमारे (इतमीनान और ख़ुशख़बरी के) लिए और बढ़ा दें। आपने फ़रमाया और इतना ज़्यादा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ अबू बक्र! अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हुज़ूर सल्ल0 की उम्मत को एक ही लप में जन्नत में दाख़िल कर देंगे। (हुज़ूर सलल0 ने फ़रमाया उमर ने सच कहा।) (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 409)

शहीद हज़रात बग़ैर हिसाब के जन्नत में

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

जब लोग हिसाब के लिए पेश होंगे उस वक़्त एक जमाअत अपनी तलवारों को अपनी गर्दनो पर रखे हुए आएगी जिनसे ख़ून के क़तरे गिर रहे होंगे। ये जन्नत के दरवाज़े पर हुजूम कर देंगे। कहा जाएगा ये कौन लोग हैं? कहा जाएगा ये शहीद हैं जो (शहादत के बाद) ज़िन्दा थे रिज़्क़ दिये जाते थे। फिर पुकारा जाएगा वह शख़्स खड़ा हो जिसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे हो, वह जन्नत में दाख़िल हो जाए।

फिर तीसरी बार पुकारा जाएगा वह शख़्स खड़ा हो जिसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे हो, वह जन्नत में दाख़िल हो जाए। हुज़ूर

सल्ल0 इरशाद फ़रमाते हैं (कि इस ऐलान से) वे लोग जिनका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे होगा जन्नत मं दाख़िल होंगे और इतने और इतने हज़ार खड़े होंगे और जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल होंगे। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 411)

जिसको अल्लाह तआला दुनिया में देखकर हंस दे

हदीसः हज़रत नईम हुमार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सवाल किया कि कौनसा शहीद अफ़ज़ल है, आपने इरशाद फ़रमाया वे हज़रात जिनकी जंग की सफ़ में दुश्मन से मुठभेड़ हो और वे अपने मुँह न मोड़ें यहाँ तक कि क़त्ल कर दिए जाएँ।

जन्नत में बग़ैर हिसाब के जाने वालों की सिफ़तें

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः तीन तरह के लोग जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल होंगेः

1. वह शख़्स जिसने अपना कपड़ा धोया मगर उसको लगाने के लिए उसको ख़ुशबू मयस्सर न रही।
2. वह शख़्स जिसके चूल्हे पर दो हाँडियाँ (एक समय में) कभी न चढ़ी हों।
3. वह शख़्स जिसको पानी की दावत दी गयी मगर उससे यह न पूछा गया कि तुम कौनसा पानी (शरबत, पानी) पसन्द करते हो।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 2 पेज 99)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जिस आदमी ने वीराने में (मुसाफ़िरों वग़ैरह के लिए) कोई कुआँ खोदा अल्लाह तआला की रिज़ा के लिए वह भी बग़ैर हिसाब जन्नत में जाएगा।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 374)

हदीसः हज़रत अली इब्ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब क़यामत का दिन होगा एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा, तुम

अल्लाह तआला के ज़िक्र से कोई ख़रीद-फ़रोख़्त ग़ाफ़िल नहीं करती थी, चुनाँचे उनको भी जन्नत की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 375)

फ़ायदाः यह भी रिवायत कि जब क़यामत का दिन होगा मुनादी आवाज़ लगाएगा, मेरे वे बन्दे कहाँ हैं जिन्होंने मेरी फ़रमाँबरदारी की थी और ग़ायबाना तौर पर मेरे अहद की हिफ़ाज़त करते थे। वे लोग खड़े हो जाएँगे। उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह या ख़ूब चमकदार सितारे की तरह (रोशन) होंगे। ये नूर की सवारियों पर सवार होंगे जिनकी निगाहें सुर्ख़ याक़ूत की होंगी, जो उनको लेकर तमाम मख़्लूक़ात के सामने उड़ते फिरेंगे यहाँ तक कि अर्शे इलाही के सामने जाकर ठहर जाएँगे, उनको अल्लाह तआला फ़रमाएँगे सलाम हो मेरे उन बन्दों पर जिन्होंने मेरी इताअत की और ग़ायबाना तौर पर मेरे अहद की हिफ़ाज़त की। मैंने तुमको अपना मक़बूल बना लिया। मैंने तुमसे मुहब्बत की और मैंने तुमको पसन्द किया, चले जाओ जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जाओ। तुम पर आज कोई ख़ौफ़ नहीं और न तुम ग़मगीन होगे। वह पुलसिरात से उचक लेने वाली (तेज़) बिजली की तरह गुज़र जाएँगे। फिर उनके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे।

उसके बाद बाक़ी मख़्लूक़ात मैदाने हश्र में पड़ी हुई होंगी उनमें से बाज़ बाज़ से कहेगा ऐ क़ौम! फ़लाँ-फ़लाँ है? जिस वक़्त वे एक-दूसरे से पूछ रहे होंगे, तो एक मुनादी आवाज़ लगाएगाः

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 375)

इल्मी लतीफ़ाः जन्नत में बग़ैर हिसाब के जाने वालों की तायदाद के बारे में जितनी रिवायतें हदीस की किताबों में आई हैं उनको इमाम इब्ने कसीर ने 'निहाया फ़िल्-फ़ितन वल्-मलाहिम' जिल्द दोम में पेज 253 से 260 तक बड़ी तफ़सील से जमा फ़रमाया है। जिन हज़रात को जाना हो असल किताब की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ इस उनवान की हमने अल्हम्दु लिल्लाह इतनी हदीसें जमा कर दी हैं कि किसी हदीस की किताब में इतनी तफ़सील के साथ जमा नहीं मिलेंगी।

सबसे पहले जन्नत में जाने वाले हुज़ूर सल्ल0 और आपकी उम्मत

सबसे पहले जन्नत में जाएँगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हम आख़िरी उम्मत हैं (लेकिन) क़यामत के दिन (हम) सब से पहले (क़ब्रों से) उठेंगे और हम ही सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। बस इतनी बात है कि इन (यहूद और ईसाइयों को) हम से पहले किताब (तौरात, ज़बूर और इन्जील) अता की गयी और हमें उनके बाद (क़ुरआन पाक) अता किया गया। पस उन्होंने (हमसे क़ुरआन के हक़ होने में) इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) किया। पस जिस चीज़ के हक़ होने में उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, अल्लाह तआला ने (उसमें) हमें हिदायत अता फ़रमाई (और अब इस्लाम आने के बाद वे मुसलमान न होने की वजह से गुमराही में रहकर दोज़ख़ को जाएँगे)। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 255)

सबसे पहले अम्बिया जाएँगे फिर आप सल्ल0 की उम्मत

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अनहु जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से रिवायत हैं:

तर्जुमाः जन्नत तमाम अम्बिया पर हराम है जब तक मैं उसमें दाख़िल न हो जाऊँ। (यानी पहले मैं दाख़िल होऊँगा फिर तमाम इम्बिया अलैहिस्सलाम)। और (जन्नत) तमाम उम्मतों पर हराम है यहाँ तक कि मेरी उम्मत उसमें दाख़िल हो जाए (उसके बाद दूसरी उम्मतें जन्नत में जाएँगी)।

फ़ायदाः यह उम्मत बाक़ी उम्मतों से पहले ज़मीन से बाहर आएगी और महशर में सबसे आला मुक़ाम इसको दिया जायेगा। और सबसे पहले अर्श के साये में पहुँचेगी और सबसे पहले उनका हिसाब व किताब होगा, और सबसे पहले पुलसिरात को पार करेगी और सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होगी। पस जन्नत सब अम्बिया-ए-किराम पर हराम है

में से फ़ज़ीलत वाले कौन हैं? इनसानों में से कुछ लोग खड़े होंगे। उनसे कहा जाएगा जन्नत की तरफ़ चलो। फिर उनकी मुलाक़ात फ़रिश्तों से होगी, वे पूछेंगे हिसाब से पहले? वे कहेंगे हाँ! वे पूछेंगे कौन हो कहेंगे हम फ़ज़ीलत वाले हैं। फ़रिश्ते कहेंगे तुम्हारी कौनसी फ़ज़ीलत है? वे जवाब देंगे जब हमारे साथ जहालत का बर्ताव किया जाता था तो हम बुर्दबारी से काम लेते थे। जब हम पर ज़ुल्म किया जाता था तो हम सब्र करते थे। जब हमारे साथ कोई बुराई की जाती थी तो हम माफ़ कर देते थे। फ़रिश्ते कहेंगे तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, नेक अमल करने वालों के लिए बेहतरीन अज्र है।

फिर एक मुनादी (आवाज़ लगाने वाला) आवाज़ लगाएगा सब्र वाले खड़े हो जाएँ। इनसानों में से कुछ लोग खड़े होंगे। ये बहुत कम होंगे। उनको हुक्म होगा जन्नत की तरफ़ चले जाओ। उनको भी फ़रिश्ते मिलेंगे और उनसे ऐसे ही कहा जाएगा तो वे कहेंगे हम सब्र वाले हैं। वे पूछेंगे तुम्हारा सब्र क्या था? वे कहेंगे हमने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में अपने नफ़्सों को (उनकी ख़्वाहिशों से) रोका और हमने अल्लाह की नाफ़रमानियों से उसको बाज़ रखा। वे फ़रिश्ते कहेंगे तुम भी जन्नत में दाख़िल हो जाओ, नेक अमल करने वालों के लिए बेहतरीन अज्र है।

हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि फिर एक मुनादी आवाज़ लगाएगा। अब अल्लाह के पड़ोसी खड़े होंगे उनको भी हुक्म होगा जन्नत की तरफ़ चले जाओ। उनसे भी फ़रिश्ते मिलेंगे और उनको भी वैसे ही कहा जाएगा। ये कहेंगे तुम किस अमल से अल्लाह तआला के इस घर में पड़ोसी बन गए? वे कहेंगे कि हम सिर्फ़ अल्लाह तआला की मुहब्बत में एक-दूसरे (मुसलमानों) की ज़ियारत करते थे और अल्लाह ही की ख़ातिर आपस में मिलकर बैठते थे, और अल्लाह ही के लिए हम एक-दूसरे पर ख़र्च करते थे। फ़रिश्ते कहेंगे तुम भी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। नेक अमल करने वालों के लिए बेहतरीन अज्र है।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 374)

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

जब अल्लाह तआला पहले और पिछले (इनसानों और जिन्नात) को एक मैदान में जमा करेंगे तो एक मुनादी (आवाज़ लगाने वाला) अर्श के नीचे से आवाज़ लगाएगा, अल्लाह की मारिफ़त रखने वाले (यानी अल्लाह को पहचानने वाले) कहाँ हैं? मोहसिन कहाँ हैं? (जो इबादत करते वक़्त मानों कि ख़ुदा को देखते थे या यह यक़ीन करते थे कि अल्लह हमें देख रहा है)। फ़रमाया कि लोगों में से एक जमाअत उठेगी और अल्लाह तआला के सामने खड़ी हो जाएगी। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे हालाँकि वह उसको ख़ूब जानते होंगे, तुम कौन हो? वे अर्ज़ करेंगे हम मारिफ़त वाले हैं आपके साथ हमने आपको पहचाना था, और आपने हमें इसके लायक़ बनाया था। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुमने सच कहा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुम पर कोई सज़ा और तकलीफ़ नहीं, तुम मेरी रहमत के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

फिर जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 मुस्कुरा पड़े और फ़रमाया अल्लाह तआला इन हज़रात को क़यामत के दिन के डर से नजात अता फ़रमाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 507)

हदीस हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं:

जब क़यामत का दिन होगा एक मुनादी आवाज़ लगाएगा तुम अभी जान लोगे बड़ाई और शान वाले कौन हैं? हर हाल में अल्लाह तआला की तारीफ़ व प्रशंसा करने वाले खड़े हो जाएँ। वे खड़े हो जाएँगे और उनको जन्नत की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा। फिर दूसरी बार आवाज़ लगाई जाएगी तुम आज जल्द ही जान लोगे कि बड़ाई और शान वाले कौन हैं। वे लोग खड़े हो जाएँ जिनके पहलू (रात के वक़्त) अपने बिस्तरों से (इबादत के लिए) अलग रहते थे, जो अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारा करते थे, और जो कुछ हमने उनको रिज़्क़ दिया था उससे ख़र्च करते थे (ज़कात और सदक़ात की शक्ल में)। चुनाँचे ये हज़रात खड़े होंगे और उनको भी जन्नत की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा। फिर तीसरी बार आवाज़ लगाई जाएगी तुम अभी जान लोगे कि बड़ाई और शान वाले कौन लोग हैं। अब वे लोग खड़े हो जाएँ जिनको

जब तक हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उसमें दाख़िल न हों, और सब उम्मतों पर हराम है जब तक कि हुज़ूर सल्ल0 की उम्मत उसमें दाख़िल न हो। (हादिल अरवाह पेज 153)

अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ पहले जन्नत में जाएँगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए थे और मेरा हाथ पकड़ कर जन्नत का वह दरवाज़ा दिखलाया जिससे मेरी उम्मत दाख़िल होगी। हज़रत अबू बक्र (सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं पसन्द करता हूँ कि मैं भी आपके साथ होता, यहाँ तक कि मैं भी उस दरवाज़े को देख लेता तो सरकारे दो आलम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः सुन लो ऐ अबू बक्र! मेरी उम्मत में सबसे पहले आप जन्नत में जाएँगे। (मुस्नद अबू दाऊद हदीस 4652)

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का जन्नत में आगे बढ़ना और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का महल

हदीसः हज़रत बरीदा बिन हसीब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सुबह के वक़्त हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया ऐ बिलाल! तुम मुझसे जन्नत में कैसे आगे निकल गए। जब मैं जन्नत में दाख़िल हुआ आपने सामने से तुम्हारे चलने की आवाज़ सुनता हूँ (चुनाँचे) मैं पिछली रात भी (जन्नत में) गया तो फिर अपने सामने से तुम्हारे चलने की आवाज़ सुनी। फिर मैं एक चौकोर महल पर आया जो सोने का बना हुआ था मैंने पूछा यह महल किसका है? उन्होंने बताया यह एक अरबी शख़्स का है। मैंने कहा मैं भी तो अरबी हूँ। यह महल किसका है? उन्होंने कहा यह कुरैश के आदमी का है। मैंने कहा मैं भी तो कुरैशी हूँ। यह महल किसका है? उन्होंने कहा उम्मते मुहम्मद के एक शख़्स का है। मैंने कहा मैं मुहम्मद हूँ

यह महल किसका है? उन्होंने कहा उमर बिन ख़ताब अन्हु का है। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैंने जब भी अज़ान दी है दो रकअतें अदा की है और जब भी वुज़ू टूटा है उसी वक़्त वुज़ू किया है और मैंने तय कर लिया है कि अल्लाह तआला के नाम की दो रकअतें मेरे ज़िम्मे हैं। हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया (यह तुम्हारा आगे-आगे चलना) इन रकअतों की वजह से है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3689)

फ़ायदाः इस हदीस का यह मतलब नहीं कि हज़रत बिलाल रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से पहले जन्नत में जाएँगे बल्कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल0 के आगे-आगे बतौर दरबान और ख़ादिम के चलेंगे। (हादिल अरवाह पेज 158)

जैसा कि एक हदीस में है कि जब हुज़ूर सल्ल0 को क़यामत के दिन आपके रौज़ा-ए-मुबारक से उठाया जाएगा तो हज़रत बिलाल आपके सामने अज़ान देते हुए चलेंगे। (हादिल अरवाह पेज 158)

उम्मते मुहम्मदिया में से सबसे पहले जन्नत में जाने वाले सबसे पहले जाने वाले ग्रूप की सिफ़तें

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहले जो जमाअत जन्नत में दाख़िल होगी उनकी सूरते चौदहवीं रात के चाँद की सूरत जैसी होंगी। ये न तो जन्नत में थूकेंगे न नाक बहेगी और न ही उसमें पाख़ाना करेंगे (यानी इन तीनों ऐबों से पाक होंगे।) उनके बरतन और कंघियाँ सोने और चाँदी की होंगी, उनकी अंगीठियाँ अगर की लकड़ी की होंगी, उनका पसीना कस्तूरी का होगा। उनमें से हर एक के लिए दो बीवियाँ ऐसी होंगी जिनकी पिण्डली का गूदा उनके हुस्न की वजह से गोश्त के अन्दर से नजर आएगा। उनके दरमियान कोई इख़्तिलाफ़ (मनमुटाव) नहीं होगा और न आपस में कोई बुग़्ज़ होगा। उनके दिल एक दिल (की तरह) होंगे, ये सुबह शाम अल्लाह तआला की तस्बीह करेंगे।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3245)

पहले और दूसरे दर्जे के जाने वाले जन्नतियों की सिफ़तें

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उनकी सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी, और वे लोग जो उनके बाद (जन्नत में) जाएँगे उनकी सूरत किसी चमक-दमक आसमान में तेज़ रोशन सितारे की तरह होगी। ये जन्नती न पेशाब करेंगे न पाख़ाना न थूक न रेंट, उनकी कंघियाँ सोने की होंगी, उनका पसीना कस्तूरी का होगा, उनकी अंगीठियाँ अगर की होंगी, उनकी बीवियाँ 'हूरे-ऐन' होंगी। उनके अख़्लाक़ एक ही आदमी के अख़्लाक़ (जैसे) होंगे। उनकी सूरत अपने अब्बा हज़रत आदम की सूरत पर होगी, लम्बाई में साठ हाथ का क़द होगा। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3327)

दाख़िले के लिए सबसे पहले किन हज़रात को पुकारा जाएगा

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहले जिनको जन्नत की तरफ़ बुलाया जाएगा वह "हम्मादून" होंगे, जो (दुनिया में) ख़ुशी और तकलीफ़ में अल्लाह तआला की तारीफ़ व प्रशंसा करते थे। (तबरानी सग़ीर जिल्द 1 पेज 103)

सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले तीन क़िस्म के हज़रात

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे सामने मेरी उम्मत के उन तीन क़िस्म के लोगों को पेश किया गया जो सबसे पहले जन्नत में जाएँगे। और उन तीन क़िस्म के

लोगों को पेश किया गया जो सबसे पहले दोज़ख़ में जाएँगे। पस वे पहले तीन जो जन्नत में जाएँगेः

1. शहीद।
2. वह ममलूक गुलाम जिसको दुनिया की गुलामी ने उसके परवर्दिगार की इबादत ने नहीं रोका।
3. बाल-बच्चे वाला वह ग़रीब आदमी जिसने अपनी गुरबत के बावजूद किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया।

और वे तीन क़िस्म के लोग जो सबसे पहले दोज़ख़ में जाएँगेः

1. अमीर ज़बरदस्ती से मुसल्लत हो जाने वाला।
2. दौलतमन्द जो अपने माल में से अल्लाह का हक़ अदा न करे।
3. डींगें मारने वाला घमण्डी तंगदस्त फ़क़ीर।

(मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 425)

कौनसे गुलाम जन्नत में पहले जाएँगे

हदीसः हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जन्नत में कोई बख़ील दाख़िल नहीं होगा और न कोई धोखेबाज (जो फ़साद फैलाता हो) न कोई ख़ियानत करने वाला, और न वह शख़्स जो अपने गुलामों के साथ बुरा सुलूक़ करता हो। और अम्बिया और आला दर्जे के औलिया सिद्दीक़ीन के बाद जो लोग जन्नत का दरवाज़ा खटखटाएँगे वे दो गुलाम होंगे जिन्होंने अपने और अल्लाह तआला के दरमियान के हुक़ूक़ को अपने और अपने मालिकों के दरमियान के हुक़ूक़ को बेहतरीन तरीक़े से निभाया होगा।

सबसे पहले उम्मते मुहम्मदिया जन्नत में दाख़िल होगी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हम अख़ीर में आने वाले हैं, क़यामत में सबसे पहले (क़ब्रों से) उठाए जाएँगे और सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।

(मुस्लिम शरीफ़ हदीस 855)

नोटः यानी हुज़ूर की उम्मत तमाम उम्मतों के बाद आयी है और सब उम्मतों से पहले हुज़ूर सल्ल0 की उम्मत को ही क़ब्रों से उठाया जाएगा और सबसे पहले आपकी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी।

ग़रीब मुहाजिरीन की फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत और जन्नत में पहले दाख़िल होना

हदीसः क्या तुम्हें मालूम है जन्नत में सबसे पहले कौन दाख़िल होगा? सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ख़ूब जानते हैं। फ़रमाया मुहाजिरीन में वे फ़क़ीर (तंगदस्त) हज़रात जो गर्मी सर्दी वग़ैरह के मुश्किल वक़्तों में शरीअत के मुश्किल आमाल को अच्छे ढंग से अदा करते हैं। उनमें से जब कोई मर जाता है तो उसकी ज़रूरत उसके सीने में बाक़ी रहती है, उसके पूरा करने की उसमे हिम्मत नहीं होती।

फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! हम आपके फ़रिश्ते हैं (आपके) कामों के मुहाफ़िज़ और ज़िम्मेदार हैं, आपके आसमानों के रहने वाले हैं, आप इनको हमसे पहले जन्नत में दाख़िल न फ़रमाइए। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ये मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने मेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया और कठिन समय में शरीअत पर चलना नहीं छोड़ा। जब उनमें से कोई मरता था तो उसकी ज़रूरत उसके सीने में बाक़ी रहती थी जिसके पूरा करने की उसमे ताक़त नहीं थी। पस उस वक़्त हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते हाज़िर होंगे (और यह कहेंगे) तुम पर सलाम हो तुम्हारे सब्र करने की वजह से, पस आख़िरत का घर कितना अच्छा है (जिसमें तुम्हारी तमाम ख़्वाहिशें पूरी होंगी)। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 168)

ग़रीब अमीरों से पाँच सौ साल पहले जन्नत में जाएँगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ग़रीब और मोहताज मुसलमान दौलतमन्द मुसलमानों से (क़यामत का) आधा दिन जो पाँच सौ साल के बराबर होगा, जन्नत में

पहले जाएँगे। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 343)

जन्नत में आधा दिन पहले जाने की कितनी मुद्दत है

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना, आपने इरशाद फ़रमायाः गरीब मुसलमान दौलतमन्दों से आधे दिन जन्नत में पहले जाएँगे। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! आधा दिन कितना है? फ़रमाया पाँच सौ साल। अर्ज़ किया गया कि उसके साल के कितने महीने है? फ़रमाया पाँच सौ महीने। अर्ज़ किया गया उस महीने के कितने दिन है? फ़रमाया पाँच सौ दिन। अर्ज़ किया गया फिर एक दिन कितना लम्बा है? फ़रमाया पाँच सौ दिनों के बराबर जिनको तुम गिनते हो। (उयूनुल अख़्बार अल्लामा अतबी)

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ग़रीब मुहाजिरीन क़यामत के दिन (जन्नत में) दौलतमन्दों से चालीस साल पहले दाख़िल होंगे। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2979)

फ़ायदाः ग़रीबो के जन्नत में पाँच सौ साल पहले दाख़िल होने का मतलब यह है कि अव्वल दर्जे के ग़रीब पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। और यह हदीस जिसमें चालीस साल पहले दाख़िल होने का ज़िक्र है यह शायद आख़िरी दर्जे के ग़रीबों के एतिबार से है, कि कम-दर्जे के ग़रीब दौलतमन्दों से चालीस साल पहले जन्नत में जाएँगे। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर पेज 193)

ग़रीब से पीछे रह जाने वाले जन्नती की बेचैनी की हालत

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः दो तरह के मोमिन जन्नत के दरवाज़े पर मिलेंगे, एक मोमिन दुनिया में ग़रीब होगा दूसरा दौलतमन्द। चुनाँचे ग़रीब को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और दौलतमन्द को जब तक अल्लाह तआला रोकना चाहेंगे रोका जाएगा। फिर उसको जन्नत में दाख़िल

किया जाएगा।

जब ग़रीब की उससे मुलाक़ात होगी तो वह पूछेगा ऐ भाई! तुम्हें किस चीज़ ने रोक लिया था? अल्लाह की क़सम! जब तू रोका गया तो मैं तेरे मुताल्लिक़ ख़ौफ़ज़दा हो गया था (कि तुझे दोज़ख़ में तो दाख़िल नहीं कर दिया गया)। वह बताएगा कि ऐ भाई! मैं तेरे (जन्नत में चले जाने के) बाद दुख दर्द और घबराहट के साथ (जन्नत के बाहर) रोक लिया गया था और तुम तक नहीं पहुँच सका था, और मेरा पसीना इतना बहा कि अगर उसपर एक हज़ार नमकीन और तल्ख़ पौधे खाने वाले ऊँट जमा हो जाएँ तो उससे सेर होकर वापस जाएँ।

(मुसनद अहमद जिल्द 1 पेज 304)

ग़रीब मुसलमानों का फ़रिश्तों से सवाल-जवाब

हदीसः हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक शख़्स जनाब रसूले अकरम सल्ल० की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे बतलाएँ क़यामत के दिन अल्लाह तआला के हम-नशीन (पास बैठने वाले) कौन होंगे? इरशाद फ़रमाया अल्लाह से डरने वाले और आजिज़ी व इन्किसारी करने वाले, जो अल्लाह तआला को बहुत याद करते हैं। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या यही लोग जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होंगे? फ़रमाया नहीं! उसने अर्ज़ किया तो फिर सबसे पहले लोगों में से कौन जन्नत में दाख़िल होगा? इरशाद फ़रमाया लोगों में से सबसे पहले ग़रीब मुसलमान जन्नत में दाख़िल होंगे। जन्नत से उनके पास कुछ फ़रिश्ते आएँगे और कहेंगे तुम हिसाब-किताब की तरफ़ चलो। वे कहेंगे हम किस चीज़ का हिसाब दें? अल्लाह की क़सम! दुनिया के माल व दौलत से हमें कुछ भी नसीब नहीं हुआ जिसमें हम बुख़्ल करते या फ़ुज़ूल-ख़र्चियाँ करते, और न ही हम हाकिम थे कि इन्साफ़ करते और ज़ुल्म करते। हमारे पास तो अल्लाह तआला का दीन आया था, हम उसकी इबादत में मश्ग़ूल रहे यहाँ तक कि मौत आ गई। उनसे कहा जाएगा तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, नेक अमल करने वालों के लिए बेहतरीन अज्र है।

ग़रीब जन्नत की नेमतों में, अमीर हिसाब की गर्दिश में

हदीसः जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम ग़रीबों के हक़ में अल्लाह तआला से डरो, क्योंकि क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मेरी मख़्लूक़ में से मेरे सच्चे दोस्त कहाँ हैं? फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! वे कौन लोग हैं? अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे वे ग़रीब और मोहताज जो (मुसीबतों और तंगदस्ती में) सब्र करते थे, मेरी तक़दीर पर राज़ी रहते थे। उनको जन्नत में दाख़िल कर दो। हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि उनको जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। वह (जन्नत में ऐश से) खाते-पीते होंगे। जबकि अमीर लोग हिसाब-किताब की गर्दिश में होंगें

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 469)

ग़रीब कौन है और मालदार कौन

हज़रत अबू अली दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि से सवाल किया गया कि इन दो हालतों में से कौनसी हालत अफ़ज़ल है, ग़रीब होना या मालदार होना? आपने फ़रमाया मालदारी अफ़ज़ल है, क्योंकि यह अल्लाह तआला की सिफ़त है, और फ़क्र (मोहताजी व तंगदस्ती) मख़्लूक़ की सिफ़त है, और अल्लाह की सिफ़त अफ़ज़ल है मख़्लूक़ की सिफ़त से। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः लोगो! तुम ख़ुदा के मोहताज हो, और अल्लाह तआला बेनियाज़ (और तमाम ख़ूबियों वाला) है। (सूरः फ़ातिर आयत 15)

दर-असल ग़रीब वह शख़्स है चाहे उसके पास माल हो मगर वह अल्लाह का 'अब्द' (बन्दगी करने वाला) हो, वह उस वक़्त ग़नी हो जाएगा जब वह अपनी तमाम ज़रूरतों का अल्लाह तआला से तलबगार होगा। अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ़ नज़र न करेगा अगरचे उसका दुनिया की किसी चीज़ की तरफ़ ख़्याल हो, और अपने को उसका ज़रूरतमन्द समझे, लेकिन वह फिर भी अल्लाह का बन्दा ही रहे।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 471)

ग़रीबों का सवाब जन्नत है

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब तुम क़यामत के दिन जमा होगे तो कहा जाएगा, इस उम्मत के फ़क़ीर और मिस्कीन (यानी ग़रीब) कहाँ हैं? हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि ये खड़े हो जाएँगे। उनसे पूछा जाएगा, तुमने क्या अमल किए? वे अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! हम पर आज़माइशें डाली गईं तो हमने सब्र किया और आपने माल व दौलत और सलतनत दूसरों को अता की थी, (हमको नहीं)। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुमने ठीक कहा।

आप सल्ल0 इरशाद फ़रमाते हैं कि फिर ये लोग दूसरे लोगों से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे, जबकि मालदारों और हुकूमत वालों (हाकिमों) पर हिसाब-किताब की सख़्ती बदस्तूर क़ायम होगी।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया उस दिन मोमिन हज़रात कहाँ होंगे? आपने इरशाद फ़रमाया उनके लिए नूर की कुर्सियाँ बिछायी जाएँगी और उन पर बादल साया करते होंगे। मोमिनों के लिए यह रोज़ दिन की एक घड़ी से भी बहुत कम (महसूस) होगा।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 391)

सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा ख़टखटाने वाले

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा मैं खटखटाऊँगा। जन्नत का दारोगा कहेगा आप कौन हैं? मैं कहूँगा मैं मुहम्मद हूँ। वह कहेगा आप ठहरें मैं आपके लिए अभी खोलता हूँ। मैं आपसे पहले किसी के लिए नहीं उठा और न ही आपके बाद किसी के लिए उठूँगा। एक रिवायत है कि मुझे हुक्म दिया गया है कि आपसे पहले (जन्नत का दरवाज़ा) किसी के लिए न खोलूँ। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3616)

फ़ायदाः यह फ़रिश्ता नबी करीम सल्ल0 के ख़ास मुक़ाम व मर्तबे

की वजह से जन्नत के दरवाज़े पर मुतैयन किया गया है जो आप सल्ल0 के बाद और किसी नबी और वली के इस्तिक़बाल और दरवाज़ा खोलने के लिए नहीं उठेगा बल्कि जन्नत का इन्तिज़ाम करने वाले तमाम फ़रिश्ते आपके सम्मान में खड़े होंगे और यह फ़रिश्ता गोया जन्नत के बाक़ी दारोग़ाओं का बादशाह है जिसको अल्लाह तआला अपने बन्दे और रसूल की ख़िदमत में खड़ा करेंगे और या ख़ुद आप सल्ल0 की ख़िदमत में चलकर आपके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलेगा।

(हादिल अरवाह पेज 150)

हुज़ूर सल्ल0 की शान व बड़ाई

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जनाब नबी करीम सल्ल0 के कुछ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्ल0 के इन्तिज़ार में बैठ गए। आप जब तशरीफ़ लाए और उनके क़रीब पहुँचे तो उनको बातचीत करते हुए सुना। जब आपने उनकी बातचीत सुनी तो उनमें से एक कह रहा था कितनी अजीब बात है, अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सच्चा पक्का दोस्त बनाया है।

दूसरे सहाबी ने कहा, यह बात अल्लाह तआला के कलीम (यानी कलाम करने वाले) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा अजीब नहीं, अल्लाह तआला ने उनसे कलाम फ़रमाया है। एक और सहाबी ने फ़रमाया, हज़रत ईसा को देखिए वह अल्लाह के कलिमे और उसकी तरफ़ से रूह हैं। एक और सहाबी ने फ़रमाया, हज़रत आदम वह हैं जिनको अल्लाह तआला ने चुना है।

फिर हुज़ूर सल्ल0 इन (सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम) के पास तशरीफ़ लाए, सलाम किया और फ़रमाया, मैंने तुम्हारी बातचीत और तुम्हारा ताज्जुब सुना है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के दोस्त हैं, वाक़ई ऐसा ही है। मूसा अल्लाह के साथ सरगोशी करने वाले हैं, वाक़ई ऐसा ही है। ईसा उसकी तरफ़ से रूह और उसका कलिमा (बिन बाप के अल्लाह के हुक्म से पैदा हुए) हैं, वाक़ई ऐसा ही है। और आदम वह हैं

जिनको अल्लाह तआला ने चुन लिया, वह ऐसे ही हैं। सुन लो! मैं अल्लाह का हबीब (चाहने वाला और चाहा जाने वाला) हूँ। और मैं कोई फ़ख़्र (गर्व) नहीं कर रहा, मैं ही कयामत के दिन "लिवाउल्-हम्द" (हम्द के झण्डे) को उठाऊँगा। मैं इसमें भी कोई फ़ख़्र (गर्व) नहीं कर रहा। मैं सबसे पहले कयामत के दिन शफ़ाअत करूँगा और सबसे पहले मेरी शफ़ाअत कुबूल की जाएगी, और मैं यह भी फ़ख़्र (गर्व) और तकब्बुर की बात नहीं कर रहा, और मैं ही सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा खटखटाऊँगा। वह मेरे लिए खोला जाएगा, और मैं जन्नत में दाख़िल होऊँगा, और मेरे साथ (जन्नत में दाख़िल होते वक़्त) फ़क़ीर मोमिनीन (ग़रीब मुसलमान) होंगे, और इसमें भी मैं फ़ख़्र (गर्व) नहीं करता। और मैं अगलों और पिछलों (सब मख़्लूक़ात) से ज़्यादा शान व मर्तबे का मालिक हूँ और इसमें भी फ़ख़्र (गर्व) और तकब्बुर नहीं कर रहा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3616)

बेवा का अपने बच्चों की परवरिश करने का मर्तबा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि जनाब रसूलुल्लाहु सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहले जिसके लिए दरवाज़ा खोला जाएगा वह मैं हूँ। मगर एक औरत मुझसे पहले दाख़िल होना चाहेगी तो मैं उससे कहूँगा तुझे क्या है? तू कौन है? वह कहेगी मैं वह (बेवा) औरत हूँ जो अपने यतीम बच्चों (की परवरिश) के लिए रुकी रही थी (और शादी नहीं की थी)। (हादिल अरवाह पेज 150)

हदीसः हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाहु सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं और वह औरत जिसका रंग (औलाद की परवरिश में मेहनत करने से) काला पड़ गया हो, जन्नत में इस तरह (इकट्ठे) होंगे (यानी उसको भी जन्नत में पहले दाख़िल किया जाएगा और आला दर्जे से नवाज़ा जायेगा।) यह वह औरत है जो शौहर से अलग हो गयी (मौत की वजह से या किसी मुसीबत की वजह से), फिर उसने अपने यतीम

बच्चों के लिए अपने आपको (दूसरी शादी करने से) रोका, यहाँ तक कि वे बच्चे उस (की परवरिश) के मोहताज न रहे, या मर गए।

(मुसनद अहमद जिल्द 5 पेज 29)

अकसर जन्नती कौन होंगे

ग़रीब, मिस्कीन

हदीसः हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा होऊँगा, उससे अक्सर तौर पर गुज़रने वाले जो लोग होंगे वे फ़क़ीर (मोहताज) और मिस्कीन होंगे।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 5196)

कमज़ोर, बूढ़े और मज़लूम

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं आप हज़रात को जन्नत वालों के बारे में न बताऊँ (कि वे कौन लोग होंगे)? सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं या रसूलुल्लाह! (ज़रूर बताएँ)। आपने इरशाद फ़रमायाः ज़ईफ़ (कमज़ोर-बूढ़े) मज़लूम लोग हैं।(मुसनद अहमद ज़िल्द 2 पेज 369)

फ़ायदाः ऐसे लोग जन्नत में कसरत से होंगे शुरू दाख़िले के वक़्त ज़ालिम और गुनाहगार लोग जब दोज़ख़ से सज़ा काटकर जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे उस वक़्त भी उनकी तायदाद ज़्यादा होगी क्योंकि ये लोग ताक़तवरों और अमीरों के मुक़ाबले में ज़्यादा मुसलमान होते हैं। अमीर थोड़े मुसलमान होते हैं, यानी मुसलमानों की कसरत ग़रीबों में पाई जाती है, और इस्लाम पर अमल भी ज़्यादा ग़रीब मुसलमान ही करते हैं।

आजिज़ी करने वाले ज़ईफ़

हदीसः हज़रत हारिस बिन वहब रमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क्या मैं तुम्हें जन्नत में जाने वालों (की पहचान) का न बताऊँ? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! आपने इरशाद फ़रमाया: हर ज़ईफ़, आजिज़ी करने वाले अगर यह अल्लाह तआला पर (किसी काम में करने की) क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआला उनकी क़सम को पूरा कर दें। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2853)

अल्लाह पर तवक्कुल करने वाले और उससे डरने वाले

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में बहुत-सी जमाअतें ऐसी दाख़िल होंगी जिनके दिल परिन्दों के दिलों की तरह होंगे। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2840)

फ़ायदाः अल्लामा नववी ने इस हदीस की तशरीह (व्याख्या) में फ़रमाया है कि ये लोग (दुनिया में खाने-पीने के एतिबार से) दुबले पेट वाले होंगे। या यह मतलब है कि उन हज़रात पर अल्लाह तआला का ख़ौफ़ इस तरह से छाया होगा जिस तरह से सब जानदारों में परिन्दा सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ खाने वाला होता है। इसी के बारे में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला से उसके बन्दों में से आलिम ही ख़ूब डरते हैं। (सूरः फ़ातिर आयत 28)

इसी वजह से बहुत-से बुज़ुर्ग अल्लाह तआला से बहुत ज़्यादा में डरते थे। और मज़कूरा हदीस के एक मायने यह भी लिये गये हैं कि इससे अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) करने वाले हज़रात मुराद हैं। (नववी शरह मुस्लिम हदीस 2840)

भोले-भाले हज़रात

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में अकसर जाने वाले सादा-लोह (भोले-भाले) हज़रात होंगे। (जामिउल उसूल जिल्द 10 पेज 536)

जन्नत में जाने वाले दोज़ख़ी

दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किये जाने वालों के हालात

ग्यारह गुना दुनिया के बराबर जन्नत

हदीसः हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः दोज़ख़ियों में से उस आख़िरी निकलने वाले को और आख़िर में जन्नत वालों में शमिल होने वालों में मैं उस आदमी को जानता हूँ जो दोज़ख़ से सुरीन (चूतड़ों) के बल घिसट कर निकलेगा। अल्लाह फ़रमाएँगेः जा जन्नत में दाख़िल हो जा जब वह उसके पास पहुँचेगा तो उसके ख़्याल में यह डाला जाएगा कि वह भरी हुई है। चुनाँचे वह लौटकर अर्ज़ करेगा या रब! वह तो मुझे सबसे भरी हुई नज़र आ रही है अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे जा जन्नत में दाख़िल हो जा, तुझे दुनिया के बराबर और उससे अधिक दस गुना जन्नत दी जाती है।

वह अर्ज़ करेगा आप 'मालिकुल मुल्क' होकर मुझसे मज़ाक़ कर रहे हैं, (हालाँकि यह मज़ाक़ नहीं होगा बल्कि हक़ीक़त होगी। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि) मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 को देखा कि आप इतना हंसे कि आपकी डाढ़े मुबारक नज़र आने लगीं। कहा जाता था कि यह शख़्स जन्नत वालों में सबसे कम दर्जे पर पहुँचने वाला होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1642)

फ़ायदाः इस हदीस से मालूम होता है कि इस अदना जन्नती और आख़िर में जन्नत में दाख़िल होने वाले को दुनिया के ग्यारह गुना के बराबर जन्नत अता की जाएगी।

आख़िर में जन्नत में दाख़िल होने वाले का वाक़िआ

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होने वाला वह शख़्स होगा जो कभी चलता होगा कभी सुरीन (चूतड़ों) के बल घिसटता होगा

और कभी दोज़ख़ की आग उसको झुलस देती होगी। जब वह दोज़ख़ से निकल जाएगा तो उसको देखकर अर्ज़ करेगा ऐ बारी तआला! आपने मुझे इससे छुटकारा दिला दिया और वह इनायत फ़रमाई है जो न तो अगलों को नसीब हुई न पिछलों को।

फिर उस आदमी के सामने एक पेड़ को ज़ाहिर किया जाएगा तो यह उसको देखकर अर्ज़ करेगा या रब! आप मुझे उस दरख़्त के क़रीब कर दें मैं उसके साए में बैठना चाहता हूँ और उसका पानी पीना चाहता हूँ। अल्लाह तआला पूछेंगे। ऐ आदम के बेटे! अगर मैं तुम्हें यह दे दूँ तो (इसे अलावा) किसी और चीज़ की तलब भी करेगा? वह अर्ज़ करेगा नहीं! या रब! और अल्लाह से मुआहिदा करेगा कि मैं इसके अलावा कोई चीज़ नहीं माँगूँगा, और उसका रब उसके बहाने को क़बूल करता रहेगा क्योंकि वह शख़्स ऐसी चीज़ों को देखेगा जिन पर वह सब्र नहीं कर सकता।

फिर पहले पेड़ से भी ज़्यादा हसीन पेड़ उसको सामने से दिखाया जाएगा तो वह शख़्स कहेगा या रब! मुझे उस पेड़ के क़रीब कर दें ताकि मैं उसका पानी पी सकूँ और उसके साए में बैठ सकूँ। इसके अलावा और कुछ नहीं माँगूँगा। अल्लाह तआला पूछेंगे ऐ आदम के बेटे! तूने मेरे साथ मुआहिदा नहीं किया था कि तू मुझसे इसके अलावा और कुछ नहीं माँगेगा? चुनाँचे अल्लाह तआला उसको उस पेड़ के क़रीब कर देंगे।

जब वह उसके क़रीब पहुँच जाएगा तो जन्नत वालों की आवाज़ें सुनेगा और अर्ज़ करेगा ऐ रब! मुझे आप जन्नत में दाख़िल कर दें। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुझे यह पसन्द है कि मैं तुझे दुनिया और उसके बराबर और अधिक जन्नत अता कर दूँ? वह अर्ज़ करेगा या रब! आप मुझसे मज़ाक़ करते हैं हालाँकि आप रब्बुल-आलमीन हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएगे मैं तुमसे मज़ाक़ नहीं कर रहा बल्कि मैं जो चाहूँ उसके (करने) की ताक़त रखता हू। (मुसनद अहमद जिल्द 1 पेज 410)

जन्नत में दाख़िल होने वाले एक और दोज़ख़ी का वाक़िआ

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैं कि जनाब

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक शख़्स दोज़ख़ में एक हज़ार साल तक "या हन्नानु या मन्नानु" पुकारेगा, अल्लाह तआला हज़रत जिब्राईल से फ़रमाएँगे जाओ मेरे उस बन्दे को मेरे पास लेकर आओ। हज़रत जिब्राईल रवाना होंगे और दोज़ख़ियों को उलटे मुँह गिरे हुए रोते हुए पाएँगे और वापस आकर अपने परवर्दिगार को इसकी ख़बर करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुम उसको मेरे पास लेकर जाओ, वह फ़लाँ जगह में मौजूद है। चुनाँचे वह उसको लाकर अपने परवर्दिगार के सामने पेश कर देंगे। अल्लाह तआला पूछेंगे ऐ मेरे बन्दे! तुमने अपने मकान और आरामगाह को कैसा पाया? वह अर्ज़ करेगा या रब! बहुत बुरा मकान और बहुत बुरी जगह है। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मेरे बन्दे को वापस (वहीं दोज़ख़ में) ले जाओ।

वह अर्ज़ करेगा या रब! जब आपने मुझे दोज़ख़ से निकाला था तो मैं इसकी उम्मीद नहीं रखता था कि आप मुझे उसमें (दोबारा) डाल देंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि मेरे बन्दे को छोड़ दो (और जन्नत में दाख़िल कर दो)। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 230)

दोज़ख़ में बिलबिलाने वाले दो शख़्सों का जन्नत में दाख़िला

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो लोग दोज़ख़ में दाख़िल किये जाएँगे उनमें से दो आदमियों की चीख़-पुकार बहुत बढ़ी हुई होगी। अल्लाह तआला हुक्म देंगे, इन दोनों को बाहर निकालो। जब उनको बाहर निकाला जाएगा और अल्लाह तआला पूछेंगे किस वजह से तुम्हारी चीख़-पुकार बहुत सख़्त हो गयी थी? वे अर्ज़ करेंगे कि हमने यह इसलिए किया था ताकि आप हम पर रहम फ़रमाएँगे। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि तुम दोनों पर मेरी रहमत यह है कि तुम वापस चले जाओ और दोज़ख़ में जहाँ पर मौजूद थे वहीं पर अपने आपको गिरा दो। चुनाँचे वे दोनों चल पड़ेंगे। उनमें से एक तो ख़ुद को दोज़ख़ में गिरा देगा और उस पर दोज़ख़ को ठंडक और सलामती कर दिया जाएगा मगर दूसरा शख़्स ख़ुद को नहीं

गिराएगा।

अल्लाह तआला पूछेंगे कि तुम्हें किस बात ने मना किया कि तुमने अपने आप को इस तरह से नहीं गिराया जिस तरह से तेरे साथी ने गिरा दिया है? वह अर्ज़ करेगा या रब! मैं उम्मीद करता हूँ कि आप मुझे दोज़ख़ से निकालने के बाद दोबारा इसमें दाखिल नहीं करेंगे। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे तेरे लिए तेरी उम्मीद के मुताबिक मामला करते हैं। चुनाँचे उन दोनों को अल्लाह तआला की रहमत के साथ जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

आख़िर में दो और शख़्सों के जन्नत में दाख़िल होने की हालत

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आख़िर में जो दो आदमी दोज़ख़ से निकलेंगे उनमें से एक से अल्लाह तआला फ़रमाएँगे "ऐ आदम के बेटे! तुम ने इस (यानी आख़िरत) के लिए क्या तैयारी की थी? तुमने कभी नेक अमल किया था तुमने कभी मुझसे (ख़ैर की) उम्मीद रखी थी?" वह अर्ज़ करेगा या रब! मैंने कुछ नहीं किया सिर्फ़ आपसे नेकी की उम्मीद की थी। हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि उसके सामने एक दरख़्त लाकर क़रीब किया जाएगा तो वह दोज़ख़ी कहेगा या रब! आप मुझे इस पेड़ के नीचे बैठा दें ताकि मैं इसका साया हासिल कर सकूँ इसका फल खा सकूँ और इसका पानी पी सकूँ। और वह मुआहिदा करेगा कि मैं अल्लाह तआला से इसके अलावा कुछ नहीं माँगूँगा तो अल्लाह तआला उसको उस पेड़ के नीचे पहुँचा देंगे।

उसके बाद उसके सामने एक और पेड़ पेश किया जाएगा जो पहले से बहुत ज़्यादा सुन्दर होगा और पानी की बहुत कसरत (अधिकता) होगी। यह अर्ज़ करेगा या रब! आप मुझे इसके नीचे बैठा दें अब मैं कोई और सवाल नहीं करूँगा। उसके साए में पड़ा रहूँगा और उसका पानी पीता रहूँगा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ आदम के बेटे! क्या तूने मेरे

साथ समझौता नहीं किया था कि तू इसके अलावा मुझसे कुछ और नहीं माँगेगा।

फिर अल्लाह तआला उसको उस पेड़ के नीचे जगह दे देंगे। फिर उसके सामने जन्नत के दरवाज़े के सामने एक दरख़्त पेश किया जाएगा जो पहले वाले दोनों दरख़्तों से ज़्यादा सुन्दर और ख़ूबसूरत होगा और बहुत पानी वाला होगा। वह अर्ज़ करेगा या रब! मुझे उसके नीचे पहुँचा दे। अल्लाह तआला उसको उसके पास पहुँचा देंगे। यह उस वक़्त मुआहिदा करेगा कि वह अल्लाह तआला से और कुछ नहीं माँगेगा। फिर जब वह जन्नत वालों की आवाज़ें सुनेगा तो उससे सब्र नहीं हो सकेगा। फिर अर्ज़ करेगा ऐ परवर्दिगार! आप मुझे जन्नत में दाख़िल कर दें।

अब अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि माँग और तमन्ना करता जा, तो वह (उनको भी) माँगता रहेगा और तमन्ना करता रहेगा यहाँ तक कि दुनिया के तीन दिनों के बराबर अर्सा गुज़र जाएगा और अल्लाह तआला उसको उन इनामों के बारे में बताते रहेंगे जिनका उसको इल्म नहीं होगा। चुनाँचे वह माँगता रहेगा और तमन्ना करता रहेगा।

जब वह (माँगकर) फ़ारिग़ होगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुझे वह सब कुछ अता किया जिसका तूने सवाल किया।

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि एक गुना और भी उसको दिया किया जाएगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि उसको (उसके माँगने के हिसाब से) दस गुना और ज़्यादा अता किया जाएगा। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 70 - 74)

आख़िर में दोज़ख़ से निकलने वाले एक दोज़ख़ी का अजीब क़िस्सा

हदीसः हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे आख़िर में जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा वह वह होगा जो अपनी पीठ को पुलसिरात पर उस बच्चे के पेट रगड़ने की तरह उलट-पुलट रहा होगा जिसको उसका बाप मार रहा होता है और

वह उससे भागना चाहता है मगर भागने का तरीक़ा नहीं जानता। वह अर्ज़ करेगा या रब! मुझे जन्नत में पहुँचा दे और दोज़ख़ से नजात दे दे।

अल्लाह तआला उसकी तरफ़ अपना पैग़ाम भेजेंगे ऐ मेरे बन्दे! अगर मैं तुझे दोज़ख़ से नजात दे दूँ और जन्नत में दाख़िल कर दूँ तो क्या तू मेरे सामने अपने गुनाहों और ख़ताओं को क़बूल कर लेगा वह बन्दा अर्ज़ करेगा जी हाँ! मेरे रब! मुझे आपके ग़लबे और जलाल की क़सम! अगर आपने मुझे दोज़ख़ से नजात दे दी तो मैं बिल्कुल अपने गुनाहों और ख़ताओं को क़बूल कर लूँगा।

फिर जब वह पुलसिरात को पार कर लेगा तो दिल ही दिल में कहेगा अगर मैंने अपने गुनाहों और ख़ताओं को क़बूल कर लिया तो मुझे ज़रूर-ज़रूर दोज़ख़ में वापस डाल दिया जाएगा। अल्लाह तआला उसकी तरफ़ अपना पैग़ाम भेजेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! अब अपने गुनाहों और ख़ताओं को क़बूल करो, मैं तुम्हारी मग़फ़िरत भी करूँगा और तुम्हें जन्नत में दाख़िल करूँगा। पर वह कहेगा मुझे आपके ग़लबे और जलाल की क़सम! मैंने तो कभी गुनाह किया ही नहीं, और न कभी कोई ख़ता की है। अल्लाह तआला उसके दिल में डालेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! मेरे पास तेरे ख़िलाफ़ गवाह मौजूद हैं (तुम किस तरह अपने गुनाहों से इनकार कर सकते हो?)। वह बन्दा अपने दाएँ-बाएँ मुड़कर देखेगा तो उसको कोई नज़र नहीं आएगा। कहेगा या रब! आपके गवाह कहाँ हैं? अल्लाह तआला उसके बदन की खाल से छोटे-छोटे गुनाह उगलवा देंगे।

जब वह शख़्स यह हाल देखेगा तो अर्ज़ करेगा या रब! आपकी इज़्ज़त व ग़लबे के क़सम! मेरे बड़े-बड़े गुनाह भी हैं। अल्लाह तआला उसकी तरफ़ अपना पैग़ाम भेजेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! मैं इन गुनाहों को तुझसे ज़्यादा जानता हूँ। तुम मेरे सामने उन सबको क़बूल कर लो, मैं उनको बख़्श दूँगा और तुझे जन्नत में भी दाख़िल कर दूँगा। चुनाँचे वह शख़्स अपने गुनाहों को क़बूल कर लेगा और उसको जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि यह शख़्स जन्नत में सबसे कम मर्तबे और कम दर्जे का होगा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1652)

मोमिनों की सिफ़ारिश और अल्लाह की एक मुट्ठी से मोमिन दोज़ख़ियों की बख़्शिश

हदीसः हज़रतत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु आपसे एक लम्बी रिवायत में नक़ल करते हुए फ़रमाते हैं कि आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मुसलमान जहन्नम से पार हो जाएँगे तो मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। तुम में से हर एक से ज़्यादा हक़ की अदायगी में मोमिनों के लिए रोज़े क़यामत अल्लाह तआला को क़सम दिलाने वाला कोई नहीं होगा। ये अपने उन मुसलमान भाईयों की सिफ़ारिश करते हुए अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! ये (जहन्नम में मौजूद मोमिन हज़रात) हमारे साथ रोज़े रखा करते थे, नमाज़ें पढ़ा करते थे और हज किया करते थे (इसलिए उन्हें फ़रमाया जाएगा जिन्हें तुम जानते हो उनको निकाल लाओ। उनके जिस्म जहन्नम पर हराम हैं। पस वे लोग बहुत-सी ख़ल्क़त को निकाल लाएँगे जिन्हें जहन्नम ने आधी पिण्डलियों तक या घुटनों तक ग़र्क़ किया हुआ था।

पस ये लोग अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! जिनका आपने हमें फ़रमाया था उनमें से कोई भी बाक़ी नहीं रहा। फिर अल्लाह तआला उनको हुक्म फ़रमाएँगे तुम वापस जाओ और जिसके दिल में एक दीनार के बराबर भी ख़ैर पाते हो उसे (भी जहन्नम से) निकाल लाओ। पस वे बहुत-सी मख़्लूक़ को निकाल लाएँगे और कहेंगे ऐ हमारे रब! हमने किसी को उसमें नहीं छोड़ा जिसका भी आपने हमें हुक्म फ़रमाया (हम उसको निकाल लाए हैं)।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे (अब भी) वापस लौट जाओ और जिसके दिल में आधे दीनार के वज़न के बराबर भलाई जानों उसे भी निकाल लो। पस वे बहुत-सी मख़्लूक़ को बाहर निकाल लाएँगे। फिर कहेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! हमने उसमें किसी को नहीं छोड़ा जिसके निकालने का आपने हमें हुक्म दिया। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे (अब भी) वापस लौट जाओ और जिसके दिल में एक ज़र्रा बराबर भी

भलाई (ईमान) पाओ उसे भी निकाल लाओ, तब भी वे बहुत-सी मख़्लूक़ को बाहर निकाल लाएँगे और कहेंगे ऐ हमारे परवर्दिगार! हमने उसमें भलाई करने वाली (ईमान लाने वाली) मख़्लूक़ बिल्कुल नहीं रहने दो (सबको जहन्नम से निकाल लिया है)।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीस को बयान करने के बाद फ़रमाया करते थे, अगर तुम इस हदीस के बारे में मेरी तस्दीक़ न करो तो चाहो तो यह आयत पढ़ लोः

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला किसी पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं फ़रमाएँगे। अगर एक नेकी (भी) होगी तो उसे भी अज्र व सवाब में दोगुना दर दोगुना कर देंगे और अपनी तरफ़ से बड़ा अज्र अता फ़रमाएँगे। (सूरः निसा आयत 40)

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे फ़रिश्तों ने शफ़ाअत की, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने भी शफ़ाअत की और मोमिनों ने भी शफ़ाअत की। अब सिवाए अर्हमुर्राहिमीन के कोई नहीं बचा। (ख़ुद अल्लाह तआला) आग से (मोमिनों की) एक मुट्ठी भरेंगे और उसके ज़रिये ऐसी क़ौम को बाहर निकालेंगे जिन्होंने ईमान के अलावा और कोई भलाई न की होगी, और वे कोयला बन चुके होंगे।

फिर अल्लाह तआला उनको जन्नत के सामने नहर में डाल देंगे, उस नहर का नाम 'नहरे हयात' है। वे (उससे इस हालत में) निकलेंगे जैसे सैलाब सूखने के बाद दाना निकलता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मोमिन सिर्फ़ ईमान की बदौलत दोज़ख़ से निकलेंगे

फ़ायदाः जिन लोगों ने कभी भलाई न की होगी, इससे मुराद यह है कि अपने जिस्मानी अंगों से कोई अमल न किया होगा अगर वे उनके साथ तौहीद की हक़ीक़त मौजूद होगी जैसा कि उस आदमी की हदीस में आया है जिसने अपने घर वालों को कहा था कि उसे मौत आने के बाद जला डालें। उसने भी कोई नेक अमल कभी नहीं किया था सिवाए तौहीद के।

इसकी ताईद उस हदीस से भी होती है जिसमें है कि हुज़ूर पाक सल्ल० ने फ़रमाया "मैं अल्लाह तआला के सामने अर्ज़ करूँगा ऐ मेरे

परवर्दिगार! मुझे उन लोगों के बारे में (भी) शफ़ाअत करने की इजाज़त दें जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहते" अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मुझे मेरी इज़्ज़त व जलाल, किब्रियाई और बड़ाई की क़सम है, मैं ज़रूर ऐसे आदमी को जहन्नम से निकालूँगा (जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा था)। (बुख़ारी व मुस्लिम)

यह हदीस भी इस बात की वज़ाहत करती है कि जिन लोगों ने कभी भी अपने बदन के हिस्सों से एक अमल न किया होगा लेकिन सिर्फ़ कलिमे वाले थे, उनको अल्लाह तआला अपनी रहमत से बग़ैर किसी की शफ़ाअत के जहन्नम से निकालेंगे।

फ़रिश्ते भी दोज़ख़ियों को निकालेंगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल0 ने एक लम्बी हदीस में यह भी फ़रमाया हैः

तर्जुमाः यहाँ तक कि जब अल्लाह तआला बन्दों के दरमियान इन्साफ़ करके फ़ारिग़ हो जाएँगे और इरादा फ़रमाएँगे कि अपनी रहमत से बड़े गुनाहों का जुर्म करने वाले लोगों को जहन्नम से निकाल लें तो फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाएँगे कि वे हर उस आदमी को जहन्नम से निकाल लें जो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक नहीं करता था। (ये फ़रिश्ते) उन्हें सज्दे के निशान से पहचानेंगे (क्योंकि) जहन्नम आदम की औलाद के तमाम हिस्सों को जलाएगी मगर सज्दे की जगह को बाक़ी छोड़ देगी (इसलिए कि) अल्लाह तआला ने आग पर हराम कर दिया है कि वह सज्दे की जगह को जला सके।

जब वे जहन्नम से निकलेंगे तो कोयला हो चुके होंगे। फिर उन पर 'आबे हयात' पलटा जाएगा तो वे उससे इस तरह तरो-ताज़ा हो जाएँगे जिस तरह दाना सैलाब ख़ुश्क होने के बाद (ज़मीन से) उग पड़ता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

गुनाहगार दोज़ख़ी शफ़ाअत से भी जन्नत में जाएँगे

हदीसः हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः दोज़ख़ी जो जहन्नम के अहल (हक़दार और पात्र) होंगे वे न तो उसमें मरेंगे और न जियेंगे। लेकिन कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें आग उनके गुनाहों के हिसाब से जलाएगी। फिर अल्लाह तआला उनको मौत दे देंगे, यहाँ तक कि जब वे कोयला बन जाएँगे तो शफ़ाअत की इजाज़त दी जाएगी। उनको जमाअतों की शक्ल में लाया जाएगा और जन्नत की नहरों पर बिखेर दिया जाएगा। फिर जन्नत वालों को हुक्म दिया जाएगा कि उन पर (आबे हयात) पलटो। वे उस से तरो-ताज़ा हो जाएँगे जिस तरह सैलाब में बहने वाला दाना (सैलाब ख़ुश्क होने के बाद ज़मीन पर ठहरता है और) उग पड़ता है। (मुस्लिम शरीफ़)

फ़ायदाः इस हदीस से मालूम होता है कि गुनाहगार मुसलमान जहन्नम में हक़ीक़ी तौर पर मौत पा जायेंगे और उनकी रूहें उनके जिस्मों से जुदा होंगी, इसकी दलील अगली हदीस में भी मौजूद है।

तंबीहः इस पर ये शुब्हा न किया जाए कि जब मौत को भी मौत आ जाएगी तो ये कैसे मरेंगे? इसलिए कि मोमिनों पर मौत आने की यह हालत मौत के जिबह होने से पहले की है। मौत के ज़िबह होने के बाद बिल्कुल किसी को मौत नहीं आएगी।

दोज़ख़ से नजात पाकर जन्नत में जाने वाले अदना दर्जे के जन्नती होंगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों मे कम-नसीब वाली वह क़ौम होगी जिनको अल्लाह तआला आग से निकालेंगे और (जहन्नम से) आज़ाद कर देंगे और उन्हें राहत पहुँचाएँगे। और ये वे लोग होंगे जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थें उन्हें खुले मैदान में फेंक दिया जाएगा। ये लोग तरो-ताज़ा होकर उभरने लगेंगे जैसे सब्ज़ा उगता है, यहाँ तक कि जब रूहें जिस्मों में दाख़िल होंगी तो वे अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! जिस तरह आपने हमें आग से निकाला है और रूहों को जिस्मों में लौटाया है इसी तरह हमारे रुख़ भी आग से फेर दीजिए तो उनके रुख़ भी आग से

फेर दिये जाएँगे। (मुसनद बज़्ज़ार)

दोज़ख़ में मोमिनों की हालत

हदीसः मुहम्मद बिन अली (इमाम बाक़र रहमतुल्लाहि अलैहि) अपने बाप से वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तमाम उम्मतों के मोमिन लोग बड़े गुनाहों के मुजरिम जब अपने गुनाहों की मौजूदगी में बग़ैर शर्मिन्दगी और बग़ैर तौबा किये मर जाएँगे (फिर) उनमें से जो लोग दोज़ख़ के पहले दरवाज़े से आग में दाख़िल होंगे, न तो उनकी बीनाई (आँखों की रोशनी) छीनी जाएगी, न उनके मुँह काले होंगे, न शैतानों के साथ जकड़े जाएँगे, न ज़न्जीरों से बाँधे जाएँगे, न जलता हुआ पानी पिलाये जाएँगे, और न जहन्नम में तारकूल का लिबास पहनाए जाएँगे।

अल्लाह ने तौहीद की वजह से उनके जिस्मों को जहन्नम में हमेशा रहना हराम कर दिया है। सज्दों की वजह से उनकी सूरतों को आग पर हराम किया है। उनमें से किसी को बुरे आमालों के हिसाब से आग ने क़दमों तक पकड़ा होगा, किसी को कमर तक और किसी को गर्दन तक। उनमें से कोई एक महीने जहन्नम में रहेगा फिर निकाल लिया जाएगा। उनमें से जहन्नम में सबसे ज़्यादा समय तक रहने वाला दुनिया की उम्र (के बराबर) रहेगा। (यानी कि) जबसे दुनिया बनी और जब तक यह तबाह होगी।

जब अल्लाह तआला इरादा करेंगे कि उनको जहन्नम से निकालें तो यहूदी और ईसाई और बाक़ी दोज़ख़ी जो मुख़्तलिफ़ बातिल दीनों या बुत-परस्तों से ताल्लुक़ रखते होंगे (ताना देने के तौर पर) मोमिनों को कहेंगे कि तुम (अल्लाह पर ईमान लाए उसकी किताबों पर भी उसके रसूलों पर भी लेकिन) और हम आज दोज़ख़ में एक हाल में हैं। पस अल्लाह तआला उन पर इतना गुस्सा करेंगे कि और पिछले वक़्तों में इतना गुस्सा कभी न किया होगा। पस उनको जन्नत के एक चश्में की तरफ़ निकाल लेंगे। इसी के बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान है "वे

लोग जिन्होंने कुफ़्र किया ख़्वाहिश करेंगे कि काश! वे (भी) मुसलमान होते"। (अत्तख़्वीफ़ मिनन्नार 263)

अंधेरी रात में नमाज़ में जाने वालों को दोज़ख़ में बन्द नहीं किया जाएगा

हज़रत हसन (बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि तौहीद वाले (गुनाहगार मुसलमानों) को आग में बन्द नहीं किया जाएगा। (यह सूरत देखकर) जहन्नम की पुलिस एक दूसरे से कहेगी इन (काफ़िरों) की हालत तो यह है कि उन्हें आग में बन्द किया हुआ है, और इन्हें बन्द नहीं किया गया? तो उन्हें एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आवाज़ लगाएगा:(इसलिए कि) ये लोग मस्जिदों में अंधेरी रात में (भी) जाया करते थे। (अत्तख़्वीफ़ मिनन्नार पेज 264)

(चूँकि ये नमाज़ की ख़ातिर दुनिया की अंधेरी रातों की मशक़्क़त बरदाश्त कर चुके हैं इसलिए दोज़ख़ की अंधेरी आग में उनको बन्द नहीं किया जाएगा।)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि का इरशाद

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि फ़रमाते हैं कि एक आदमी को एक हज़ार साल के बाद भी निकाला जाएगा, फिर हज़रत हसन बसरी ने मारे डर के फ़रमाया काश! कि वह आदमी में होता।

(अत्तख़्वीफ़ मिनन्नार पेज 264)

फ़ायदा: इस सिलसिले की ज़्यादा तफ़सील के लिए हमारी किताब 'जहन्नम के ख़ौफ़नाक मनाज़िर" का अध्ययन करें।

आराफ़ वाले, आराफ़ क्या है?

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: पस उन मुनाफ़िक़ों और मुसलमानों के बीच एक दीवार क़ायम कर दी जाएग। उसका एक दरवाज़ा भी होगा जिसके अन्दर की तरफ़ रहमत (जन्नत) होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब (यानी दोज़ख़ होगी)। (सूर: हदीद आयत 13),

इस आयत में वह दीवार और रोक जो जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के बीच रुकावट बना दी जाएगी उसको लफ़्ज़ 'सूर' से ताबीर किया है। और यह लफ़्ज़ दर-असल चार दीवारी के लिए बोला जाता है जो बड़े शहरों के गिर्द दुश्मन से हिफ़ाज़त के लिए बड़ी मज़बूत और चौड़ी दीवार बनायी जाती है। ऐसी दीवारों में फ़ौज के हिफ़ाज़ती दस्तों के ठिकानों की जगहें भी बनी होती हैं जो हमलावरों से बा-ख़बर रहते हैं। (सूरः आराफ़ की आयत में हैं।)

तर्जुमाः इन दोनों फ़रीक़ यानी जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के दरमियान आड़, यानी दीवार होगी। (सूरः आराफ़ आयत 46)

और उस दीवार का या उसके ऊपर वाले हिस्से का नाम आराफ़ है। और उस पर से जन्नती और दोज़ख़ी सब नज़र आएँगे। इब्ने जरीर और इल्मे तफ़सर के दूसरे इमामों की तहरीर के मुताबिक़ इन आयत में लफ़्ज़े हिजाब से वही हिसार (घेराबन्दी और चारदीवारी) मुराद है जिसको सूरः हदीद की आयत में लफ़्ज़ 'सूर' से ताबीर किया गया है। उस हिसार के ऊपर वाले हिस्से का नाम आराफ़ है क्यों आराफ़ 'अरफ़' का बहुवचन है, और अरफ़ हर चीज़ के ऊपर वाले हिस्से को कहा जाता है क्योंकि वह दूर से दिखता और पहचाना जाता है। आराफ़ वाले उसी पर होंगे और यह बहुत चौड़ी होगी।

ये यहाँ से जन्नत और जहन्नम वालों को देख सकेंगे और बातचीत और सवाल व जवाब भी करेंगे। (मआरिफ़ुल कुरआन)

आराफ़ वालों के हालात

आराफ़ के ऊपर बहुत-से आदमी होंगे। ये लोग जन्नत और दोज़ख़ वालों में से हर एक को जन्नत और दोज़ख़ के अन्दर होने के अलावा भी उनकी निशानी और हुलिये से भी पहचानेंगे। हुलिया और निशानी यह होगी कि जन्नत वालों के चेहरों पर नूरानियत और दोज़ख़ वालों के चेहरों पर सियाही और कदूरत होगी। और आराफ़ वाले जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे 'अस्सलामु अलैकुम' अभी ये जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे।

चुनाँचे हदीसों में आया है कि उनकी उम्मीद पूरी कर दी जाएगी और जन्नत में जाने का हुक्म हो जाएगा। और जब उनकी निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी उस वक़्त दहशत के मारे कहेंगे ऐ हमारे रब! हमको इन ज़ालिम लोगों के साथ अज़ाब में शामिल न कीजिए।

और आराफ़ वाले दोज़ख़ियों में से बहुत-से आदमियों को जिनको वे उनके हुलिये और निशानियों से पहचानेंगे कि ये काफ़िर हैं पुकारेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की पैरवी न करना तुम्हारे किसी काम न आया, और तुम इसी घमण्ड की वजह से मुसलमानों को हक़ीर (ज़लील और कम-दर्जा) समझकर यह भी कहा करते थे कि ये बेचारे फ़ज़्ल व करम के क्या हक़दार होते, तो उन मुसलमानों को अब देखो, क्या ये जो जन्नत में ऐश कर रहे हैं वही मुसलमान हैं जिनके बारे में तुम क़स्मे खा-खाकर कहा करते थे कि इन पर अल्लाह तआला अपनी रहमत न करेगा, तो उन पर तो इतनी बड़ी रहमत हुई कि उनको यह हुक्म हो गया कि जाओ जन्नत में जहाँ तुम पर न कुछ अन्देशा है और न तुम ग़मगीन होगे। (मआरिफ़ुल कुरआन, तफ़सीर बयानुल-क़ुरआन)

आराफ़ में कौन जाएँगे?

हदीसः जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क़यामत के दिन आमाल की तराज़ू को क़ायम किया जाएगा और गुनाहों और नेकियों को तौला जाएगा। पस जिस आदमी की नेकियाँ उसके गुनाहों से वज़न में ज़्यादा हो गई चाहे वह अण्डे के बरबर ही बढ़ जायें, वह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिसकी बुराईयाँ उसकी नेकियों पर भारी हो गई चाहे अण्डे के वज़न के बरार ही हों, वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा। अर्ज़ किया गया, या रसूलुल्लाह! पस जिस शख़्स की नेकियाँ या बुराईयाँ बराबर हो गई (वे कहाँ जाएँगे)? फ़रमाया यही लोग 'आराफ़ वाले' हैं। ये अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे बल्कि (उसकी) उम्मीद में होंगे। (तज़्किरतुल् मौत पेज 318)

आराफ़ के दो आदमियों का हाल

हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि दो शख़्स जो दुनिया में आपस में दोस्त थे, उनमें से एक अपने साथी के पास से गुज़रेगा जिसको दोज़ख़ की तरफ़ घसीटा जा रहा होगा। उसका यह भाई कहेगा ख़ुदा की क़सम! मेरा तो एक नेकी के सिवा कुछ नहीं बचा जिससे मैं नजात पा सकूँ। ऐ भाई! यह तुम ले लो और जो मैं देख रहा हूँ तुम तो उससे नजात पा लो। अब तुम और मैं आराफ़ में रह लेंगे। हज़रात कअब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं अल्लाह तआला उन दोनों के बारे में (हमदर्दी के सिले में) हुक्म फ़रमाएँगे और उनको जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (तज़किरतुल् मौत)

जन्नत को भरने के लिए नई मख़्लूक़ पैदा होगी

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में से जितना हिस्सा अल्लाह तआला चाहेंगे ख़ाली रहेगा। फिर अल्लाह तआला उसके लिए एक मख़्लूक़ पैदा करेंगे जिससे चाहेंगे और उनको जन्नत के ख़ाली हिस्से में बसा देंगे।

(मुस्नद हुमैदी जिल्द 3 पेज 265)

फ़ायदाः क़यामत के दिन और जन्नत में दाख़िल हो चुकने के बाद दोज़ख़ वाले मुसलमानों के लिए अल्लाह तआला की रहमत और बख़्शिश का कोई अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। इतनी कसरत से जन्नत में दाख़िले के बावजूद जन्नत फिर भी ख़ाली रह जाएगी क्योंकि जन्नत अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है जिसकी कोई इन्तिहा (सीमा) नहीं। उसको यह मख़्लूक़ मुकम्मल तौर पर नहीं भर सकेगी। इसलिए उसको भरने के लिए अल्लाह नई मख़्लूक पैदा करके उसमें बसाएँगे।

मर्दों का हुस्न व ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने क़ुरआन पाक हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल फ़रमाया

है, जन्नत में रहने वाले (मर्द व औरत, हूर और ख़ादिमों के) हुस्न व ख़ूबसूरती में इस तरह से बढ़ोतरी होती रहेगी जिस तरह से दुनिया में (आख़िर उम्र में) उनकी बद-सूरती और बुढ़ापे में बढ़ौतरी होती रहती है। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 114)

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः गोया कि वे (ख़िदमतगार) लड़के महफ़ूज़ रखे हुए मोती हैं। (सूरः तूर आयत 24)

इस इरशाद की तफ़सीर में हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि अर्ज़ किया गया, या रसूलुल्लाह! ये नौकर और ख़िदमतगार जब लूअ्लुअ् मोती की तरह हैं तो मख़्दूम (जिनकी ख़िदमत की जायेगी) कैसे होंगे?आपने इरशाद फ़रमायाः मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उनके दरमियान ऐसी फ़ज़ीलत है जैसे चौदहवीं के रात के चाँद की सितारों पर होती है। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 116)

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार होगा। जन्नती हर जुमे को उसमें आया करेंगे। उत्तर की तरफ़ से एक ख़ुशबू चलेगी जो उनके चेहरों और लिबास पर पड़ेगी, और ये हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ जाएँगी। फिर ये अपने घर वालों के पास लौटेंगे जबकि ये हुस्न व जमाल में ख़ूब तरक़्क़ी किये हुए होंगे। उनको उनकी बीवियाँ कहेंगी आप तो हमसे जुदा होने के बाद हुस्न व जमाल में बहुत बढ़ गए हैं। ये मर्द कहेंगे आप भी तो ख़ुदा की क़सम! हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) में बढ़ चुकी हो।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 150)

फ़ायदाः यह हवा मुश्क के टीलों से चलाई जाएगी। जन्नती मर्द और औरतें हर घड़ी हुस्न व जमाल में तरक़्क़ी करते रहेंगे। जब एक-दूसरे से कुछ देर के लिए ओझल होंगे तो चूँकि उस हालत में भी उनके हुस्न व जमाल में इज़ाफ़ा होता रहेगा उसकी वजह से वे एक-दूसरे के हुस्न में इज़ाफ़े को देखकर हैरान और लुत्फ़-अन्दोज़ (आनन्दित) होंगे।

जन्नत कें बाज़ार में हुस्न व जमाल में मन-पसन्द हसीन व जमील सूरतें भी होंगी। जन्नती जिस सूरत को पसन्द करेगा उसमें तब्दील हो सकेगा। तफ़सील के लिए इसी किताब में "जन्नत का बाज़ार" का मज़मून पढ़ें।

हुस्ने यूसुफ़

हदीसः मिक्दाम बिन मअदी-करब् रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जाया होने वाले बच्चे से लेकर बूढ़े तक (मोमिन) क़ियामत के दिन हज़रत आदम की सूरत, हज़रत अय्यूब के दिल और हज़रत यूसुफ़ के हुस्न पर बग़ैर दाढ़ी के, आँखों में सुर्मा लगाए हुए (क़ब्रों से) उठाए जाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2168)

जन्नत में सिर्फ़ हज़रत आदम और मूसा अलैहिमुस्सलाम की दाढ़ी होगी

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों में हर आदमी को उसके नाम से बुलाया जाएगा मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को "अबू मुहम्मद" की कुन्नियत के साथ पुकारा जाएगा और जन्नत में सब बग़ैर बालों के, बग़ैर दाढ़ी के होंगे सिवाए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के, उनकी दाढ़ी उनकी नाफ़ तक पहुँचती होगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2172)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत वालों के जिस्म पर बाल नहीं होंगे मगर मूसा बिन इमरान अलैहिस्सलाम के, उनकी दाढ़ी उनकी नाफ़ तक पहुँचती होगी, और सब जन्नतियों को उनके नामों के साथ पुकारा जाएगा मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को, उनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद होगी।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 111)

चूँकि बचपन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने वक़्त के सबसे बड़े दुश्मने ख़ुदा फ़िरऔन की दाढ़ी को खींचा था। उसकी

क़द्र-दानी और हज़रत मूसा के सम्मान के लिए जन्नत में दाढ़ी अता करके हमेशगी बख़्शी जायेगी। वल्लाहु अअ्लम। (इमदादुल्लाह)

हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, यह कहा करते थे कि जन्नत में किसी की दाढ़ी नहीं होगी सिवाए हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के। उनकी दाढ़ी सियाह होगी और नाफ़ तक पहुँचती होगी। इसकी वजह यह है कि दुनिया में उनकी दाढ़ी नहीं आई थी बल्कि दाढ़ी हज़रत आदम के बाद से उतरना शुरू हुई है। और किसी की कुन्नियत बाक़ी न रहेगी सिवाए हज़रत आदम के। उनकी कुन्नियत 'अबू मुहम्मद' होगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2173)

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की भी दाढ़ी होगी

अ ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में तमाम मर्द बग़ैर दाढ़ी के होंगे सिवाए हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के। क्योंकि उनकी दाढ़ी सबसे पहली दाढ़ी है जिसको अल्लाह के रास्ते में तकलीफ़ दी गयी थी जैसा कि क़ुरआन पाक में इरशाद है:

तर्जुमाः ऐ मेर माँ जाए! मेरी दाढ़ी और सर से न पकड़।

(सूरः तॉहा आयत 94) (कन्ज़ुल मदफ़ून पेज 128)

फ़ायदाः ऊपर ज़िक्र हुई रिवायतों से अलग-अलग साबित होता है कि तमाम इनसानों में से सिर्फ़ तीन अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की दाढ़ी होगी। वल्लाहु अअ्लम।

ताज की शान व शौकत

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तुर्जमाः जन्नतियों पर ताज सजे होंगे। उनमें से (हर एक ताज का) अदना दर्जे का मोती वह होगा जो पूरब व पश्चिम के दरमियान फ़ासले को रोशन करता होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2562)

जन्नतियों की शक्ल व सूरत, क़द व काठी और हुस्न व ख़ूबसूरती

जन्नतियों का क़द और शक्ल व सूरत

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उनकी (बेहतरीन) सूरत पर पैदा फ़रमाया। उनका क़द साठ हाथ था। जब अल्लाह तआला ने उनको पैदा किया तो फ़रमाया, आप जाकर उस जमाअत को सलाम कीजिए। यह फ़रिश्तों की एक जमाअत थी जो बैठी हुई थी और (उनसे) सुनिये ये आपको क्या जवाब देते हैं। यही आपका और आपकी औलाद का सलाम होगा। हुज़ूर सलल0 इरशाद फ़रमाते हैं, चुनाँचे हज़रत आदम तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया 'अस्सलामु अलैकुम' तो उन्होंने जवाब में कहा 'अस्सलामु अलै-क व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू'। उन फ़रिश्तों ने सलाम में 'व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू' का इज़ाफ़ा किया।

हुज़ूर सल्ल0 इरशाद फ़रमाते हैं कि पस जो भी जन्नत में दाख़िल होगा वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल व सूरत पर होगा। उस (के क़द की) लम्बाई साठ हाथ होगी, लेकिन (हज़रत आदम के दुनिया से तशरीफ़ ले) जाने के बाद से अब तक हुस्न व ख़ूबसूरती और क़द-काठी कम ही होता जा रहा है। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जिल्द 10 पेज 384)

फ़ायदाः जन्नती मर्दों के जिस्म की लम्बाई तो साठ हाथ होगी और चौड़ाई सात हाथ होगी, जैसा कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से अबू नुऐम रहमतुल्लाहि अलैहि ने रिवायत नक़ल की है।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 201)

एक रिवायत में आता है कि यह साठ हाथ की लम्बाई अल्लाह तआला के हाथ की है और इसका अन्दाज़ा आदमी के अपने हाथ से लगाना ठीक नहीं। न मालूम कितनी लम्बाई होगी। बहरहाल इतना

ज़्यादा भी न होगी जो ग़ैर-मानूस हो जाए। (यानी बुरी लगे और बे-ढंगा लगे)। और ज़्यादा इल्म अल्लाह ही को है।

चाँद सितारों जैसी शक्लें

हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उसकी सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी और वे लोग जो उनके बाद दाख़िल होंगे उनकी सूरत की चमक-दमक आसमान में तेज़ रोशन सितारे की तरह होगी। ये जन्नती न पेशाब करेंगे न पाख़ाना थूक न नाक की गन्दगी उनकी कंघियाँ सोने की होंगी, उनका पसीना कस्तूरी का होगा। उनकी अंगीठियाँ अगर की होंगी, उनकी बीवियाँ 'हूरे-ऐन' होंगी। उनके अख़्लाक़ एक ही आदमी के अख़्लाक़ जैसे होंगे, उनकी सूरत अपने अब्बा हज़रत आदम की सूरत पर होगी। लम्बाई में साठ हाथ का क़द होगा।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3327)

फ़ायदाः तफ़सील के लिए देखिये उनवान "उम्मते मुहम्मदिया में से सबसे पहले जन्नत में जाने वाले"।

काली रंगत वालों का हुस्न

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक (हब्शी) शख़्स जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होकर सवाल करने लगा। आपने उससे इरशाद फ़रमाया पूछ लो और ख़ूब समझ लो। उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपको हम पर शक्ल व सूरत में ख़ूबसूरती और नुबुव्वत में हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी गई है आप क्या फ़रमाते हैं अगर मैं इस तरह से ईमान ले आऊँ जिस तरह से आप अल्लाह तआला पर ईमान लाए और मैं भी वैसे ही अमल करूँ जिस तरह के आमाल आप करते हैं, तो क्या मैं जन्नत में आपके साथ होऊँगा? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है,

काले रंग वाले शख़्स की सफ़ेदी जन्नत में एक हज़ार साल के फ़ासले से देखी जाती होगी। फिर रसूले ख़ुदा सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जिसने 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पढ़ा उसके लिए अल्लाह तआला के पास (नजात और जन्नत का) एक परवाना लिख दिया जाता है। और जसने 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' पढ़ा उसके लिए इसके बदले में एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ लिख दी जाती हैं। (यह सुनकर) उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह! ऐसे (इनामात हासिल करने) के बाद हम किस तरह से हलाक हो सकते हैं। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया क़यामत के दिन आदमी ऐसा अमल करके लाएगा कि अगर उसको पहाड़ पर रख दिया जाए तो उस पर भी बोझल हो जाए (यानी बावजूद मज़बूत और ताक़तवर होने के इस अमल के वह पहाड़ वज़न को उठाने की ताक़त न रखे)। फिर अल्लाह तआला की नेमतों में से (दुनिया की कोई-सी) एक नेमत मुक़ाबले में पेश होगी जो उसकी तमाम नेकी को बे-वज़न कर देगी,मगर यह कि अल्लाह तआला अपनी रहमत के साथ (बन्दे की) दस्तगीरी करेंगे (और उसके नेक आमाल का दर्जा बढ़ाकर उसको जन्नत का हक़दार कर दिया जाएगा)।

इस मौक़े पर सूरः दह्र की शुरू की बीस आयतें नाज़िल हुईं। उस हब्शी ने अर्ज़ किया क्या मेरी आँखें भी वह कुछ देख सकेंगी जो आपकी आँखें जन्नत में देखेंगी? नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया हाँ! तो वह हब्शी (ख़ुशी के मारे) इतना रोया कि उसकी जान निकल गई। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्ल0 को देखा कि आप ख़ुद अपने हाथ मुबारक से उस हब्शी को क़ब्र में उतार रहे थे। (तबरानी जिल्द 12 पेज 436)

मर्दों की उम्रें

तैंतीस साल की उम्र में होंगे

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती हज़रात जन्नत में इस हालत में जाएँगे कि न तो

उनके जिस्मों पर बाल होंगे न दाढ़ी होगी। आँखों में सुर्मा लगाए गये होंगे तीस साल की या तैंतीस साल की उम्र में होंगे।

(मुस्नद अहमद जिल्द 5 पेज 243)

फ़ायदाः अक्सर रिवायतों में तैंतीस साल की उम्र का ज़िक्र आया है। इस हदीस में तीस साल का लफ़्ज़ है। इसमें रिवायत बयान करने वाले को शक है। अगर इसको ठीक मान लिया जाए तो असल उम्र तो तैंतीस साल ही की होगी मगर रिवायत बयान करने वाले ने बजाय तैंतीस के सीधे तीस ही ज़िक्र कर दिए।

हमेशा जवान रहेंगे

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल व सूरत में तैंतीस साल की उम्र में बग़ैर जिस्मानी बालों और दाढ़ी के (क़ब्रों से) उठाया जाएगा। फिर उनको जन्नत में एक पेड़ के पास लेजाया जाएगा जिससे वे लिबास को पहनेंगे, फिर न तो उनके कपड़े पुराने होंगे न जवानी में फ़र्क़ आएगा। (हादिल अरवाह पेज 203)

नोटः जिस्म पर बाल न होने का मतलब यह है कि सिर्फ़ मर्दों और औरतों के सर के बाल होंगे और क़िसी जगह बाल नहीं होंगे। यह भी याद रखना चाहिए कि बदन के बालों को नापाकी की हालत में अलग नहीं करना चाहिये क्योंकि क़ब्र से उठते वक़्त ये बाल इनसान के सर के बालों कें हिस्से बना दिये जाएँगे। अगर उनको नापाकी की हालत में अलग किया गया तो ये उसी हालत में इनसानी जिस्म पर लौटेंगे।

छोटे और बड़े हर एक की एक ही उम्र होगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में से जो आदमी छोटी उम्र या बड़ी उम्र का मरता है उनको तीस साल की उम्र में जन्नत में दाख़िल किया जाएगा।

उनकी उम्र इससे ज़्यादा कभी नहीं बढ़ेगी। दोज़ख़ियों की उम्र भी ऐसी ही होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2562)

फ़ायदा: इस हदीस में भी तीन की संख्या को छोड़ दिया है मुकम्मल उम्र तैंतीस साल होगी जैसा कि उन हदीसों में मालूम होता है जिनमें कि इस तीन की संख्या को कम करने का भी ज़िक्र है।

चेहरों में नेमतों की तरोताज़गी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: नेक लोग बड़े आराम व ऐश में होंगे, मसहरियों पर (बैठे जन्नत के अजूबों को) देखते होंगे। (ऐ मुख़ातब!) तू उनके चेहरों में आराम व राहत की ताज़गी पहचानेगा। (सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन आयत 22-24)

तफ़सीर: 'नज़्रतुन्-नईम' की तफ़सीर में अल्लामा मावरदी फ़रमाते हैं कि इसकी चार तफ़सीरें हैं:

1. जन्नतियों के चेहरों की तरोताज़गी और ख़ुशहाली मुराद है।
2. जन्नतियों के चेहरों की चमक-दमक मुराद है।
3. जन्नत में एक चश्मा है जब जन्नती हज़रात उससे वुज़ू करेंगे और ग़ुस्ल करेंगे तो उनके चेहरों पर नेमतों की तरोताज़गी नज़र आएगी।
4. हमेशा वाली नेमत की वजह से चेहरों पर हमेशा ख़ुशी छायी रहेगी। (जौलात फ़ी रियाज़िल्-जन्नात पेज 63)

हंसते-मुस्कुराते चेहरे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (यानी जन्नत) है, और इससे ज़्यादा (ख़ुदा तआला का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत। ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे।(सूरः यूनुस आयत 26)

अल्लाह तआला आगे इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: बहुत-से चेहरे उस दिन (ईमान की वजह से) रोशन (और ख़ूशी से) हंसते और मुस्कुराते होंगे। और बहुत-से चेहरे उस रोज़

रौनक़दार (और) अपने (नेक) कामों की बदौलत ख़ुश होंगे (और) जन्नत के आला दर्जे में होंगे।

(सूरः अ-ब-स आयत 38-39 सूरः ग़ाशियह् आयत 8-10)

लिबास व पोशाक

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये तो हम ऐसों का अज्र ज़ाया न करेंगे जो अच्छी तरह से (नेक) काम करें (पस) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं उनके (रहने की जगहों) के नीचे नहरें बहती होंगी। उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और हरे रंग के कपड़े बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे (और) वहाँ मसहरियों पर तकिये लगाये बैठे होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। (सूरः कहफ़ आत 30 31)

लिबास की तैयारी

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप हमें जन्नत वालों के कपड़ों के बारे में बताएँ। क्या उनको नये सिरे से पैदा किया जाएगा या उनको बनाया जाएगा? तो मौजूद लोगों में से कुछ लोग हंस पड़े। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम इस नावाक़िफ़ के मुताल्लिक़ जो जानने वाले से सवाल कर रहा है क्यों हंसते हो? फिर आपने इरशाद फ़रमायाः जन्नत का फल लिबास को ज़ाहिर करेगा। आपने यह बात दो बार इरशाद फ़रमाई। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 225)

हज़रत मुर्सद बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक पेड़ है जिसमें सुन्दुस (बारीक रेशम) उगेगा, यही जन्नत वालों का लिबास होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1949)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मोमिन का महल ख़ोलदार मोती का होगा जिसमें चालीस कमरे होंगे। उनके बीच एक पेड़ होगा जो पोशाक को उगाएगा। मोमिन जाकर अपनी उंगलियों

से लुअ्लुअ् और ज़बरजद और मर्जान (मोतियों) के काम किये हुए सत्तर जोड़ों को उठाएगा (और अपने इस्तेमाल में लाएगा)।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1950)

जन्नत के रेशम से दुनिया के रेशम का क्या मुक़ाबला!

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 को एक बारीक रेशम का जुब्बा हदिये में पेश किया गया जबकि नबी करीम सल्ल0 रेशम से मना फ़रमाते थे, मगर हज़राते सहाबा उसकी मुलाईमत को देखकर हैरान हो गये थे। आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का रूमाल इससे कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है। (फ़त्हुल बारी जिल्द 2 पेज 225)

ग़िलाफ़ में छुपे उम्दा और रंग-बिरंगे लिबास

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम में से हर एक जब जन्नत में दाख़िल होगा तो उसको तूबा (पेड़) की तरफ़ लेजाया जाएगा और उसके लिए उस पेड़ के ग़िलाफ़ खोले जाएँगे और वह उससे जैसा चाहेगा (लिबास) ले लेगा। चाहे सफ़ेद चाहे लाल चाहे सब्ज़ चाहे पीला चाहे काला, गुले लाल की तरह, उम्दा और बारीक भी और ख़ूबसूरत व हसीन भी।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 447)

लिबास की चमक-दमक

हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जन्नत के लिबासों में से अगर कोई लिबास आज दुनिया में पहन ले तो जो भी उसको देख ले (हुस्न की ख़ूबसूरती और चमक-दमक की वजह से) उस पर मौत घटित हो जाए और उसकी आँखें उसके नज़ारे की ताब न ला सकें। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1958)

एक पल में सत्तर रंगों में तब्दील होने वाला लिबास

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जन्नत वालों में से जब कोई शख़्स कोई पोशाक पहनेगा तो वह एक ही लम्हे में सत्तर रंगों में बट जाएगा। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ हदीस 20868)

कपड़े पुराने न होंगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा वह उसमें ख़ूब नाज़ो-नेमत में रहेगा। उसको न किसी चीज़ से मेहरूमी होगी, न उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानी में कोई फ़र्क़ आयेगा।

(मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 407)

हूरों का लिबास

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रिज़यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः पहली जमाअत जो जन्नत में दाख़िल होगी उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते होंगे और दूसरी जमाअत आसमान में ख़ूब चमकने वाले सितारों की तरह बहुत ज़्यादा चमकने वाले (चेहरों की) होगी। उनमें से हर एक के लिए 'हूरे-ऐन' में से दो-दो बीवियाँ होंगी। हर बीवी पर सत्तर पोशाकें होंगी, फिर भी उनकी पिंडलियों का गूदा उनके गोश्त (के अन्दर से) और पोशाकों के अन्दर से नज़र आता होगा जैसा कि लाल शराब सफ़ेद शीशे में नज़र आती है। (तबरनी कबीर जिल्द 10 पेज 198)

जन्नत की औरत का दुपट्टा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम्हारे एक कोड़े की जन्नत की मिक़्दार (मात्रा) का हिस्सा

दुनिया और दुनिया जैसी और दुनिया से बहुत आला व बुलन्द है, और तुम्हारी एक कमान जितना जन्नत का हिस्सा दुनिया और इस जैसी और दुनिया से ज़्यादा क़ीमती है। और जन्नत की ख़ातून (औरत) का एक दुपट्टा दुनिया और इस जैसी और दुनिया से ज़्यादा क़ीमती है।

(मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 481)

तूबा पेड़ के फलों में पोशीदा लिबास

ख़ालिद ज़मील रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद बयान करते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल किया (जन्नतियों के लिए) जन्नत का लिबास कहाँ से आएगा? आपने फ़रमाया जन्नत में एक दरख़्त है जिसके फल अनार की तरह के हैं।

अल्लाह का दोस्त जब कोई और लिबास पहनना चाहेगा तो वह (फल) उस टहनी से उसके सामने गिर पड़ेगा और खुलकर रंग-बिरंग के सत्तर जोड़े पेश कर देगा। उसके बाद वैसे ही मिलकर जुड़ जाएगा जैसा कि पहले था। (हादिल अरवाह पेज 265)

हदीसः हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया यार रसूलुल्लाह! तूबा क्या है? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक पेड़ है जिसकी लम्बाई सौ साल है। जन्नतियों का लिबास उसके गुच्छों से निकलेगा।

(मस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 71)

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं (तूबा) जन्नत में एक दरख़्त है जिसका फल औरतों की छातियों की तरह है, उन्हीं में जन्नतियों का लिबास होगा। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 410)

जन्नती पर लिबास का फ़ख़्र

बाज़ आलिम फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि अल्लाह तआला का दोस्त (मोमिन) जन्नत में एक पोशाक दो मुँह वाली पहनेगा जो एक-दूसरे को ख़ूबसूरत आवाज़ में जवाब देंगे, जो मुँह जन्नती के जिस्म से लगता होगा वह कहेगा मैं अल्लाह तआला के दोस्त के

नज़दीक ज़्यादा मर्तबा रखता हूँ क्योंकि मैं इसके जिस्म को छूता हूँ। तुम नहीं छूते। और वह मुंह जो जन्नती के सामने होगा वह कहेगा कि मैं अल्लाह तआला के दोस्त के सामने ज़्यादा मर्तबा रखता हूँ क्योंकि मैं उसका चेहरा देखता हूँ तुम उसको देख नहीं सकते।

(बुस्तानुल् वाईज़ीन पेज 191)

लिबास का हक़दार बनाने वाले कुछ आमाल

मय्यित को कफ़नाने वाले का लिबास

हदीसः हज़रत अबू राफ़े फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः जो शख़्स किसी मय्यित को कफ़न देगा अल्लाह तआला उसको बारीक और मोटे रेशम का जन्नत में लिबास पहनाएँगे

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 4 पेज 222)

उम्दा लिबासों को न पहनने वाले का लिबास

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिसने उम्दा लिबास को बतौर तवाज़ो के अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए छोड़ दिया जबकि वह उसके पहनने की ताक़त रखता था, उसको अल्लाह तआला क़यामत के दिन तमाम ममख़्लूक़ात के सामने बुलाएँगे और ईमान लाने के (मुख़्तलिफ़ लिबासों में से) जिस लिबास को चाहे पहनने का इख़्तियार देंगे। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 493)

मुसीबत के मारे हुए से हमदर्दी जताने वाले का लिबास

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो मुसलमान किसी मुसीबत-ज़दा को तसल्ली देगा (और उसके ग़म का हाल पूछेगा) अल्लाह तआला उसको जन्नत के लिबासों में से दो लिबास पहनाएँगे जिनकी कोई क़ीमत नहीं लगाई जा सकती।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1963)

हज़ीरतुल-कुदुस का सोने-चाँदी का लिबास

हदीसः हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि जिसने ताक़त के बावजूद सोने को पहनना और इस्तेमाल करना छोड़ दिया अल्लाह तआला उसको हज़ीरतुल-कुदुस में यह सोना पहनाएँगे। और जिसने ताक़त के बावजूद चाँदी को पहनना और इस्तेमाल करना छोड़ दिया अल्लाह तआला उसको यह चाँदी हज़ीरतुल-कुदुस में पहनाएँगे। और जिसने शराब को अपनी ताक़त के बावजूद छोड़ दिया अल्लाह तआला उसको शराब हज़ीरतुल-कुदुस से पिलाएँगे।

फ़ायदाः 'हज़ीरतुल-कुदुस' आसमानी दुनिया में एक पाक मुक़ाम है जिसने अल्लाह तआला के मुक़र्रब (ख़ास और क़रीबी) फ़रिश्ते रहते हैं। और औलिया-ए-किराम के दर्जों में से एक दर्जा है जहाँ से अल्लाह तआला के फ़ैज़ से इन हज़रात को नवाज़ा जाता है।

रेशम के लिबास से मेहरूम होने वाले जन्नती

हदीसः अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स दुनिया में रेशम पहनेगा वह उसको आख़िरत में नहीं पहन सकेगा। और अगर जन्नत में दाख़िल हो गया तब भी नहीं पहन सकेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1956)

फ़ायदाः जन्नत में किसी क़िस्म की सज़ा नहीं होगी जिसकी वजह से यह मेहरूम रखा जाएगा। कुछ हज़रात तो फ़रमाते हैं कि यह दोज़ख़ में सज़ा पाने के वक़्त रेशम से मेहरूम रहेगा। कुछ फ़रमाते हैं कि वह जन्नत में तो दाख़िल होगा मगर रेशम पहनने की चाहत ही न होगी इसलिए न तो उसको उसमें कोई सज़ा महसूस होगी और न मेहरूमी, और यही मतलब ऊपर ज़िक्र हुई हदीसे पाक का है।

(हादिल अरवाह पेज 260)

अगर किसी शख़्स ने दुनिया में रेशम पहना फिर उससे तौबा कर ली तो वह जन्नत के रेशम से मेहरूम न होगा।

सोने की कंघियाँ और अगर की लकड़ियों की अंगीठियाँ

हदीसः हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों की कंघियाँ सोने की होंगी और उनकी अंगीठियाँ अगर लकड़ियों की होंगी।(अल एहसान जिल्द 10 पेज 239)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों का पसीना मुश्क का होगा, उनकी कंघियाँ सोने की होंगी, उनके बरतन चाँदी के होंगे और उनकी ऊदे-हिन्दी बग़ैर जलाने के खुशबूएँ महकाएगी। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 357)

सोने-चाँदी और मोतियों के ज़ेवर

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः अल्लाह तआला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (और) उनको वहाँ सोनेके कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और पोशाक उनकी वहाँ रेशम होगी। (सूरः हज आयत 23)

अल्लाह तआला एक और जगह फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और पहनाए जाएँगे उनको कंगन चाँदी के। (सूरः दह्र आयत 21)

अल्लामा क़ुरतबी रहमतुतल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि क़ुरआन के मुफ़स्सिरीन हज़रत ने इन आयतों की तफ़सीर यह बयान की है कि हर जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे। एक कंगन सोने का, एक कंगन चाँदी का और एक लुअ्लुअ् मोती का। यह इसलिए कि बादशाह लोग दुनिया में कंगन और ताज पहना करते थे तो अल्लाह तआला ने यह जन्नत वालों के लिए तैयार फ़रमाया क्योंकि ये लोग जन्नत में बादशाह होंगे। (बुदूरे साफ़िरह पेज 538)

पूरब से पश्चिम तक के फ़ासले जितनी चमक-दमक

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः उन जन्नतियों पर ताज होंगे उन (पर जड़े हुए मोतियों) में से अदना मोती पूरब और पश्चिम के फ़ासले के जितना चमकता होगा।

जन्नती के ज़ेवर का दुनिया के सब ज़ेवरों से क्या मुक़ाबला

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर अदना दर्जे के जन्नती के ज़ेवर का तमाम दुनिया वालों के ज़ेवर से मुक़ाबला किया जाए तो जो ज़ेवर अल्लाह तआला उस जन्नती को आख़िरत में पहनाएँगे वह तमाम दुनिया वालों के ज़ेवर से उम्दा और बेहतरीन होगा। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 4 पेज 221)

जन्नतियों के लिए ज़ेवर बनाने वाला फ़रिश्ता

हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का एक फ़रिश्ता वह है जो जन्नत वालों के लिए जब से वह पैदा हुआ है क़यामत तक ज़ेवर तैयार करेगा। अगर जन्नत वालों के ज़ेवरों में से कोई ज़ेवर (दुनिया में) ज़ाहिर कर दिया जाए तो वह सूरज की रोशनी को फीकी कर दे। (इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 116)

जन्नती का कंगन सूरज से ज़्यादा रोशन

हदीसः हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर जन्नतियों में से कोई आमी (दुनिया में) झाँक ले और उसका कंगन ज़ाहिर हो जाए तो वह सूरज की रोशनी को बेनूर कर दे, जैसे सूरज सितारों की रोशनी को बेनूर कर देता है।

(निहायत इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 442)

औरतों से ज़्यादा मर्दों को ज़ेवर ख़ूबसूरत लगेंगे

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत के ज़ेवर औरतों के मुक़ाबले मर्दों को ज़्यादा ख़ूबसूरत लगेंगे।

(निहायत इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 442)

ख़ोलदार मोती का महल

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन कैस अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः (जन्नती के लिए) एक ख़ेमा ख़ोलदार मोती का होगा जिसकी लम्बाई साठ मील होगी, उसके हर कोने में मोमिन की कोई न कोई बीवी होगी जिसको दूसरी बीवियाँ (और ख़िदमतगार लड़के और नौकरानियाँ) नहीं दिखती होंगी। (मुस्नद अहमद जिल्द 4 पेज 400)

फ़ायदाः यह एक ही मोती से तैयार किया हुआ महल होगा जिसमें जन्नती के लिए ऐश व आराम का सामान मयस्सर होगा।

जन्नत का मोती दुनिया में देखा

वाक़िआः बनी इस्राईल में एक औरत बादशाह की बेटी थी, और बड़ी इबादत करने वाली थी। एक शहज़ादे ने उससे मंगनी की दरख़्वास्त की। उसने निकाह करने से इनकार कर दिया और अपनी बाँदी से कहा मेरे लिए एक आबिद-ज़ाहिद नेक आदमी की तलाश करो जो ग़रीब हो। वह बाँदी गई और एक ग़रीब आबिद-ज़ाहिद मिला उसे ले आई। उससे पूछा कि अगर तुम मुझसे निकाह करना चाहो तो मैं तुम्हारे साथ क़ाज़ी के यहाँ चलूँ ताकि वह हमारा निकाह करा दे। उस ग़रीब ने मन्ज़ूर कर लिया और निकाह हो गया। फिर उससे कहा मुझे अपने घर ले चल। उसने कहा ख़ुदा की क़सम! इस कम्बल के सिवा कोई चीज़ मेरी मिल्कियत में नहीं। इसी को रात के वक़्त ओढ़ता हूँ और दिन के वक़्त पहनता हूँ। उसने कहा मैं इस हालत पर तेरे साथ राज़ी हूँ। चुनाँचे वह ग़रीब उसको अपने घर ले गया।

वह दिन भर मेहनत करता था और रात को इतना पैदा कर लाता था जिससे इफ़्तार हो जाए। वे दिन को नहीं खाती थीं बल्कि रोज़ा रखती थीं। जब वह उनके पास कोई चीज़ लाता तो इफ़्तार करती थीं और हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करती थीं। और कहती थीं अब मैं इबादत के वास्ते फ़ारिग़ हुई।

एक दिन उस ग़रीब को कोई चीज़ न मिली जो उनके वास्ते ले जाता। यह बात उस पर भारी गुज़री और बहुत घबराया और अपने दिल में कहने लगा कि मेरी बीवी रोज़ेदार घर में बैठी इन्तिज़ार कर रही है कि मैं कुछ ले जाऊँगा जिससे वह इफ़्तार करेगी। यह सोचकर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़कर दुआ माँगी ऐ अल्लाह! आप जानते हैं कि मैं दुनिया के वास्ते कुछ नहीं चाहता सिर्फ़ अपनी नेक बीवी की रज़ामन्दी के वास्ते माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने पास से रिज़्क़ अता फ़रमा। तू ही सबसे अच्छा राज़िक़ है। उसी वक़्त आसमान से एक मोती गिर पड़ा। उसे लेकर अपनी बीवी के पास गये। जब उन्होंने उसे देखा तो डर गईं और कहा यह मोती तुम कहा से लाए हो? इस जैसा तो मैंने कभी अपने घराने में भी नहीं देखा। कहा आज मैंने रिज़्क़ के लिए मेहनत की, बहुत कोशिश की, लेकिन कहीं से न मिली तो मैंने कहा मेरी बीवी घर में बैठी इन्तिज़ार कर रही है कि मैं कुछ ले जाऊँ जिससे वह इफ़्तार करे और वह शहज़ादी है, मैं उसके पास ख़ाली हाथ नहीं जा सकता। मैंने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह तआला ने यह मोती अता फ़रमाया और आसमान से उतारा।

कहा उसी जगह जाओ जहाँ तुमने अल्लाह से दुआ की थी और उससे रो-रोकर दुआ करो और कहो कि ऐ अल्लाह! ऐ मेरे मालिक! ऐ मेरे मौला! अगर यह चीज़ तूने दुनिया में हमारी रोज़ी बनाकर उतारी है तो इसमें हमें बरकत दे। और अगर हमारी आख़िरत के ज़ख़ीरे से अता फ़रमाई है तो इसे उठा ले। उस शख़्स ने ऐसा ही किया तो मोती उठा लिया गया। उस शख़्स ने वापस आकर उसे उठा लिये जाने का क़िस्सा बयान किया तो उसने कहा शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें वह ज़ख़ीरा दिखा दिया जो हमारे वास्ते आख़िरत में जमा किया गया है। फिर कहा मैं इस फ़ानी दुनिया की किसी चीज़ पर क़ादिर न होने से परवाह नहीं करती और अल्लाह का शुक्र अदा करने लगीं (रौज़ुर्रयाहीन)

जन्नत की अंगूठियाँ

हदीसः जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला जन्नत वालों को सोने की अंगूठियाँ अता फ़रमाएँगे जिनको जन्नती पहनेंगे। यह जन्नतुल-ख़ुल्द की अंगूठियाँ होंगी। फिर अल्लाह तआला उनको मोती, याक़ूत और लुअ्लुअ् की अंगूठियाँ अता करेंगे। जब वे अपने परवर्दिगार की उसकी जन्नत दारुस्सलाम में ज़ियारत करेंगे। (बुस्तानुल् वाअिज़ीन पेज 202)

अक्सर नगीने अक़ीक़ के होंगे

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों के अक्सर नगीने अक़ीक़ के होंगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1970)

जन्नत के ज़ेवरों में बढ़ौतरी करने वाले नेक आमाल

कलाईयों में कंगन कहाँ तक पहुँचेंगे

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मोमिन की (कलाईयों में) ज़ेवर (कंगन) वहाँ तक पहुँचेंगे जहाँ तक वुज़ू का पानी (वुज़ू करते वक़्त) पहुँचेगा।

(निसाई शरीफ़ हदीस 109)

हदीसः हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 अपने घर वालों को ज़ेवर और रेशम पहनने से मना किया करते थे और फ़रमाते थेः

तर्जुमाः अगर तुम जन्नत का ज़ेवर और उसके रेशम को चाहते हो तो इनको दुनिया में इस्तेमाल न करो। (मुस्नद अहमद जिल्द 4 पेज 145)

फ़ायदाः रेशम और सोना-चाँदी अगरचे औरतों के लिए पहनना जायज़ है मगर जन्नत में उनकी कमी का कारण है, इसलिए औरतों को उनका छोड़ देना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है, और जन्नत में बहुत ज़्यादा रेशम और सोने-चाँदी के दिये जाने का ज़रिया है।

जन्नत की नेमतें

जन्नत में नींद नहीं होगी

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल0 से सवाल किया गया कि क्या जन्नती लोग सोएँगे भी? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः नींद मौत की भाई है, इसलिए जन्नत वाले नहीं सोएँगे।

(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 7 पेज 280)

अगर किसी का दिल जन्नत में नींद लेने को चाहे तो?

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! नींद एक ऐसी नेमत है जिसने दुनिया में हमारी आँखे ठंडी होती हैं, तो क्या जन्नत में नींद भी होगी? आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः नहीं! (नींद नहीं आएगी) क्योंकि नींद मौत की साथी है और जन्नत में मौत नहीं होगी (बल्कि) हमें जन्नत में न तो कोई तकलीफ़ पहुँचेगी और न उसमें हमें कोई ख़स्तगी पहुँचेगी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2196)

जन्नत की नेमत तलब करने का लफ़्ज़, फ़रिश्तों का स्वागती जुमला और जन्नत वालों का शुक्र अदा करने का कलिमा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उनका रब उनको उनके मोमिन होने की वजह से उनके मक़सद (यानी जन्नत) तक पहुँचाएगा। उनके (ठिकाने के) नीचे नहरें जारी होंगी नेमतों के बाग़ात में, (और) उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका सलाम जन्नत में 'अस्सलामु अलैकुम' होगा, और उनकी आख़िरी बात 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन' होगी

(सूरः यूनुस आयत 9-10)

हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इस आयत में जन्नत में पहुँचने के बाद जन्नत वालों के कुछ ख़ास हालात बतलाए हैं। अव्वल यह कि 'दअ्वाहुम फ़ीहा सुब्हानकल्लाहुम्-म' इसमें लफ़्ज़ 'दअ्वा' अपने मशहूर मायने में नहीं जो कोई मुद्दई अपने मुक़ाबिल के मुक़ाबले में किया करता है बल्कि इस जगह लफ़्ज़ 'दअ्वा' दुआ के मायने में है। मायने यह हैं कि जन्नत वालों की दुआ जन्नत में पहुँचने के बाद यह होगी कि वे सुब्हान-कल्लाहुम्-म कहते रहेंगे, यानी अल्लाह तआला की तस्बीह किया करेंगे।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि दुआ तो आम तौर से किसी चीज़ की दरख़्वास्त और किसी मक़सद के तलब करने को कहा जाता है। 'सुब्हानकल्लाहुम्-म न कोई दरख़्वास्त है न कोई तलब, इसको दुआ किस हैसियत से कहा गया?

जवाब यह है कि इस कलिमे से बतलाना यह मक़सद है कि जन्नत वालों को जन्नत में हर राहत हर तलब मनमाने अन्दाज़ से ख़ुद-बख़ुद हासिल होगी, किसी चीज़ को माँगने और दरख़्वास्त करने की ज़रूरत ही न होगी। इसलिए दरख़्वास्त व तलब और दुआ के मशहूर तरीक़े के क़ायम-मक़ाम उनकी ज़बानों पर सिर्फ़ अल्लाह की तस्बीह होगी और वे भी दुनिया की तरह कोई इबादत का फ़रीज़ा अदा करने के लिए नहीं बल्कि वे तस्बीह के इस कलिमें से लज़्ज़त महसूस करेंगे और अपनी ख़ुशी से 'सुब्हानकल्लाहुम्-म कहा करेंगे। इसके अलावा एक 'हदीसे क़ुदसी' में है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया जो बन्दा मेरी तारीफ़ व प्रशंसा में हर वक़्त लगा रहे यहाँ तक कि उसको अपने मतलब की दुआ माँगने की भी फ़ुरसत न रहे तो मैं उसको तमाम माँगने वालों से भी बेहतर चीज़ दूँगा, यानी बेमाँगे उसके सब काम पूरे करूँगा। इस हैसियत से भी लफ़्ज़ 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' को दुआ कह सकते हैं।

इस मायने के एतिबार से सही बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूले करीम सल्ल0 को जब कोई तकलीफ़ व बेचैनी पेश आती तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे।

ला इला-ह इल्लल्लाहुल् अज़ीमुल् हलीमु ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अर्शिल् अज़ीमि ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बिल् अर्ज़ि व रब्बिल् अर्शिल् करीम।

और इमाम तबरी ने फ़रमाया कि पहले ज़माने के बुज़ुर्ग इसको 'दुआ-ए-कर्ब' (परेशानी के वक़्त की दुआ) कहा करते थे और मुसीबत और परेशानी के वक़्त ये कलिमात पढ़कर दुआ माँगा करते थे।

(तफ़सीर क़ुरतबी)

और इमाम इब्ने जरीर, इब्ने मुन्ज़िर वग़ैरह ने एक यह रिवायत भी नक़ल की है कि जन्नत वालों को जब किसी चीज़ की ज़रूरत और ख़्वाहिश होगी तो वे 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' कहेंगे, यह सुनते ही फ़रिश्ते उनके मतलब की चीज़ हाज़िर कर देंगे। गोया कि कलिमा 'सुब्हान-कल्लाहुम्-म' उनकी एक ख़ास इस्तिलाह होगी जिसके ज़रिये वे अपनी इच्छा ज़ाहिर करेंगे और फ़रिश्ते हर बार उसको पूरा कर देंगे।

(रूहुल-मआनी व क़ुरतबी)

इस लिहाज़ से भी कलिमा 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' को दुआ कहा जा सकता है।

जन्नत वालों का दूसरा हाल यह बतलाया कि 'तहिय्यतुहुम फ़ीहा सलाम' 'तहिय्या' उर्फ़ में उस कलिमे को कहा जाता है जिसके ज़रिये किसी आने वाले या मिलने वाले शख़्स का स्वागत किया जाता है, जैसे सलाम या ख़ुश-आमदीद वग़ैरह। इस आयत ने बतलाया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से या फ़रिश्तों की तरफ़ से जन्नत वालों का 'तहिय्या' लफ़्ज़ सलाम से होगा, यानी यह ख़ुशख़बरी कि तुम हर तकलीफ़ और नागवार चीज़ से सलामत रहोगे। यह सलाम ख़ुद हक़ तआला की तरफ़ से भी हो सकता है जैसे सूरः 'यासीन' में है 'सलामुन क़ौलम् मिर्रब्बिर्रहीम' और फ़रिश्तों की तरफ़ से भी हो सकता है जैसे दूसरी जगह इरशाद है: "फ़रिश्ते जन्नत वालों के पास हर दरवाज़े से सलामुन् अलैकुम कहते हुए दाख़िल होंगे। और इन दोनों बातों में कोई टकराव नहीं कि किसी वक़्त बराहे रास्त अल्लाह तआला का सलाम पहुँचे और

किसी वक़्त फ़रिश्तों की तरफ़ से। और सलाम का लफ़्ज़ हालाँकि दुनिया में दुआ है लेकिन जन्नत में पहुँचकर तो हर मतलब हासिल होगा, वहाँ यह लफ़्ज़ दुआ के बजाए ख़ुशख़बरी का कलिमा होगा। (रूहुल्-मआनी)

तीसरा हाल जन्नत वालों का यह बतलाया कि उनकी आख़िरी बात 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन' होगी यानी उनकी आख़िरी दुआ अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलामीन होगी।

जन्नत वालों की 'मारिफ़त ख़ुदावन्दी' में दर्जात का अन्दाज़ा

मतलब यह है कि जन्नत वालों को जन्नत में पहुँचने के बाद अल्लाह तआला की मारिफ़त में तरक़्क़ी नसीब होगी जैसा कि हज़रत शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने एक रिसाले में फ़रमाया कि जन्नत में पहुँचकर आम जन्नती को इल्म व मारिफ़त का वह मुक़ाम हासिल हो जाएगा जो दुनिया में आलिमों का है, और आलिमों को वह मुक़ाम हासिल हो जाएगा जो यहाँ अम्बिया का है, और अम्बिया को वह मुक़ाम हासिल हो जाएगा जो दुनिया में नबी करीम तमाम अम्बिया के सरदार मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 को हासिल है, और नबी करीम सल्ल0 को वहाँ अल्लाह की नज़दीकी का सबसे ऊँचा और क़रीबी मुक़ाम हासिल होगा। और मुमकिन है कि उसी मुक़ाम का नाम 'मक़ामे महमूद' हो, जिसके लिए अज़ान की दुआ में आपने दुआ करने की तलक़ीन फ़रमाई है।

ख़ुलासा यह कि जन्नत वालों की शुरू की दुआ 'सुब्हा-न कल्लाहुम्-म' और आख़िरी दुआ 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन' होगी। इसमें अल्लाह तआला की सिफ़तों की दो क़िस्मों की तरफ़ इशारा है। एक जलाल की सिफ़तें जिनमें अल्लाह तआला के हर ऐब और हर बुराई से पाक होने का ज़िक्र है। दूसरी इकराम व सम्मान की सिफ़तें जिनमें उसकी बुज़ुर्गी व बरतरी और आला कमाल का ज़िक्र है। क़ुरआन करीम की आयत 'तबारकस्मु रब्बि-क ज़िल-जलालि वल् इकराम' में इन दो क़िस्मों की तरफ़ इशारा किया गया है।

ग़ौर करने से मालूम होगा कि अल्लाह तआला की पाकी बयान

करना अल्लाह तआला की सिफ़तों में से है, और अल्लाह का तारीफ़ व प्रशंसा का हक़दार होना इक्राम व सम्मान की सिफ़तों में से है। और तबई तरतीब के मुताबिक़ जलाल की सिफ़तें इक्राम की सिफ़तों से मुक़द्दम हैं, इसलिए जन्नत वाले शुरू में जलाल की सिफ़तों को सुब्हानकल्लाहुम्-म के लफ़्ज़ से बयान करेंगे और आख़िर में इक्राम व सम्मान की सिफ़तों को अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन के लफ़्ज़ से ज़िक्र करेंगे, यही उनका रात-दिन का मशग़ला होगा।

और तीनों हालात की तरतीबे तबई यह है कि जन्नती जब सुब्हान-कल्लाहुम्-म कहेंगे तो उसके जवाब में उनको हक़ तआला की तरफ़ से सलाम पहुँचेगा, उसके नतीजे में वे अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलामीन कहेंगे। (रूहुल-मआनी) (मआरिफ़ुल कुरआन जिल्द 4 पेज 511)

जन्नत में सब कुछ मिलेगा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा (हक़ीक़ी) रब (सिर्फ़) अल्लाह है। (मतलब यह कि शिर्क छोड़ दिया और तौहीद इख़्तियार कर ली) उनपर (अल्लाह की तरफ़ से रहमत व ख़ुशख़बरी के) फ़रिश्ते उतरेंगे, अव्वल मौत के वक़्त फिर क़ब्र में, फिर क़यामत में। ये कहेंगे कि तुम (आख़िरत के हालात से) कोई अन्देशा न करो और न (दुनिया छोड़ने पर) रंज करो, और (बल्कि) तुम जन्नत के मिलने पर ख़ुश रहो जिसका तुमसे वायदा किया जाया करता था। हम तुम्हारे साथी थे दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी साथी रहेंगे। और तुम्हारे लिए उस (जन्नत) में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है। और साथ ही तुम्हारे लिए उसमें जो माँगोगे मौजूद है। यानी जो कुछ ज़बान से माँगोगे वह तो मिलेगा ही बल्कि माँगने की भी ज़रूरत न होगी। जिस चीज़ को तुम्हारा दिल चाहेगा मौजूद होगी, यह बतौर मेहमानी के होगा ग़फ़ूरुर्रहीम की तरफ़ से। (यानी ये नेमतें इक्राम व सम्मान के साथ इस तरह मिलेंगी जिस तरह मेहमानों को मिलती हैं)।

(सूरः हा-मीम सज्दा आयत 30-32)

नेमत तलब करने का कलिमा

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

तर्जुमाः जन्नतियों की ख़्वाहिश (की तलब का जुमला) जन्नत में सुब्हानकल्लाहुम्-म होगा, और हासिल होने के बाद कहेंगे 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन' सब ख़ूबियाँ अल्लाह तआला के लिए हैं जो परवर्दिगार है सब जहानों का। (सूरः यूनुस आयत 10)

हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना रहमतुल्लाहि अलैहि इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि जब उनको किसी चीज़ की इच्छा होगी तो वे कहेंगे 'सुब्हानकल्लाहुम्-म' (ऐ अल्लाह आप पाक हैं) तो उनके पास उनकी इच्छानुसार जन्नत की नेमत पहुँच जाएगी।

ख़्वाहिश करने से दरख़्त और नहरें भी अपनी जगह से फिर जाएँगी

हज़रत अता बिन मैसरा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नतियों में से जो जन्नती अपने महल से निकलेगा और किसी पेड़ या नहर को देखकर यह चाहेगा कि उसको उस जगह नहीं होना चाहिये। अभी उसने यह बात ज़बान से निकाली न होगी बल्कि दिल ही में होगी मगर अल्लाह तआला उस (पेड़ या नहर वग़ैरह) को वहीं मुन्तक़िल (स्थान्तरित) कर देंगे जहाँ वह पसन्द करता होगा।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 127)

हर जन्नती की हर तलब पूरी होगी

हदीसः हज़रत बरीदा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक सहाबी जनाब नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं घोड़े को पसन्द करता हूँ क्या जन्नत में घोड़ा होगा? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब तुम्हें अल्लाह तआला जन्नत में दाख़िल कर देंगे तो

अगर तू सुर्ख़ याक़ूत (याक़ूत मोती) के घोड़े पर सवार होना चाहेगा तो तू (उसपर) सवार हो सकेगा। जन्नत में जहाँ-जहाँ चाहेगा वह तुम्हें लेकर उड़ता फिरेगा। फिर आपके पास एक और सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या जन्नत में ऊँट होगा? आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः खुदा की क़सम! अगर अल्लाह ने आपको जन्नत में दाख़िल फ़रमाया तो आपके लिए वह सब कुछ होगा जिसको तेरा जी चाहेगा, और तेरी आँखें लज़्ज़त उठाएँगी। (जौलात फ़ी रियाज़िल् जन्नत पेज 25)

जन्नत के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से पसन्दीदा तोहफ़ा

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साबित रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, जन्नती मर्द के पास एक फ़रिश्ता अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई तोहफ़ा लेकर हाज़िर होगा और उसके हाथ की उंगलियों में सौ सत्तर पोशाके होंगी। यह जन्नत (उस तोहफ़े को वसूल करते हुए) कहेगा, तुम मेरे परवर्दिगार की तरफ़ से मेरे लिए सबसे ज़्यादा पसन्दीदा तोहफ़ा लेकर आए हो। वह फ़रिश्ता अर्ज़ करेगा क्या आपको यह पसन्द आ रहा है? जन्नती कहेगा जी हाँ! तो फ़रिश्ता अपने क़रीबी दरख़्त से कहेगा ऐ दरख़्त! इस जन्नती का जो दिल करे इसकी मुराद को पूरा कर दे। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 276)

जन्नत की नेमतें दुनिया से मिलती-जुलती होंगी? कोई नेमत दुनिया की नेमत की तरह न होगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में कोई चीज़ दुनिया की चीज़ों की तरह न होगी, सिर्फ़ नाम मिलते-जुलते होंगे। (तफ़सीर इब्ने जरीर तबरी जिल्द 1 पेज 174)

जन्नत की कोई चीज़ एक-दूसरे से मिलती-जुलती न होगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया गया है कि

जन्नत में कोई चीज़ किसी दूसरी चीज़ की तरह न होगी।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 125)

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत की चीज़ें देखने में एक-दूसरे से मिलती-जुलती होंगी मगर ज़ायके (स्वाद) में अलग होंगी। (तफ़सीरे तबरी जिल्द 1 पेज 173)

देखने में पहले जैसी, लज़्ज़त में नई

हज़रत ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का दोस्त अपने महल में (नेमतों में) मसरूफ़ (व्यस्त होगा कि उसके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ासिद (दूत) हाज़िर होगा और इज़ाज़त माँगकर देने वाले ख़ादिम से कहेगा कि अल्लाह तआला के क़ासिद के लिए अल्लाह तआला के दोस्त से इजाज़त लेकर आओ। (जाकर) अर्ज़ करेगा ऐ ख़ुदा के दोस्त! यह अल्लाह तआला के क़ासिद आए हैं (चुनाँचे वह इजाज़त के साथ) जन्नती के सामने एक तोहफ़ा पेश करेगा अर्ज़ करेगा ऐ अल्लाह के वली! आपका रब आपको सलाम कहता है और हुक्म फ़रमाता है कि आप इसे खा लें। यह तोहफ़ा उस खाने की तरह होगा जिसको जन्नती ने अभी खाया होगा इसलिए वह कहेगा मैंने अभी खाया है। वह कहेगा आपका रब आपको हुक्म देता है कि आप इसे खाइए। वह जब उसको खाएगा तो उसमें जन्नत के हर फल की लज़्ज़त से लुत्फ़-अन्दोज़ (आनन्दित) होगा। इसी के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमाः यानी उनको मिलती-जुलती नेमत दी जाएगी।

(सूरः ब-क़रह आयत 25) (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 200)

फ़रिश्ते सलाम करेंगे

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों में से जिसके लिए पसन्द करेंगे उनसे फ़रमाएँगे कि आप जन्नतियों के पास जाएँ और उनको

सलाम करें। वे फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे हम आपके आसमान पर रहने वाले और आपकी मख़्लूक़ में से आपके पड़ोसी हैं। आप फिर भी हमें हुक्म देते हैं कि हम उनके पास जाकर उनको सलाम पेश करें? अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि ये मेरे वे बन्दे हैं जिन्होंने बन्दगी की और मेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया था। हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि फिर उस वक़्त ये फ़रिश्ते उनके पास आएँगे और उनके सामने हर दरवाज़े से दाख़िल होकर कहेंगे:

तर्जुमा: तुम पर सलाम हो उसकी बदौलत कि आपने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में सब्र किया। अपनी नफ़्स की ख़्वाहिश की आसमानियाँ और दुनियावी इच्छाओं को कन्ट्रोल में रखा पस इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत नेक है। (हाकिम जिल्द 2 पे70)

फ़रिश्ते इजाज़त लेकर आ सकेंगे

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि क़ुरआन की आयत 'व इज़ा रऐ-ता सम्-म रऐ-ता नईमंव्-मुल कबीरा' की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि बहुत बड़ी सलतनत व बादशाहत होगी यहाँ तक कि उनके पास फ़रिश्ते भी दाख़िल नहीं हो सकेंगे मगर इजाज़त लेकर।

(तफ़सीर इब्ने जरीर जिल्द 29 पेज 136)

फ़ायदा: ऊपर ज़िक्र हुई आयत की यही तफ़सीर हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि से भी नक़ल की गयी है।

(तफ़सीर इब्ने जरीर जिल्द 29 119)

हसीन व ख़ूबसूरत आवाज़ में नग़्मों का गायन

उम्दा आवाज़ के साथ अल्लाह का ज़िक्र और उसका सुनना

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे आमाल किये तो वे जन्नत में मस्त (ख़ुश) होंगे।(सूरः रूम आयत 15)

हज़रत यह्याबिन अबी कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि 'जन्नत में मस्त होने' की तफ़सीर "जन्नत में सिमाअ" (यानी सुनने) से करते हैं।(दुर्रे

मन्सूर जिल्द 5 पेज 158)

हसीन व दिलकश आवाज़ में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की हम्द-सराई सुनेंगे

कुरआन पाक की आयत "लहू इन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब" यानी हज़रत दाऊद के लिए हमारे पास कुर्ब (निकटता) का मर्तबा (दरजा और रुतबा) है, और लौट जाने की बेहतरीन जगह है।

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अर्श के पाये के पास खड़ा किया जाएगा और उनको हुक्म दिया जाएगा कि ऐ दाऊद उस हसीन और नर्म व नाज़ुक आवाज़ में मेरी बुज़ुर्गी (बड़ाई) बयान करो जिस तरह से दुनिया में बयान किया करते वह अर्ज़ करेंगे ऐ रब! कैसे तारीफ़ बयान करूँ आपने तो मेरी आवाज़ की उम्दगी और ख़ूबसूरती वापस ले ली है। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मैं उसको आज फिर वापस करता हूँ। चुनाँचे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ऐसी-ऐसी आवाज़ के साथ हम्द (यानी अल्लाह की तारीफ़) अदा करेंगे जन्नत की नेमतों को भी भुला देंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2094)।

नोटः हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जन्नत में भी ख़ूबसूरत आवाज़ में अल्लाह तआला की तस्बीह (पाकी) तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ना) बजा लाएँगे। तफ़सील के लिए अल्लाह तआला के दीदार का बाब पढ़े।

लड़कियों की आवाज़ में अल्लाह की तारीफ़ का तराना

हज़रतत सईद बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अनहु ने फ़रमाया तुम हम से सवाल करो क्योंकि तुम हम से किसी ऐसी चीज़ का सवाल नहीं करोगे मगर हमने उसके बारे में पूछ रखा है। एक शख़्स ने अर्ज़ कियाः क्या जन्नत में गाना भी होगा? आपने फ़रमाया कस्तूरी के कूज़े (प्याले, डोंगे) होंगे जिनके पास लड़कियाँ होंगी जो अल्लाह तआला की ऐसी आवाज़ में

बुज़ुर्गी (बड़ाई और तारीफ़) बयान करेंगी कि उन जैसी कानों ने कभी नहीं सुनी होगी।) (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2091)

दरख़्त के तरन्नुम के साथ अल्लाह की पाकी और बुज़ुर्गी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या जन्नत में गीत होगा? क्योंकि मैं गीत को पसन्द करता हूँ। आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह तआला जन्नत के पेड़ की तरफ़ पैग़ाम भेजेंगे कि मेरे उन बन्दों को जिन्हों ने अपने आपको बाजों और गानों के बजाए (दुनिया में) मेरे ज़िक्र के साथ मसरूफ़ रखा, तो उनको ऐसी आवाज़ों में उनको ऐसे तरन्नुम में तस्बीह व तक़दीस सुना कि मख़्लूक़ात ने ऐसी कभी न सुनी हों। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2097)

दरख़्त से ख़ूबसूरत आवाज़ कैसे पैदा होगी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक दरख़्त जिसके तने सोने के होंगे और शाख़ें ज़बर्जद की और लुअ्लुअ् की होंगी, उस पर हवा चलेगी। वे (शाख़ें) हरकत में आएँगी, (उसको) सुनने वाले उससे ज़्यादा मज़ेदार कोई आवाज़ नहीं सुनेंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2098)

क़यामत के दिन फ़रिश्तों से तराने सुनने वाले जन्नती

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब क़यामत का दिन होगा तो एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आवाज़ देगा, वे हज़रत कहाँ हैं जो अपने आपको खेल और शैतान के बाजों से बचाते थे, उनको कस्तूरी के बाग़ों में बिठाओ। फिर अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाएँगे कि तुम उन हज़राततत को मेरी हम्द व सना (तारीफ़ व प्रशंसा) सुनाओ और उनको बता दो कि उन पर किसी तरह का ख़ौफ़ नहीं और किसी क़िस्म का रंज नहीं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2099)

दुनिया में गाने-बाजे सुनने वाले जन्नत में फ़रिश्तों से क़ुरआन नहीं सुन सकेंगे

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स गाने की आवाज़ सुनेगा उसको रूहानियों की उम्दा आवाज़ सुनने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! रूहानी कौन है? आपने इरशाद फरमयाः (ये) जन्नत वालों (के सामने) क़ुरआन पढ़ने वाले (फ़रिशते) हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2101)

गाना गाने वाले, फ़रिश्तों के तरानों से मेहरूम

ताबिई मुफ़स्सिर हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा कि वे लोग कहाँ हैं जो अपनी आवाज़ों को और अपने कानों को फ़ुज़ूल बातों और शैतान के बाज़ों से महफ़ूज़ रखते थे?

फ़रमाया कि फिर अल्लाह तआला उन हज़रात को कस्तूरी के बाग़ में रुख़्सत कर देंगे और फ़रिश्तों से फ़रमाएँगे कि तुम मेरे (इन) बन्दों के सामने मेरी तारीफ़ और मेरी बड़ाई बयान करो और उनको यह ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन पर कोई ख़ौफ़ की बात नहीं, और न ही कोई ग़म की बात है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2100)

तमाम क़िस्म के नग़मों की हसीन आवाज़ें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक पेड़ है जो तेज़-रफ़्तार सवार के उसके साये में सौ साल चलने के बराबर लम्बा है। जन्नत वाले और बालाख़ानों वग़ैरह वाले बाहर निकलकर उसके साये में बातें किया करेंगे। उनमें से कोई जन्नती दुनिया के गाने बाजे को याद करेगा तो अल्लाह तआला जन्नत से एक हवा को रवाना करेंगे जो उस पेड़ से दुनिया की हर तरह की सुरीली आवाज़ों और नग़मों की आवाज़ को पैदा करेगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2103)

हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम की सबसे ख़ूबसूरत आवाज़

इमाम औज़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मुझे यह बात पहुँची है कि मख़्लूके ख़ुदावन्दी में हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम से ज़्यादा हसीन और दिलकश आवाज़ का मालिक कोई (फ़रिश्ता) नहीं। अल्लाह तआला उनको हुक्म फ़रमाते हैं और ये ऐसी बेहतरीन आवाज़ में पढ़ना शुरू करते हैं कि आसमानों में मौजूद नमाज़ पढ़ने वाले फ़रिश्तों की नमाज़ को भी काट देते हैं,जब तक अल्लाह तआला चाहते हैं वह इस हालत में अपनी आवाज़ का जादू बिखेरते रहते हैं। फिर अल्लाह फ़रमाते हैं मेरे ग़लबे की क़सम! अगर (ग़ैरों की) इबादत करने वाले मेरी बड़ाई की क़द्र व मर्तबा का इल्म रखते होते तो वे मेरे ग़ैर की इबादत कभी न करते। (हादिल अरवाह पेज 326)

फ़रिश्तों का अल्लाह की तारीफ़ व प्रशंसा में गीत गाना

हज़रत शहर बिन होशब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं अल्लाह तआला (क़यामत के दिन और जन्नत में) अपने फ़रिश्तों से फ़रमाएँगे मेरे नेक बन्दे दुनिया में ख़ूबसूरत आवाज़ को पसन्द करते थे लेकिन मेरी ख़ातिर उन्होंने उसका सुनना छोड़ दिया था। तुम बेहतरीन और बहुत ही ख़ुबसूरत आवाज़ में मेरे बन्दों को (तारीफ़ व प्रशंसा वग़ैरह) सुनाओ। इसलिए वे कलिमा तय्यिबा, तस्बीह और अल्लाह की बड़ाई को ऐसी हसीन आवाज़ों में पेश करेंगे जिनको उन्होंने कभी नहीं सुना होगा।

(हादिल अरवाह पेज 236)

एक पेड़ का दिलकश तरन्नुम

इमाम औज़ाई हज़रत अब्दा बिन अबी लुबाबा रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं कि जन्नतत में एक पेड़ है जिसके फल ज़बरजद याक़ूत और लुअ्लुअ् के हैं। अल्लाह तआला हवा को चलाएँगे तो वह पेड़ हरकत में आएगा और उसकी ऐसी हसीन आवाज़े सुनने को मिलेंगी

कि उस से ज़्यादा लज़ीज़ कोई आवाज़ नहीं सुनी होगी।

(हादिल अरवाह पेज 327)

फ़ायदाः ऊपर ज़िक्र हुई रिवायतों में हज़रतत दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ को और हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम की आवाज़ को सबसे हसीन क़रार दिया गया है। उनमें से हर एक की आवाज़ को अपने-अपने दर्जे में इन्तिहाई ख़ूबसूरती हासिल होगी। इसके अलावा हूरें और दुनिया की औरतें भी हसीन व ख़ूबसूरत अन्दाज़ से गीत गायेंगी, उनका ज़िक्र हूरों के बाब (अध्याय) में आ रहा है।

जन्नत में सिर्फ़ ज़िक्र की इबादत होगी

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले जन्नत में खायें-पियेंगे मगर न तो नाक सिनकेंगे, न पाख़ाना करेंगे न पेशाब करेंगे बल्कि उनका खाना डकार (की शक्ल में) और (पानी) कस्तूरी के पसीने में बदल जाएगा (और) उनको अल्लाह की पाकी और तारीफ़ इस तरह से ज़ेहन में डाली जाएगी जैसे (जानदारों को) साँस के ख़ूद-बख़ुद लेने का शऊर जेहन में डाल दिया जाता है। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2835)

फ़ायदाः यानी उन हज़रात की तस्बीह और तहमीद (अल्लाह की पाकी और तारीफ़) साँसों से अदा होगी जिस तरह से तुम ख़ुद-बख़ुद बिना इरादे और बग़ैर तकल्लुफ़ के साँस लेते हो। (मुस्लि हदीस 2835)

जन्नत की ख़ूबसूरती में बढ़ोतरी होती रहेगी

हज़रत कअब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला जब भी जन्नत की तरफ़ फ़रमाते हैं तो हुक्म देते हैं कि तू अपने रहने वालों के लिए और पाकीज़ा और उम्दा हो जा, तो वह ख़ूबसूरती और पाकीज़गी में और उम्दा हो जाती है यहाँ तक कि जन्नती उसमें दाख़िल हो जाएँ। (हादिल अरवाह पेज 488)

और जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तब भी उसके हुस्न

(ख़ूबसूरती) में इज़ाफ़ा होता रहेगा जैसा कि आप इस किताब की अनेक जगहों में पढ़ेंगे।

जन्नती कुरआन पढ़ेंगे

सूरः तॉहा और सूरः यासीन की तिलावत करेंगे

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सिवाए सूरः तॉहा और सूरः यासीन के बाक़ी तमाम कुरआन पाक जन्नत वालों से उठा लिया जाएगा। (वे सिर्फ़ सूरः तॉहा और सूरः यासीन की तिलावत कर सकेंगे)।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 3 पेज 271)

यह हदीस सनद के लिहाज से बहुत ही कमज़ोर है, मन-घड़त हो तो कुछ बड़ी बात नहीं क्योंकि इसमें एक रिवायत करने वाले बशर बिन उबैदुद्दारासी नाम का है, इस पर मुहद्दिसीन ने बहुत जिरह की है, इसलिए सिवाए सूरः तॉहा और सूरः यासीन के बाक़ी कुरआन पाक का उठा लिया जाना सही मालूम नहीं होता क्योंकि कुरआन पाक अल्लाह तआला का कलाम है जो आलिमों, क़ारियों और हाफ़िज़ों और दूसरे मुसलमानों को अल्लाह तआला ने दुनिया में बतौर नेमते-कामिला के अता फ़रमाया है। जन्नत में नेमतों की तकमील तो हो सकती है मगर नेमतों को छीना नहीं जा सकता, इसलिए मोमिन के पास कुरआने करीम की नेमत मुकम्मल तौर पर मौजूद होगी।(वल्लाहु अअ्लम)

जन्नत वालों को सिर्फ़ एक हसरत होगी

हदीस हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों को किसी तरह की हसरत न होगी मगर उस घड़ी पर वे हसरत करते रहेंगे जो उनको (दुनिया में) हासिल हुई मगर उसमें उन्होंने अल्लाह को याद नहीं किया था। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2192)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो क़ौम किसी मजलिस में बैठती है लेकिन उसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करती और जनाब नबी करीम सल्ल0 पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजती तो यह (मजलिस) क़यामत के दिन उन पर हसरत की वजह बनेगी (कि हाए! अगर उस मजलिस में ज़िक्र या दुरूद शरीफ़ पढ़ते तो आज उसका भी इनाम मिलता) और अगर वे जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो (उसके सवाब पाने की) हसरत करेंगे।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2193)

जन्नत के महल और कोठियाँ

नबी, सिद्दीक़ और शहीद का महल

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक महल ऐसा है जिसमें सिवाए नबी या सिद्दीक़ या शहीद या आदिल (इन्साफ़ करने वाले) हुक्मराँ (बादशाह हाकिम) के कोई दाख़िल नहीं हो सकेगा। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जो अल्लाह चाहे, नुबुव्वत को तो अल्लाह ने (नबी करीम सल्ल0 पर) मुकम्मल कर दिया है और शहादत तो वह मेरे नसीब में कहाँ! (लेकिन हज़रत उमर शहीद भी हुए थे) और 'इमामे आदिल' (इन्साफ़ करने वाला हाकिम) बनना तो अगर अल्लाह ने चाहा। नबी करीम सल्ल0 ने दुआ फ़रमाईः

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! उमर को भी यह महल अता फ़रमा।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 13)

एक महल में चालीस महल

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः मोमिन का घर जन्नत में एक ही चमकदार मोती का होगा जिसमें चालीस महल होंगे, उनके दरमियान में एक पेड़ होगा जो लिबास उगाएगा और लुअ्लुअ् और मर्जान (मोतियों) से घिरा हुआ होगा।

महलों की तामीर की शान

हदीसः हज़रत लैस बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के महलों का ज़ाहिरी हिस्सा सुर्ख़ सोने का है और उनका अन्दरूनी हिस्सा सब्ज़ ज़बर्जद का है। उनके गुंबद याक़ूत के हैं और कंगरे मोती के हैं। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 14)

हर मोमिन के नौ आलीशान महल

हदीसः हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के महलों में से हर मुसलमान के लिए नौ महल होंगे। एक महल चाँदी का होगा जिसके कंगरे सोने के होंगे, एक महल सोने का होगा जिसके कंगरे चाँदी के होंगे। एक महल लुअ्लुअ् (मोती) का होगा जिसके कंगरे याक़ूत के होंगे। एक महल याक़ूत का होगा जिसके कंगरे लुअ्लुअ् के होंगे एक महल जबर्जद का होगा जिसके कंगरे याक़ूत के होंगे एक महल याक़ूत का होगा जिसके कंगरे ज़बर्जद के होंगे। एक महल ऐसे नूर का होगा कि आँखों को चका-चौंध कर दे। एक महल ऐसा होगा कि (दुनियावी) आँखें उसके नज़ारे की ताब नहीं रखतीं। और एक महल अर्श के रंग की तरह का है और हर महल आठ-आठ सौ किलो मीटर में है और उनमें से हर एक महल के हज़ार दरवाज़े के पट हैं। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 14)

महलों की सैर

हज़रत ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, जब जन्नती जन्नत में चले जाएँगे तो उनमें से हर मर्द को एक फ़रिश्ता मिलेगा जो उसके हाथ से पकड़कर चाँदी के एक महल के पास लाएगा जिसके गुंबद सोने के होंगे और उसके चारों तरफ़ पेड़ होंगे। उनके हर दो गुंबदों के दरमियान कई नहरें होंगी। एक ग़ुलाम उसको आवाज़ देगा, मुबारक हो ऐ हमारे आक़ा व मौला! फिर वह अपने महल में दाख़िल

होगा और जो कुछ अल्लाह तआला ने उसके लिए तैयार कर रखा है उसको देखेगा। फिर फ़रिश्ता उसका हाथ पकड़कर लुअ्लुअ् के महल पर लाएगा जिसके गुंबद याक़ूत के होंगे। उसके चारों तरफ़ पेड़ होंगे और नहरें हर दो गुंबद के बीच बहती होंगी। एक गुलाम उसको पुकार कर कहेगा मुबारक हो ऐ हमारे सरदार और आक़ा! फिर वह फ़रिश्ता उसको लेकर महल में दाख़िल होगा और जो कुछ अल्लाह तआला ने उसके लिए तैयार किया है उसको दिखलाएगा। फिर उसका हाथ पकड़कर ज़बरजद के महल पर लाएगा जिसके गुंबद याक़ूत के होंगे, उसके गिर्द दरख़्त और नहरें होंगी, हर दो गुंबदों के दरमियान एक फ़रिशता उसको आवाज़ देगा, मुबारक हो ऐ हमारे सरदार व मौला! फिर उसको महल में दाख़िल करेगा और जो कुछ अल्लाह तआला ने उसके लिए तैयार फ़रमाया है उसको दिखायेगा। इसी तरह एक महल से दूसरे महल की सैर कराई जाएगी यहाँ तक कि वह तमाम महलों की सैर करेगा। फिर उससे फ़रिश्ता कहेगा ऐ अल्लाह के दोस्त! ये तमाम महल जिनको आपने देखा है और चाँदी के महल से लेकर इस महल तक में तशरीफ़ ले गये थे, यह और जो कुछ इन महलों के दरमियान है सब आपके लिए है।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 14)

नबी करीम सल्ल0 के लिए एक हज़ार महल

अल्लाह तआला के इरशादः

तर्जुमाः और आख़िरत आपके लिए दुनिया से कहीं ज़्यादा बेहतर है। (पस वहाँ आपको इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगे) और जल्द ही अल्लाह तआला आपको (आख़िरत में बहुत ज़्यादा नेमतें) देगा, सो आप ख़ुश हो जायेंगे। (सूरतुज़्ज़ुहा आयत 5,6)

इसकी तफ़सीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला नबी करीम सल्ल0 को जन्नत में लुअ्लुअ् के एक हज़ार महल अता फ़रमाएँगे जिनकी मिट्टी कस्तूरी की होगी और हर महल के लिए ज़ेब व ज़ीनत (सजावट) और राहत व आराम की सब चीज़ें मौजूद होंगी। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 15)

चार अरब नव्वे करोड़ मकानात

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जन्नत में एक नहर है जिसके चारों तरफ़ बहुत-से क़िले और हरियालियाँ हैं। उसमें सत्तर हज़ार महल हैं। हर महल में सत्तर हज़ार मकान हैं। उसमें नबी या सिद्दीक़ या शहीद या इन्साफ़ करने वाले हाकिम के सिवा कोई दाख़िल न हो सकेगा। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 13)

नबी, सिद्दीक़, इन्साफ़ करने वाला हाकिम और 'मोहकम फ़ी-नफ़्सिही' के चार अरब नव्वे करोड़ कमरे

हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक महल है जिसमें सत्तर हज़ार घर हैं। हर घर में सत्तर हज़ार कमरे हैं। उनमें न तो कोई कटाव होगा न फ़टन होगी न जोड़ होगा। यह एक याक़ूत के सतून पर क़ायम होगा। उसमें नबी, सिद्दीक़, इन्साफ़ करने वाला बादशाह और 'मोहकम फ़ी-नफ़्सिही' उस कैदी को कहते हैं जो किसी इस्लाम के दुश्मन की क़ैद में हो। जिसको यह कहा जाए कि या तो तुम काफ़िर हो जाओ वरना क़त्ल कर दिये जाओगे, तो उसने क़त्ल हो जाना क़बूल किया मगर अल्लाह के साथ कुफ़्र न किया।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 13)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का महल

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में लुअ्लुअ् का एक महल है जिसमें न तो कोई फटन है और न (तामीर की) कोइ कमज़ोरी है। उसको अल्लाह तआला ने अपने ख़लील (दोस्त) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए तैयार फ़रमाया है। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 61)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का महल

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने ख़ुद को देखा कि जन्नत में दाख़िल हुआ हूँ और एक महल देखा जिसके सहन में एक लड़की मौजूद थी। मैंने पूछा यह महल किसका है? तो उन्होंने बताया कि उमर बिन ख़त्ताब का है। मैंने चाहा कि उसमें दाख़िल होकर देखूँ मगर मुझे तुम्हारी ग़ैरत याद आ गयी।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3679)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान या रसूलुल्लाह! मैं आप पर ग़ैरत खाऊंगा?

एक अरब हूरे-ऐन वाला महल

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी 'जन्नातु अद्निन्'। फिर फ़रमाया जन्नत में एक (क़िस्म का) महल है जिसके चार हज़ार दरवाज़ों के पट हैं, हर दरवाज़े पर पच्चीस हज़ार हूरे-ऐन हैं। उसमें कोई दाख़िल नहीं हो सकेगा मगर नबी, फिर फ़रमाया या रसूलुल्लाह आपको मुबारक हो। या सिद्दीक़ दाख़िल होगा फिर फ़रमाया ऐ अबू बक्र! आपको भी मुबारक हो। या सिद्दीक़ दाख़िल होगा मगर उमर के लिए शहादत का रुतबा कहाँ। फिर फ़रमाया वह ज़ात जिसने मुझे (कुफ़्र की) बदहाली से निकाला वह इस पर भी क़ादिर है कि मुझे शहादत का रुतबा अता फ़रमाए (इसलिए आपकी यह तमन्ना भी पूरी हुई और आप शहादत के रुतबे पर पहुँचे)।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 174)

फ़ायदाः चार हज़ार दरवाज़ों के पटों में से हर एक को जब पच्चीस हज़ार हूरे-ऐन से गुणा करें तो उनका मजमूआ (टोटल) एक अरब हूरे-ऐन बनता है।

महलों की मिट्टी और पहाड़

हज़रत मुग़ीस बिन सम्मी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नत में कुछ महल सोने के हैं और कुछ महल ज़बर्जद के हैं। उनके पहाड़ कस्तूरी के हैं और मिट्टी वरस (एक तरह की लाल घास जो कपड़ा रंगने के काम आती थी) और ज़ाफ़रान की है।(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15879)

दो करोड़ चालीस लाख दस हज़ार हूरों वाला महल

हदीसः हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने आयत 'व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नातिन अद्निन्' की तफ़सीर में इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक महल लुअ्लुअ् का होगा। उस महल में सत्तर घर सुर्ख़ याक़ूत के होंगे, फिर हर घर में सत्तर कमरे सब्ज़ ज़मर्रुद के होंगे, और हर कमरे में सत्तर तख़्त होंगे और हर तख़्त पर हर रंग के सत्तर पलंग होंगे, और हर पलंग पर हूरे-ऐन में से एक औरत होगी। हर कमरे में सत्तर दस्तरख़्वान होंगे, हर दस्तरख़्वान पर सत्तर तरह के खाने चुने होंगे। हर कमरे में सत्तर लड़के और सत्तर लड़कियाँ (ख़िदमतगार) होंगी। अल्लाह तआला हर मोमिन को (हर) एक सुबह में इतनी ताक़त अता फ़रमाएँगे कि वह उन नेमतों का फ़ायदा उठा सकेगा। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 181)

फ़ायदाः इस हदीस से मालूम होता है कि उस महल में दो करोड़ चालीस लाख दस हज़ार (24010000) हूरे-ऐन होंगी और इतने ही रंग के खाने और इतने ही रंग के ख़ादिम और ख़ादिमाएँ होंगी।

अदना दर्जे के जन्नती के हज़ार महल

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अदना दर्जे के जन्नती के हज़ार महल होंगे। हर महल में सत्तर हज़ार ख़ादिम होंगे, उनमें से हर ख़ादिम के हाथ में बड़ा प्याला होगा जो दूसरे ख़ादिम के हाथ के प्याले से नहीं मिलता होगा। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15828)

अदना दर्जे के जन्नती का एक महल

हदीसः हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे का जन्नती वह शख़्स होगा जिसका एक ही लुअ्लुअ् (मोती) का एक महल होगा, उसके बालाख़ाने और दरवाजे उसी

मोती के होंगे। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15844)

अदना दर्जे के जन्नती के हज़ार महल और हूरें और ख़ादिम

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं, अदना दर्जे का जन्नती वह शख़्स होगा जिसके हज़ार महल होंगे। हर दो महलों के बीच एक साल का सफ़र है। जन्नती उसके आख़िरी हिस्से को भी ऐसे ही देखेगा जैसे उसके क़रीबी हिस्से को देखेगा। हर महल में हूरे-ऐन होंगी। ख़ुशबूदार पौधे होंगे और छोटे-छोटे बच्चे होंगे वह जिस चीज़ का इच्छा करेगा उसको पेश की जाएगी।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 34)

अदना मोमिन का महल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में मोमिन का घर एक ही लुअ्लुअ् (मोती) का होगा जिसमें चालीस कमरे होंगे। उनके बीच एक पेड़ होगा जो लिबास उगाता होगा। जन्नती उसके पास आएगा और (वज़न के हल्के-फुल्के होने की वजह से) अपनी एक ही उंगली के साथ सत्तर जोड़े उठाएगा जिन पर लुअ्लुअ् और मर्जान के जड़ाऊ किये गये होंगे। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15887)

बड़ी शान और ठाठ का बालाख़ाना

हदीसः इब्ने ज़ैद अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबी करीम रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः एक आदमी को एक ही लुअ्लुअ् से बने हुए महल के पास लाया जाएगा। उस महल के सत्तर बालाख़ाने होंगे। हर बालाख़ाने में हूरे-ऐन में से एक बीबी होगी। हर बालाख़ाने के सत्तर दरवाज़े होंगे उस जन्नती पर हर दरवाज़े से ऐसी ख़ुशबू दाख़िल होगी जो उस ख़ुशबू से अलग होगी जो दूसरे दरवाज़े से दाख़िल होगी। फिर नबी करीम सल्ल० ने अल्लाह तआला का यह इरशाद नक़ल फ़रमायाः

तर्जुमाः सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं जो-जो आँखों की ठंडक (का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने में मौजूद है)।
(सूरः सज्दा आयत 17) (तफ़सीर कबीर जिल्द 2 पेज 466)

अद्न महल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक महल है जिसका नाम 'अद्न' है। उसके चारों तरफ़ कई (मीनार या) गुंबदे हैं। उसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े पर पाँच हज़ार पाकबाज़ बेगमें हैं, उसमें नबी या सिद्दीक़ या शहीद के अलावा कोई दाख़िल न हो सकेगा। (तफ़सीर कबीर जिल्द 16 पेज 132)

कुब्बतुल-फ़िरदौस, जिसके दरवाज़े आलिम का क़लम चलने से खुलते हैं

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला का एक कुब्बा है जिसका नाम फ़िरदौस है। उसके बीच में एक घर है जिसका नाम दारुल-करामत (बड़े दर्जे का घर) है। उसमें एक पहाड़ है जिसका नाम जबलुन्-नईम (नेमतों का पहाड़) है, उस पर एक महल है जिसका नाम क़सुरुल-फ़रह (ख़ुशी व फ़रहत का महल) है। उस महल में बारह हज़ार दरवाज़े हैं। एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक पाँच सौ साल का फ़ासला है। उनमें से कोई दरवाज़ा नहीं खुलता मगर आलिम के क़लम चलने की आवाज़ पर। (जब वह दीन का कोई मसला लिखता है) या (इस्लाम के दुश्मनों पर) हमला करने वाले (मुजाहिद) के ढोल की आवाज़ पर, लेकिन अल्लाह तआला के नज़दीक (आलिम के) क़लम चलने की आवाज़ सत्तर गुना अफ़ज़ल है मुजाहिद के तब्ले की आवाज़ से। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1798)

फ़ायदाः इस हदीस की सनद में दो रावी ऐसे हैं जिनका हाल मालूम नहीं है। और इमाम इब्ने असाकिर रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस हदीस को 'मुनकर' फ़रमाया है। (यानी क़ाबिले एतिमाद क़रार नहीं

दिया)।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का महल

हदीसः हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी करीम सल्ल0 से सवाल फ़रमाया कि हमारी वालिद (माँ) हज़रत ख़दीजा कहाँ हैं? आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सरकण्डे के महल में जिसमें कोई फ़ुज़ूल काम नहीं, न कोई थकावट और मशक़्क़त है। हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम और हज़रत आसिया फ़िरऔन की बीवी के दरमियान हैं। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा क्या यह महलउस सरकण्डे से बनाया गया है? आपने इरशाद फ़रमाया नहीं! (बल्कि) उस सरकण्डे से जो मोती, लुअ्लुअ् और याक़ूत से जोड़ा गया है। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर पेज 49)

महलों की छतों का नूर

एक हदीस में आया है कि जन्नत की कुछ छतें ऐसे नूर की होंगी जो आँखों को चुंधिया देने वाली बिजली की तरह चमकती होंगी। अगर अल्लाह तआला जन्नतियों की आँखों की हिफ़ाज़त न करें तो वह बिजली उनकी आँखों को उचक ले। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर पेज 51)

बालाख़ाने

ये बालाख़ाने किनके लिए होंगे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए (जन्नत के) बालाख़ाने (चौबारे) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं जो बने-बनाए तैयार हैं। (सूरः ज़ुमर आयत 20)

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में कुछ ऐसे बालाख़ाने हैं कि उनका बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से नज़र आएगा। एक देहाती ने खड़े होकर कहा या रसूलुल्लाह! ये किसके लिए होंगे? आपने फ़रमाया उसके लिए जो

पाकीज़ा बातचीत करेगा और खाना खिलाएगा और हमेशा रोज़ा रखेगा, और उस वक़्त जब लोग सोते हों यह रात के वक़्त नमाज़ पढ़ेगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 1984)

फ़ायदाः इस हदीस की तशरीह (व्याख्या) निम्नलिखित हदीस के साथ कुछ इस तरह से है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में कुछ ऐसे बालाख़ाने होंगे कि जब उसका रहने वाला उसके अन्दर होगा तो उसको इसका कोई डर नहीं होगा कि उसके पीछे क्या है (क्योंकि उसको अन्दर से बाहर नज़र आता होगा) और अगर उसके बाहर होगा तो उसको इसका डर नहीं होगा कि अन्दर (बालाख़ाने में) क्या है? (क्योंकि उसको बालाख़ाने के बाहर से बालाख़ाने का अन्दरूनी हिस्सा नज़र आता होगा)। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! ये किनके लिए होंगे? आपने इरशाद फ़रमा जो अच्छे बोल बोलेगा, लगातार रोज़े रखेगा और खाना खिलाएगा, सलाम को फैलाएगा और नमाज़ पढ़ेगा जब लोग सो रहे हों।

अर्ज़ किया गया, अच्छे बोल क्या हैं? इर,शाद फ़रमायाः 'सुब्हानल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर' क्योंकि ये कलिमात क़यामत के दिन इस हालत में आएँगे कि कुछ आगे होंगे और कुछ पहलुओं में और कुछ पीछे। अर्ज़ किया गयाः लगातार रोज़े रखना कैसे है? आपने इरशाद फ़रमाया वह शख़्स जो रमज़ान के महीने के रोज़े रखेगा फिर उसके बाद एक और रमज़ान का महीना पाया तो उसके भी रोज़े रखे, (इसी तरह से हर आने वाले रमज़ान के रोज़े रखता रहा, यह लगातार रोज़े रखना है)। अर्ज़ किया गया खाना खिलाना क्या है? इरशाद फ़रमाया जिसने अपने बाल-बच्चों की परवरिश की और उनको खिलाता रहा। अर्ज़ किया गया सलाम फैलाना क्या है? इरशाद फ़रमाया अपने भाई (मुसलमान) से मुसाफ़ा करना और सलाम करना। अर्ज़ किया गया जब लोग सोते हों उस वक़्त की नमाज़ क्या है? इरशाद फ़रमाया इशा की नमाज़ (पढ़ना)।

(इब्ने अदी जिल्द 2 पेज 795)

बालाख़ाने वाले आसमान के किनारे में चमकने वाले सितारे की तरह

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुललाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः (अदना दर्जे के) जन्नत वाले, बालाख़ानों वाले जन्नतियों को इस तरह से देखेंगे जिस तरह से लोग (दुनिया में) आसमान के किनारे पर दूर-दराज़ सितारे को देखते हैं।(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3256)

बालाख़ाना किस चीज़ से बनाया गया है?

अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जुमाः ऐसे लोगों को बालाख़ाने मिलेंगे (दुखों और आज़माईशों में) उनके साबित क़दम रहने की वजह से। (सूरः फ़ुरक़ान आयत 75)

इस इरशाद की तफ़सीर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

तर्जुमाः ये बालाख़ाना लाल रंग के याक़ूत और सब्ज़ रंग के ज़बर्जद और सफ़ेद चमकदार मोती का होगा। उनमें न कटाव होगा न जुड़ाव होगा। (बल्कि ये सब मोती एक ही मालूम होंगे)

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1787)

अदना दर्जे के जन्नती के बालाख़ाने की शान

हदीसः हज़रत उतबा बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे का जन्नती वह शख़्स होगा जिसका एक घर होगा एक मोती से उसके बालाख़ाने और दरवाज़े बने होंगे।

(बुदुरे साफ़िरह हदीस 1792)

एक सुतून पर बालाख़ाना

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में याक़ूत (मोती) का एक सतून होगा, उसपर एक ज़बर्जद (मोती) का एक बालाख़ाना होगा। उसके दरवाज़े खुले हुए होंगे, वो ऐसे चमकता होगा जैसे चमकदार सितारा चमकता है। हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसमें कौन रहेगा? आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया वे लोग जो अल्लाह के लिए आपस में मोहब्बत करते होंगे, अल्लाह के लिए आपस में ख़र्च करने वाले होंगे और आपस में अल्लाह की ख़ुशी के लिए मुलाक़ात करते होंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1795)

ऐसे बालाख़ाने जो न ऊपर से लटकाए गए हैं न उनके नीचे सतून हैं

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया :

तर्जुमाः जन्नतत में कुछ बालाख़ाने ऐसे हैं जो न तो ऊपर से किसी चीज़ के साथ लटकाए गए हैं और न उनके नीचे से कोई सतून होगा। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! उन बालाख़ानों वाले उनमें कैसे दाख़िल होंगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जन्नती उनमें परिन्दों की तरह दाख़िल होंगे। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! ये किनके लिए होंगे? इरशाद फ़रमाया बीमारियों वाले, दर्दों वाले और मुसीबतों वाले (लोगों) के लिए। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1797)

चार हज़ार ख़िदमतगार लड़कियों वाला बालाख़ाना

हज़रत इब्ने वहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक बालाख़ाना ऐसा है जिसका नाम "सख़ा" है। जब अल्लाह का वली उसमें जाने का इरादा करेगा तो हज़रत जिब्राईल उस बालाख़ाने के पास जाकर (उस जन्नती को ऊपर चढ़ाने के लिए) पुकारेंगे। वह हज़रत जिब्राईल की उंगलियों के सामने खड़ा हो जाएगा (उंगलियों के सामने इसलिए खड़ा होगा कि हज़रत जिब्राईल अलैहस्सलाम का क़द बहुत बड़ा है और उसका क़द इतना ही छोटा होगा)। उस बालाख़ाने में चार हज़ार

ख़िदमत के लायक़ लड़कियाँ होंगी जो अपने दामन और बालों को नाज़ो-अन्दाज़ से उठाते हुए चलेंगी और वे ऊद की अंगीठियों से ख़ुशबूएँ हासिल करेंगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1799)

सत्तर हज़ार बालाख़ाने

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह की ख़ुशी के लिए आपस में मुहब्बत करने वाले (मुसलमान) लाल याक़ूत के एक सतून पर पदासीन होंगे। उस सतून के सिरे पर सत्तर हज़ार बालाख़ाने होंगे। उनका हुस्न जन्नत वालों के लिए ऐसे रोशन होगा जैसे दुनिया वालों के लिए सूरज चमकता है। जन्नती एक-दूसरे से कहेंगे हमारे साथ चलो ताकि हम अल्लाह तआला के लिए आपस में मुहब्बत करने वालों के दर्शन कर आएँ। पस जब ये लोग उसको झाँककर देखेंगे तो उनका हुस्न जन्नत वालों के सामने ऐसे चमकेगा जिस तरह से सूरज दुनिया वालों के लिए चमकता है। उन पर सुन्दुस का सब्ज़ लिबास होगा, उनकी पेशानियों पर लिखा होगाः ये लोग अल्लाह तआला की ख़ुशी और मुहब्बत की तलाश के लिए आपस में मुहब्बत करते थे। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15948)

फ़ायदाः यह हदीस इमाम इब्ने अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस तरह से रिवायत की है कि आपस में सिर्फ़ अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए मुहब्बत करने वाले (अपने-अपने) लाल याक़ूत के सतून प होंगे। इस सतून के ऊपर सत्तर हज़ार बालाख़ाने होंगे। ये दूसरे जन्नतियों को देखते होंगे। उनमें से जब कोई झाँकेगा तो उसका हुस्न जन्नतियों के घरों को ख़ूब रोशन कर देगा जिस तरह से सूरज अपनी रोशनी के साथ दुनिया वालों के घरों को रोशन कर देता है। आपने फ़रमाया कि फिर जन्नत वाले (दूसरे जन्नतियों से) कहेंगे हमारे साथ उन हज़रात के पास चलो जो आपस में सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत करते थे। आप सल्ल0 ने फ़रमाया चुनाँचे ये जन्नती (अपनी-अपनी जन्नतों से) निकलेंगे और उनके चेहरों को चौदहवी रात के चाँद की तरह (रोशन) देखेंगे उन पर

सब्ज़ लिबास होंगे। उनके चेहरों पर लिखा होगा ये हैं ख़ालिस अल्लाह के लिए आप में मुहब्बत करने वाले'।(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा हदीस 15949)

बालाख़ानों में रहने वाले ख़ास हज़रात

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती बालाख़ानें वालों को अपने ऊपर से ऐसे दखेंगे जैसे तुम पूरब या पश्चिम के किनारों में दूर-दराज़ हल्की-हल्की रोशनी करने वाले सितारों को देखते हो। यह फ़र्क़ उनके बीच नेक कामों की वजह से होगा। सहाबा किराम ने पूछा या रसूलुल्लाह! क्या ये अम्बिया-ए-किराम की मन्ज़िले होंगी कि उन तक कोई नहीं पहुँच सकेगा? जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः क्यों नहीं पहुँच सकेगा! मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (उनमें) वे लोग जाएँगे जो अल्लाह पर ईमान लाए और रसूलों की तस्दीक़ की।

(तबरानी जिल्द 6 पेज 173)

ख़ेमे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः हूरें हैं रुकी रहने वालियाँ ख़ेमों में।(सूरः रहमान आयत 72)

साठ मील का ख़ोलदार ख़ेमा

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में मोमिन के लिए एक ही मोती का एक ख़ोलदार ख़ेमा होगा जिसकी लम्बाई साठ मील तक होगी। उसमें मोमिन की बिवीयाँ एक-दूसरे को (इस हालत में) नहीं देख सकेंगी।

(मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2838)

फ़ायदाः ये ख़ेमें न तो बालाख़ाने होंगे और न महल बल्कि ये बाग़ात में और नहरों के किनारे बनाए गए होंगे।

फ़ायदाः ये ख़ेमे न तो बालाख़ाने होंगे और महल बल्कि ये बाग़ात

में और नहरों के किनारे बनाए गए होंगे। (हादिल अरवाह पेज 275)

ख़ेमे क्यों लगाए गए?

हज़रत अबू सुलैमान (दारानी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं: हूरे-ऐन नये सिरे से पैदा की जाती है। जब उसका बनाना पूर्ण हो जाता है तो फ़रिश्तते उन पर ख़ेमे गाड़ देते हैं।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 311)

कुछ हज़रात फ़रमाते हैं कि ख़ेमे उस वक़्त नसब करते (गाड़ते) हैं जब वह जवान होती है क्योंकि नौजवान लड़की की आदत यह है कि वह पर्दे के साथ अलैहदगी को पसन्द करती है यहाँ तक कि उसको उसका शौहर ले जाए। इसी तरह से अल्लाह तआला ने भी हूरों को पैदा किया और उनको ख़ेमो के पर्दे में पाबन्दी कर दिया यहाँ तक कि उनको अपने औलिया (दोस्तों) के साथ जन्नत में मिला दे। (हादिल अरवाह पेज 276)

पसन्दीदा बीवियों के ख़ेमे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मुसलमान की एक बहुत पसन्दीदा बीवी होगी और हर पसन्दीदा बीवी के लिए एक ख़ेमा होगा, और हर ख़ेमे के चार दरवाज़े होंगे, हर दरवाज़े से रोज़ाना एक हदिया, तोहफ़ा और सम्मान की चीज़ उस बीवी के पास पहुँचेगी जो उससे पहले हासिल न हुई होगी। ये बीवियाँ न तो (शैहरों के सामने) अकड़-फूँ दिखाने वाली होंगी और न ऊँचा बोलने वाली होंगी (न उनके मुँहो से) बदबू आएगी न नाफ़रमान होंगी। ये हुरे-ऐन होंगी छुपाए हुए लाल (मोती-और हीरे) की तरह। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 313)

हज़रतत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ेमा खोलदार होगा आठ किलोमीटर में। उसके (दरवाज़ों के) चार हज़ार सोने के पट (किवाड़) होंगे। (इब्ने अबी शैबा हदीस 15905)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि ख़ेमा एक ही गौहर (हीरे-मोती) का होगा जिसके सत्तर दरवाज़े होंगे जो एक ही गौहर से बनाए गए होंगे। (तबरानी जिल्द 27 पेज 84)

ख़ेमे की बुलन्दी

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तुर्जमाः ख़ेमा ख़ोलदार मोती (लाल) का है, उसकी लम्बाई ऊपर की तरफ़ साठ मील है। उसके हर कोने में घर वाले (बीवियाँ ग़ुलाम और लड़के) हैं जिनको दूसरे (किनारे और कोने वाले) नहीं देखते। उनके पास जन्नती आया करेगा। दूसरी बीवियाँ वग़ैरह (इस हालत में) उनको नहीं देख सकेंगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1994)

ख़ेमे कैसे होंगे?

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैंने सुना है अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः हूरें होंगी ख़ेमों में ठहरी हुई। (सूरः रहमान आयत 72)

ये ख़ेमे क्या हैं? नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है जन्नत के ख़ेमों से एक ख़ेमा एक ही गौहर (मोती) का होगा, अन्दर से ख़ोलदार बत्तीस किलोमीटर लम्बा बत्तीस किलोमीटर चौड़ा (यानी लम्बाई और चौड़ाई बराबर होगी) याक़ूत और ज़बर्जद का (उस ख़ेमे को) ताज पहनाया गया होगा। उसके सोने के सत्तर दरवाज़े होंगे।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 16)

ख़ेमों की नेमतें और ऐश

अब्दुल मलिक (इब्ने हबीब क़र्तबी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं, मुझसे कुछ लोगों ने बयान किया कि जन्नत के ख़ेमों से हर ख़ेमे में जो ख़ोलदार मोती से बनाया गया होगा उसकी लम्बाई-चौड़ाई बत्तीस-बत्तीस किलोमीटर की चौड़ाई में होगी और इतना ही ऊँचा होगा, जिस पर मोती और याक़ूत का काम किया गया होगा। हर तख़्त पर बहुत-से रंगीन बिस्तर तरतीब दिये गये होंगे जो एक-दूसरे के ऊपर सजाए गए होंगे, और हर तख़्त के सामने एक कपड़ा होगा जिसने ख़ेमे को पर्दे में किया होगा। गौहर (मोती) याक़ूत और ज़बर्जद से सोने और

चाँदी के तारों में बुना गया होगा। हर तख़्त पर हूरे-ऐन में से एक बीवी बैठी होगी जिसका नूर सूरज के नूर को फीका कर रहा होगा। हर बीवी के साथ सत्तर बादियाँ और सत्तर गुलाम भी होंगे जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और उनके पास ऐसे लड़के आए जाएँगे जो ख़ालिस उन्ही के लिए होंगे, मानो कि वे हिफ़ाज़त के साथ रखे हुए मोती हैं।

(सूरः तूर आयत 24)

और हर तख़्त के सामने गौहर (मोती-क़ीमती पत्थर) की एक कुर्सी ख़ेमे की बुनियाद तक एक सफ़ेद रास्ता एक सुर्ख़ रास्ता और एक सब्ज़ रास्ता देखेगा। उनका नूर इतना तेज़ होगा कि आखों की रोशनी को चका-चौंध कर सकता है। फिर यह अपनी बीवी से गले मिलेगा और उससे सत्तर साल की मिक़्दार (मात्रा) के बराबर लुत्फ़ उठायेगा (आनन्दित होगा)। और उसकी सोहबत की इच्छा और उसके चाहने की सख़्ती कम न होगी, और यह उस बीवी से दूसरी की तरफ़ जाएगा यहाँ तक कि जब तक उसका मन इच्छा करता रहेगा और आँखें मज़ा लेती रहेंगी हमेशा-हमेशा के लिए। (बस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 16)

कुब्बा

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे के जन्नती का दर्जा यह होगा कि उसके लिए एक कुब्बा लुअ्लुअ् और याक़ूत और ज़बर्जद (मोतियों) का तैयार किया जाएगा जो (लम्बाई में) 'जाबिया' से 'सन्आ जितना होगा।

(बस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 16)

फ़ायदाः 'जाबिया' मुल्क शाम में मशहूर शहर दमिश्क के क़रीब एक शहर है, और 'सन्आ' मुल्के यमन की राजधानी है।

बिछौने और बिस्तर

रेशम के बिस्तर

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः (और) वे लोग (जन्नत में) तकिया लगाए ऐसे फ़र्शों (बिछौनों और बिस्तरों) पर बैठे होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे। (सूरः रहमान आयत 56)

और क़ायदा है कि ऊपर का कपड़ा अस्तर के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छा होता है। पस जब अस्तर इस्तबूरक (मोटे रेशम) का होगा तो ऊपर का कैसा कुछ होगा।

फ़ायदाः आयत से मालूम हुआ कि जन्नत के बिछौनों की शक्ल यह होगी कि उसका निचला हिस्सा मोटे रेशम का होगा और ऊपर का हिस्सा उससे ज़्यादा सुन्दर और ज़ीनत में ज़्यादा बढ़कर होगा। (हादिल अरवाह पेज 269)

बिछौनों की बुलन्दी और दरमियान के फ़ासले

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने आयतः

तर्जुमाः और बुलन्द व ऊँचे बिछौने होंगे। (सूरः वाक़िआ आयत 34)

की तफ़सीर में इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः उन बिछौनों की बुलन्दी आसमान व ज़मीन के बीच के फ़ासले जितनी होगी और उनमें के दो बिछौनों के दरमियान का फ़ासला पाँच सौ साल के बराबर होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3540)

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि इस हदीस में इब्ने सअद रावी है जो ग़ैर-मोतबर रिवायतें बयान करता है। अगर यह रिवायतत भरोसे की हो तो इसका अर्थ यह होगा कि जन्नतितयों के दर्जे इतने बुलन्द होंगे और बिछौने उनके ऊपर होंगे। और अगर यह रिवायत भरोसे के क़ाबिल न हो तो हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की हुई यह दूसरी रिवायत ज़्यादा महफ़ूज़ होगी जिसमें सिर्फ़ यह बयान किया गया है कि हर दो बिछौनों के बीच आसमान और ज़मीन के फ़ासले के बराबर फ़ासले होंगे। (हादिल अरवाह पेज 269)

या यह कि ये बिछौने जन्नत के दर्जों में होंगे और हर दर्जे के

बीच आसमान व ज़मीन के बराबर का फ़ासला है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1971)

मेरे नाक़िस ख़्याल में इस हदीस का यह आख़िरी मतलब ज़्यादा सही है। (इमदादुल्लाह अनवर)

बिछौने का ऊपर का हिस्सा नूरे-जामिद का होगा

हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उनका ज़ाहिरी (ऊपर वाला) हिस्सा नूरे-जामिद का होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1975)

मोटे बारीक रेशम के बीच फ़ासले की मिक्दार

'बुलन्द और ऊँचे फ़र्शों' की तफ़सीर में हज़रत अबू उमामा फ़रमाते हैं कि अगर उस बिछौने के ऊपर वाला हिस्सा गिराया जाए तो उसके निचले हिस्से तक चालीस साल तक न पहुँचे।

(इब्ने अबी शैबा हदीस 15929)

बिछौने कितने मोटे होंगे

हज़रत कअब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बिछौनों की ऊँचाई चालीस साल के सफ़र के बराबर है।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 449)

शाही तख़्त

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः (जन्नत में बैठते होंगे) तकिया लगाए हुए तख़्तों पर जो बराबर बिछाए हुए हैं, और हम उनका गोरी-गोरी और बड़ी-बड़ी आँखों वालियों से (यानी हूरों से) ब्याह कर देंगे। (इन ख़ास और क़रीबी बन्दों) का एक बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे। (अगलों से मतलब पहले गुज़रे हुए हज़रात हैं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्ल0 से पहले तक, और पिछलों से मतलब हुज़ूर सल्ल0 के वक़्त से लेकर क़यामत तक। और पहले लोगों में से ज़्यादा होने और बाद वालों में से कम होने की वजह यह है कि ख़ास लोग हर ज़माने में कम होते हैं और पहले हज़रात का ज़माना उम्मत वाले क़यामत के क़रीब पैदा हुई है। पस जितने ख़ास हज़रात उस लम्बे ज़माने

में पैदा हुए हैं जिनमें लाख या दो लाख या कम-ज़्यादा इम्बिया भी हैं, आदते ज़माना के मुताबिक़ क़लील में उनसे कम ही होंगे) और ख़ास और क़रीबी लोग सोने के तारों से तख़्तों पर तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे। उस (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे तख़्त हैं। (सूरः तूर आयत 20, सूरः वाक़िआ आयत 13 से 16, सूरः ग़ाशिया आयत 13) (तफ़सीर बयानुल क़ुरआन)

लम्बाई और ख़ूबसूरती

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये तख़्त सोने के होंगे जिनके ताज ज़बर्जद जवाहिरात और याक़ूत के होंगे, और एक तख़्त 'मक्का' और 'ईला' जितना लम्बा होगा। (हादिल अरवाह पेज 278)

ऊँचाई

हज़रत कल्बी कहते हैं कि तख़्त की ऊँचाई ऊपर की तरफ़ सौ साल के सफ़र के बराबर होगी। जब आदमी उस पर बैठने का इरादा करेगा तो वह (फ़ौरन) उसके लिए झुक जाएगा यहाँ तक कि वह उस पर बैठ जाएगा। फिर जब वह उस पर बैठ जाएगा तो वह फिर अपनी जगह तक बुलन्द हो जाएगा। (हादिल अरवाह पेज 278)

ये तख़्त किन चीज़ों से बनाए गए हैं

हज़रत इब्ने अब्बस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का दोस्त जन्नत में तख़्त पर बैठा होगा जिसकी बुलन्दी पाँच सौ साल की होगी। इसी के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमाः और तख़्त होंगे बुलन्द।

फ़रमाया कि यह तख़्त सुर्ख़ याक़ूत का होगा जिसके सब्ज़ ज़मर्रुद के दो पर होंगे। फिर उस तख़्त पर सत्तर बिछौने होंगे जिनका अस्तर नूर का होगा और ऊपर का हिस्सा बारीक रेशम का होगा और अन्दर का मोटे रेशम का होगा। अगर उस तख़्त के ऊपर के हिस्से को गिराया जाए तो अपने निचले हिस्से तक चालीस साल की मुद्दत में पहुँचे।(बुस्तानुल वाईज़ीन पेज 193-194)

तख़्तों की बनावट-सजावट (मसहरियाँ)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः वे जन्नत में मसहरियों पर टेक लगाए होंगे।

(सूरः दह्र आयत 13)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु 'अराइ-क' (मसहरी) की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि मसहरी उस वक़्त तक नहीं बनती जब तक पलंग पर पर्दा न पड़ा हुआ हो। जब पलंग और ऊपर का पर्दा दोनों जमा हों तो 'उरैका' कहलाता है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1976)

चालीस साल तक तकिये की टेक

हदीसः हज़रत हैसम बिन मालिक ताई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हादमी चालीस साल की मिक्दार तक तकिये की टेक लगाएगा, न वहाँ से हटेगा और न तबीयत उकताएगी। उसके पास जो उसका जी चाहेगा और आँखों को लज़्ज़त होगी, पेश होता रहेगा।

(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 7 पेज 407)

सत्तर साल तक तकिये की टेक

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः आदमी जन्नत में पहलू बदले बग़ैर सत्तर साल तक टेक लगा सकेगा (और इससे ज़्यादा भी और कम भी)।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 529)

हज़रत सुलैमान बिन मुग़ीरा रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि से नकल करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया हमें यह बात पहुँची है जन्नती आदमी जन्नत में सत्तर साल तक टेक लगाए बैठेगा उसके पास उसकी बीवीयाँ और ख़िदमत-गुज़ार होगे और जो कुछ अल्लाह तआला उसको ठाट-बाट और नेमतें अता फ़रमाएगे वे भी होंगी पर वह नज़र उठाकर जो देखेगा तो उसकी उसको कुछ और बीवियाँ

नज़र आएँगी जिनको उसने उससे पहले नहीं देखा होगा। वे कहेंगी अब वह वक़्त आ गया है कि आप अपनी तरफ़ से हमारा नसीब अता फ़रमाएँ (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 4 पेज 241)

मसहरियाँ किस चीज़ से बनी होंगी?

अल्लाह तआला का इरशाद है: "अलल्-अराइकि यन्ज़ुरून" की तफ़सीर में हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते है कि मसहरियाँ लुअ्लुअ् और याक़ूत (मोतियों) से बनी होंगी।

(तफ़सीर इब्ने जरीर तबरी जिल्द 29 पेज 66)

नेक औरत ने जन्नत का तख़्त दुनिया में देखा

हज़रत अबू अहमद हल्लास रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरी माँ बड़ी नेक थीं। एक दिन हम बहुत मोहताज़ी हालत में थे, मुझसे कहा बेटे! हम कब तक इस तकलीफ़ में रहेंगे? जब सेहर का वक़्त हुआ तो मैंने दुआ की ऐ अल्लाह!अगर हमारे वास्ते आख़िरत में कुछ है तो उसमें से हमें दुनिया में कुछ अता फ़रमा दे। उस वक़्त घर के एक कोने में मुझे एक नूर दिखाई दिया। मैं उसके पास गया तो देखा कि एक तख़्त के सोने के पाए हैं और वह जवाहिर (मोतियों) से सजाए गए हैं। मैंने माँ से कहा कि यह लो और कुछ जवाहिर बेचने के इरादे से बाज़ार में गया और जो मैं कहता था कि उनमें से कुछ जवाहिर जोहरियों के हाथ बेचूँगा लेकिन इसका क्या तरीक़ा होगा।

जब मैं मस्जिद से लौटकर आया तो मुझसे मेरी माँ ने कहा ऐ बेटे! तू मुझे माफ़ कर दे। क्योंकि जब तू घर से निकला तो मैं सो गयी। मैंने ख़्वाब में देखा कि जन्नत में दाख़िल हुई। वहाँ मैंने एक महल देखा जिसके दरवाज़े पर "ला इला-ह इल्लाल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्ला" लिखा हुआ था और यह भी लिखा था कि यह मकान अबू अहमद हल्लास का है। मैंने कहा मेरे बेटे का? तो एक शख़्स ने कहा, हाँ! मैं उस मकान में जाकर उसके कमरों में घूमती रही। मैंने एक कमरे में बहुत-से तख़्त बिछे हुए देखे। उनके बीच एक तख़्त टूटा हुआ था। मैंने कहा इन तख़्तों के बीच में यह टूटा हुआ तख़्त कितना बे-मौक़ा है। एक

शख़्स ने मुझसे कहा कि इसके पाए तुमने ले लिए हैं। मैंने कहा इसे अपनी जगह पहुंचा दो। जब मैं जागी तो वो ग़ायब हो गये थे। अल्लाह का शुक्र (रौज़ुर्रयाहीन),

गद्दे और क़ालीन

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः वे (जन्नती हज़रात) सब्ज़ गद्दों और अजीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्शों) पर तकिया लगाए बैठे होंगे। तो ऐ इनसान व जिन्नात! (बावजूद इस ज़्यादती और बड़ी नेमत के) तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। बड़ा बरकत वाला नाम है आपके रब का, जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है।

(सूरः रहमान आयत 76 से 78)

तर्जुमाः उस (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे तख़्त (बिछे) हैं और रखे हुए आबख़ोरे (प्याले, मौजूद) हैं (यानी यह सामान जन्नती के सामने मौजूद होगा ताकि जब पीने को जी चाहे देर न लगे) और बराबर लगे हुए गद्दे (तकिये) हैं और सब तरफ़ क़ालीन (ही क़ालीन) फैले पड़े हैं (कि जहाँ चाहे आराम कर लें। एक जगह से दूसरी जगह जाना भी न पड़े)। (सूरः ग़ाशिया आयत 13-16)

नेक आमाल जिनसे महल तैयार होते हैं

बैतुल्-हम्द

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब अल्लाह तआला किसी मोमिन के बेटे को मौत देता है तो अपने फ़रिश्तों से पूछता है, मेरे बन्दे ने क्या कहा है? वे कहते हैं कि उसने (बुरा-भला कहने के बजाए) आपकी तारीफ़ की है और "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं उसके लिए जन्नत में एक घर बना दो और उसका नाम बैतुल्-हम्द रख दो। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 1012)

जन्नत में महल बनवाने का वज़ीफ़ा

हदीसः हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स दस बार (सूरः इख़्लास) 'कुल हुवल्लाहु अहद्' पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बना देंगे। और जो इसको बीस बार पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में दो महल बना देंगे। और जो आदमी इसको तीस बार पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में तीन महल बना देंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! फिर तो हमारे महल बहुत हो जाएँगे? नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह इससे भी कहीं ज़्यादा (रहमत और अता वाले) हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1821)

फ़ायदाः जो हज़रात उन नेक कामों की तफ़सील चाहते हैं वे हमारी किताब "रहमत के ख़ज़ाने" का अध्ययन करें।

मस्जिद बनाना

हदीसः हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए मस्जिद बनायी अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में महल बनाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1802)

चाश्त की नामज़

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने चाश्त की नमाज़ की बारह रकअतें पढ़ीं अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में सोने का एक महल बनाएँगे।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 473)

चाश्त की नमाज़ और ज़ोहर की चार सुन्नतें

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने नमाज़ चाश्त और ज़ोहर से पहले की चार सुन्नतें अदा कीं अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बनाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1805)

फ़र्ज़ नमाज़ों की मुअक्कदा सुन्नतें

हदीसः जिस शख़्स ने हर दिन रात में बारह रकअतें (मुअक्कदा सुन्नतें) अदा कीं उसके लिए उन रकअतों के सवाब में जन्नत में एक महल बनाया जाएगा। (अहमद जिल्द 6 पेज 327)

फ़ायदाः इमाम निसाई इमाम हाकिम इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा और इमाम बैहक़ी रहमतुल्लाहि अलैहिम ने इस हदीस के आख़िर में इन बारह रकअतों की तफ़सील में चार रकअत नमाज़ ज़ोहर से पहले और दो उसके बाद और दो रक्अत नमाज़ अस्र से पहले और दो रक्अत नमाज़ मग़रिब के बाद और दो रक्अत नमाज़ फ़ज्र से पहले को ज़िक्र फ़रमाया है।

(हाकिम जिल्द 1 पेज 311)

नोटः इन बारह रक्अतों में अस्र से पहले की दो रक्अत सुन्नतें ग़ैर-मुअक्कदा हैं, बाक़ी सुन्नतें मुअक्कदा हैं जिनके अदा करने की मुबारक हदीसों में ताकीद आई है। (इमदादुल्लाह अनवर)

बुध, जुमेरात, जुमे का रोज़ा रखना

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने बुध, जुमेरात और जुमे को रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में महल बनाते हैं।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 2 पेज 126)

नमाज़े अव्वाबीन की बीस रकअतों का सवाब

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमयाः

तर्जुमाः जिसने मग़रिब और इशा के बीच बीस रकअतें अदा कीं

अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाते हैं (इब्ने माजा हदीस 1373)

नमाज़े अव्वाबीन की दस रकअतों का इनाम

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह करीम बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने मग़रिब और इशा के बीच दस रकअतें (नमाज़े अव्वाबीन) अदा कीं अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बनाते हैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया फिर तो हम बहुत-से महल बना लेंगे? आपने जवाब दिया कि अल्लाह तआला इससे बहुत बड़े और अफ़ज़ल हैं (तुम जितना ज़्यादा अमल करके महलात बनवाओगे अल्लाह तआला के रहमत के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1812)

चौथे कलिमे को बाज़ार में दाख़िले के वक़्त पढ़ने का सवाब

हदीसः हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल हुआ और (यह कलिमा) पढ़ाः "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल्हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल्-ला यमूतु बि-यदिहिल् ख़ैरि व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर"

तो अल्लाह तआला उसके लिए एक लाख नेकी लिखते हैं, और एक लाख गुनाह मिटाते हैं, और जन्नत में एक महल बनाते हैं।

(तिर्मिज़ी हदीस 3425)

अस्र की चार सुन्नतों पर एक महल का इनाम

हदीसः उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया

तर्जुमाः जो शख़्स अस्र से पहले चार सुन्नतें पाबन्दी से अदा करता रहा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बनाएँगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1814)

सुर्ख़ याक़ूत या सब्ज़ ज़बरूजद का एक महल

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने रमज़ान के किसी दिन का रोज़ा ख़ामोशी और सन्जीदगी से रखा अल्लाह तआला उसके लिए सुर्ख़ याक़ूत से या सब्ज़ ज़बरूजद से जन्नत में एक महल बनाएँगे।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1815)

चार नेक काम

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम में से आज किसी ने रोज़ा रखा है? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा तुम में से किसी ने (किसी मुसलमान के) जनाज़े को रुख़्सत किया है? हज़रत अबू बक्र ने अर्ज़ किया मैंने! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा तुम में से किसी ने मरीज़ की बीमार-पुर्सी की है? हज़रत अबू बक्र ने अर्ज़ किया मैंने! (तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने) इरशाद फ़रमाया जिस (मुसलमान) में ये चार ख़स्लतें पायी जाएंगी अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में (शानदार) महल बनाएंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1816)

सूरः दुख़ान की तिलावत

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स जुमे और जुमे की रात में सूरः दुख़ान की तिलावत करे अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बनाते हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1817)

नेक आमाल करते रहने से जन्नत की तामीर होती रहती है

हकीम बिन मोहम्मद अजमी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मुझे

यह बात पहुंची है कि जन्नत अल्लाह के ज़िक्र (यानी हर तरह की इबादत) के साथ तामीर होती रहती है। जब मुसलमान ज़िक्र करने से रुक जाते हैं तो (जन्नत को तैयार करने वाले फ़रिश्ते) जन्नत की तामीर करने से रुक जाते हैं। जब उनको कहा जाता है कि तुम क्यों रुक गये? तो वे कहते हैं कि हम तक ख़र्चा (यानी नेक आमाल) पहुँचा (तो हम फिर तामीरे जन्नत शुरू कर देंगे)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1818)

जन्नत के आला, अदना और दरमियानी दर्जे में तीन महलात

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः जो शख़्स मुझपर ईमान लाया, मुसलमान हुआ और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, मै। उसके लिए जन्नत के निचले दर्जे में एक महल का ज़मानती हूं। और जन्नत के दरमियानी दर्जे में महल का ज़मानती हूं और एक जन्नत के बुलन्द और ऊँचे बालाख़ानों में महल का ज़मानती हूं। (हाकिम जिल्द 2 पेज 60)

नमाज़ की सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करना

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने नमाज़ की सफ़ का ख़ला (ख़ाली जगह) पुर किया अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में इसकी वजह से एक दर्जा बुलन्द करेंगे और उसके लिए जन्नत में एक महल बनाएंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1824)

गुज़ारे की रोज़ी पर सब्र करने से जन्नतुल फ़िरदौस में रिहाइश

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस

शख़्स ने बहुत ही मामूली दर्जे की गुज़ारे की रोज़ी पर बेहतरीन सब्र का मुज़ाहरा किया, जहां वो शख़्स चाहेगा अल्लाह तआला उसको जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अता फ़रमाएंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1825)

जन्नत के तीनों दर्जों में महल

हदीसः जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स झूठ को छोड़ दे अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के किनारे में एक महल बनाएंगे, और जिसने झगड़ा करना छोड़ दिया हालाँकि वह हक़ पर था अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के दरमियान में एक महल बनाएंगे। और जिसके अख़्लाक़ पाकीज़ा होंगे अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में आला मुक़ाम में महल बनाएंगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1826)

सुर्ख़ याक़ूत का महल

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखता है अल्लाह तआला उसके लिए हर सज्दे के बदले में पन्द्रह सौ नेकियां लिख देते हैं और उसके लिए जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का एक महल बना देते हैं।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1829)

क़ब्र खोदने का सवाब

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स ने एक क़ब्र को खोदी अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक घर बनाते हैं। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 338)

नोटः वे हज़रात जो उन नेक आमाल को काफ़ी तफ़सील से पढ़ना और अमल करना चाहते है। जिनके करने से जन्नत के महल और दूसरे इनामात मिलते हैं वे हमारी किताब 'रहमत के ख़ज़ाने' का अध्ययन करें।

(इमदादुल्लह अनवर)

ख़िदमत करने वाले लड़के और ख़ादिम

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और उन (जन्नतियों) के पास ऐसे लड़के आना-जाना रहेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, (न तो वे बड़े होंगे न बूढ़े, और न उनकी चमक-दमक में कोई कमी आएगी, और वे इतने हसीन हैं कि) ऐ मुख़ातब! अगर तू उनको (चलते-फिरते) देखे तो यूं समझे कि मोती हैं जो बिखर गये हैं। (मोती से तो मिसाल सफ़ाई और चमक-दमक में और बिखरे हुए का गुण उनके चलने-फिरने के लिहाज़ से जैसे बिखरे मोती इधर-उधर फैलकर कोई इधर जा रहा है कोई उधर जा रहा है, और ये आला दर्जे की तश्बीह है, और इन मज़कूरा ऐश के असबाब में सीमित नहीं बल्कि वहां और भी हर सामान इस कसरत और बुलन्दी के साथ होगा कि) ऐ मुख़ातब! अगर तू उस जगह को देखे तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी हुकूमत दिखलाई दे। (सूर दह्र आयत 19 से 20)

अल्लाह तआला आगे इरशाद फ़रमाते हैं :

तर्जुमाः (और उनके पास मेवे वग़ैरह लाने के लिए) ऐसे लड़के आए जाएँगे जो ख़ास उन्हीं (कि ख़िदमत) के लिए होंगे (और अपनी हद दर्जा ख़ूबसूरती व हुस्न की वजह से ऐसे होंगे कि) मानों कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं। (कि उन पर ज़रा-सा भी गर्द व ग़ुबार नहीं होता और चमक-दमक आला दर्जे की होती है)।

(बयानुल कुरआन, तफ़सीर सूरः तूर आयत 24)

अल्लाह तआला एक और जगह इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। ये चीज़ें लेकर आया-जाया करेंगे। आबख़ोरे (प्याले) और आफ़ताबे (लोटे और जग) और ऐसा जामे शराब जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा।

(सूरः वाकि़आ आयत 17 से 18)

अदना दर्जे के जन्नती के दस हज़ार ख़ादिम

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तमाम जन्नतियों में सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसकी ख़िदमत में दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 206)

अस्सी हज़ार ख़ादिम

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी, और उसके लिए एक कुब्बा लुअ्लुअ् और याक़ूत और ज़बर्जद का क़ायम किया जाएगा (जिसकी लम्बाई) 'जाबिया' (मुल्के शाम में दमिश्क़ शहर के पास एक शहर का नाम है) से 'सन्आ' (मुल्के यमन की राजधानी) जितनी होगी)।(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 206)

सत्तर हज़ार ख़ादिम स्वागत करेंगे

अबू अब्दुर्रहमान हम्बली रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब मोमिन जन्नत में दाख़िल होगा तो सत्तर हज़ार ख़ादिम उसका स्वागत करेंगे जो गोया कि (चमक-दमक में) बिखरे हुए मोती हैं।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 208)

सुबह व शाम के पन्द्रह हज़ार ख़ादिम

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा हालाँकि उनमें (अपने-अपने एतिबार से) कोई कम दर्जे का न होगा जिसके सामने रोज़ाना पन्द्रह हज़ार ख़ादिम हाज़िर हुआ करेंगे, उनमें से कोई ख़ादिम ऐसा न होगा मगर उसके हाथ में एक उम्दा नई चीज़ होगी, जो उसके साथ वाले के पास न होगी।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 207)

अदना दर्जे के जन्नती के दस हज़ार ख़ादिम अलग-अलग तरह से ख़िदमत करते होंगे

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहुह अन्हु फ़रमाते हैं कि सबसे अदना दर्जे का जन्नती वह होगा जिसके दस हज़ार ख़ादिम ख़िदमत करते होंगे। हर ख़ादिम ऐसी ख़िदमत कर रहा होगा जिसको दूसरा नहीं कर रहा होगा। फिर यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः अगर तू उनको (चलते फिरते) देखे तो यूँ समझे कि मोती हैं जो बिखर गये हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2116)

हूरें और बीवियाँ

हूर किसे कहते हैं

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हूर उसे कहते हैं जिसके देखने से आँख हैरत में पड़ जाए। उसकी पिण्डली कपड़ों के पीछे से नज़र आती हो। देखने वाला अपने चेहरे को उन हूरों में से हर एक के जिगर में उसकी खाल के चमकदार होने और रंग की सफ़ाई की वजह से आईने की तरह देखेगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2002)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः उन (बाग़ों के मकानात और महलों) में नीची निगाहों वामलयाँ (यानी हूरें) होंगी कि उन (जन्नती) लोगों से पहले उन पर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने (यानी बिल्कुल महफ़ूज़ और बिना इस्तेमाल की हुई होंगी)। सो ऐ इनसानों और जिन्नात! (बावजूद इस कसरत और नेमत की बड़ाई के) तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे (और रंगत इतनी साफ़-सुथरी होगी कि) जैसे वे याक़ूत और मर्जान हैं। (सूरः रहमान आयत 57-58)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हूर वह है जिसकी आँख का (सफ़ेद हिस्सा) बहुत ही सफ़ेद हो और सियाह हिस्सा बहुत ही ज़्यादा सियाह हो। (तफ़सीर क़ुरतबी जिल्द 16 पेज 153)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं गोरा रंग आधा हुस्न है। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 4 पेज 41)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब औरत के हसीन बालों के साथ उसका गोरा रंग ख़ूब निखर जाए तो उसका हुस्न कामिल हो जाता है। (बुशरलु मुहिब्बीन पेज 43)

हूरे-ऐन किसे कहते हैं?

अल्लामा इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं कि 'हूर' हूरा' का बहुवचन है और 'हूरा' उस औरत को कहते हैं जो जवान हो, हसीन व ख़ूबसूरत हो, गोरे रंग की हो, सियाह आँख वाली हो और 'ऐन' ऐना' का बहुवचन है और 'ऐना' उस औरत को कहते हैं जो औरतों में बड़ी आँख वाली हो। (हादिल अरवाह पेज 285)

चुनाँचे 'हूर' का बहुबचन है और 'ऐन' 'ऐना' का बहुबचन है। उर्दू के मुहावरे में लोग 'हूरे-ऐन' को एक के मायने में इस्तेमाल करते हैं और यह ग़लती आम हो रही है। हालाँकि 'हूरे-ऐन' बहुवचन है और इसकी वाहिद (एक बचन) 'हूरा ऐना' आती है, लेकिन ज़्यादा इस्तेमाल में उर्दू ज़बान में 'हूरे-ऐन' वाहिद (एक वचन) पर बोलते हैं। हमने जगह-जगह इस किताब का अर्थ ही किया है, और कहीं-कहीं उर्दू के मुहावरे की मजबूरी के पेशे-नज़र हूर का लफ़्ज़ वाहिद (एक बचन) के मायने में भी लाए हैं। (इमदादुल्लाह अनवर)

हूर की पैदाइश

ख़ास अन्दाज़ से पैदा की गयी हैं

अल्लाह के इरशादः

तर्जुमाः उन जन्नती लोगों से पहले उन पर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। (सूरः रहमान आयत 74)

इस आयत की तफ़सीर में इमाम शअबगी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं ये औरतें दुनिया के मर्दों की बीवियाँ बनेंगी। अल्लाह तआला ने उनको एक और तरीक़े से पैदा किया है जैसा कि अल्लाह तआला

फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है, यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियाँ हैं (यानी उनसे सोहबत करने के बाद फिर कुंवारी हो जाएँगी) महबूबा हैं (यानी आत और हरकतों, नाज़ व अन्दाज़ और हुस्न व ख़ूबसूरती सब चीज़ें उनकी दिलकश हैं, और जन्नत वालों की हम-उम्र हैं)। (सूरः वाक़िआ आयत 35,36)

इमाम शअबी फ़रमाते हैं जब से उनको इस ख़ास अन्दाज़ से बनाया है उनको किसी इनसान और जिन्न ने छुआ तक नहीं।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2007)

हूरे-ऐन ज़ाफ़रान से पैदा की गयी हैं

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

तर्जुमाः (जन्नत की) हूर-ऐन को ज़ाफ़रान से पैदा किया गया है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2016)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि से भी ऐसे ही रिवायत किया गया है।

हज़रत ज़ैद बिन असलम (ताबिई मुफ़स्सिर रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हूरे-ऐन को मिट्टी से पैदा नहीं किया बल्कि उनको कस्तूरी, काफ़ूर और ज़ाफ़रान से पैदा किया है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2018)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान (ताबिई रहमतुल्लाहि अलैहि) और हज़रत मुजाहिद (ताबिई रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के दोस्त के लिए ऐसी बीवी है जिसको आदम व हव्वा (इनसान) ने नहीं जना बल्कि उसको ज़ाफ़रान से पैदा किया गया है (यानी वह जन्नत में बनायी गयी है, माँ बाप के वास्ते से पैदा नहीं हुई)। (हादिल अरवाह पेज 303)

हूरों को पैदा कर के उनपर ख़ेमे क़ायम कर दिये जाते हैं

हज़रत इब्ने अबिल-हवारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि

हूरे-ऐन को सिर्फ़ क़ुदरते ख़ुदावन्दी से (कलिमा 'कुन' से) पैदा किया गया है। जब उनकी तख़्लीफ़ (रचना) पूरी हो जाती है तो फ़रिश्ते उन पर ख़ेमे क़ायम (स्थापित) कर देते हैं। (हादिल अरवाह पेज 305)

जन्नत के गुलाब से पैदा होने वाली हूरें

हज़रत ज़ुबाह कैसी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मैंने हज़रात मालिक बिन दीनार रह0 से सुना आपने फ़रमाया "जन्नातुन्नईम" जन्नातुल-फ़िरदौस और जन्नतें अद्न के बीच में स्थित हैं। उनमें ऐसी हूरे हैं जो जन्नत के गुलाब से पैदा की गयी हैं। उनसे पूछा गया उन (जन्नातुन्-नईम) में कौन दाख़िल होगा? फ़रमाया वे हज़रात जो गुनाह का (जान-बूझकर पक्का) इरादा नहीं करते। जब वे मेरी बड़ाई को याद करते हैं तो मुझे अपने सामने पाते हैं। और वे लोग जो मेरे ख़ौफ़ व डर में परवान चढ़ते हैं (वे भी इन जन्नातुन्नईम में दाख़िल होंगे)।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 348)

हूरों के गुलाब से पैदा होने पर यह शेर पूरी तरह फ़िट है:

नाज़ की उन लबों के क्या कहिये
पंखड़ी एक गुलाब की-सी है

मुश्क अंबर काफ़ूर और नूर से पैदाइश

हदीसः सरकारे दो आलम जनाब रसूल अकरम सल्ल0 से हूरे-ऐन के बारे में सवाल किया गया कि उनको किस चीज़ से पैदा किया गया तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तीन चीज़ों से पैदा की गयी हैं: उनका निचला हिस्सा मुश्क (कस्तूरी) का है, और बीच का हिस्सा अंबर का है, और ऊपर का हिस्सा काफ़ूर का है। उनके बाल काले हैं, नूर से उनका ख़त खींचा गया है। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 481)

हूर के पैदा करने के मरहले

हदीसः जनाब नबी करीम सल्ल0 से रिवायत की गयी कि आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा और कहा मुझे बताओ अल्लाह तआला हूरे-ऐन को किस तरह बनाते हैं?

उन्होंने फ़रमाया ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआला उनको अंबर और ज़ाफ़रान की शाख़ों से पैदा फ़रमाते हैं। फिर उनके ऊपर ख़ेमे स्थापित कर दिये जाते हैं। सबसे पहले अल्लाह तआला उनके पिस्तानों (छातियों) को ख़ूशबूदार गोरे रंग की कस्तूरी से पैदा करते हैं। उसी पर बाक़ी बदन की तामीर करते हैं। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 481)

हूर के बदन के विभिन्न हिस्से किस-किस चीज़ से बनाए गए हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हूरे-ऐन को पाँव की उंगलियों से उसके घुटने तक ज़ाफ़रान से बनाया है, और उसके घुटनों से सीने तक कस्तूरी की ख़ुशबू से बनाया है, और उसके सीने से गर्दन तक शोले की तरह चमकने वाले अंबर से बनाया है, और उसकी गर्दन से सर तक सफ़ेद रंग से बनाया है। उसके ऊपर गुले-लाल की सत्तर हज़ार पोशाकें पहनायी गयी हैं। जब वह सामने आती है तो उसका चेहरा ज़बरदस्त तरीक़े से ऐसे चमक उठता है जैसे दुनिया वालों के लिए सूरज। और जब सामने आती है तो उसके पेट का अन्दरूनी हिस्सा लिबास और जिल्द की बारीकी की वजह से दिखाई देता है। उसके सर में ख़ुशबूदार कस्तूरी के बालों की चोटियाँ हैं। हर एक चोटी को उठाने के लिए एक ख़िदमत करने वाली होगी जो उसके किनारे को उठाने वाली होगी। यह हूर कहती होगी यह इनाम है औलिया (अल्लाह के दोस्तों) का और सवाब है उन आमाल का जो वे किया करते थे। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 481)

रहमत के क़तरों से पैदा होने वाली हूरें

सूरः रहमान की आयतः

तर्जुमाः हूरें हैं ख़ेमों में रुकी रहने वाली(सूरः रहमान आयत 72) की तफ़सीर में हज़रत अबुल-इहवस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते

हैं कि हमें यह रिवायत पहुँची है कि एक बदली ने अर्श से बारिश बरसाई तो उनके रहमत के क़तरों से उनको पैदा किया गया। फिर उनमें से हर एक पर नहर के किनारे एक ख़ेमा लगा दिया गया उस ख़ेमे की चौड़ाई चालीस मील है। उसका कोई दरवाज़ा नहीं है। जब अल्लाह तआला का दोस्त (उसके पास) ख़ेमे में जाना चाहेगा तो उस ख़ेमे का रास्ता हो जाएगा ताकि अल्लाह के वली को इसका इल्म हो जाए कि फ़रिश्तों और ख़िदमतगारों की मख़्लूक़ात की निगाहों ने उस हूर को नहीं देखा। ये हूरें ऐसी हैं जो मख़्लूक़ात की निगाहों से बिल्कुल ओझल हैं। (सिफ़तुल जन्नत इमाम इब्ने कसीर पेज 102)

लड़कियाँ उगाने वाली नहर बीदख़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक नहर है जिसका नाम बीदख़ है। उस पर याक़ूत के कुब्बे हैं जिनके नीचे लड़कियाँ उगती और ख़ूबसूरत आवाज़ में क़ुरआन पढ़ती हैं। जन्नती आपस में कहेंगे हमारे साथ बीदख़ की तरफ़ चलो। चुनाँचे वे आएँगे और लड़कियों से मुसाफ़ा करेंगे। जब कोई लड़की किसी मर्द को पसन्द आएगी तो वह उसकी कलाई को छू लेगा। वह लड़की उसके पीछे चल पड़ेगी और उसकी जगह दूसरी लड़की उग आएगी।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 69)

शिम्र बिन अतिया रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में कुछ नहरें ऐसी हैं जो लड़कियाँ उगाती हैं। ये लड़कियाँ तरह-तरह की आवाज़ों में अल्लाह तआला की हम्द व सना (तारीफ़ प्रशंसा) बयान करती हैं किसी वैसी ख़ूबसूरत आवाज़ें कानों ने कभी नहीं सुनीं। वे कहती हैं:

तर्जुमाः हम हमेशा रहने वालियाँ हैं कभी नहीं मरेंगीं हम लिबास पहनने वालियाँ हैं कभी बे-लिबास न होंगी। हम हमेशा नेमतों में पलने वालियाँ हैं कभी भूखी न होंगी। और हम हमेशा नेमतों में रहने वालियाँ हैं कभी रंज व तकलीफ़ में न जाएँगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1924)

फ़ायदाः शहीदों को जब इस नहर में गोता दिया जाएगा तो ये

अच्छी तरह से साफ़-सुथरे होकर चौदहवीं के चाँद की तरह चमकते हुए नज़र आएँगे। तफ़सील के लिए इस किताब का मज़मून "खाने-पीने के बरतन" का अध्ययन करें।

हूरों की उम्र

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और उनके पास नीची निगाह वाली हम-उम्र (हूरें) होंगी।

(सूरः सॉद आयत 52)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि इनमें मुराद जन्नत की हूरे हैं और 'हम-उम्र' का मतलब यह भी हो सकता है कि वे सब आपस में हम-उम्र होंगी। और यह वे अपने शौहरों के साथ उम्र में बराबर होंगी। पहली सूरत में उनके हम-उम्र होने का फ़ायदा यह है कि उनके बीच आपस में मुहब्बत, उन्स और दोस्ती का सम्बन्ध होगा। सौतनों का-सा बुग्ज़ और नफ़रत नहीं होगी, और ज़ाहिर है कि यह चीज़ शौहरों के लिए बहुत ही सुकून की बात है।

और दूसरी सूरत में जबकि हम-उम्र का मतलब यह लिया जाए कि वे अपने शौहरों की हम-उम्र होंगी। इसका फ़ायदा यह है कि हम-उम्री की वजह से तबीयतों में ज़्यादा मुवाफ़क़त और मुनासबत होगी और एक-दूसरे की राहत व दिलचस्पी का ख़्याल ज़्यादा रखा जा सकेगा। इसी से यह भी मालूम हुआ कि मियाँ-बीवी के बीच उम्र के मुनासिब होने का ख़्याल रखहिये क्योंकि इससे आपसी उन्स (ताल्लुक़ और मुहब्बत) पैदा होता है और निकाह का रिशता ज़्यादा खुशगवार और मज़बूत हो जाता है। (तफ़सीर मआरिफ़ुल कुरआन जिल्द 7 पेज 527)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि जन्नती हूरें एक ही उम्र की तैंतीस साल के बराबर होंगे।

(हादिल अरवाह पेज 288)

हूरों की और दुनिया की औरतों की सब की उम्र जन्नत में तैंतीस साल होगी।

बुढ़िया जवान होकर जन्नत में जाएगी

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 एक बार मेरे पास तशरीफ़ लाए उस वक़्त मेरे पास एक बुढ़िया भी बैठी थी। आपने सवाल फ़रमाया यह कौन है? मैंने अर्ज़ किया मेरी ख़ालाओं में से एक है। आपने इरशाद फ़रमाया यह बात याद रखो कि जन्नत में बुढ़िया दाख़िल न होगी। यह इरशाद सुनकर बुढ़िया को ग़म और परेशानी लाहिक हो गयी। फिर आपने इरशाद फ़रमाया (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) हम उनको एक दूसरी शक्ल में (यानी जवान शक्ल में क़ब्रों से) उठाएँगे। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 158)

हदीसः हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं:

तर्जुमाः एक बुढ़िया जनाब नबी अकरम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िरहुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह से दुआ फ़रमाएँ कि वह मुझे जन्नत में दाख़िल करे। आपने फ़रमाया फ़लाँ की माँ! जन्नत में तो कोई बुढ़िया दाख़िल नहीं होगी। (हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि (यह जवाब सुनकर बुढ़िया) मुँह फेर कर जाते हुए रोने लगी। आपने इरशाद फ़रमाया उसको बता दो कि कोई औरत बुढ़िया होने की हालत में जन्नत में दाख़िल नहीं होगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं हम उनकी दूसरी तरह की पैदाइश करेंगे और उनको कुवारियाँ बना देंगे। (शमाइले तिर्मिज़ी जिल्द 2 पेज 38)

फ़ायदाः ये हदीसें सिर्फ़ उसी औरत के साथ ख़ास नहीं हैं बल्कि दुनिया की हर औरत जवान होकर (तकरीबन तैंतीस साल की उम्र में) जन्नत में जाएगी। इसी तरह से जन्नत में दाख़िल होने वाले बूढ़े हज़रात भी जवान होकर दाख़िल होंगे। कोई बूढ़ा या कम-उम्र न होगा। तफ़सील के लिए इसी किताब में मर्दों की उम्र अध्याय का अध्ययन करें।

नौजवान औरतें

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः ख़ुदा से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है। यानी

(खाने और सैर करने को) बाग़ (जिनमें तरह-तरह के मेवे होंगे) और अंगूर और (दिल बहलाने को) नौजवान हम-उम्र औरतें होंगी।

(सूर: नबा आयत 32-34)

लफ़्ज़ी तहक़ीक़:

"कवाइब" काइब का बहुवचन है और काइब उभरी हुई छातियों वाली औरत को कहते हैं। मुराद इससे यह है कि उनकी छातियाँ अनार की तरह होंगी लटकी हुई नहीं होंगी। (हादिल अरवाह पेज 295)

शर्म व हया और अपने शौहरों से मुहब्बत

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: उनमें औरतें हैं नीची निगाह वाली, नहीं कुरबत की उनसे किसी आदमी ने उन (जन्नतियों) से पहले और न किसी जिन्न ने। (यानी किसी इनसान या जिन्न ने इससे पहले उन्हें छुआ तक नहीं)। फिर सो ऐ जिन्नात व इनसानो! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। (सूर: रहमान आयत 56-57)

तर्जुमा: और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी। (सूर: साफ़्फ़ात आयत 48)

इस आयत की तफ़सीर यह है कि जिन शौहरों के साथ उनका शादी का रिश्ता अल्लाह तआला ने क़ायम कर दिया वे उनके अलावा किसी भी मर्द को आँख उठाकर नहीं देखेंगी।

अल्लामा इब्ने जोज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने नक़ल किया है कि ये औरतें अपने शौहरों से कहेंगी 'मेरे परवर्दिगार की इज़्ज़त की क़सम! जन्नत में मुझे तुमसे बेहतर कोई नज़र नहीं आता। जिस अल्लाह ने मुझे तुम्हारी बीवी और तुम्हें मेरा शौहर बनाया तमाम तारीफ़ें उसी की हैं"।

'निगाहें नीची रखने वाली' का एक और मतलब अल्लामा इब्ने जोज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह भी लिखा है कि वे अपने शौहरों की निगाहें नीची रखेंगी यानी वे खुद इतनी ख़ूबसूरत और वफ़ादार होंगी कि उनके शौहरों को किसी और की तरफ़ नज़र उठाने की ख़्वाहिश ही न

होगी। (तफ़सीर ज़ादुल मसीर जिल्द 8 पेज 57,58)

शौहरों की आशिक़ और मन-पसन्द महबूबाएँ

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः (बीवियाँ होंगी) प्यार लाने वालियाँ हम-उम्र।

(सूरः वाक़िआ आयत 37)

फ़ायदा: 'उरुबे' 'अरूबा' का बहुवचन है। अरूबा उस औरत को कहते हैं जो अपने शौहर की आशिक़ और उसकी न-पसन्द महबूबा हो। हसीन हो, नाज़-नख़्रे वाली हो, अलबेली हो, रंगीली हो, ख़ुश दिखाई देने वाली हो, चंचल हो, शौख़-नज़र हो, माशूक़ाना अन्दाज़ हो, प्यार लाने वाली हो, शहवत-परस्त हो।

बहरहाल अल्लाह तआला ने इस आयत में औरतों की ज़ाहिरी ख़ूबसूरती के साथ उसकी मौज-मस्ती की सिफ़त को भी जमा फ़रमाया है, और बीवियों से इसी की इच्छा होती है, और इसी के साथ उनसे मर्द की ज़िन्दगी की लज़्ज़त की तकमील होती है। (हादिल अरवाह पेज 294)

चले गये हैं वह अदाएँ दिखा के पर्दे में
शरारतें भी हैं, शर्म व हया के पर्दे में

जिन्नात और इनसानों से महफ़ूज़ हूरें और औरतें

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः नहीं निकटता की उनसे किसी आदमी ने उन (जन्नतियों) से पहले और न किसी जिन्न ने। (सूरः रहमान आयत 56)

फ़ायदाः कुंवारी लड़की से संभोग को अरबी में 'तमस' के लफ़्ज़ से ताबीर किया जाता है। इस जगह यही मायने मुराद हैं। और इसमें जो इसकी नफ़ी की गयी है जिन जन्नत वालों के लिए ये हूरें मुक़र्रर हैं उनसे पहले उनको किसी इनसान या जिन्न ने नहीं छुआ होगा। इसका यह मतलब भी हो सकता है कि जो हूरें इनसानों के लिए मुक़र्रर हैं उनको किसी इनसान ने और जो मोमिन जिन्नात के लिए मुक़र्रर हैं उनको किसी जिन्न ने उनसे पहले छुआ नहीं होगा। और यह मतलब भी हो सकता है कि जैसे दुनिया में इनसानी औरतों पर कभी जिन्नात भी चढ़

जाते हैं वहाँ इसकी भी कोई संभावना नहीं होगी।

(तफ़सीर मआरिफ़ुल कुरआन जिल्द 8 पेज 261)

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं (क़यामत के) सूर फूँकने के समय ये हूरे-ऐन नहीं मरेंगी क्योंकि ये ज़िन्दा रहने के लिए पैदा की गयीं हैं।(हादिल अरवाह पेज 289)

इस आयत मुबारक में अक्सर आलिमों के इस विचार का समर्थन हो रहा है कि मोमिन जिन्नात जन्नत में जाएँगे जैसा कि काफ़िर जिन्नात दोज़ख़ में जाएँगे हज़रत ज़मरा बिन हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि से सवाल किया गया कि क्या जिन्नात को भी सवाब (यानी जन्नत) मिलेगी? तो आपने फ़रमाया, हाँ! फिर उन्होंने यही ऊपर ज़िक्र हुई आयत पढ़ी और फ़रमाया इनसानों के लिए इनसान औरतें होंगी और जिन्नात के लिए जिन्नात औरतें।

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब कोई मर्द संभोग करता है और (शुरू में) बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ता तो जिन्नात उसके ख़ास अंग के सर को लिपट जाता है और उसके साथ मुबाशरत (संभोग) में शरीक हो जाता है। (हादिल अरवाह पेज 289)

जन्नती औरतों को जिन्नात और इनसानों के न छूने की एक और तफ़सीर

कुरआन की आयत "लम् यतमिसहुन्-न इन्सुन क़ब्लहुम् ला जान्नुन्" की तफ़सीर में हज़रत इमाम शअबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि ये दुनिया की औरतें हैं जिनको अल्लाह तआला ने दूसरी बार (जन्नत के लिए मुनासिब करके) बनाया होगा जैसा कि इरशाद फ़रमाया है कि हम उनको नये सिरे से बनाएँगे और उनको कुंवारियाँ और शौहरों की आशिक़ बना देंगे। जब उनसे उनकी अद्न में दूसरी तख़्लीक़ (रचना) की जाएगी तो उनके शौहरों से पहले उन पर किसी जिन्न या इनसान ने तसर्रुफ़ नहीं किया होगा।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 148)

हूर की तरफ़ से मुसलमान को अपनी तलब की तरग़ीब हूर का अफ़सोस

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब नमाज़ी सलाम फेरता है और यह नहीं कहता कि ऐ अल्लाह! मुझे दोज़ख़ से नजात अता फ़रमा और मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और मुझे हूरे-ऐन से ब्याह दे। फ़रिश्ते कहते हैं अफ़सोस! क्या यह शख़्स बेबस हो गया है कि अल्लाह तआला के साथ दोज़ख़ आजिज़ हो गया है कि अल्लाह तआला से जन्नत माँगे, और हूर कहती है क्या यह शख़्स इससे आजिज़ आ गया है कि अल्लाह से इसका सवाल करे कि वह उसकी हूरे-ऐन से शादी कर दे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2058)

हूर कब तक मुतवज्जह रहती है?

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाहु सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मुसलमान नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो उसके लिए जन्नत को खोल दिया जाता है। उसके और उसके रब के बीच से पर्दे हटा दिये जाते हैं और हूर उसकी तरफ़ अपना रुख़ कर लेती है जब तक वह न थूके और नाक न सिनके, (क्योंकि हूरें इस नज़ले-ज़ुकाम वग़ैरह से पाक हैं और इनसे नफ़रत करती हैं)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2059)

हूरें सुबह तक इन्तिज़ार में

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स थोड़ा खाना खाकर नमाज़ पढ़ते हुए रात गुज़ारता है सुबह तक हूरे-ऐन इन्तिज़ार में रहती हैं (कि शायद अल्लाह तआला इस नेक बन्दे के साथ हमें ब्याह दे। वल्लहु अअ्लम)।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2060)

अज़ान की दुआ में हूरे-ऐन की दुआ भी करनी चाहिये

हज़रत यूसुफ बिन अस्बात रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मुझे यह बात पहुँची है। जब अज़ान दी जाती है मगर आदमी **"अल्लाहुम्-म रब्-ब हाज़िहिद्अ्वतिल् मुस्तमिअतिल् मुस्तजाबि लहा सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिंव् ज़व्विजूना मिनल् हूरिल्-ऐनि"** नहीं कहता तो हूरे-ऐन कहती है तुझे किस चीज़ ने हमसे बे-ज़रूरत कर दिया है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2057)

फ़ायदाः (1) ऊपर की अरबी इबारत का मतलब यह है कि ऐ अल्लाह! इसे क़बूल व मक़बूल दावत (अज़ान) के रब! हज़रत मुहम्मद और आलि हज़रत मुहम्मद पर रहमत भेज और हूरे-ऐन से हमारी शादी कर दे।

फ़ायदाः (2) अज़ान के बद एक मशहूर दुआ जो हम सबको याद है उसको पढ़ने के बाद यह दुआ भी पढ़ लेना चाहिये क्योंकि इसमें अपने लिए और एक ज़्यादा नेमत यानी जन्नत की हूर की दुआ भी शामिल है। और अगर यह दुआ याद न करें तो उस पहली दुआ को पढ़ने के बाद अपनी ज़ुबान में ही अल्लाह तआला से हूरे-ऐन की दुआ कर लें।

हूर की तरफ़ से निकाह की दावत

हदीसः सरकारे दो आलम मुहम्मद रसूलुल्लाहह सल्ल0 से रिवायत नक़ल की गयी है कि जब आपको मेराज कराई गई तो अपने हूर की सिफ़त (विशेषता) बयान करते हुए इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने उसकी पेशानी को चौदहवीं के बड़े चाँद की तरह देखा है, जिसकी लम्बाई एक हज़ार तीस हाथ के बराबर थी। उसके सर में सौ मेढियाँ थीं, हर मेंढी से दूसरी तक सत्तर हज़ार चोटियाँ थीं और हर चोटी चौदहवीं के चाँद से ज्यादा रोशन थी। मोती का ताज सजा था और जवाहिरात की लड़ियाँ उसकी पेशानी पर पड़ी थीं। मोतियों के साथ दो सतरें लिखी थीं। पहली सतर में "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" लिखा था और दूसरी में यह लिखा था कि "जो शख़्स मेरी जैसी हूर का

तलबगार है उसको चाहिये कि वह मेरे परवर्दिगार की इताअत करे" फिर हज़रत जिब्राईल ने मुझसे कहा ऐ मुहम्मद! यह और इस तरह की (हूरें) आपकी उम्मत के लिए हैं। आप भी खुश हों और अपनी उम्मत को भी इसकी ख़ुशख़बरी सूना दें, और उनको नेक आमाल में मेहनत और कोशिश का हुक्म दें। (तज़्किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 477)

जन्नतियों के लिए हूरों की दुआएँ

हदीसः हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हूरे-ऐन तायदाद में तुम से बहुत ज़्यादा हैं। वे अपने शौहरों के लिए यह दुआएँ करती हैं ऐ अल्लाह! (मेरे) इस शौहर की अपने दीन के बारे में (यानी नेक अमल करने में) मदद फ़रमा। और उसके दिल को अपनी फ़रमाँबरदारी की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा। और ऐ तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले! अपनी ख़ास निकटता के साथ उसको हम तक पहुँचा दे। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 535)

निकाह के लिए हूरों का पैग़ाम

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब सूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत शुरू साल से आख़िर साल तक रमज़ान के महीने के स्वागत के लिए बनती-संवरती है। फिर जब रमज़ान के महीने की पहली रात होती है तो अर्श के नीचे से एक हवा चलती है। उसका नाम मसीरह है। उसकी वजह से जन्नत में पेड़ों के पत्ते और दरवाज़ों के कुन्डे हिलते हैं। उससे ऐसी भीनी-भीनी आवाज़ पैदा होती है कि सुनने वालों ने उससे ज़्यादा खुबसूरत नहीं सुनी होगी।(उसमें) हूरे-ऐन जन्नत के किनारे जाकर पुकार कर कहती है कोई है जो (हमसे) शादी करने के लिए अल्लाह तआला को निकाह का पैग़ाम दे और अल्लाह तआला उसकी शादी (हमसे) कर दे? और अल्लाह तआला हुक्म फ़रमा देते हैं ऐ रिज़वान! (जन्नत का निगराँ और इन्तिज़ाम करने वाला फ़रिश्ता) जन्नत के सब दरवाज़े खोल दे और ऐ मालिक! (दोज़ख़ का दारोग़ा! माहे

रमज़ान के सम्मान में) दोज़ख़ के सब दरवाज़े बन्द कर दे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2055)

जन्नत के दरवाज़ों पर हूरें स्वागत करेंगी

हज़रत यहया बिन अबी कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि हूरे-ऐन अपने शौहरों से जन्नत के दरवाज़ों पर मुलाक़ात करेंगी और बहुत ही ख़ूबसूत लहजे के साथ यह कहेंगी कि हमने आप हज़रात का लम्बे समय तक इन्तिज़ार किया है। हम राज़ी रहने वाली हैं, कभी नाराज ना होगी। हम हमेशा जन्नत में रहने वाली हैं, कभी निकाली न जाएँगी। हम हमेशा ज़िन्दा रहने वाली हैं, कभी नहीं मरेंगी। और यह भी कहेंगी आप मेरे महबूब हैं और मैं आपकी महबूबा हूँ। मैं आप ही के लिए हूँ मेरे नज़दीक आपकी बराबरी करने वाला और कोई नहीं। (हादिल अरवाह पेज 306)

मुलाक़ात के लिए हूर का शौक़

हज़रत इब्ने अबिल-हवारी फ़रमाते हैं, जन्नत की औरतों में से एक औरत अपने नौकर को कहेगी तू तबाह हो जाए! जाकर देख तो सही (हिसाब व किताब में) अल्लाह के वली (यानी मेरे पति) के साथ क्या हुआ? जब वह ख़बर पहुँचाने में देर कर देगा तो वह दूसरे नौकर को भेजेगी। वह देर कर देगा तो तीसरे को रवांना कर देगी। फिर पहला आकर के बतलाएगा मैंने उसको इन्साफ़ की तराज़ू के पास छोड़ा है। दूसरा आकर कहेगा मैंने उसको पुलसिरात के पास छोड़ा है। तीसरा आकर कहेगा वह जन्नत में दाख़िल हो चुका है। उसका स्वागत हूर ख़ुशी-ख़ुशी करेगी और यह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचकर उससे बग़लगीर होगी (यानी उससे लिपट जायेगी) जिससे कभी न निकलने वाली हूर की ख़ुशबू जन्नती के नाक में दाख़िल हो जाएगी।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 349)

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स रोज़ा रखता है उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। उसके जिस्म के हिस्से तस्बीह अदा करते हैं, आसमान वाले उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। अगर उसने नफ़िल रकअतें अदा की तो उसकी वजह से उसके लिए आसमान रोशन हो जाता है। उसकी हूरे-ऐन बीवियाँ दुआ करती हैं कि याअल्लाह! उसको आप क़ब्ज़ फ़रमा लें (यानी अपने पास बुला लें) हम उसके दीदार की शौक़ीन हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2053)

हूरों से मुलाक़ात का शौक़

हज़रत हसन बसरी का इरशाद

हज़रत रबीआ बिन कुलसूम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हमारी तरफ़ देखा कि उनके चारों तरफ़ हम नौजवान जमा हैं तो फ़रमाया ऐ नौजवानों! क्या तुम लोग हूरे-ऐन का शौक़ व चाहत नहीं रखते? (यानी जन्नत की हूरों की चाहत रखो और उनसे मिलने के लिए नेक आमाल करो)। (हादिल अरवाह पेज 305)

मय हमने जो पी हो तो गुनाहगार, मगर हाँ!
देखा है किसी निगाहे-होशरुबा को

हज़रत अबू हमज़ा की हालत

हज़रत अहमद बिन अबिल-हवारी रहमतुल्लहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रमी ने बयान किया कि मैं और हज़रत अबू हमज़ा (रात को) छत पर सो गये थे। मैं उनको देख रहा था कि वह अपने बिस्तर पर सुबह तक करवटें लेते रहे। मैंने उनसे कहा ऐ अबू हमजा! क्या आप रात को सोये नहीं थे? उन्होंने फ़रमाया जब मैं रात को लेट गया था तो मेरे सामने एक हूर दिखाई दी, मानो कि मैं महसूस करता हूँ कि उसकी खाल ने मेरी खाल को छुआ है। (हज़रत इब्ने अबिल-हवारी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि मैंने इसका ज़िक्र हज़रत अबू सुलैमान (दारानी रहमतुल्लाहि अलैहि) से किया तो आपने फ़रमायाः यह शख़्स हूर से मुलाक़ात का शौक़ीन था। (हादिल अरवाह पेज 305)

हूर का लश्कारा

हज़रत यज़ीद रक्क़ाशी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे यह रिवायत पहुँची है कि जन्नत में एक हूर ने लश्कारा मारा तो मजलिस के लोगों में से एक आदमी ने मालूम करते हुए पूछा कि यह लश्कारा किस चीज़ का था? फ़रमाया कि एक हूर अपने शौहर के चेहरे पर देखकर मुस्कुराई है (उसी से यह नूर चमका है, और सारी जन्नत में नज़र आया है)। हज़रत सालेह (मुर्री रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि यह रिवायत सुनकर मजलिस के एक तरफ़ बैठा हुआ एक जवान चीख़ मारकर बेहोश हो गया और चीख़ते-चीख़ते ही उसको मौत आ गयी।

(हादिल अरवाह पेज 305)

नज़र ने भी काम किया वाँ नक़ाब का
मस्ती से हर निगाह तेरे रुख़ पर बिखर गयी

हूर की तस्बीह से जन्नत के पेड़ों पर फूल लग जाते हैं

हज़रत यहया बिन अबी कसीर रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि जब हूरे-ऐन तस्बीह पढ़ती है तो जन्नत के हर पेड़ पर फूल लग जाता है।

(हादिल अरवाह पेज 306)

लुअ्बा हूर

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः जन्नत में एक हूर है जिसका नाम 'लुअ्बा' है। अगर वह अपना मुँह का पानी (यानी थूक, कड़वे) समुन्द्र में डाल दे तो समुन्द्र का तमाम पानी मीठा हो जाए। उसके सीने पर यह लिखा हुआ हैः जो शख़्स यह पसन्द करता है कि उसको मेरे जैसी हूर मिले तो उसको चाहिये कि मेरे परवर्दिगार को राज़ी करने वाले आमाल करे।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 477)

फ़ायदाः हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिब ने इस रिवायत को इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद से नक़ल किया है और इसमें और ज़्यादा यह भी ज़िक्र किया है कि जन्नत की तामम हूरें उसके हुस्न पर हैरान है और उसके कन्धे पर हाथ मारकर कहती हैं। ऐ लुअ्बा! तुझे मुबारक

हो, अगर तेरे तलबगारों को (तेरे हुस्न व ख़ूबसूरती और कमाल का) इल्म हो तो वे ख़ूब कोशिश करें (और नेक काम करके तेरे हक़दार बन जाएँ)। (हादिल अरवाह पेज 305)

ऐसा हुस्न कि देखते ही मर जाएँ

हज़रत अता सलमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि से फ़रमाया ऐ अबू यहया! हमें (नेक आमाल करने का और) जन्नत में जाने का शौक़ दिलाएँ? तो उन्होंने फ़रमाया ऐ अता! जन्नत में एक हूर है जिसके हुस्न पर जन्नती मरते होंगे। अगर अल्लाह तआला जन्नत वालों के लिए ज़िन्दा रहने का फ़ैसला न कर देते तो वे उसके हुस्न को देखकर ही मर जाते। चुनाँचे हज़रत अता हज़रत मालिक की इस बात को सुनने के बाद चालीस साल तक रंज व ग़म में रहे। (हादिल अरवाह पेज 305)

आगे ख़ुदा को इल्म है क्या जाने क्या हुआ
बस उनके रुख़ से याद है उठना नक़ाब का

हूरे-ऐन के शौक़ में एक दानिश्वर बेहोश हो गया

हज़रत अहमद बिन अबिल-हवारी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रह० से बयान करते हैं कि (मूसल में) एक दानिश्वर (अक़्लमन्द, बुद्धिमान) से उनकी मुलाक़ात हुई और उससे पछा क्या तुम्हे हूरे-ऐन का शौक़ है? उसने कहा, नहीं! तो उन्होंने फ़रमाया तुम उनका शौक़ रखो (और उन तक पहुँचने के लिए नेक अमल करो) क्योंकि उनके चेहरे का नूर अल्लाह तआला का बख़्शा हुआ नूर है यह सुनते ही वह शख़्स बेहोश हो गया और उसके घर के लोग उठाकर ले गये और एक महीने तक उसकी बीमार-पुर्सी करते रहे। (हादिल अरवाह पेज 305)

लुत्फ़ उठाएँ लबे-जानाँ की मसीहाई का
लोग इस शौक़ में बिमार हो जाते हैं

हूरों के शौक़ में इबादत करने वालों के वाक़िआत

वाक़िआ (1) हज़रत अबू सुलैमान दारानी रहमतुल्लाहि अलैहि

फ़रमाते हैं कि इराक़ में एक नौज़वान बहुत इबादत किया करता था। वह एक बार एक दोस्त के साथ मक्का मुकर्रमा के सफ़र पर निकला। जब क़ाफ़िला कहीं पड़ाव करता था तो यह नमाज़ में मशगूल हो जाता और जब वे खाना खाते थे तो यह रोज़ेदार होता था। सफ़र में जाते-आते वक़्त उसका वह दोस्त ख़ामोश रहा। जब उससे जुदा होने लगा तो उससे पूछने लगा ऐ भाई! मुझे यह तो बताओ मैंने जो तुझे इतना ज़्यादा इबादत में मशगूल देखा है, इस पर तुम्हें किस बात ने उभारा है? उसने बताया कि मैंने नींद में जन्नतों के महलों मे से एक महल देखा है जिसकी एक ईंट सोने की थी, एक चाँदी की थी। जब उसकी तामीर मुकम्मल हुई तो उसका एक कंगुरा ज़बर्जद का था तो दूसरा याक़ूत का। उन दोनों के दरमियान हूरे-ऐन में से एक हूर खड़ी थी जिसने अपने बालों को खोल रखा था। उसके ऊपर चाँदी का लिबास था। जब वह बल खाती थी तो उसके लिबास में भी बल पड़ जाता था।

उसने (मुझे मुख़ातिब करके) कहा ऐ ख़्वाहिश के पुजारी! अल्लाह तआला की तरफ़ मेरी तलब में कोशिश कर अल्लाह की क़सम! मैं तेरी तलब में हर रोज़ नये-नये तरीक़ो से सिंघार करके सजी जा रही हूँ। चुनाँचे यह मेहनत जो तुमने देखी है उस हूर की तलब के लिए है।

हज़रत अबू सुलैमान दारानी ने (यह वाक़िआ बयान करके) फ़रमाया यह इतनी-सारी इबादत तो एक हूर की तलब, में उस शख़्स की इबादत की क्या हालत होनी चाहिए जो इससे ज़्यादा का तलबगार हो। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 352)

उस इबादत करने के हूर के इश्क़ की इस शेर ने कुछ यूँ तर्जुमानी की है:

निगाहे मस्त साक़ी का यह अदना-सा करिश्मा है
नज़र मिलते ही बस हाथों से साग़र छूट जाता है

हूर की तलब में कोई मलामत नहीं

वाक़िआ (2) हज़रत सुफ़ियान सौरी को उनके शागिर्दो ने बहुत

ज़्यादा डरते हुए और आमाल में बहुत ज़्यादा कोशिश व मेहनत करते देखा तो अर्ज़ किया ये शैख़!अगर आप इस मुजाहिद (मेहनत व कोशिश) को कुछ कम करेंगे तो भी अपनी मुराद को पहुँच जाएँगे, इन्शा-अल्लाह फ़रमाया, क्योंकर मैं पूरी कोशिश न करूँ, मैंने सुना है कि:

"जन्नत वाले अपनी मन्ज़िल में होंगे कि उन पर एक बहुत बड़ा नूर ज़ाहिर होगा और उसकी रौनक़ और बहुत ज़्यादा रोशनी की वजह से आठों जन्नतें रोशन हो जाएँगी और जन्नत वाले यह समझेंगे कि यह नूर अल्लाह की तरफ़ से है और सज्दे में गिर पड़ेंगे। उस वक़्त एक मुनादी आवाज़ देगा कि अपने सर उठाओ यह वह नूर नहीं है जिसका तुम्हें गुमान हुआ। यह एक हूर के चेहरे से नूर चमका है जो अपने शौहर के सामने मुस्कुराई है और उसके मुस्कुराने से यह नूर ज़ाहिर हुआ है।"

तो ऐ भाईयो! जो शख़्स ख़ूबसूरत हूर के लिए मुजाहदा (आमाल में कोशिश और मेहनत) करे तो मलामत नहीं की जाती, वह शख़्स जो ख़ुदा का तालिब हो उसके मुजाहदे पर क्या मलामत है? फिर ये शे'र पढ़े:

तर्जुमा: जिसका ठिकाना जन्नत हो उसे कोई नुक़सान नहीं है चाहे कितने ही ग़म और मुसीबत का सामना हो।

तू उसे दुबला-पतला और ख़ौफ़ज़दा घबराया हुआ मस्जिदों की तरफ़ जाता हुआ देखे कि चादर ओढ़े दौड़ता है।

ऐ नफ़्स! तुझे आग पर तो सब्र नहीं है। अब वक़्त आ गया है कि बदबख़्ती के बाद तू अपने मुक़द्दर को संवार ले।(रौज़ुर्रयाहीन)

हूरें तलब करने वाले बुज़ुर्ग

वाक़िआ (3) हज़रत अबू सलैमान दारानी फ़रमाते हैं कि मैंने एक साल तज़रीद के साथ बैतुल्लाह के हज और नबी सल्ल0 की ज़ियारत का इरादा किया। मैं एक रास्ते में चल रहा था कि एक ख़ूबसूरत इराक़ी जवान को देखा कि वह भी सफ़र कर रहा है और उसका भी वही इरादा है जो मेरा है। जब उसके साथी चलते थे तो वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करता था और जब मन्ज़िल पर उतरते थे तो वह नमाज़ पढ़ता था और

बावजूद इसके वह दिन को रोज़ा रखता था और रात को तहज्जुद पढ़ता था।

इसी हालत में वह मक्का मुकर्रमा तक पहुँचा। उसके बाद उसने मुझसे अलग होना चाहा और मुझे रुख़्सत किया । मैंने कहा ऐ बेटे! किस चीज़ ने तुझे ऐसी सख़्त मेहनत व मशक़्क़त पर तैयार किया? कहा ऐ अबू सुलैमान! मुझे मलामत न करो। मैंने ख़्वाब में जन्नत का एक महल देखा है। वह एक चाँदी की और एक सोने की ईंट से बना हैं इसी तरह उसके बालाख़ानों और उन बालाख़ानों के बीच एक हूर ऐसी थी कि किसी देखने वाले ने ऐसे हुस्न व जमाल और रौनक़ वाली कभी न देखी होगी। वे ज़ुलफ़ें लटकाए हुए थीं। उनमें से एक मुझे देखकर मुस्कुराई तो उसके दाँतों की रोशनी से जन्नत रोशन हो गयी और कहा ऐ जवान! अल्लाह की राह में कोशिश और मुजाहदा कर ताकि मैं तेरी हो जाऊँ और तू मेरा हो जाए। फिर मैं जागा। यह मेरा क़िस्सा और हाल है।

ऐ अबू सुलैमान! मेरे लिए यही बेहतर है कि कोशिश करूँ क्योंकि कोशिश करने वाला ही पाने वाला है। यह जो मुजाहदा तुमने देखा है यह एक हूर की मंगनी की ग़रज़ से था।

मैंने उससे दुआ की दरख़्वास्त की, उसने मेरे लिए दुआ की और मुझसे दोस्ती की और रुख़्सत होकर चला गया।

हज़रत अबू सुलैमान फ़रमाते हैं, मैंने अपने नफ़्स पर गुस्सा और नाराज़गी जताई और कहा ऐ नफ़्स! बेदार हो जा और यह इशारा सुन ले जो एक ख़ुशख़बरी है। जब एक औरत की तलब में इतनी कोशिश और मुज़ाहदा है तो उस शख़्स को जो हूर के रब का इच्छुक है कितना मुजाहदा और कोशिश करनी चाहिये।

हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि इस वाक़िए को नक़ल करके फ़रमाते हैं कि यह ख़्वाब जिन्हें नेक लोग देखते हैं, ये भेद हैं, अल्लाह तआला (ख़्वाब की शक्ल में) दिल के आईने पर ज़ाहिर फ़रमाते हैं क्योंकि ख़्वाब नुबुव्वत के हिस्सों में से एक हिस्सा है। उससे उन्हें ख़ुशख़बरी दी जाती है और उनका सम्मान किया जाता है ताकि वे

कोशिश और परहेज़गारी में तरक़्क़ी करें। वे हमारी तरह नहीं हैं कि औरों को नसीहत करें और ख़ुद नसीहत न पकड़े।

इस किताब के सुनाने के ज़माने में इत्तिफ़ाक़ से एक अजीब नसीहत हासिल हुई कि एक शख़्स के नफ़्स ने उससे कहा काश! ऐसा होता कि कोई शख़्स एक ख़ूबसूरत बाँदी के लिए तुझे बेच देता और उसकी क़ीमत हज के मौसम में वसूल करता फिर तू उसे बेचकर क़ीमत अदा कर देता। वह शख़्स यह तमन्ना कर ही रहा था कि उसके पास एक बुज़ुर्ग आए। उसने अब तक इस ख़्याल का इज़हार नहीं किया था, न अल्लाह के सिवा कोई उसे जानता था। उस बुज़ुर्ग ने उससे कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि तू एक क़ुब्बे में है और उस पर नूर है, और तेरे पास एक बाँदी भी है। उस क़ुब्बे से बाहर सात हूरें थीं जो बहुत ही ख़ूबसूरत थीं, हुस्न व ख़ूबसूरती में अपनी मिसाल आप थीं, वे तेरी मुश्ताक़ थीं। एक उनमें से तेरी तरफ़ इशारा कर के कहती थी कि यह शख़्स दीवाना है, मैं (जन्नत की हूर) इस पर आशिक़ हूँ। और यह (दुनिया की) एक बाँदी पर आशिक़ है। (रौज़ुर्रयाहीन)

नहर हरवल की कुंवारियाँ

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक नहर है जिसका नाम 'हरवल' है। उसके दोनों किनारों पर पेड़ उगे हुए हैं। जब जन्नती कुछ गीत वग़ैरह सुनने की ख़्वाहिश करेंगे तो कहेंगे हमारे साथ हरवल की तरफ़ चलो ताकि हम पेड़ों से (ख़ूबसूरत और दिलकश आवाज़ें) सुनें। चुनाँचे वह ऐसी (ख़ूबसूरत) आवाज़ों में बोलेंगे कि अगर अल्लाह तआला ने जन्नतियों के न मरनेका फ़ैसला न किया होता हो ये उन आवाज़ों के शौक़ और मस्ती में मर जाते। पस जब उन ख़ूबसूरत आवाज़ों को (दरख़्तों पर लगी हुई लड़कियाँ सुनेंगी तो वे अरबी ज़बान में बहुत ही ख़ूबसूरत आवाज़ में) (कुछ) पढ़ेंगी तो अल्लाह के वली उनके पास क़रीब जाएँगे और हर एक उन लड़कियों में से जिसको पसन्द करेगा तोड़ लेगा। फिर अल्लाह तआला उन

लड़कियों की जगह वैसी ही और लड़कियाँ (उस पेड़ पर) लगा देंगे।
(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 3 पेज 163)

हूरों के हक़दार बनाने वाले नेक आमाल

गुस्सा पीने पर हूर मिलेगी

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने गुस्से को पी लिया हालाँकि वह उसको पूरा करने (यानी उस गुस्से के तक़ाज़े पर अमल करने) की ताक़त रखता था, अल्लाह तआला उसको क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुलाएँगे यहाँ तक कि उसको इख़्तियार देंगे कि वह हूरों में जिसको चाहे ले ले। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 440)

हूर लेने के तीन काम

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तीन काम ऐसे हैं जिस शख़्स के पास इनमें से एक भी होगा उसकी हूरे-ऐन के साथ शादी की जाएगी।

1. वह शख़्स जिसके पास ज़रूरत की अमानत छुपाकर रखी गयी और उसने उसको अल्लाह के डर की वजह से अदा कर दिया।

2. वह शख़्स जिसने अपने क़ातिल को माफ़ कर दिया।

3. वह शख़्स जिसने हर (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद "कुल हुवल्लाहु अहद" (पूरी सूरः इख़्लास) की तिलावत की। (तरग़ीब व तरहीब)

फ़ायदाः इन ज़िक्र हुए आमाल में से कोई-सा अमल जितनी बार करेगा इन्शा-अल्लाह उतनी हूरें मिलेंगी।

अच्छे तरीक़े से हर रोज़ा रखने का इनाम सौ हूरें

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत एक साल से दूसरे साल (के शुरू होने) तक

रमज़ान मुबारक के लिए संवरती है, और हूर भी एक साल के शुरू से दूसरे साल के शुरू तक रमज़ान मुबारक के लिए संवरती है। जन्नत कहती है ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपने बन्दों में से इस महीने में रहने वाले निश्चित फरमा दे। और हूरें यह दुआ करती है कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए इस महीने में अपने नेक बन्दो में से शौहर निश्चित फ़रमा दे जिनसे हमारी आँखें ठंडी हों और हमसे उनकी आँखें ठंडी हों। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जिस शख़्स ने खुद रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखा कुछ खाया पिया नहीं, और किसी मोमिन पर बोहतान भी नहीं लगाया, और उस रोज़े की हालत में कोई गुनाह भी न किया। अल्लाह तआला (रोज़े की) हर रात में उसके लिए सौ हूरों से उसकी शादी करेंगे और उसके लिए जन्नत में लुअ्लुअ्, याक़ूत और ज़बर्जद (मोतियों) का महल बनाएँगे अगर तमाम दुनिया को उस महल में ट्राँस्फर कर दिया जाए तो यह दुनिया में बकरियों की जगह जितना नज़र आएगा।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2048)

नीचे लिखे गये विर्द (वज़ीफ़े) के इनामात

अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जुमा: उसी के पास हैं चाबियाँ आसमानों की और ज़मीन की।

(सूर: ज़ुमर आयत 63)

इसकी तफ़सीर में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से इसके बारे में सवाल फ़रमाया (कि आसमान और ज़मीन की चाबियाँ क्या हैं, यानी कौनसी इबादतें उसकी या उससे आला दर्जे यानी जन्नत की वारिस बनाती हैं)। तो जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: "ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, वस्तग़फ़िरुल्ला-ह, व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि, अल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिहरु वल्-बातिनु व बियदिहिल् ख़ैरु युहयी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर'

जो शख़्स इन कलिमात को दस बार सुबह के वक़्त पढ़ेगा उसकी

शैतान और उसके (नुकसान पहुँचाने वाले) लश्कर से हिफ़ाज़त की जाएगी। उसको अज्र का एक किन्तार अता किया जाएगा। उसके लिए जन्नत में एक दर्जा बुलन्द किया जाएगा। उसकी हूरे-ऐन से शादी की जाएगी। और अगर उस दिन (जिस दिन उसने यह वज़ीफ़ा पढ़ा था) मर गया तो उसके लिए शहीदों वाली मोहर लगा दी जाएगी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2048)

नेकी का हुक्म और बुराई से रोकने का हुक्म करने के इनाम में मिलने वाली ऐना हूर की शान

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जन्नत में एक हूर है जिसका नाम "ऐना" है। जब वह चलती है तो उसके चारो तरफ़ सत्तर हज़ार ख़िदमतगार लड़कियाँ चलती हैं। उसके दाएँ तरफ़ भी और बाएँ तरफ़ भी (इतनी ही ख़िदमतगार लड़कियाँ) होती हैं। यह हूर कहती है कहाँ है 'अमर बिल्-मारूफ़' करने वाले और 'नही अनिल-मुनकर' करने वाले (यानी नेकियों का हुक्म करने वाले और बुराई से मना करने वाले) मैं उनका इनाम हूँ। यानी हर ऐसे आदमी को ऐसी एक-एक हूर ऐना अता की जाएगा या तो 'अमर बिल्-मारूफ़' और 'नही अनिल-मुनकर' (नेकियों का हुक्म करना और बुराई से मना करना) करते रहने के सवाब में यह हूर मिलेगी या यह कि हर बार 'अमर बिल्-मारूफ़' और 'नही अनिल-मुनकर (यानी नेकियों का हुक्म और बुराई से मना करना) करने के सवाब में यह हूर अता की जाएगी। ज़ाहिर यही है कि हर बार 'अमर' या 'नही' करने से यह हूर मिलेगी। वल्लाहु अअ्लम। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2049)

हूरें चाहिएँ तो ये आमाल करो

शैख़ मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, एक साल मैं हज के लिए गया। एक दिन मक्का मुकर्रमा के बाज़ारों में फिर रहा था कि एक बूढ़ा मर्द एक बाँदी का हाथ पकड़े हुए नज़र आया। बाँदी का रंग बदला हुआ, जिस्म दुबला था, और उसके चेहरे से

नूर चमकता था, और रोशनी ज़ाहिर होती थी। वह बूढ़ा शख़्स पुकार रहा था, कोई बाँदी का तलबगार है? कोई इसको चाहने वाला है? कोई बीस दीनार से बढ़ने वाला है? मैं इस बाँदी के सब ऐबों से बरी हूं।

रिवायत करने वाले का बयान है कि मैं उसके क़रीब गया और कहा क़ीमत तो बाँदी की मालूम हो गयी मगर इसमें ऐब क्या है? कहा यह बाँदी पागल है, ग़मगीन रहती है, रातों को इबादत करती है, दिन को रोज़ा रखती है, न कुछ खाती है न पीती है। हर जगह ही अकेले रहने की आदी है।

जब मैंने यह बात सुनी मेरे दिल ने उस बाँदी को चाहा और क़ीमत देकर उसको ख़रीद लिया और अपने घर ले गया। बाँदी को सर झुकाए देखा फिर उसने अपना सर मेरी तरफ़ उठाकर कहा ऐ मेरे छोटे मौला! खुदा तुम पर रहम करे, तुम कहाँ के रहने वाले हो? मैंने कहा इराक़ में रहता हूँ। कहा कौनसा इराक़? बसरे वाला या कूफ़े वाला? मैंने कहा न कूफ़े वाला न बसरे वाला। फिर बाँदी ने कहा शायद तुम मदीनतुस्सलाम बग़दाद में रहते हो। मैंने कहा, हाँ! कहा वाह! वाह! वह आबिदों और ज़ाहिदों का शहर है।

रिवायत बयान करने वाले कहते हैं मुझे ताज्जुब हुआ। मैंने कहा बाँदी हुजरों की रहने वाली, एक हुजरे से दूसरे हुजरे में बुलाई जाने वाली ज़ाहिदों और आबिदों को कैसे पहचानती है? फि मैंने उसकी तरफ़ ध्यान करके दिल्लगी के तौर पर यह पूछाः तुम बुजुर्गों में से किस-किसको पहचानती हो? कहा मैं मालिक बिन दीनार, बशर हाफ़ी, सालेह मुज़नी और हातिम सजिस्तानी, मारूफ़ कर्ख़ी, मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी, राबिआ अदविया, शअ़्वाना, मैमूना , इस बुजुर्गों को पहचानती हूँ। मैंने कहा इन बुजुर्गों की तुम्हें कहाँ से पहचान है? बाँदी ने कहा ऐ जवान! कैसे न पहचानूँ? क़सम खुदा की वे लोग दिलों के डाक्टर हैं। ये मुहब्बत करने वाले को महबूब की राह दिखलाने वाले हैं।

फिर मैंने कहा ऐ बाँदी! मैं मुहम्मद बिन हुसैन हूँ। उसने कहा मैंने ऐ अबू अब्दुल्लाह! खुदा से दुआ माँगी थी कि खुदा तुमको मुझसे मिला दे। तुम्हारी वह उम्दा आवाज़ जिससे मुरीदों के दिल ज़िन्दा करते थे और

सुनने वालों की आँखे रोती थीं कैसे है? मैंने कहा अपने हाल पर है। कहा तुम्हें खुदा की क़सम! मुझे कुरआन शरीफ़ की कुछ आयतें सुनाओ। मैंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ी। उसने बड़े ज़ोर से चीख़ मारी और बेहोश हो गयी। मैंने उसके मुँह पर पानी छिड़का तो होश में आई और कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! यह तो उसका नाम है। क्या हाल होगा अगर मैं उसको पहचानूँ और जन्नत में उसको देखूँ। खुदा तुम पर रहम करे और पढ़ो। मैंने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः यानी क्या गुमान करते हैं जिन्होंने गुनाह किये हैं कि हम उनको ईमान वालों के बराबर करेंगे, उनकी मौत और ज़िन्दगी बराबर है? बुरा है जो हुक्म काफ़िर लगाते हैं। (सूरः जासियह् आयत 21)

उसने कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! हमने न किसी बुत को पूजा और न किसी माबूद को क़बूल किया। पढ़े जाओ खुदा तुम पर रहम करे। मैंने फिर यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः यानी हमने ज़ालिमों के वास्ते आग तैयार कर रखी है। उनके इर्द-गिर्द आग के ख़ेमें होंगे। अगर पानी तलब करेंगे तो गर्म पानी पिघले हुए ताँबे की तरह पाएँगे जो उनके चेहरे झुलस देगा, उनका पीना भी बुरा है और आरामगाह भी बुरी है। (सूरः कहफ़ आयत 29)

फिर कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! तुमने अपने अपने नफ़्स के साथ ना-उम्मीदी लाज़िम कर ली है। अपने दिल को ख़ौफ़ और उम्मीद के बीच आराम दो। और कुछ पढ़ो खुदा तुम पर रहम करे। फिर मैंने पढ़ाः

तर्जुमाः यानी 'बाज़े चेहरे क़यामत के दिन खुश हश्शाश-बश्शाश होंगे'। और 'बाज़ चेहरे तरोताज़ा अपने परवर्दिगार को देखने वाले होंगे'। (सूरः अ-ब-स आयत 38,39) (सूरः क़ियामत आयत 22,23)

फिर कहा मुझे उसके मिलने का शौक़ कितना ज़्यादा होगा जिस दिन वह अपने दोस्तों के वास्ते ज़ाहिर होगा। और पढ़ो खुदा तुम पर रहम करे। फिर मैंने पढ़ाः

तर्जुमाः लड़के जो हमेशा रहने वाले हैं जन्नत वालों के लिए हाथों में कूज़े (डोंगे) और लोटे और प्याले शराबे मईन के लिए हुए घूमेंगे, न

पीने वालों का सर घूमेगा और न वे बहकेंगे। (सूरः वाक़िआ आयत 17, 18)

फिर कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! मैं कहती हूँ तुमने हूर को पैग़ाम दिया है, कुछ उनके मेहर के लिए भी ख़र्च किया है? मैंने कहा ऐ बाँदी मुझे बता दे वह क्या चीज़ है? मैं तो बिल्कुल मुफ़लिस हूँ। कहा रातों को जागना अपने ऊपर लाज़िम करो और हमेशा रोज़ा रखा करो और फ़कीरों और मिस्कीनों से मुहब्बत करते रहो। फिर वह बाँदी बेहोश हो गयी। मैंने उसके चेहरे पर पानी छिड़का तो होश में आई। फिर दोबारा मुनाजात पढ़ते-पढ़ते बेहोश हो गयी। मैंने पास जाकर देखा वह मर चुकी थी। मुझे उसके मरने का बड़ा सदमा हुआ।

फिर मैं बाज़ार गया ताकि उसके कफ़न-दफ़न का सामान लाऊँ। वापस आकर क्या देखता हूँ कि वह कफ़नाई हुई ख़ुशबू लगी हुई है और जन्नत के दो सब्ज़ जोड़े उस पर पड़े हैं। कफ़न में दो लाईनों में लिखा है। पहली लाईन में 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' और दूसरे पर 'अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम व ला हुम् यह्ज़नून' है।

मैंने अपने दोस्तों के साथ उसका जनाज़ा उठाया और नमाज़ पढ़कर दफ़न कर दिया। उसके सिरहाने मैंने सूरः यासीन पढ़ी और रोता हुआ ग़मगीन हुजरे में वापस आ गया। फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़कर सो गया। ख़्वाब में देखा कि वह बाँदी जन्नत में है। जन्नती लिबास पहने ज़ाफ़रान की ख़ुशबू से महके हुए तख़्त में है। सुन्दुस और इस्तब्रक़ का फ़र्श है, सर पर ताज सजे हुए मोती और जवाहिरात टके हुए, पाँव में सुर्ख़ याक़ूत की जूती है जिससे अंबर व मुश्क की ख़ुशबू आ रही है। उसका चेहरा चाँद-सूरज से ज़्यादा रोशन है। मैंने कहा ऐ बाँदी ठहर! किस अमल ने तुझे इस दर्जे पर पहुँचाया? कहा ग़रीबों मिस्कीनों की मुहब्बत, इस्तिग़फ़ार की अधिकता, मुसलमानों के रास्ते से उनको तकलीफ़ देने वाली चीज़ें दूर करने की वजह से मुझे यह दर्जा और रुतबा मिला है। (रौज़ुर्रयाहीन)

हूर के ज़रिये तहज्जुद की प्रेरणा

शैख़ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि

एक बार मेरी पिण्डली में दर्द हो गया था। उसकी वजह से नमाज़ में बड़ी तकलीफ़ होती थी। एक रात जो नमाज़ के लिए उठा तो उसमें सख़्त दर्द हुआ और मुश्किल से नमाज़ पूरी करके चादर सिरहाने रखकर सो गया। ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि एक ख़ूबसूरत व हसीन लड़की जो सर से पैर तक हुस्न की पुतली थी चन्द ख़ूबसूरत बनी-संवरी लड़कियों के साथ नाज़ों-अन्दाज़ के साथ मेरे पास आकर बैठ गयी। दूसरी लड़कियाँ जो उसके साथ थीं उसके पीछे बैठ गईं। उनमें से एक से उसने कहा इस शख़्स को उठाओ मगर देखो जागने न पाए। वे सब की मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुईं और सब ने मिलकर उठाया। मैं यह सब हाल ख़्वाब में देख रहा था। फिर उसने अपनी सब ख़ादिमाओ से कहा कि इसके लिए नरम-नरम बिछौने बिछाओ और अपने-अपने मौक़े से तकिये रख दो। उन्होंने फ़ौरन सात बिछौने ऊपर-नीचे बिछाए कि मैंने उम्र भर कभी ऐसे बिछौने न देखे थे। फिर उस पर बहुत ही ख़ूबसूरत सब्ज़ रंग के तकिये रख दिये। फिर हुक्म किया कि इसे इस फ़र्श पर लिटा दो। मगर देखे यह जागने न पाए। मुझे उन्होंने उस बिछौने पर लिटा दिया और मैं उन्हें देखता था और सब बातें सुनता था।

फिर उसने हुक्म दिया कि इसके चारों तरफ़ फूल-फुलवारी रख दो उन्होंने सुनते ही तरह-तरह के फूल रख दिये। फिर वह मेरे पास आयी और अपना हाथ मेरी उसी दर्द की जगह पर रखा और हाथ से सहलाया, फिर कहा खड़ा हो नमाज़ पढ़। हक़ तआला ने तुझे शिफ़ा दी। उसका यह कहना था कि मेरी आँख खुल गई और मैंने अपने आपको भला-चंगा पाया मानो कभी बीमार ही न था। वह दिन और आज का दिन फिर कभी बीमार न हुआ, और मेरे दिल में अब तक उसके उस कहने की कि "उठ खड़ा हो नमाज़ पढ़, हक़ तआला ने तुझे शिफ़ा दी" लज़्ज़त व मिठास मौजूद है। (रौज़ुर्रयाहीन)

हूर को देखने वाले बुज़ुर्ग की हिकायत

एक नेक आदमी ने अल्लाह की चालीस साल इबादत की। एक दिन उस पर नाज़ का मुक़ाम ग़ालिब हुआ तो उसके ग़लबे में अल्लाह

तआला की बारगाह में बोला, या अल्लाह! आपने जो कुछ मेरे लिए जन्नत में तैयार किया है और जितनी हूरें मेरे लिए उपलब्ध फ़रमाई हैं वह मुझे दुनिया में दिखा दीजिए। अभी दुआ ख़त्म न होने पायी थी कि मेहराब फटी और एक ऐसी हसीन हूर निकली कि अगर वह दुनिया में आ जाए तो तमाम दुनिया अपने होश खो बैठे।

उस आबिद ने पूछा नेक-बख़्त तू कौन है? आदमी है या परी? उसने अरबी के कुछ शे'र पढ़े जिनका मज़मून यह था कि तू मौला से जो चाहता था वह तुझे मिला और मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है कि मैं तेरी ग़मख़्वार बनूं और तमाम रात तुझसे बातें करूँ। आबिद ने पूछा तू किसके लिए है? कहा, आपके लिए। कहा तुझ जैसी मुझे कितनी मिलेंगी? कहा सौ। हर एक हूर की सौ ख़िदमत करने वालियां और हर ख़िदमत करने वाली की सौ बाँदियाँ और हर बाँदी पर सौ इन्तिज़ार करने वालियाँ। आबिद यह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ और ख़ुशी में आकर पूछा कि ऐ प्यारी! क्या किसी को मुझ से ज़्यादा भी मिलेगा? हूर ने कहा तुम बेचारे तो कुछ भी नहीं हो, इतना तो छोटे-मोटों को जो सुबह व शाम 'अस्तग़फ़िरुल्लाहल् अज़ीम' पढ़ लेते हैं, और सिवाए इसके उनका कुछ काम नहीं, उन्हें मिल जाएगा। (रौज़ुर्रयाहीन)

जितने आपके आमाल ख़ूबसूरत होंगे उतनी ही आपकी हूरें हसीन होंगी

शैख़ अबू बक्र ज़रीर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक ख़ूबसूरत ग़ुलाम था। दिन को रोज़ा रखता था रात भर नमाज़ पढ़ता था। वह एक दिन मेरे पास आया और बयान किया कि आज मैं सो गया था और मेरे रोज़ाना के वज़ीफ़े भी छूट गये। ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि गोया सामने से मेहराब फट गयी है और उस में से कुछ हसीन लड़कियाँ निकली हैं। उनमें से एक लड़की बहुत ही बदसूरत थी। मैंने उम्र भर ऐसी कभी न देखी थी। मैंने पूछा तुम सब किसके लिए हो? और यह बदसूरत किसके लिए है? उन्होंने कहा हम सब तेरी पहले गुज़री हुई रातें हैं और बुरी सूरत वाली तेरी यह रात है जिसमें तू सो रहा है। अगर तू

इसी रात में मर गया तो यही तेरे हिस्से में आएगी। यह ख़्वाब बयान करके उस जवान ने एक चीख़ मारी और मर गया। (रौज़ुर्रयाहीन)

इस वाक़िए से मालूम हुआ कि जननतियों की हूरें उतनी ही हसीन होंगी जितना उन्होंने अपनी इबादत को हसीन अन्दाज़ से अदा किया होगा।

पाँच सदियों से हूर की परवरिश

शैख़ अबू सुलैमान दारानी कहते हैं कि मैं एक रात सो गया था और रोज़ाना के वज़ीफ़े भी रह गये थे। ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही हसीन हूर है जो कह रही है कि अबू सुलैमान! तुम तो मज़े से पड़े सो रहे हो और मैं तुम्हारे लिए पाँच सौ साल से परवरिश की (पाली) जा रही हूँ। (रौज़ुर्रयाहीन)

एक नौ-मुस्लिम का इन्तिज़ार करने वाली हूर

शैख़ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बार मैं जहाज़ में सवार था। मौज़ों से जहाज़ एक जज़ीरे (टापू) में जा पहुँचा। उस जज़ीरे में हमने देखा कि एक आदमी एक बुत को पूजा रहा है। हमने उससे पूछा कि तू किसकी इबादत करता है? उसने बुत की तरफ़ इशारा किया। हमने कहा तेरा यह माबूद किसी चीज़ का पैदा करने वाला नहीं बल्कि ख़ुद भी दूसरे का पैदा किया हुआ है। और हमारा वह माबूद है जिसने इसे और सब चीज़ों को पैदा किया है।

उस बुत पूजने वाले ने पूछा बताओ तुम किसकी पूजा करते हो? हमने जवाब दिया कि हम उस पाक ज़ात की इबादत करते हैं जिसका आसमान में अर्श है और ज़मीन पर उसका क़ब्ज़ा और इख़्तियार है। और ज़िन्दों और मुर्दों में उसकी तक़दीर जारी है। उसके पाक नाम में उसकी महानता और बड़ाई बहुत बड़ी है।

उसने पूछा तुम्हें ये बातें किस तरह मालूम हुई? हमने कहा उस सच्चे बादशाह ने हमारे पास एक सच्चे रसूल को भेजा उसने हमें हिदायत की। फिर उसने पूछा कि वह रसूल कहाँ हैं और उनका क्या हाल है? हमने जवाब दिया कि जिस काम के लिए ख़ुदा ने उन्हें भेजा

था जब वह पूरा कर चुके तो उसने उन्हें अपने पास बुला लिया। उसने कहा रसूले खुदा ने तुम्हारे पास अपनी क्या निशानी छोड़ी है? हमने कहा अल्लाह की किताब। कहा, मुझे दिखाओ। हम उसके पास क़ुरआन शरीफ़ ले गये। कहा मैं तो जानता नहीं तुम पढ़कर सुनाओ। हमने उसे एक सूरः पढ़कर सुनाई। वह सुनकर रोता रहा और कहने लगा जिसका यह कलाम है उसका हुक्म तो दिल व जान से मानना चाहिये और किसी तरह उसकी नाफ़रमानी न करनी चाहिये। फिर वह मुसलमान हो गया।

हमने उसे दीन के हुक्म और कुछ सूरतें सिखाईं। जब रात हुई और हम सब अपने-अपने बिछौनों पर लेट रहे। वह बोला कि भाईयो! यह माबूद जिसका तुमने मुझे पता और सिफ़तें बताईं, सोता भी है? हमने कहा वह सोने से पाक है। वह हमेशा ज़िन्दा और क़ायम है। उसने कहा कैसे बुरे बन्दे हो कि तुम्हारा मौला नहीं सोता और तुम सोते हो? उसकी ये बातें सुनकर हमें बड़ी हैरत हुई।

मुख़्तसर यह कि हम वहाँ कुछ रोज़ रहे। जब वहाँ से चलने का इरादा हुआ उसने कहा भाईयो! मुझे भी साथ ले चलो। हमने क़ुबूल कर लिया। चलते-चलते हम आबादान पहुँचे मैंने अपने साथियों से कहा कि यह अभी मुसलमान हुआ है, इसकी कुछ मदद करनी चाहिये।

हम सबने थोड़े-से दिर्हम जमा करके उसे दिये और कहा इसे अपने खर्च में लाना। वह कहने लगा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' तुम तो अजीब आदमी हो, तुम्हीं ने तो मुझे रास्ता बतलाया और खुद ही रास्ते से भटक गये। मुझे सख़्त ताज्जुब आता है कि मैं उस जज़ीरे (द्वीप) में बुत को पूजा करता था, मैं उसे पहचानता न था। उस वक़्त भी उसने मुझे बेकार नहीं किया। फिर जब मैं उसे जानने लगा तो अब वह मुझे किस तरह छोड़ देगा। तीन दिन के बाद एक आदमी ने मुझे आकर ख़बर दी कि वह नौ-मुस्लिम कर रहा है। उसकी खबर लो। यह सुनकर मैं उसके पास गया और पूछा कि तुझे क्या ज़रूरत है? कहा कुछ नहीं। जिस पाक ज़ात ने तुम्हें जज़ीरे (टापू) में पहुँचाया उसी ने मेरी सब ज़रूरतें पूरी कर दीं।

ख़्वाजा अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे वहीं बैठे-बैठे नींद-सी आयी और मैं सो गया। क्या देखता हूँ कि एक हरा-भरा

बाग़ है। उसमें एक कुब्बा है और एक तख़्त बिछा हुआ है। उस पर एक बहुत ही हसीन नौ-उम्र औरत बैठी है, कहती है कि ख़ुदा के लिए उस नौ-मुस्लिम को जल्द भेजो। मुझे उसकी जुदाई में बड़ी बेक़रारी और बेसब्री है। इतने में मेरी आँख खुली तो देखा वह इस दुनिया से जा चुका था। मैंने उसे गुस्ल व कफ़न देकर दफ़न कर दिया। जब रात हुई तो ख़्वाब में वही कुब्बा और बाग़ और तख़्त पर वही औरत और बग़ल में उस नौ-मुस्लिम को देखा कि वह यह आयत पढ़ रहा है:

तर्जुमा: और फ़रिश्ते उन पर यह कहते हुए हर दरवाज़े से आएँगे कि सलामती है तुम पर। पस क्या अच्छा बदला है आख़िरत का। (सूरः रअत आयत 23, 24) (रौज़ुर्रयाहीन)

जन्नती के लिए औरतों और हूरों की तायदाद

सत्तर बीवियाँ

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: जन्नत में इनसान की सत्तर बीवियों से शादी की जाएगी। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! क्या मर्द उन सब की ताक़त रखेगा? आपने इरशाद फ़रमाया मर्द को सौ आदमियों की ताक़त दी जाएगी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2031)

सत्तर जन्नत की, दो दुनिया की

हदीसः हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने जनाब रसूलुललाह सल्ल0 से सुना:

तर्जुमा: जन्नत में मोमिन की बहत्तर बीवियों से शादी की जाएगी, सत्तर जन्नत की औरतें होंगी और दो दुनिया की औरतें होंगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2032)

अदना दर्जे के जन्नती की बहत्तर बीवियाँ

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः अदना दर्जे के जन्नती के अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी। हर एक जन्नती के लिए लुअ्लुअ् याक़ूत और ज़बर्जद का एक कुब्बा स्थापित किया जाएगा (जिसकी लम्बाई) जाबिया (शाम मुल्क के शहर) से सन्आ (यमन मुल्क की राजधानी) जितनी होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2562)

दोज़ख़ियों की मीरास की दो-दो बीवियाँ भी जन्नतियों को मिलेंगी

हदीसः हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस शख़्स को भी अल्लाह तआला जन्नत में दाख़िल करेंगे उसकी बहत्तर हूरों से और दो दोज़ख़ियों कि मीरास से शादी कर देंगे। उन औरतों में से हर एक ख़्वाहिश करती होगी और मर्द का नफ़्स कमज़ोर नहीं होता होगा। (इब्ने माजा हदीस 4337)

फ़ायदाः यह दोज़ख़ियों की मीरास का मतलब यह है कि हर दोज़ख़ी की जन्नतत में मीरास होगी जिसका अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से मोमिन को वारिस बना देगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है, उसको जो दो औरतें जन्नत में दी जानी थीं वे मुसलमान को दे दी जाएँगी।

अदना दर्जे के जन्नती की बीवियों की तायदाद

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे के जन्नत के सात दर्जे होंगे। यह छठे पर रहता होगा। उसके ऊपर सातवाँ दर्जा होगा। उसके तीन सौ ख़ादिम होंगे, उसके सामने रोज़ाना सुबह व शाम सोने-चाँदी के तीन सौ प्याले खाने के पेश किये जाएँगे। हर एक प्याले में ऐसे क़िस्म का खाना होगा जो दूसरे में नहीं होगा और जन्नती उसके शुरू में ऐसे ही ज़ायक़ा (स्वाद) पाएगा जैसा कि उसके आख़िर से। और वह यह कहता होगा या रब! अगर

आप मुझे इजाज़त दें तो मैं तमाम जन्नत वालों को ख़िलाऊँ और पिलाऊँ जो कुछ मेरे पास है (उसमें कमी न होगी उसकी हूरे-ऐन में से बहत्तर बीवियाँ होंगी और उनमें से हर एक की सुरीनें ज़मीन के एक मील के बराबर होंगी।) (मस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 537)

बारह हज़ार पाँच सौ बीवियाँ

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती मर्द की पाँच सौ हूरों और चार हज़ार कुंवारियों और आठ हज़ार शादी-शुदा औरतों से शादी की जाएगी। जन्नती उनमें से हर एक के साथ दुनियावी ज़िन्दगी की मिक़्दार (मात्रा) के बराबर मुआनक़ा करेगा। (यानी गले से मिलेगा)। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 552)

बारह सौ हूरों और बीवियों का तराना

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में से हर मर्द की चार हज़ार कुंवारी आठ हज़ार बाँझ और सौ हूरों से शादी की जाएगी। ये सब हर सातवे दिन में जमा हुआ करेंगी और हसीन आवाज़ में तराना कहेंगी। इतना हसीन कि मख़्लूक़ात में से किसी ने न सुना होगा। वे कहेंगीः

तर्जुमाः हम हमेशा रहने वालियाँ हैं, कभी नहीं मरेंगी। हम नेमतों में पलने वाली हैं कभी ख़स्ताहाल न होंगी। हम राज़ी रहने वाली हैं कभी नाराज़ न होंगी। हम (जन्नत में) हमेशा रहेंगी कभी निकाली न जाएँगी। ख़ुशख़बरी हो उसके लिए जो हमारे लिए है और हम उसके लिए हैं।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 538)

नहरों के किनारे ख़ेमों की हूरें

हज़रत अहमद बिन अलि-हवारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू सुलैमान दरानी रह0 को फ़रमाते हुए सुना कि जन्नत में कुछ नहरें ऐसी हैं जिनके किनारों पर ख़ेमे लगाए गये हैं, उनमें

हूरे-ऐन मौजूद हैं। अल्लाह तआला ने उनमें से हर एक को नये तरीक़े से पैदा किया है। जब उनका हुस्न मुकम्मल (पूर्ण) हो गया तो फ़रिश्तों ने उसके ऊपर ख़ेमे लगा दिये, यह एक मील दर मील कुर्सी पर बैठी हैं जबकि उनकी सुरीनें कुर्सी के किनारों से बाहर को निकल रही हैं। जन्नत वाले अपने महलों से (निकलकर उनके पास) आएँगे और जिस तरह से चाहेंगे उनके गाने और तराने सुनेंगे। फिर हर जन्नती हर एक के साथ तन्हाई में चला जाएगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2028)

बादल से लड़कियों की बारिश

हज़रत कसीर बिन मुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नती की नेमत 'मज़ीद' में से एक यह है कि जन्नत वालों के ऊपर से एक बदली गुज़रेगी। वह कहेगी तुम क्या चाहते हो? मैं आप हज़रात पर किस नेमत की बारिश करूँ? चुनाँचे वे हज़रात जिस-जिस नेमत की चाहत करेंगे वही उन पर नाज़िल होंगी। हज़रत कसीर बिन मुर्रा (हज़रमी रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमामते हैं कि गर अल्लाह तआला ने मुझे यह मन्ज़र दिखाया तो मैं यह कहूँगा कि हम पर सजी-संवरी लड़कियों की बारिश हो। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2040)

हज़रत अबू तय्यिब कलाई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नत वालों पर नेमतों से भरी हुई बदली टुकड़े-टुकड़े होकर साया करेगी और पूछेगी मैं आप हज़रात पर किस नेमत और लज़्ज़त की बारिश करूँ? पस जो शख़्स जिस तरह की इच्छा करेगा उस पर उसी की बारिश करेगी, यहाँ तक कि कुछ जन्नती यह कहेंगे कि हम पर नौजवान हम-उम्र लड़कियों की बारिश हो। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 292)

जन्नती मर्दों के लिए और ज़्यादा हूरों का इनाम

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती आदमी जन्नत में करवट बदलने से पहले सत्तर साल तक टेक लगाकर बैठा, फिर उसके पास एक औरत आएगी जिसके गाल में वह अपने मुँह को आईने से ज़्यादा साफ़ देखेगा। उस पर का

अदना मोती पूरब व पश्चिम के दरमियानी हिस्से को रोशन कर देने वाला होगा। यह उसको सलाम करेगी और वह उसके सलाम का जवाब देगा और पूछेगा आप कौन हैं? वह बताएगी कि मैं 'इज़ाफ़ी अतीया' (बढ़ाया हुआ इनाम) हूँ। उस औरत पर सत्तर पोशाकें होंगी उनसे भी नज़र गुज़र जाएगी यहाँ तक कि वह उसकी पिण्डली के गूदे को उन पोशाकों के पीछे से देख लेगा। उन औरतों पर ताज भी होंगे जिनका अदना दर्जे का मोती पूरब व पश्चिम के बीच के हिस्से को रोशन कर सकता होगा। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 75)

जन्नत की हूरें मर्दों से ज़्यादा होंगी

इमाम इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत सहाबा किराम ने आपस में चर्चा की कि जन्नत में मर्द ज़्यादा होंगे या औरतें ज़्यादा होंगी? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि क्या नबी करीम रसूलुल्लाह सल्ल0 ने यह इरशाद नहीं फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में सबसे पहले जो हज़रात जाएँगे वे चौदहवीं रात के चाँद की तरह (रोशन चेहरों और जिस्मों वाले) होंगे। उनके बाद जो दाख़िल होंगे वे आसमान के ज़्यादा चमकदार सितारे की तरह (रोशन) होंगे। उन (दोनों क़िस्म के हज़रात) में से हर शख़्स के लिए दो-दो बीवियाँ होंगी जिनकी पिंडलियों का गूदा गोश्त के अन्दर से झलकता हुआ नज़र आएगा। और जन्नत में कोई इनसान बिना अपने घर वालों के न होगा।(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3245)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की दूसरी हदीस में है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हर जन्नती मर्द के लिए हूरे-ऐन में से दो बीवियाँ होंगी। हर एक (बीवी) पर सत्तर जोड़े होंगे। उसकी पिंडली का गूदा पर्दे के अन्दर से नज़र आता होगा।

फ़ायदाः ऊपर ज़िक्र हुई हदीस से मालूम होता है कि हर जन्नती को दो बीवियाँ अता की जाएँगी और मज़कूरा दूसरी हदीस से मालूम होता है कि ये दो बीवियाँ हूरे-ऐन से होंगी, (दुनिया की औरतों में से

नहीं होंगी)। यह दूसरी हदीस, पहली हदीस की शरह है कि ये दो औरतें दुनिया की नहीं होंगी बल्कि जन्नत की हूरें होंगी।

आप इस किताब के विभिन्न अध्यनों में ऐसी मुबारक हदीसें देखेंगे जिनमें जन्नती मर्दों के लिए हज़ारो-हज़ार बीवियों का ज़िक्र मौजूद है जिससे मालूम होता है कि जन्नत में जन्नत की औरतें इतनी ज़्यादती के साथ होंगी जिसकी गिनती इनसान की ताकृत में नहीं है।

क्या दुनिया की बहुत कम औरतें जन्नत में जाएँगी

हदीसः हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में सबसे कम बशिन्दे (दुनिया की) औरतें होंगी।

(मस्नद अहमद जिल्द 4 पेज 427)

हदीसः हज़रत इमरान बिन हसीन हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गयी है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने दोज़ख़ में झाँककर देखा तो उसके रहने वालों में औरतों को ग़रीब ज़्याद देखा। और मैंने जन्नत में झाँककर देखा तो उसके रहने वालों में ग़रीबों को ज़्यादा देखा। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3241)

दुनिया की औरतों के जन्नत में कम होने की वजह

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ औरतों की जिन्स! तुम सदक़ा किया करो और ख़ूब इस्तिग़फ़ार किया करो क्योंकि मैंने तुम्हें (यानी तुम लोगों को) दोज़ख़ियों में बहुत ज़्यादा देखा है। एक औरत ने जो अच्छे अन्दाज़ से बातचीत करती थी अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमने क्या ख़ता की हैं हम (औरतें) दोज़ख़ियों में ज़्यादा क्यों होंगी? आपने इरशाद फ़रमाया तुम लानत-मलामत ज़्यादा करती हो, और शौहर की नाशुक्री और नाफ़रमानी कर लेती हो। (इब्ने माजा शरीफ़ हदीस 4003)

अल्लामा क़ुरतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में

दुनिया की औरतों का कम होना जन्नत में पहले-पहले दाख़िल होने के वक़्त है। फिर जब नबी पाकी की शफ़ाअत और अल्लाह की रहमत की वजह से उनको दोज़ख़ से निकाला जाएगा क्योंकि उन्होंने कलिमा तो पढ़ा था। इस तरह से जन्नत में जाने के बाद ये लगभग हर जन्नती के निकाह में दो-दो औरतें बंट जाएँगी तो ये फिर से जन्नती मर्दों से ज़्यादा हो जाएँगी। जन्नत की हूरें तो इतनी ज़्यादा होंगी कि उनकी तो गिनती ही नहीं। (तज़्किरतुल क़रती जिल्द 2 पेज 475)

जन्नत की बीवियाँ

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और जन्नतियों के लिए बिवीयाँ होंगी पाक साफ़।

(सूरः ब-क़रह् आयत 25)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने 'व लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्ह-रतन्' की तशरीह (व्याख्या) में इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी ये जन्नत की हूरें और दुनिया की औरतें जो जन्नतियों के निकाह में दी जाएँगी उनकी पाकीज़गी का यह आलम होगा कि उनको न तो हैज़ (माहवारी) आएगा न पेशाब, पाख़ाना और न नाक की गंदगी और न थूक। (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 1 पेज 92)

इसी तरह से जन्नती की औरतें बुराईयों से पाक होंगी। उनकी ज़बान बेकार और घटिया बातों से पाक होगी। उनकी आँख अपने शौहरों के अलावा ग़ैर को देखने से पाक होंगी, उनके कपड़े मैल-कुचैल से पाक होंगे। (हादिल अरवाह पेज 284)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहली जमाअत जो जन्नत में दाख़िल होगी उनकी सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह (चमकती) होगी। ये न तो जन्नत में थूकेंगे न पेशाब-पाख़ाना करेंगे, और न नज़ला फेंकेंगे। उनके बरतन और कंघियाँ सोने और चाँदी की होंगी और अंगीठियाँ अगर की लकड़ी

की होंगी। उनका पसीना मुश्क का होगा। उनमें हर एक की (हूरे-ऐन में से) दो दो बीवियाँ होंगी उनकी पिंडलियों का गूदा उनके हुस्न (व नज़ाकत की वजह से गोश्त के अन्दर से नज़र आएगा। जन्नतियों के बीच आपस में कोई जलन-हसद न होगी, उनके दिल एक ही दिल की तरह होंगे। ये (अपनी आदत होने की वजह से) सुबह व शाम अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करते होंगे। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 316)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे पहली जमाअत जो जन्नत में दाख़िल होगी उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह (चमकते) होंगे, और दूसरी जमाअत आसमान में ख़ूब चमकने वाले सितारे की तरह ख़ूबसूरत होगी। उन हज़रात में से हर एक के लिए दो बीवियाँ होंगी। हर बीवी पर सत्तर पोशाकें होंगी (फिर भी) उनकी पिंडली का गूदा पोशाकों के अन्दर से नज़र आता होगा। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 353)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: हूरे-ऐन मे से हर औरत की पिंडली का गूदा उसके गोश्त और हड्डी के अन्दर से सत्तर जोड़ों के नीचे से नज़र आएगा जिस तरह से सुर्ख़ शराब सफ़ेद शीशे से नज़र आती है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1995),

औरतों और हूरों का हुस्न

हूर की चमक-दमक

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सुबह की एक घड़ी या शाम की एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में गुज़ार देना दुनिया और जो कुछ उसमें है, से बेहतर है। और जन्नत में तुम्हारी एक कमान का फ़ासला दुनिया और जो कुछ इसमें है, से ज़्यादा क़ीमती है। अगर जन्नत की औरतों में कोई औरत ज़मीन की तरफ़ झाँक ले तो तमाम ज़मीन को रोशन कर दे और पूरी ज़मीन को ख़ुशबू से भर दे, और उसके सर का दुपट्टा दुनिया और जो कुछ इसमें है,

से ज़्यादा क़ीमती है। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 147)

औरत के चेहरे में जन्नती को अपनी शक्ल नज़र आएगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अल्लाह के इरशादः

तर्जुमाः गोया कि वे औरतें याक़ूत और मर्जान हैं।

(सूरः रहमान आयत 58) की तफ़सीर में इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती अपने चेहरे को उस (हूर और औरत) के चेहरे में आईने से भी ज़्यादा साफ़ देखेगा और उस (के लिबास) का छोटा-सा मोती (इतना सुन्दर है कि वह) पूरब व पश्चिम के दरमियानी हिस्से को जगमगा सकता है। उस औरत पर सत्तर पोशाकें होंगी मगर फिर भी उन पोशाकों से निगाह गुज़र जाएगी यहाँ तक वह उनके पीछे से उसकी पिंडली को भी देख सकेगा। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 75)

हुस्न की नज़ाकत की एक मिसाल

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की औरतों में से हर औरत की पिंडली की गोरी रंगत सत्तर पोशाकों के पीछे से भी दिखाई देगी। यहाँ तक कि उसका शौहर उसकी पिंडली के गूदे को भी देखता होगा और वह इसलिए कि अल्लाह तआला ने (उनकी सिफ़त में) फ़रमाया हैः

तर्जुमाः गोया कि वे याक़ूत और मर्जान हैं।(सूरः रहमान आयत 58)

याक़ूत एक ऐसा पत्थर है अगर तू उसमें कोई धागा डाले फिर उसको देखना चाहे तो उसको बाहर से देख सकता है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2533)

तश्बीह किससे दूँ तेरे रुख़्सारे साफ़ को
ख़ुर्शीद ज़र्द रंग, क़मर दाग़दार है

हूरें हैं या छुपे हुए मोती

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

हर मुसलमान के लिए एक सबसे आला दर्जे की बीवी होगी और हर आला दर्जे की बीवी के लिए एक ख़ेमा होगा और हर ख़ेमे के चार दरवाज़े होंगे। जन्नती के सामने रोज़ाना ऐसा तोहफ़ा पेश किया जाएगा जो उससे पहले हासिल न हुआ होगा। न तो वह ग़मगीन होने वाली होगी न ना-पसन्दीदा बू (दुर्गन्ध) आएगी, न मुँह की बदबू आयगी और न ही वह घमण्ड और बड़ाई जतलाने वाली होगी। हूरे-ऐन होगी, गोया कि हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 150)

हूर के थूक से सात समुन्द्र शहद से ज़्यादा मीठे बन जाएँ

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर कोई हूर (कड़वे) समुन्द्र में थूक दे तो उसके थूक की मिठास से वह समुन्द्र मीठा हो जाए। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 535)

फ़ायदाः इब्ने अबी दुनिया की रिवायत में हैं कि अगर कोई जन्नत की औरत सात समुन्द्रों में थूक डाल दे तो वे सब समुन्द्र शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएँ। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2026)

जन्नती औरतों के हुस्न के बारे में एक और अहम हदीस

यह हदीस हज़रत उम्मे सलमा उम्मुल-मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा की बयान की हुई है।

तर्जुमाः उम्मूल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला के इरशाद "हूरे-ऐन" के बारे में मुझे कुछ बताएँ? आपने फ़रमाया गोरी-गोरी भरे हुए जिस्म वाली गुले-लाल के रंग की आँखों वाली अपने हुस्न की नज़ाकत और खाल की बारीकी से नज़र को हैरान कर देने वाली, गिद्ध के पर की तरह (लम्बे बालों वाली) आँखों की सुन्दर पल्कों वाली को हूरे-ऐन कहते हैं।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया आप मुझसे क-अन्नहुन्नल् याक़ूतु वल्-मर्जान' की तफ़सीर (व्याख्या) बयान फ़रमाएँ।

आपने इरशाद फ़रमायाः ये रंगत में उस मोती की तरह साफ़-शफ़्फ़ाफ़ होगी जो सीपों में होता है और जिसको हाथों ने नहीं छुआ होता है। मैंने अर्ज़ किया आप मुझसे अल्लाह तआला के इरशाद 'क-अन्नहुन्-न बैज़ुम् मक्नून' की तफ़सीर (व्याख्या) बयान फ़रमाएँ। आपने इरशाद फ़रमाया उनकी नरमी और बारीकी अण्डे के अन्दर के छिलके की तरह होगी जो बाहर वाले (मोटे) छिलके के साथ होता है।

मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप मुझसे अल्लाह तआला के इरशाद 'व अरुबन् अतराबा' के बारे में बयान फ़रमाएँ। अपने इरशाद फ़रमाया ये वे औरतें होंगी दुनिया में जिनकी आँखों में बुढ़ापे की वजह से कीचड़ भरा रहता था और सर के बाल सफ़ेद हो गये थे। अल्लाह तआला उनको बुढ़ापे के बाद दोबारा बनाएँगे और उनको कुंवारियाँ कर देंगे। इरशाद फ़रमाया कि 'उरुबन्' के मायने हैं कि वे (अपने शौहरों से) इश्क़ और मुहब्बत करने वालियाँ होंगी। 'अतराबा' एक ही उम्र पर होंगी।

मैंने अर्ज़ किया क्या दुनिया की औरतें बेहतर होंगी या हूरे-ऐन? इरशाद फ़रमाया दुनिया की औरतें हूरे-ऐन से अफ़ज़ल और बेहतर होंगी, जैसे बाहर वाला रेशम अस्तर से बेहतर होता है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह क्यों (अफ़ज़ल होंगी)?

इरशाद फ़रमाया, उनके अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने की वजह से अल्लाह तआला उनके चेहरों को नूर का लिबास पहनाएँगे। उनके जिस्म हैरान कर देने वाले होंगे, गोरे रंग वाली होंगी, सब्ज़ लिबास वाली होंगी, पीले ज़ेवर वाली होंगी, उनकी (ख़ुशबू की) अंगीठियाँ मोती की होंगी, उनकी कंघियाँ सोने की होंगी। ये तराना गायेंगीः

तर्जुमाः सुन लो! हम हमेशा रहने वाली हैं, कभी नहीं मरेंगी। हम नेमतों में पलने वाली हैं कभी ख़स्ताहाल न होंगी। सुन लो! हम जन्नत ही में रहेंगे कभी निकाली न जाएँगी। सुन लो! (अपने शौहरों पर) राज़ी रहने वाली हैं कभी नाराज़ न होंगे। धन्य है वह आदमी जिसके लिए हम हैं और वह हमारे लिए है।

मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! एक औरत (एक के बाद दूसरे) दो शौहरों से या तीन से या चार से दुनिया में शादी करती हैं और मर जाती है और फिर वह जन्नत में दाख़िल होती है और उसके (दुनिया के) शौहर भी उसके साथ जन्नत में दाख़िल होते हैं, उनमें से उस औरत का शौहर कौन बनेगा? आपने इरशाद फ़रमाया कि उसको अधिकार दिया जाएगा और वह उन शौहरों में से ज़्यादा अच्छे व्यवहार वाले को चुनेगी, और अर्ज़ करेगी ऐ रब! यह शख़्स बाक़ी शौहरों से ज़्यादा दुनिया में अच्छे व्यवहार वाला था आप इससे मेरी शादी कर दें।

फिर नबी पाक सल्ल0 ने फ़रमायाः ऐ उम्मे सलमा! अच्छा अख़्लाक़ (अच्छा व्यवहार) दुनिया व आख़िरत दोनों की भलाई को साथ लिये हुए है। (तफ़सीर इब्ने जरीर जिल्द 23 पेज 57)

सारी दुनिया रोशनी और ख़ुशबू से भर जाए

हदीसः हज़रत सईद बिन आमिर बिन हुदैम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने जनाब रसूलुल्लाह सलल0 से सुना है कि आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत झाँके तो तमाम ज़मीन को कस्तूरी की ख़ुशबू से भर दे और सूरज की रोशनी को फीकी कर दे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2014)

जन्नती औरत का ताज

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर जन्नत की औरतों में से कोई-सी औरत ज़मीन की तरफ़ झाँक ले तो आसमान व ज़मीन के दरमियानी हिस्से को ख़ुशबू से भर दे, और उनके दरमियानी हिस्से को रोशन कर दे, और उसके सर का ताज दुनिया और जो कुछ इसमें हैं, से ज़्यादा क़ीमती है।

(मसनद अहमद जिल्द 3 पेज 141)

बालों की लम्बाई

हज़र इब्ने अमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हूरे-ऐन में से हर औरत के

बाल गिद्ध के परों से बहुत ज़्यादा लम्बे हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2023)

फ़ायदाः हूर के बालों को गिद्ध के बालों से उस सूरत में तश्बीह दी गयी है कि जिस तरह से उसके बाल उसके जिस्म से ज़्यादा लम्बे होते हैं उसी तरह से जन्नती हूर के बाल उसके जिस्म से ज़्यादा लम्बे होंगे। तफ़सील आगे आ रही है।

हूर के हुस्न के चमत्कार

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: अगर कोई हूर अपनी हथेली को आसमान और ज़मीन के दरमियान ज़ाहिर कर दे तो तमाम मख़्लूक़ात उसके हुस्न की दीवानी हो जाए। और अगर वह अपने दुपट्टे को ज़ाहिर कर दे तो उसके हुस्न के सामने सूरज दिये की तरह बेनूर नज़र आए। और अगर वह अपने चेहरे को खोल दे तो उसके हुस्न से आसमान व ज़मीन का दरमियानी हिस्सा जगमगा उठे। (हादिल अरवाह पेज 306)

हाथ की ख़ूबसूरती

हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अगर कोई हूर अपने हाथ को उसकी ख़ूबसूरती और अंगूठियों समेत आसमान से ज़ाहिर कर दे तो उसकी वजह से सारी ज़मीन रोशन हो जाए जिस तरह से सूरज दुनिया वालों को रोशन पहुँचाता है। फिर फ़रमाया यह तो उस का हाथ है, उसके चेहरे का हुस्न, रंगत, ख़ूबसूरती और उसका ताज याक़ूत लुअ्लुअ् और ज़बर्जद समेत कैसा हसीन होगा।(हादिल अरवाह 304)

हूर के दुपट्टे की क़द्र व क़ीमत

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह के रास्ते में सुबह की शाम की एक घड़ी गुज़ारना दुनिया और जो कुछ इसमें है, से बेहतर है। तुम्हारी कमान के दरमियानी हिस्से या कोड़े के बराबर जन्नत का हिस्सा दुनिया और जो कुछ इसमें है, से क़ीमती है। अगर जन्नत की कोई औरत ज़मीन की तरफ़ झाँक ले

तो आसमान व ज़मीन के दरमियानी हिस्से को खुशबू से भर दे। और आसमान व ज़मीन के हिस्से को नूर से भर दे। उसके सर का दुपट्टा दुनिया और दुनिया के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है।

(मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 264)

हूर की मुस्कुराहट

हदीसः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक नूर चमका, जब लोगों ने अपने सर को उठाकर देखा तो वह एक हूर की मुस्कुराहट थी जिसने अपने शौहर के चेहरे को देखकर मुस्कुराहट ज़ाहिर की थी। (हादिल अरवाह पेज 303)

आईने की तरह जन्नती मर्द और औरतों के बदन एक-दूसरे के बदन में नज़र आएँगे

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: जन्नती मर्द अपने चेहरे को अपनी बीवी के चेहरे में देखेगा और उसकी बीवी अपने चेहरे को मर्द की कलाई में देखेगी। मर्द अपने चेहरे को बीवी के सीने में देखेगा और वह अपने चेहरे को उसके सीने में देखेगी। यह अपने चेहरे को उसकी कलाई में देखेगा और वह अपने चेहरे को उसकी कलाई में देखेगी। वह अपने चेहरे को उसकी पिंडली में देखेगा और वह अपने चेहरे को उसकी पिंडली में देखेगी। यह बीवी ऐसी पोशाक पहनेगी जो हर घड़ी में सत्तर रंगों में बदलेगी। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक हदीस 20868)

हूर की जूती

अबू इमरान सनदी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं मिस्र की फ़लाँ जामा मस्जिद में था। मेरे दिल में निकाह का ख़्याल आयाऔर मेरा पक्का इरादा हो गया। उस वक़्त क़िब्ले की तरफ़ से एक नूर ज़ाहिर हुआ वैसा मैंने कभी नहीं देखा था, और उसमें से एक हाथ निकला। उसमें सुर्ख़ याक़ूत की एक जूती थी और उसका तस्मा सब्ज़ ज़मर्रुद का, और उस पर मोती भी जड़े हुए थे। एक ग़ैब से आवाज़ देने वाले ने

आवाज़ दी कि यह उसकी (यानी तुम्हारी हूर की) जूती है। वह ख़ुद कैसी होगी। उस वक़्त से मेरे दिल से औरत की ख़्वाहिश जाती रही। (रौज़ुर्रयाहीन)

हूर की ख़ुशबू

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हूरे-ऐन में से हर हूर की ख़ुशबू पचास साल के सफ़र से महसूस होगी।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 34)

हर घड़ी हुस्न में सत्तर गुना बढ़ौतरी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती आदमी के पास एक गिलास पेश किया जाएगा जबकि वह अपनी बीवी के पास बैठा होगा। जब वह उसको पीकर बीवी की तरफ़ ध्यान देगा तो यह कहेगा तू मेरी निगाह में अपने हुस्न में सत्तर गुना बढ़ चुकी है। (इब्ने अबी शैबा 13 पेज 108)

फ़ायदाः हुस्न की बढ़ौतरी जन्नत में हर घड़ी होती रहेगी। मर्द के हुस्न में भी और औरत के हुस्न में भी, बल्कि जन्नत की हर चीज़ के हुस्न में बढ़ौतरी का यही हाल होगा।

याक़ूत व मर्जान जैसा बिल्लोरी जिस्म

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जन्नत की औरतों में से एक औरत रेशम के सत्तर लिबास एक ही वक़्त में पहनेगी। फिर भी उसकी पिंडली की सफ़ेदी, उसका हुस्न और उसका गूदा उन सबके अन्दर से नज़र आ रहा होगा और यह इस वजह से कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः गोया कि वे हूरें याक़ूत व मर्जान हैं। (सूरः रहमान आयत 58)

और याक़ूत ऐसा पत्थर है कि अगर तू कोई धागा लेकर उसके सुराख़ से खींचे तो उस धागे को उस पत्थर के अन्दर से देख सकता है। (इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 107)

जब तक न देखा था हुस्ने यार का आलम

मैं मुअतक़िदे फ़ितन-ए-महशर न हुआ था

हमेशा हुस्न में बढ़ौतरी होती रहेगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसने क़ुरआन पाक को हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल फ़रमाया हैं जन्नत में रहने वाले (मर्द और औरत, हूर और ख़ादिमों के) हुस्न व ख़ूबसूरती में इस तरह से बढ़ौतरी होती रहेगी जिस तरह से इनका दुनिया में (आख़िर उम्र में) बदसूरती और बुढ़ापे में इज़ाफ़ा होता रहता है। (इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 114)

आख़िरत और दुनिया की औरत के हुस्न का मुक़ाबला

मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि एक दिन बसरे की गलियों में फिर रहे थे कि एक बाँदी को बहुत ही ठाट-बाट और नौकरों-चाकरों के साथ जाते देखा। आपने उसे आवाज़ देकर पूछा क्या तेरा मालिक तुझे बेचता है? या नहीं? उसने कहा मान लिया अगर बेचे भी तो क्या तुझ जैसा ग़रीब ख़रीद लेगा? उन्होंने कहा, हाँ! तू क्या चीज़ है, मैं तुझसे भी अच्छी ख़रीद सकता हूँ। वह सुनकर हंस पड़ी और ख़ादिमों को हुक्म दिया कि इस शख़्स को हमारे साथ घर तक ले आओ। ख़ादिम ले आया वह अपने मालिक के पास गयी और उससे सारा क़िस्सा बयान किया वह सुनकर बेइख़्तियार हंसा कि ऐसे दुरवेश को हम भी देखें। यह कहकर मालिक बिन दीनार को अपने पास बुलाया। देखते ही उसके दिल पर ऐसा रौब छा गया कि पूछने लगा, आप क्या चाहते हैं? कहा यह बाँदी मेरे साथ बेच दो। उसने कहा आप इसकी क़ीमत दे सकते हैं? फ़रमाया इसकी क़ीमत ही क्या है? मेरे नज़दीक तो इसकी क़ीमत खजूर की दो सड़ी गुठलियाँ हैं। यह सुनकर सब हंस पड़े और पूछने लगे कि यह क़ीमत आपने क्योंकर लगाई? कहा इसमें बहुत-से ऐब हैं। ऐबदार चीज़ की क़ीमत ऐसी ही हुआ करती है। जब उसने ऐबों के बारे में पूछा तो शैख़ बोले सुनो! जब यह इत्र नहीं लगाती तो इसमें से बदबू आने लगती है। जो मुँह साफ़ न करे तो मुँह गंदा हो जाता है, बू आने लगती है और जो कंघी-चोटी न करे और तेल न डाले तो जुएँ पड़ जाती हैं और बाल

गंदि हो जाते हैं। और जब इसकी उम्र ज़्यादा होगी तो बूढ़ी होकर किसी काम की भी न रहेगी। माहवारी इसे होती है, पेशाब-पाख़ाना यह करती है। तरह-तरह की गंदगियों से भरी हुई है। हर तरह की कदूरत और रंज व ग़म इसे पेश आते रहते हैं। ये तो ज़ाहिरी ऐब हैं, अब अन्दर के सुनो।

मतलबी इतनी है कि तुम से अगर मुहब्बत है तो मतलब वाली है, यह वफ़ा करने वाली नहीं और इसकी दोस्ती सच्ची दोस्ती नहीं। तुम्हारे बाद तुम्हारे जानशीन से ऐसे ही मिल जाएगी जैसा कि अब तुम से मिली हुई है, इसलिए इसका ऐतिबार नहीं और मेरे पास इससे कम कीमत की एक बाँदी है जिसके लिए मेरी एक कोड़ी भी ख़र्च नहीं हुई और वह सब बातों में इससे ऊपर ही है। काफूर, जाफ़रान, मुश्क और नूर के जोहर से उसकी पैदाईश है। अगर किसी खारे पानी में उसका थूक गिरा दिया जाए तो वह मीठा और स्वादिष्ट हो जाए और जो किसी मुर्दे को अपना कलाम सुना दे तो वह भी बोल उठे, और जो उसकी एक कलाई सूरज के सामने ज़ाहिर हो जाए तो सूरज शर्मिन्दा हो जाए और जो अंधेरे में ज़ाहिर हो तो उजाला हो जाए। और अगर वह पोशाक व ज़ेवर से सज कर दुनिया में आ जाए तो तमाम दुनिया ख़ुशबू से भर जाए और सज जाए। मुश्क और ज़ाफ़रान के बाग़ों और याक़ूत व मर्जान की शाख़ों में वह पली-बढ़ी है और तरह-तरह के आराम में रही है, और तस्नीम के पानी से ग़िज़ा दी गयी है, अपने अहद की पूरी है और दोस्ती को निभाने वाली है।

अब तुम बताओ इनमें से कौनसी ख़रीदने के क़ाबिल है। कहा कि जिसकी आपने तारीफ़ें गिनाई हैं यही ख़रीदने और चाहे जाने की मुस्तहिक़ है। शैख़ ने कहा उसकी क़ीमत हर वक़्त हर आदमी के पास मौजूद है उसमें कुछ भी ख़र्च नहीं होता। पूछा कि जनाब फ़रमाइये उसकी क़ीमत क्या है? शैख़ ने फ़रमाया कि उसकी क़ीमत यह है कि रात भर में एक घड़ी के लिए तमाम कामों से निबटकर निहायत साफ़ मन से दो रकअत पढ़ो। और उसकी क़ीमत यह है कि जब तुम्हारे

सामने खाना चुना जाए तो उस समय किसी भूखे को ख़ालिस अल्लाह के लिए दे दिया करो। और उसकी क़ीमत यह है कि रास्ते में अगर कोई गंदगी या ईंट,ढेला पड़ा हुआ है उसे उठाकर रास्ते पर से फेंक दिया करो। और उसकी क़ीमत यह है कि अपनी उम्र को तंगदस्ती और ग़रीबी और फ़ाके और ज़रूरत भर के सामान पर किफ़ायत करने पर गुज़ार दो और इस मक्कार दुनिया से अपनी फ़िक्र को बिल्कुल अलग कर दो। और हर्स से दूर होकर सब्र और सन्तुष्टि की दौलत को अपना लो। फिर इसका नतीजा यह होगा कि कल तुम बिल्कुल चैन से हो जाओगे और जन्नत में जो आराम और राहत की जगह है, ऐश उड़ाओगे।

उस आदमी ने सुनकर कहा ऐ बाँदी! सुनती है शैख़ क्या फ़रमाते हैं, सच है या झूठ? बाँदी ने कहा सच कहते हैं और भलाई की बात इरशाद फ़रमाते हैं। कहा अगर यही बात है तो मैंने तुझे अल्लाह के वास्ते आज़ाद किया और फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ तुझे दी। और ग़ुलामों से कहा तुमको भी आज़ाद किया और फ़लाँ-फ़लाँ ज़मीन तुम्हारे नाम कर दी, और यह घर और तमाम माल अल्लाह की राह में सदक़ा किया। फिर दरवाज़े पर से बहुत मोटे कपड़े को खींच लिया और तमाम क़ीमती लिबास उतार कर उसे पहन लिया। उस बाँदी ने यह हाल देखकर कहा तुम्हारे बाद मेरा कौन है? उसने भी अपना लिबास सब फेंक दिया और एक मोटा कपड़ा पहन लिया और वह भी उसके साथ हो गयी। मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह हाल देखकर उनके लिए भलाई की दुआ की और ख़ैरबाद कहकर रुख़्सत हुए और उधर ये दोनों अल्लाह की इबादत में लग गये और इबादत ही में जान दे दी। अल्लाह उन पर अपना रहम फ़रमाये। (रौज़ुर्रयाहीन)

अज़ान की आवाज़ पर हूर का सिंघार

हदीसः हज़रत यज़ीन बिन अबी मरियम सलूली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे यह बात पहुँची है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मुआज़्ज़िन अज़ान देता है तो आसमान के दरवाज़े

दुनिया की औरत के हुस्न का नज़ारा

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह का दोस्त एक तख़्त पर बैठा होगा। उस तख़्त की बुलन्दी पाँच सौ साल के सफ़र के बराबर होगी जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं "व फ़ुरुशिम्-मरफ़ूअतिन्" और तख़्त होंगे बुलन्द। फ़रमाया कि ये तख़्त सुर्ख़ याक़ूत का होगा। उसके सब्ज़ ज़ुमरुद के दो पर होंगे, और तख़्त पर सत्तर बिछौने होंगे, उन सबका नूर का ढाँचा होगा। और ज़ाहिर का हिस्सा बारिक रेशम का होगा और अस्तर मोटे रेशम का होगा। अगर ऊपर के हिस्से को नीचे की तरफ़ लटकाया जाए तो चालीस साल की मिक्दार तक भी न पहुँचे। उस तख़्त पर एक तन्हाई का कमरा होगा जो लुअ्लुअ् मोती से बना होगा। उस पर नूर के सत्तर पर्दे होंगे। उसके बारे में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जन्नती हज़रात और उनकी बीवियाँ सायों में तन्हाई के कमरों में टेक लगाये बैठे होंगे। (सूरः यासीन आयत 56)

यहाँ सायों का मतलब दरख़्त के साये नहीं। यह जन्नती इस तरह अपनी बीवी से बग़लगीर होगा कि न बीवी उससे सैर हो रही होगी और न मर्द उससे सैर हो रहा होगा। यह बग़लगीरी का समय चालीस साल तक का होगा। अचानक यह अपना सर उठाएगा तो देखेगा कि एक और बीवी उसको झाँक लेगी और उसको पुकार कर कहेगी कि ऐ ख़ुदा के दोस्त! क्या हमारा आप में कोई हिस्सा नहीं है? जन्नती कहेगा ऐ मेरी महबूबा! तुम कौन हो? वह कहेगी मैं उन बीवियों में से हूँ जिनके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है "व लदैन मज़ीद" (हमारे पास और भी हैं)। इसलिए उसका वह तख़्त या सोने के दो परों वाली कुर्सी उड़कर उस बीवी के पास पहुँच जाएगी।

जब यह जन्नती अपनी उस बीवी को देखेगा तो वह उस पहली बीवी से नूर के एक लाख हिस्से ज़्यादा हसीन होगी। यह उससे भी चालीस साल तक बग़लगीर रहेगा, न यह उससे उकताती होगी और न वह इससे उकताता होगा। जब यह उससे सर उठाकर देखेगा तो उसके

महल में एक नूर चमक मारेगा तो यह हैरान और अचंभित रह जाएगा और कहेगा सुब्हानल्लाह! क्या किसी शान वाले फ़रिश्ते ने झाँककर देखा है, या हमारे परवर्दिगार ने अपनी ज़ियारत कराई है? फ़रिश्ता उसको जवाब देगा जबकि यह जन्नती नूर की एक कुर्सी पर बैठा होगा उसके फ़रिश्ते के बीच सत्तर साल का फ़ासला होगा, यह फ़रिश्ता बाक़ी दरबान फ़रिश्तों के पास होगा, न तो किसी फ़रिश्ते ने तेरी ज़ियारत की है और न ही तुझे तेरे परवर्दिगार ने झाँककर देखा है। वह पूछेगा फिर यह नूर किसका था? फ़रिश्ता कहेगा तेरी दुनिया की बीवी का। यह भी जन्नत में आपके साथ है, उसी ने आपकी तरफ़ झाँककर देखा है और आपके बग़लगीर होने पर मुस्कुरायी है। यह जो आपने अपने घर में देखा है उसके गले में दाँतों का चमकता हुआ नूर है। इसलिए यह जन्नती उसकी तरफ़ अपना सर उठाकर देखेगा तो वह कहेगी कि ऐ अल्लाह के वली! क्या हमारा आप में कोई हिस्सा नहीं? तो वह पूछेगा ऐ मेरी दोस्त! आप कौन हैं? वह कहेगी ऐ अल्लाह के वली! मैं उन बीवियों में से हूँ जिनके बारे में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं।

तर्जुमाः कोई नफ़्स (जी) नहीं जानता कि उन जन्नतियों के लिए क्या-क्या आँखों की राहतें छुपाकर रखी हुई हैं। (सूरः सज्दा आयत 17)

फ़रमाया कि चुनाँचे उसका वह तख़्त उड़कर उसके पास पहुँच जाएगा। जब यह उससे मुलाक़ात करेगा तो यह उस आख़िरी बीवी से नूर के एतिबार से एक लाख गुना बड़ी हुई होगी, क्योंकि उस औरत ने (दुनिया में) रोज़े भी रखे थे, नमाज़ें भी पढ़ी थीं और अल्लाह तआला की इबादत भी की थी। यह जन्नत में दाख़िल होगी तो जन्नत की तमाम औरतों से अफ़ज़ल होगी क्योंकि वे तो सिर्फ़ पैदा ही हुई होंगी (और इसने दुनिया में इबादत की होगी)। यह जन्नती उससे चालीस साल तक बग़लगीर होगा, न तो वह उससे थकेगी और न वह उससे सेर होगा।

जब यह जन्नती के सामने खड़ी होगी उसने याक़ूत के पाज़ेब पहन रखे होंगे। जब उससे मुलाक़ात की जायेगी तो उसकी पाज़ेबों से

जन्नत के हर परिन्दे की हसीन आवाज़ें सुनी जाएँगे। जब वह उसकी हथेली को छुएगा तो हड्डी के गूदे से ज़्यादा नर्म होगी और उसकी हथेली से जन्नत के इत्र की खुशबू सूँघेगा। उस पर नूर की सत्तर पोशाकें होंगी। अगर उनमें से किसी एक ओढ़नी को फैला दिया जाए तो पूरब-पश्चिम के दरमियानी हिस्से को रोशन कर दे। उनको नूर से पैदा किया गया है। पोशाकों पर कुछ सोने के कंगन होंगे, कुछ चाँदी के कंगन होंगे और कुछ लुअ्लुअ् के कंगन होंगे। ये पोशाकें मकड़ी के जाल से ज़्यादा बारीक होंगी और उठाने में तस्वीर से ज़्यादा हल्की-फुल्की होंगी। उन पोशाकों की सफ़ाई-सुथराई और उम्दगी इतनी ज़्यादा होगी कि उस बीवी का पिंडली का गूदा भी नज़र आता होगा और उसकी रिक़्क़त (नरमी) हड्डी, गोश्त और खाल के पीछे से चमकती होगी। पोशाकों की दाहिनी आस्तीन पर यह लिखा होगाः

तर्जुमाः सब तारीफ़े उस अल्लाह की हैं जिसने हमसे अपना वायदा सच्चा कर दिखाया।

और बाई आस्तीन पर नूर से यह लिखा होगाः

तर्जुमाः सब तारीफ़े उस अल्लाह की हैं जिसने हमसे ग़म को दूर किया। उसके जिगर पर नूर से लिखा होगाः

तर्जुमाः मेर दोस्त! मैं आपकी हूँ मैं आपकी जगह किसी और को नहीं चाहती।

उस औरत का सीना मर्द का आईना होगा। यह औरत याक़ूत की तरह साफ़- सुथरी होगी, हुस्न में मर्जान होगी, सफ़ेदी में सुरक्षित रखे हुए अन्डे की तरह होगी। अपने शौहर की आशिक़ होगी, पच्चीस सल की उम्र में होगी। खुले हुए दाँतों वाली होगी (यानी दाँतों के बीच एक मामूली फ़ासला होगा, जिससे उसके हुस्न में इज़ाफ़ा हो जायेगा) अगर मुस्कुराएगी तो उसके अगले दाँतों का नूर चमक उठेगा। अगर मख़्लूक़ात उसकी गुफ़्तगू सुन लें तो उस पर सब अच्छे-बुरे दीवाने हो जाएँ।

जब यह जन्नती के सामने खड़ी होगी तो उसकी पिंडली का नूर और हुस्न उसके क़दमों से लाख गुना ज़्यादा होगा, और उसकी रान का नूर (और हुस्न) उसकी पिंडली से एक लाख गुना ज़्यादा होगा, और

उसकी सुरीन का हुस्न और नूर उसकी रानों से एक लाख गुना ज़्यादा होगा, और उसके सीने का हुस्न और नूर उसके पेट से एक लाख गुना ज़्यादा होगा, और उसके सीने का हुस्न उसके पेट से एक लाख गुना ज़्यादा होगा, और उसके चेहरे का हुस्न और नूर उसके सीने से एक लाख गुना ज़्यादा होगा। अगर यह दुनिया के समुन्द्रों में अपना थूक डाल दे तो ये सब मीठे हो जाएँ। अगर यह अपने घर की छत से दुनिया की तरफ़ से झाँककर देख ले तो उसका नूर और हुस्न सूरज और चाँद के नूर को फीका कर दे। उस पर सुर्ख़ याक़ूत का ताज होगा जिस पर क़ीमती मोतियों और क़ीमती पत्थरों का जड़ऊ होगा। उसके दाहिनी तरफ़ उसके बालों की एक लाख ज़ुल्फ़ें होंगी। ये ज़ुल्फ़ें कुछ तो नूर की होंगी कुछ याक़ूत की कुछ लुअ्लुअ् की और कुछ ज़बर्जद की, और कुछ मर्जान की और कुछ जवाहिरात की। उनको सब्ज़ और सुर्ख़ ज़मर्रुद के ताज पहनाए गए होंगे। रंग-बिरंगे मोती होंगे जिनसे हर तरह की खुशबूएँ फूटती होंगी। जन्नत की हर खुशबू उसके बालों के नीचे होगी। हर एक ज़ुल्फ़ के मोती चालीस साल की दूरी से चमकते हुए नज़र आएँगे। बाईं तरफ़ भी ऐसा ही होगा। उसकी पिछली तरफ़ एक लाख मेंढियाँ उसके बालों की होंगी। ये ज़ुल्फ़ें और मेंढियाँ उसके सीने पर पड़ती होंगी, फिर उसकी सुरीन पर पड़ती होंगी, फिर उसके क़दमों तक लटकती होंगी, यहाँ तक कि वह उनको कस्तूरी पर घसीटती होगी, उसके दाहिनी तरफ़ एक लाख नौकरानियाँ-होंगी। हर ज़ुल्फ़ एक नौकरानी के हाथ में होगी (जिसको उठा रखा होगा) और उसके बाईं तरफ़ भी ऐसा होगा, फिर उसकी पीठ की तरफ़ भी एक लाख नौकरानियाँ होंगी, हर एक नौकरानी ने उसके बालों की एक लट उठा रखी होगी।

उस बीवी के आगे एक लाख नौकरानियाँ चलती होंगी। उनके पास मोतियों की अंगीठियाँ होंगी जिनमें आग के बग़ैर ऊद वग़ैरह जलते होंगे और उनकी खुशबू जन्नत में सौ साल की दूरी तक पहुँचती होगी। उसके चारो तरफ़ हमेशा रहने वाले लड़के होंगे उन पर कभी मौत न आएगी गोया कि वे मोती होंगे जो अपनी अधिकता की वजह से बिखर

गये होंगे। यह बीवी अल्लाह के दोस्त के सामने खड़ी होकर उसकी हैरत और सुरूर का मज़ा ले रही होगी और उससे खुश होकर उस पर फ़िदा हो रही होगी। फिर उससे कहेगी ऐ ख़ुदा के दोस्त! आप रश्क व सुरूर में और डूब जाएँ। फिर वह उसके सामने एक हज़ार तरह की चाल के साथ चलकर दिखाएगी। हर एक चाल में नूर की सत्तर पोशाकें ज़ाहिर होती रहेंगी, उसके बालों को सुलझाने वाली उसके साथ होगी।

जब वह चलेगी तो नाज़ों-अन्दाज़ से चलेगी, बल खाकर चलेगी, शर्म को दरमियान से उठाकर चलेगी, नाचते हुए चलेगी, उस पर ख़ूबसूरत होकर खुशी और मस्ती दिखाएगी और मुस्कुराएगी। जब वह किसी तरफ़ घूमेगी तो उसकी बाँदियाँ उसके बालों के साथ ही घूम जाएँगी और उसकी मेंढियाँ भी साथ ही घूम जाएँगी और दोनों तरफ़ की नौकरानियाँ भी उसके साथ ही घूम जाएँगी। जब वह अपना रुख़ सामने करेगी तो वे भी रुख़ सामने कर लेंगी।

अल्लाह तआला ने उसको ऐसी शक्ल में (जन्नत में जाने के लिए दूसरी बार) इस तरह से पैदा किया होगा कि अगर वह अपना रुख़ सामने करे तो भी वह सामने रहे। और अगर पीठ फेरे तो भी उसका चेहरा सामने रहे। न तो उसका चेहरा उसके शौहर से हटेगा और न उससे ग़ायब होगा। जन्नती उसकी हर चीज़ को देखेगा। जब वह एक लाख अन्दाज़ के चलने के बाद बैठेगी तो उसके सुरीन तख़्त से बाहर निकल रहे होंगे और उसकी ज़ुल्फ़ें और मेंढियाँ लटक रही होंगी।

यह सब देखकर अल्लाह का दोस्त ऐसा बेचैन और बेक़रार होगा कि अगर अल्लाह तआला ने मौत न आने का फ़ैसला न किया होता तो यह खुशी के मारे मर जाता। अगर अल्लाह तआला ने उसको बरदाश्त की ताक़त न दी होती तो यह उस तरफ़ इस ख़ौफ़ से देख भी न सकता कि उसकी आँखों की रोशनी न खो जाए। यह अपने शौहर से कहेगी ऐ अल्लाह के दोस्त! ख़ूब ऐश करो, जन्नत में मौत का कहीं नाम व निशान भी नहीं है। (बुस्तानुल वाअिज़ीन पेज 194-196)

बढ़ता जाता है वहाँ शौक़ ख़ुद-आराई का
हौसला पस्त है याँ ज़ब्त-व-शकेबाई का

नेक आमाल के बदले में पाक बीवियाँ

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और ख़ुशख़बरी सुना दीजिए आप उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक आमाल किये, इस बात की कि बेशक उनके वास्ते जन्नतें हैं कि चलती होंगी उनके नीचे से नहरें। जब कभी दिये जाएँगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले, और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता-जुलता और उनके वास्ते उन जन्नतों में बीवियाँ होंगी साफ़-पाक की हुई। और वे लोग उन जन्नतों में हमेशा को बसने वाले होंगे। (सूरः ब-क़रह् आयत 25)

दुनिया का छोड़ना आख़िरत का मेहर है

हज़रत यहया बिन मुआज़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि दुनिया को छोड़ना मुश्किल है मगर आख़िरत के इनामों का ख़त्म हो जाना बहुत ज़्यादा सख़्त है हालाँकि दुनिया का छोड़ना आख़िरत का मेहर है। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 478)

मस्जिद की सफ़ाई हूरे-ऐन का मेहर है

हदीसः जनाब हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मस्जिदों को साफ़ करना हूरे-ऐन का मेहर हैं।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 478)

रास्ते की तकलीफ़ देने वाली चीज़ हटाना और मस्जिद साफ़ करना

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ अली! हूरे-ऐन के मेहर अदा करो, रास्ते से परेशान करने वाली चीज़ों को हटा देने से और मस्जिद से कूड़ा-करकट निकालने के साथ क्योंकि ये हूरे-ऐन के मेहर हैं। (मुस्नदुल फ़िरदौस दैलमी हदीस 8335)

खजूरों और रोटी के टुकड़े का सदक़ा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुट्ठी भर खजूरें और रोटी का टुकड़ा (सदक़ा करना) हूरे-ऐन का मेहर है। (तज़्किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 479)

मामूली से सदक़ात करने में जन्नत की हूरें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम में से हर एक आदमी फ़लाँ की बेटी फ़लाँ से बहुत ज़्यादा माल के मेहर के बदले में शादी कर लेता है मगर हूरे-ऐन को एक लुक़्मा और खजूर और मामूली से कपड़े (के सदक़े न करने की वजह) से छोड़ देता है।

(तज़्किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 479)

चार हज़ार क़ुरआन पढ़ने के बदले में हूर ख़रीदने वाले का क़िस्सा

हज़रत मुहम्मद बिन नोमान मुक़री रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि मैं हज़रत जला मुक़री रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में मक्के मे मस्जिदे हराम में हाज़िर था कि हमारे पास से एक लम्बे क़द-काठी का कमज़ोर बूढ़ा शख़्स गुज़रा। उसने पुराने कपड़े पहन रखे थे। हज़रत जला उसके पास तशरीफ़ ले गये और कुछ देर उसके पास रहे फिर हमारे पास लौट आए और फ़रमायाः क्या तुम इस शैख़ को जानते हो? हमने अर्ज़ किया नहीं! फ़रमाया उसने अल्लाह तआला से क़ुरआन पाक के चार हज़ार ख़त्म के बदले में एक हूर ख़रीदी है। जब उसने चार हज़ार ख़त्म पूरे कर लिये थे तो उसने उस हूर को उसके ज़ेवर और लिबास समेत ख़्वाब में देखा और पूछा तुम किसके लिए हो? उसने कहा मैं वही हूर हूँ जिसको आपने अल्लाह तआला से चार हज़ार क़ुरआन के ख़त्मों के बदले में ख़रीदा है। यह तो उसकी क़ीमत हो गयी आपने मुझे तोहफ़ा क्या देना है? उस शैख़ ने कहा कि एक हज़ार क़ुरआन के ख़त्म का। हज़रत जला रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया चुनाँचे अब यह उसके तोहफ़े में

लगा हुआ है। (यानी उसके लिए एक हज़ार कुरआन के पढ़कर ख़त्म करने में लगा हुआ है)। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 479)

हूरों का तलबगार क्यों सोए

वाक़िआः हज़रत सहनून रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मिस्र में एक आदमी रहता था, नाम उसका सईद था। माँ इबादत करने वाली औरतों में से थी। जब यह शख़्स रात को नफ़्लों के लिए खड़ा होता था तो उसकी माँ उसके पीछे खड़ी हुआ करती थी। जब उस आदमी पर नींद का ग़लबा होता था और नींद के ग़लबे से ऊँघने लगता था तो उसकी माँ उसको आवाज़ देकर कहती थी ऐ सईद! वह शख़्स नहीं सोता जो दोज़ख़ से डरता हो और हसीन व ख़ूबसूरत हूरों को निकाह का पैग़ाम दे रखा हो। चुनाँचे वह उससे मरऊब होकर फिर सीधा हो जाता था। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 479)

तहज्जुद हूर का मेहर है

हज़रत साबिर रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया गया है कि मेरे वालिद रात के अंधेरे में खड़े होकर इबादत करने वाले हज़रात में से थे। यह फ़रमाते हैं कि मैंने एक ख़्वाब में एक ऐसी औरत को देखा जो दुनिया की औरतों से मेल व मुशबहत नहीं खाती थी। मैंने उससे पूछा तुम कौन हो? उसने जवाब दिया मैं हूर हूँ। मैंने कहा तुम अपना निकाह मुझसे कर लो? उसने कहा आप मेरे निकाह का पैग़ाम मेरे परवर्दिगार के सामने पेश करें और मेरा मेहर अदा करें। मैंने पूछा तुम्हारा मेहर क्या है? उसने कहा लम्बी-लम्बी तहज्जुद पढ़ना। इसी मौक़े के लिए लोगों ने यह शे'र कहे हैं:

शे'रों का तर्जुमा

(1) ऐ हूर को उसकी पर्दे की जगह में निकाह का पैग़ाम देने वाले और उसको उसके बुलन्द मुक़ाम के बावजूद उसकी तलब करने वाले।

(2) कोशिश करके खड़ा हो जा, सुस्ती मत हो, और अपने नफ़्स को सब्र का जिहाद सिखा।

(3) और लोगों से अलग-थलग रह बल्कि उनको छोड़ दे और हूर की फ़िक्र में तन्हाई में रहने की क़सम खा ले।

(4) जब रात अपना चेहरा दिखाए तो तू खड़ा हो जा (इबादत के लिए) और दिन को रोज़ा रख, यह उस हूर का मेहर है।

(5) जब तेरी आँखें उसको अपने सामने देखेंगी और उसके सीने के अनार ज़ाहिर नज़र आएँगे।

(6) और यह अपनी हमजोलियों के साथ चल रही होगी और उसका हार उसके सीने पर चमक रहा होगा।

(7) तो जो कुछ तेरे नफ़्स ने दुनिया में दुनिया की चमक-दमक और हुस्न व ख़ूबसूरती को देखा था सब बेक़िमत नज़र आएगा।

इबादत के साथ जागने से हूरों के साथ ऐश नसीब होगा

हज़रत मुज़र क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक रात मुझको ऐसी नींद आयी कि मैं अपना वज़ीफ़ा पूरा किये बग़ैर सो गया। ख़्वाब में एक लड़की को देखा मानो कि उसका चेहरा चौदहवीं का चाँद है। उसके हाथ में एक काग़ज़ है। उसने कहा ऐ शैख़! आप इसको पढ़ सकते हैं? मैंने कहा क्यों नहीं? उसने कहा तो आप इसको पढ़ें। मैंने उसको खोला तो उसमें यह लिखा हुआ था अल्लाह की क़सम! मैं जब भी उसको याद करता हूँ मेरी नींद उड़ जाती है।

तर्जुमाः (1) तुझे मज़ों और इच्छाओं ने बेपरवाह कर दिया है। जन्नतुल फ़िरदौस से और झुके-झुके सायों से।

(2) और नींद की लज़्ज़तों ने जन्नतियों के बालाख़ानों में बहुत ही हसीन औरतों के साथ ऐश भरी ज़िन्दगी गुज़ारने से।

(3) उठ जाग जा अपनी नींद से क्योंकि सोने के बजाए क़ुरआन पाक के साथ तहज्जुद पढ़ना बेहतर और अच्छा है।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 480)

हज़रत मालिक बिन दीनार का वाक़िआ

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि बयान फ़रमाते हैं कि मेरे कुछ वज़ीफ़े ऐसे थे जिनको मैं हर रात पूरा करके सोता था। एक

रात मैं वैसे ही सो गया तो मैं ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही हसीन व ख़ूबसूरत लड़की है। उसके हाथ में एक काग़ज़ है। उसने कहा क्या आप इसको अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं? मैंने कहा हाँ! तो उसने वह काग़ज़ मुझे दे दिया, उस पर्चे में ये शे'र लिखे हुए थे।

तर्जुमाः (1) आपको नींद ने अपनी (जन्नत की) ख़्वाहिशों की तलब से बेफ़िक्र कर रखा है और जन्नतियों में मुहब्बत करने वाली हसीनाओं से भी।

(2) आप (जन्नत में) हमेशा ज़िन्दा रहेंगे उसमे मौत कभी न आएगी। आप ख़ेमों में हसीन व ख़ूबसूरत बीवियों से खेल-कूद करते होंगे।

(3) जाग जाइये अपनी नींद से, क्योंकि नींद से बेहतर तहज्जुद अदा करना है क़ुरआन पाक के पढ़ने के साथ।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 480)

हुस्न व ख़ूबसूरती में बनी-ठनी लड़कियाँ और उनका मेहर

शैख़ मज़हर सअदी रहमतुल्लाहि अलैहि, अल्लाह तआला के शौक़ में बराबर साठ साल तक रोते रहे थे। एक रात उन्हों ने ख़्वाब में देखा कि जैसे नहर का एक किनारा ख़ालिस मुश्क से बह रहा है, उसके दोनों किनारों पर लुअ्लुअ् (मोतियों) के पेड़ हैं जो सोने की टहनियों के साथ लहलहा रहे हैं। इतने में कुछ लड़कियाँ जो हद से ज़्यादा हसीन थीं, बन-ठनकर आईं और पुकार-पुकार कर ये अलफ़ाज़ गाने लगीं:

तर्जुमाः पाक है वह ज़ात जिसकी हर ज़बान पाकी बयान करती है। पाक है वह ज़ात जो हर जगह मौजूद है। पाक है वह ज़ात जो हर ज़माने में हमेशा रहने वाली है। पाक है वह पाक है।

मैंने पूछा तुम कौन हो? उन्होंने जवाब दिया हम अल्लाह तआला की मख़्लूक़ात में से एक मख़्लूक़ हैं। मैंने पूछा तुम यहाँ क्या कर रही हो? तो उन्होंने यह जवाब दियाः

तर्जुमाः (1) हमें लोगों के माबूद और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के परवर्दिगार ने उस क़ौम के लिए पैदा किया है जो रात को (अपने परवर्दिगार के सामने इबादत के लिए) क़दमों पर खड़े रहते हैं।

(2) अपने (माबूद) रब्बुल-आलामीन से अपने हक़ के पाने के लिए दुआएँ करते हैं (अल्लाह तआला की याद और मुलाक़ात के शौक़ में उनकी हालत यह है कि) रात को बराबर सोचते रहते हैं जबकि और लोग पड़े सोते रहते हैं।

मैंने कहा बस-बस ये कौन लोग होंगे जिनकी अल्लाह तआला आँखें ठंडी करेंगे? उन्होंने पूछा क्या आप नहीं जानते? मैंने कहा अल्लाह की क़सम! मैं उनको नहीं जानता। उन्हों ने कहा वे लोग हैं जो रातों को तहज्जुद पढ़ते हैं और सोते नहीं। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 480)

हूरों और औरतों से हमबिस्तरी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और हम उन जन्नतियों की हूरे-ऐन से शादी करेंगे।

(सूरः तूर आयत 20)

दूसरी जगह इरशाद है:

तर्जुमाः जन्नत वाले (उनका हाल यह है कि वे) बेशक उस दिन (जन्नत में) अपने मामलों में मस्त होंगे। (सूरः यासीन आयत 55)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि उनका मश्ग़ला कुंवारियों के पास जाना होगा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2067)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसे ही रिवायत किया गया है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2068)

हज़रत इक्रिमा और हज़रत इमाम औज़ाई से भी ऐसा ही नक़ल किया गया है। (हादिल अरवाह पेज 309)

जन्नती सोहबत भी करेंगे

हदीसः हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सवाल कियाः क्या जन्नती सोहबत (हमबिस्तरी, संभोग) भी करेंगे? तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ख़ूब जोश से सोहबत (संभोग) करेंगे, न मर्द का पानी निकलेगा और न मौत आएगी। (तिबरानी कबीर हदीस 7479)

जन्नती के पास सौ मर्दों के बराबर ताक़त होगी

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मोमिन को जन्नत में सौ मर्दों की ताक़त दी जाएगी, सोहबत करने के लिए। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2536)

एक दिन में सौ औरतों के पास जा सकेगा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अर्ज़ किया गयाः या रसूलुल्लाह! क्या हम जन्नत में अपनी बीवियों के पास जा सकेंगे? तो आपने इरशाद फ़रमायाः एक मर्द एक दिन में सौ कुंवारियों के पास जा सकेगा। (बज़्ज़ार हदीस 3525) और एक रिवायत में है कि एक सुबह में सौ औरतों के पास जा सकेगा।

नापाकी कस्तूरी बनकर बाहर निकल जाएगी

हदीसः हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः पेशाब और नापाकी (गंदगी) जन्नतियों के पहलू नीचे से पसीने के शक्ल में बहकर क़दमों तक जाते-जाते कस्तूरी बन जाएगी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2078)

औरत संभोग के बाद खुद-बखुद पाक हो जाएगी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया

तर्जुमाः (किसी ने सवाल किया कि) क्या हम जन्नत में सोहबत (संभोग) भी करेंगे? आपने इरशाद फ़रमाया हाँ! मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ख़ूब जोश और ताक़त से। जब जन्नती अपनी बीवी से फ़ारिग़ हो जाएगा तो वह फिर पाक और कुंवारी हो जाएगी। (हादिल अरवाह पेज 308)

वे फिर कुंवारियाँ हो जाएँगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती अपनी बीवियों से सोहबत (संभोग) कर लेंगे तो वे फिर से कुंवारी (जैसी) हो जाएँगी। (तिबरानी सग़ीर जिल्द 1 पेज 91)

एक-दूसरे से जी नहीं भरेगा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु 'सूर वाली हदीस' में जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० का इरशाद नक़ल करते हैं कि आपने फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम! जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है, तुम लोग दुनिया में अपनी बीवियों को और अपने मकानों को जन्नतियों से उनके अपनी बीवियों और उनके महलों के जानने से ज़्यादा नहीं जानते। जन्नतियों में से हर आदमी अपनी उन बहत्तर बीवियों के पास जाएगा जिनको अल्लाह तआला ने (अपने पैदा करने की क़ुदरत से) नये सिरे से पैदा किया होगा। उनमें से दो बीवियाँ आदम की औलाद में से होंगी। उन दो बीवियों की उन सब औरतों पर फ़ज़ीलत होगी जिनको अल्लाह तआला ने नये सिरे से पैदा किया होगा। वह इसलिए कि उन औरतों ने दुनिया में अल्लाह तआला की इबादत की थी।

जन्नती मर्द उन औरतों में से एक के पास याक़ूत के बालाख़ाने में सोने के पलंग पर दाख़िल होगा। उस पलंग को लुअ्लुअ् का ताज पहनाया गया होगा। उस बीवी पर मोटे और बारीक रेशम के सत्तर जोड़े होंगे। जन्नती उसके कन्धों के बीच (यानी पीठ पर) अपना हाथ रखेगा तो उसको उसके सीने की तरफ़ से कपड़ों खाल और उसके गोश्त के पीछे से नज़र आएगा और वह अपनी बीवी की पिंडली के गूदे को देखता होगा, जिस तरह से तुम में का कोई शख़्स याक़ूत के मोती के सुराख़ में धागे को देखता है।

मर्द के सीने के अन्दर का हिस्सा औरत के लिए आईना होगा और औरत के सीने के अन्दर का हिस्सा मर्द के लिए आईना होगा। इसी बीच वह मर्द उस बीवी के पास होगा, न यह उससे सेर हो रहा होगा न वह

वे फिर कुंवारियाँ हो जाएँगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती अपनी बीवियों से सोहबत (संभोग) कर लेंगे तो वे फिर से कुंवारी (जैसी) हो जाएँगी। (तिबरानी सग़ीर जिल्द 1 पेज 91)

एक-दूसरे से जी नहीं भरेगा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु 'सूर वाली हदीस' में जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 का इरशाद नक़ल करते हैं कि आपने फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझे उस ज़ात की क़सम! जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है, तुम लोग दुनिया में अपनी बीवियों को और अपने मकानों को जन्नतियों से उनके अपनी बीवियों और उनके महलों के जानने से ज़्यादा नहीं जानते। जन्नतियों में से हर आदमी अपनी उन बहत्तर बीवियों के पास जाएगा जिनको अल्लाह तआला ने (अपने पैदा करने की क़ुदरत से) नये सिरे से पैदा किया होगा। उनमें से दो बीवियाँ आदम की औलाद में से होंगी। उन दो बीवियों की उन सब औरतों पर फ़ज़ीलत होगी जिनको अल्लाह तआला ने नये सिरे से पैदा किया होगा। वह इसलिए कि उन औरतों ने दुनिया में अल्लाह तआला की इबादत की थी।

जन्नती मर्द उन औरतों में से एक के पास याक़ूत के बालाख़ाने में सोने के पलंग पर दाख़िल होगा। उस पलंग को लुअ्लुअ् का ताज पहनाया गया होगा। उस बीवी पर मोटे और बारीक रेशम के सत्तर जोड़े होंगे। जन्नती उसके कन्धों के बीच (यानी पीठ पर) अपना हाथ रखेगा तो उसको उसके सीने की तरफ़ से कपड़ों खाल और उसके गोश्त के पीछे से नज़र आएगा और वह अपनी बीवी की पिंडली के गूदे को देखता होगा, जिस तरह से तुम में का कोई शख़्स याक़ूत के मोती के सुराख़ में धागे को देखता है।

मर्द के सीने के अन्दर का हिस्सा औरत के लिए आईना होगा और औरत के सीने के अन्दर का हिस्सा मर्द के लिए आईना होगा। इसी बीच वह मर्द उस बीवी के पास होगा, न यह उससे सेर हो रहा होगा न वह

इससे सेर हो रही होगी।

यह जब भी उससे संभोग करेगा वह उसको कुंवारी (जैसी) मिलेंगी। न मर्द का नफ़्स ढीला होगा न औरत की योनि को थकावट और तकलीफ़ होगी। ये दोनों इसी हालत में होंगे कि उसको आवाज़ दी जाएगी "हम जानते हैं कि न तू सेर होता है न तुझसे (बीवी की) सेरी होती है क्योंकि (वहाँ न मर्द का पानी होगा न औरत का कि उसके निकलने से जोश में कमी आ जाए) बल्कि उसकी और बीवियाँ भी होंगी, यह जन्नती उन औरतों में से हर एक के पास एक-एक करके जाएगा। यह जब भी किसी औरत के पास जाएगा वह यह कहेगी कि अल्लाह की क़सम! जन्नत में आपसे ज़्यादा हसीन कोई चीज़ नहीं और जन्नत में मेरे नज़दीक आपसे ज़्यादा कोई चीज़ प्यारी नहीं। (हादिल अरवाह पेज 297)

एक ख़ेमे की कई हूरें

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मोमिन के लिए जन्नत में एक ख़ोलदार लुअ्लुअ् (मोती) का ख़ेमा होगा जिसकी लम्बाई साठ मील होगी। उसमें मोमिन की घर वालियाँ होंगी। यह उनके पास जाता होगा मगर ये घर वालियाँ (इस हालत में) एक-दूसरे को नहीं देखती होंगी। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 3243)

लुत्फ़ व मज़े वाली बीवियाँ

हदीसः हज़रत लक़ीत बिन आमिर ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम जन्नत में किस-किस से लुत्फ़ उठाएँगे? तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः साफ़-सुथरी शहद की नहरों से, और (शराब की) ऐसी नहरों के प्यालों से जिनमें न तो नशा होगा न शर्मिन्दगी होगी, और ऐसे पानी से जो कभी ख़राब न होगा, और ऐसे मेवों से तुम्हारे ख़ुदा की क़सम जिनको तुम जानते हो जबकि वे इन मेवों से बहुत बेहतर होंगे, और पाक-साफ़ बीवियों से। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या हमारे लिए जन्नत में इस क़ाबिल बीवियाँ होंगी? आपने इरशाद फ़रमाया नेक

मर्दों के लिए नेक औरतें होंगी। वे उन बीवियों से इस तरह लुत्फ़ उठाएँगे जिस तरह से तुम दुनिया में मज़ा लेते हो और वे तुमसे मज़ा लेंगी। बस यह बात ज़रूर है कि वहाँ औलाद की पैदाईश का सिलसिला नहीं होगा। (तिबरानी कबीर जिल्द 19 पेज 213)

मिलाप का मज़ा सत्तर साल तक बाक़ी रहेगा

हज़रत सईद ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती की शहवत उसके बदन में सत्तर साल तक जारी रहेगी जिसकी लज़्ज़त को वह महसूस करता होगा। उससे जन्नतियों को नापाकी नहीं लगेगी जिसकी वजह से उनको पाक होने की ज़रूरत पड़े, न ही बूढ़ा होगा और न ही ताक़त में कमी होगी बल्कि उनका मिलाप बस मज़े और नेमत की हैसियत से होगा जिसमें उनको किसी भी तरह की कोई हानि और दुख न होगा। (ज़ादुल मआद जिल्द 3 पेज 677)

इमाम इब्ने अबी दुनिया रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत सईद बिन ज़ुबैर के मज़कूरा इरशाद को इस तरह से नक़ल किया है कि जन्नत में मर्द का क़द सत्तर मील के बराबर होगा और औरत का तीस मील के बराबर होगा। उस औरत के सुरीन सूखी ज़मीन की तरह प्यासे होंगे। मर्द की शहवत औरत के शरीर में सत्तर साल तक बाक़ी रहेगी जिसकी उसको लज़्ज़त महसूस होगी। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 271)

और इब्ने अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस रिवायत को यूँ रिवायत किया है कि हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान किया कि यह कहा जाता था कि जन्नतियों में से मर्द का क़द नब्बे मील होगा और औरत का क़द अस्सी मील होगा और औरत के सुरीन सूखी ज़मीन की तरह प्यासे होंगे, मर्द की शहवत औरत के शरीर में सत्तर साल तक बाक़ी रहेगी जिसका उसको मज़ा महसूस होता रहेगा। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 104)

हर बार देखने से नई ख़्वाहिश पैदा होगी

हज़रत इब्राहीम नख़ई फ़रमाते हैं कि जन्नत में जो चाहेंगे वही होगा, वहाँ औलाद न होगी। फ़रमाया कि जन्नती आदमी जब एक बार

बीवी को देखेगा तो उससे उसको ख़्वाहिश होगी, फिर दोबारा देखेगा तो और ख़्वाहिश पैदा होगी। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 3 पेज 116)

बारह हज़ार पाँच सौ बीवियों से मिलाप

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साबित रहमतुलहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नती मर्द की पाँच सौ हूरों से और चार हज़ार कुंवारियों से और आठ हज़ार (दुनिया की) शादी शुदा औरतों से शादी की जाएगी। उन औरतों में से हर एक से वह जन्नती दुनिया की उम्र के बराबर बग़लगीर होगा। उन दोनों (बग़लगीर होने वालों) में से कोई एक-दूसरे से कोई रोक-टोक नहीं करेगा (न मर्द बीवी को न बीवी मर्द को)। उसके बाद उससे मिलाप करेगा और वह दुनिया की तमाम उम्र के बराबर भी अपने मिलाप को पूरा न करेगा (बल्कि उससे ज़्यादा समय उसके पास जाएगा)। इस तरह से उसके पास कोई बरतन (खाने-पीने वग़ैरह का) पेश किया जाएगा और उसके हाथ में रखा जाएगा उससे भी दुनिया की तमाम उम्र के बराबर लज़्ज़त हासिल करने में सेरी नहीं होगी यानी तबीयत नहीं भरेगी। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 272)

जन्नती एक से एक हूर की तरफ़ फिरता रहेगा

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझसे जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बयान फ़रमायाः

तर्जुमाः मुझसे हज़रत जिब्राईल ने बयान फ़रमाया कि जन्नती हूर के पास दाख़िल होगा तो वह उसके गले मिलेगी और मुसाफ़े से स्वागत करेगी। हूज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं (आपको मालूम है कि) वह हाथ की कैसी (हसीन) उंगलियों से स्वागत करेगी? अगर उसके हाथ कि कोई उंगली ज़ाहिर हो जाए तो सूरज और चाँद की रोशनी पर ग़ालिब आ जाए। और अगर उसके बालों की एक लट ज़ाहिर हो जाए तो पूरब और पश्चिम के दरमियानी हिस्से को अपनी ख़ुशबू से भर दे।

यह जन्नत इसी हालत में उस औरत के साथ मसहरी पर बैठा होगा कि ऊपर से एक नूर की चमक पड़ेगी। जन्नती यह गुमान करेगा कि अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ की तरफ़ झाँका है, लेकिन वह

एक हूर होगी जो उसको पुकार कर कहेगी ऐ अल्लाह के दोस्त! क्या हमारी बारी नहीं आएगी? वह पूछेगा अरी तुम कौन हो? वह कहेगी मैं उन औरतों में से हूँ जिनके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

तर्जुमाः हमारे पास और भी ज़्यादा है। (सूरः क़ाफ़ आयत 35)

चुनाँचे वह जन्नती उस औरत की तरफ़ फिर जाएगी। उसको जब देखेगा तो उसके हुस्न व ख़ूबसूरती का यह आलम होगा जो पहली के पास नहीं था। इसलिए वह इसी हालत में उसके साथ मसहरी पर टेक लगाकर बैठेगा कि उसके ऊपर से एक नूर की चमक पड़ेगी और वह दूसरी होगी जो पुकार कर कहेगी ऐ अल्लाह के दोस्त! क्या हमारी बारी नहीं आएगी? वह पूछेगा अरी तुम कौन हो? वह कहेगी मैं उन औरतों में से हूँ जिनके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कोई नफ़्स (जी) नहीं जानता कि उन मोमिनों के लिए आँखों की ठंडक के लिए क्या-क्या छुपाकर रखा गया है।

(सूरः सज्दा आयत 17)

चुनाँचे वह इसी तरह से एक बीवी से दूसरी की तरफ़ घूमता रहेगा। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 533)

नई हूर अपने पास बुलाएगी

हज़रत साबित फ़रमाते हैं कि जन्नती सत्तर साल तक बड़े मज़े से टेक लगाकर बैठा होगा। उसके पास उसकी बीवियाँ भी मौजूद होंगी और नौकर-चाकर भी। अचानक वे औरतें जिन्होंने अपने शौहर को नहीं देखा होगा कहेंगी ऐ फ़लाँ! क्या हमारा आप में कोई हक़ नहीं है?

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 291)

हूरों का डील-डोल और जिस्मानी लम्बाई-चौड़ाई का एक अन्दाज़ा

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती मर्द के लिए हूरे-ऐन में से बहत्तर बीवियाँ होंगी,

उसकी दुनिया की औरतों के अलावा और उन (ज़िक्र हुई औरतों) में से हर एक की सुरीन (चूतड़) ज़मीन पर एक मील के बराबर (मोटी) होगी।

(मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 573)

नोटः इस रिवायत पर मुहद्दिसीन ने जिरह की है कि यह मशहूर हदीसों के ख़िलाफ़ है जिनमें यह आया है कि जन्नत की औरतों का क़द साठ हाथ का होगा। क्योंकि इस हदीस में औरत के सुरीन का एक मील के जितना होना उन रिवायतों को काट रहा है। हाँ! इस हदीस में और उन हदीसों में यह सम्बंध हो सकता है कि हूरे-ऐन ही की सिर्फ़ यह जिस्मानी लम्बाई-चौड़ाई हो बाक़ी हूरों और औरतों की ऐसी न हो। और कुछ रिवायतों में आपने पढ़ा होगा कि जन्नती मर्दों के क़द नव्वे मील होंगे और औरतों के अस्सी मील, और कुछ रिवायतों में आपने पढ़ा होगा कि जन्नती मर्दों के क़द साठ मील होंगे और औरतों के तीस मील।

अगर इन रिवायत को मानने के क़ाबिल समझा जाए तो फिर इस रिवायत का समझना आसान हो जाता है और अगर यहाँ मील से मुराद यह लिया जाए कि अरबी में दोनों हाथों के फैलाव की मिक़्दार को भी मील कहते हैं, तो फिर यह हदीस मशहूर और सही रिवायतों के लगभग मुताबिक़ हो जाएगी मगर "ज़मीन के एक मील के बराबर" अलफ़ाज़ इस मायने की ताईद नहीं कर रहे। वल्लाहु अअ्लम।

गर्भ और पैदाईश

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब कोई जन्नती जन्नत में औलाद की इच्छा करेगा तो उस का हमल (गर्भ) और विलादत (पैदाईश) और उम्र का बढ़ना उसी समय हो जाएगा जिस तरह से वह चाहेगा।

(मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 809)

इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्ललाही अलैहि फ़रमाते हैं कि आलिमों ने इस मसले में इख़्तिलाफ़ फ़रमाया है। कुछ का विचार यह है कि जन्नत

में मिलाप (सोहबत और संभोग) तो होगा मगर औलाद नहीं होगी। यह विचारधारा हज़रत ताऊस,हज़रत मुजाहिद और हज़रत इब्रा नख़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की है। और हज़रत इसहाक़ बिन इब्राहीम इस हदीस के बारे में फ़रमाते हैं कि जब जन्नती औलाद की इच्छा करेगा तो औलाद होगी, मगर वह औलाद की इच्छा नहीं करेगा। हज़रत लक़ीत की हदीस में ऐसे ही है कि जन्नत वालों की कोई औलाद नहीं होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2563)

अल्लामा सुयूती लिखते हैं कि और एक जमाअत यह फ़रमाती है कि बल्कि जन्नत में औलाद के पैदा होने का सिलसिला होगा लेकिन यह इनसान की इच्छा पर निर्भर होगा। इसी को उस्ताद अबू सहल सालूक रहमतुल्लाहि अलैहि ने ज़्यादा सही क़रार दिया है। मैं कहता हूँ कि इस विचार का हज़रत अबू सईद ख़ुदरी की उस हदीस का पहला हिस्सा समर्थन करता हैं जिसको इमाम हन्नाद बिन सिर्री रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी किताबुज़्ज़ोहद में रिवायत किया है कि सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! औलाद आँखों की ठंडक और मुकम्मल ख़ुशी है तो क्या जन्नत वालों को वहाँ औलाद होगी? आपने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः यानी जब वह चाहेगा तो होगी, नहीं चाहेगा तो नहीं होगी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2084)

अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि यह भी लिखते हैं कि इमाम अस्बहानी ने तरग़ीब में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि जब जन्नती आदमी औलाद की इच्छा करेगा तो उसका हमल (गर्भ), उसका दूध पिलाना, उसका दूध छुड़ाना और जवान होना एक ही समय में हो जाएगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2085)

इस हदीस को इमाम बैहिक़ी ने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी के वास्ते से जनाब रसूलुल्लाह सलल0 से रिवायत किया है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2086)

अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि आगे लिखते हैं। मैं कहता हूँ कि यह हदीस हज़रत लक़ीत की पहली हदीस के मुख़ालिफ़ नहीं है जिसमें औलाद न होने की बात है, क्योंकि इस न होने का मतलब यह है कि जिस तरह से दुनिया में संभोग के बाद अक्सर हमल ठहर जाता है

यह नहीं होगा बल्कि अगर इच्छा होगी तो औलाद होगी वरना नहीं होगी। और यह बात साबित हो चुकी है कि अल्लाह तआला जन्नत के बहुत बड़ा होने की वजह से उसको आबाद करने के लिए एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा जिसको जन्नत में बसाएगा (हो सकता है कि वह उन जन्नतियों की औलाद हो जो जन्नत में उनसे पैदा हुई हो, उसको अल्लाह तआला बाक़ी बची ख़ाली जन्नत में बसाएँ)। इस एतिबार से कोई रुकावट नहीं है कि जन्नतियों के दरमियान औलाद के पैदा होने का सिलसिला न हो। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2087)

हूज़ूर सल्ल0 की हूरों से मुलाक़ात और बातचीत

हदीसः हज़रत वलीद बिन अब्दह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ जिब्राईल! मुझे हूरे-ऐन के पास ले चलो। हज़रत जिब्राईल हुज़ूर सल्ल0 को उनके पास ले गये। आपने उनसे पूछा तुम कौन हो? उन्होंने अर्ज़ किया हम बड़ी शान वाले हज़रात की घर वालियाँ हैं जो (जन्नत में) दाख़िल होंगे और निकाले नहीं जाएँगे। जवान रहेंगे, कभी बूढ़े न होंगे। साफ़-सुथरे रहेंगे, कभी मैल-कुचैले न होंगे।

(हादिल अरवाह पेज 304)

ये हूरें कैसे-कैसे ख़ेमों में रहती हैं

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मुझे मेराज कराई गई तो मैं जन्नत में एक जगह दाख़िल हुआ जिसका नाम (नहर) बीदख़ था। उस पर लुअ्लुअ्, ज़बर्जद, सब्ज़ और सुर्ख़ याक़ूत के ख़ेमे लगे हुए थे। उन (में रहने वाली) हूरों ने कहा अस्सलामु अलै-क या रसूलल्ला! (ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर सलाम हो)। मैंने पूछा ऐ जिब्राईल! यह किनकी आवाज़ थी? उन्होंनमे फ़रमाया वे हूरे हैं जो ख़ेमों में रुकी हुई हैं। उन्होंने अपने रब तआला से आपको सलाम कहने की इजाज़त माँगी और अल्लाह तआला ने उनको (इसकी) इजाज़त इनायत की है। फिर वे हूरें जल्दी से

बोल पड़ी 'हम राज़ी रहने वाली हैं (अपने शौहरों पर) कभी नाराज़ न होंगी। हम हमेशा रहने वाली हैं कभी (जन्नत से) निकाली न जाएँगी"। फिर नबी करीम सल्ल0 ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः हूरें हैं ख़ेमों में रुकी रहने वालियाँ।

(सूरः रहमान आयत 72) (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 161)

हूरों के तराने और गाने गाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में जन्नत की लम्बाई के बराबर एक नहर है जिसके दोनों किनारों कुंवारी लड़कियाँ आमने-सामने खड़ी हैं। इतनी ख़ूबसूरत आवाज़ में गाने गाती हैं कि उन जैसी मख़्लूक़ात ने ख़ूबसूरत आवाज़ें नहीं सुनी यहाँ तक कि जन्नती इससे ज़्यादा लज़्ज़त की कोई चीज़ नहीं देखेंगे। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि यह हसीन आवाज़ में किस चीज़ के गाने गाएँगे? उन्होंने फ़रमाया अल्लाह तआला की तस्बीह, पाकी और तारीफ़ के गाने गाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2089)

गाना गाने वाली दो ख़ास हूरें

हदीसः हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स भी जन्नत में दाख़िल होगा उसके सर और पाँव की तरफ़ दो हूरे-ऐन बैठेंगी जो उसके लिए सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत आवाज़ में जिसको जिन्न व इन्सान ने नहीं सुना होगा, गाने गाएँगी। यह शैतान के बाजे नहीं होंगे बल्कि अल्लाह तआला की तारीफ़ और उसकी पाकी बयान होगी। (हादिल अरवाह पेज 324)

जन्नती बीवियों का तराना

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की औरते अपने-अपने शौहरों के सामने ऐसी (सुन्दर) आवाज़ों में गाना गाएँगी जिसको किसी ने उससे पहले नहीं सुना

होगा। जो तराने वे गाएँगी उनमें से एक यह है।

तर्जुमाः हम बहुत आला दर्जे की हसीन औरतें हैं, बड़े दर्जे के लोगों की बीवियाँ है। वे आँखों की ठंडक और आनन्द से लुत्फ़ उठाने के लिए हमें देखते हैं।

वे यह तराना भी गाएँगी

तर्जुमाः हम हमेशा ज़िन्दा रहेंगी, कभी नहीं मरेंगी। हम हमेशा हर तरह की तकलीफ़ से अमन में हैं, कभी ख़ौफ़ नहीं करेंगी। हम हमेशा के लिए जन्नत में रहने वालियाँ हैं, कभी इससे निकाली न जाएँगी।

(हादिल अरवाह पेज 325)

हूरों का तराना

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की हूरें तरन्नुम से तराने कहेंगी, वे कहेंगीः

तर्जुमाः हम हसीन व जमील हूरें हैं, बड़ी शान वाले शौहरों को तोहफ़े में दी गयी हैं। (तारीख़े कबीर जिलद 7 पेज 16)

अफ़ाफ़ा की हवाओं के गीत

ख़ुदा के इरशाद "फ़ी रौज़तिंय्-युह्बरून" की तफ़सीर (व्याख्या) में इमाम औज़ाई रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब जन्नत वाले ख़ूबसूरत आवाज़ सुनना चाहेंगे तो अल्लाह तआला हवाओं को हुक्म देंगे। उन हवाओं का नाम अफ़ाफ़ा है। ये नरम लुअ्लुअ् के सरकण्डों की घनी झाड़ियों में दाख़िल होगी और उसको हरकत देगी तो वह एक-दूसरे से टकराएँगे और जन्नत में एक बेहतरीन आवाज़ पैदा हो जाएगी जब वह उम्दा आवाज़ निकालेगी तो जन्नत में कोई पेड़ ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा जिस पर फूल न लगें। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2093)

हूरों का एक साथ मिलकर गाना

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में हूरे-ऐन की एक मजलिस आयोजित हुआ करेगी, ये ऐसी ख़ूबसूरत आवाज़ों में गाएँगी कि मख़्लूक़ात में से उन जैसी आवाज़ में गाना कभी न सुना होगा। ये कहेंगीः

तर्जुमाः हम हमेशा रहने वालियाँ है कभी फ़ना न होंगे। हम हमेशा नेमतों में पलने वालियाँ हैं कभी ख़स्ताहाल न होंगे। हम (अपने शौहरों पर) राज़ी रहने वालियाँ हैं कभी नाराज़ न होंगे। ख़ुशख़बरी हो उसके लिए जो हमारा शौहर बना और हम उसकी बीवियाँ बनी।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2096)

दुनिया की औरतों का हूरों के तराने का जवाब देना

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाती हैं, जब हूरे-ऐन यह तराना कहेंगी तो दुनिया की मोमिन औरतें इस तराने के साथ जवाब देंगी

तर्जुमाः हमें नमाज़ पढ़ने का गर्व हासिल हुआ है, तुमने नमाज़े नहीं पढ़ीं। हमने रोज़े रखे हैं तुमने नहीं रखे। हमने वुज़ू किये हैं तुमने वुज़ू नहीं किये। हमने ज़कात व सदक़ात अदा किये हैं तुमने नहीं किये।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि इस जवाब के साथ ये दुनिया की औरतें हूरे-ऐन पर हावी आ जाएँगी।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 476)

पेड़ और हूरों का आवाज़ के अच्छा होने में मुक़ाबला

एक क़ुरैशी आदमी ने हज़रत इमाम इब्ने शहाब ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा कि क्या जन्नत में गाना भी होगा क्योंकि मुझे ख़ूबसूरत आवाज़ बहुत पसन्द है। आपने फ़रमाया जिस ज़ात के क़ब्ज़े मे इब्ने शहाब की जान है बिल्कुल होगा। जन्नत में एक पेड़ होगा जिसके फल लुअ्लुअ् और ज़बर्जद (मोतीयों) के होंगे। उसके नीचे नौजवान लड़कियां होंगी जो ख़ूबसूरत आवाज़ से क़ुरआन की तिलावत करेंगी और यह कहेंगी कि हम नेमतों की पली हैं, हम हमेशा रहेंगी कभी न मरेंगी। जब वह पेड इसको सुनेगा तो उसका एक हिस्सा दूसरे से बारीक तरन्नुम से मिलाप खाएगा तो वे लड़कियाँ ख़ूबसूरत आवाज़ में उसका जवाब पेश करेंगी और जन्नती फ़ैसला नहीं कर सकेंगे कि उन

लड़कियों की आवाज़ें ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं या पेड़ की।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2564)

मुख़्तलिफ़ चीज़ें

हूरों की जन्नत में सैर व तफ़रीह

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः हूरें हैं ख़ेमों में सुरक्षित। (सूरः रहमान आयत 72)

इसका एक अर्थ तो यह है कि वे सिर्फ़ ख़ेमों में ही रहेंगे। दूसरा अर्थ यह है कि वे सिर्फ़ अपने शौहरों को चाहेंगी इसके अलावा किसी ग़ैर को नहीं देखेंगी और ख़ेमों में रहती होंगी। ख़ेमों में रहने का मतलब यह नहीं है कि अपने-अपने ख़ेमों को नहीं छोड़ेंगी, बाहर सैर-तफ़रीह के लिए नहीं निकलेंगी, बल्कि यह मतलब कि ये औरतें बहुत ज़्यादा पर्दे में रहने वालियाँ होंगी, बिल्कुल पाकदामन रहेंगी। और यह औरतों का बेहतरीन गुण है। और ये इसी तरह से बाग़ों और तफ़रीहों के लिए निकला करेंगी जिस तरह से बादशाहों की बीवियाँ पर्दे के साथ सुरक्षित तरीक़े से सैर व तफ़रीह के लिए निकलती हैं। ताबिई मुफ़स्सिर हज़रत मुज़ाहिद फ़रमाते हैं कि उन हूरों के दिल लुअ्लुअ् के ख़ेमों में सिर्फ़ अपने शौहरों तक सीमित रहेंगे।(जौलात फ़ी रियाज़िल् जन्नात)

जन्नत की औरत अपने पति को दुनिया में देख लेती है

हदीस हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कोई औरत जब भी दुनिया में अपने पति को परेशानी और तकलीफ़ पहुँचती है तो उसकी बीवी हूरे (जन्नत में) कहती है अल्लाह तुझे क़त्ल करे इसको तकलीफ़ मत दो, यह तुम्हारे पास कुछ समय का मेहमान है। वह समय क़रीब है कि यह तुम्हें छोड़कर हमारे पास आ जाएगा। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 485)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने ज़ैद फ़रमाते हैं जन्नत की औरत को जबकि वह जन्नत में मौजूद है कहा जाता है, क्या तू पसन्द करती है कि तू

दुनिया के अपने पति को देखे। वह कहती है, हाँ! (क्यों नहीं) चुनाँचे उसके लिए पर्दे हटा दिये जाते हैं। उसके और उसके पति के बीच के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं यहाँ तक कि वह उसको देखती और पहचान रखती है और टकटकी लगाकर देखती रहती है, और यह कि वह अपने शौहर को देर से आने वाला समझती है। यह औरत अपने शौहर की इतनी चाहत रखती है जितना कि (दुनिया की) औरत अपने घर से कहीं दूर-दराज़ गये हुए पति की वापसी की चाहत रखती है। शायद कि दुनिया के मर्द और उसकी बीवी के बीच उस हूर को वही हालत होती है जो बीवियों के अपने शौहर के दरमियान नोक-झोंक और झगड़ा होता है और यह जन्नत की हूर दुनिया की बीवी पर ऐसे नाराज़ होती है और उसको तकलीफ़ होती है और उसी तकलीफ़ की बिना पर कहती है, तुझ पर अफ़सोस! तुम इसको तकलीफ़ न दो हमें तुम्हारी उसको तकलीफ़ देने से सदमा होता है। यह तो जन्नत का शहज़ादा है।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 485)

हूरें हिसाब व किताब के समय अपने पतियों को देख रही होंगी

हज़रत साबित फ़रमाते हैं अल्लाह तआला जब अपने बन्दे का क़यामत के दिन हिसाब ले रहे होंगे उस समय उसकी बीवियाँ जन्नत से झाँककर देख रही होंगी। जब पहला गिरोह (समूह) हिसाब से निबटकर (जन्नत की तरफ़) लौटेगा तो वे औरतें उनको देख रही होंगी और कहेंगी ऐ फ़लानी! ख़ुदा की क़सम! यह तुम्हारा शौहर है। वह भी कहेंगी हाँ! अल्लाह की क़सम! यह मेरा शौहर है।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 290)

हूरें बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रही होंगी

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी के साहिबज़ादे मुहम्मद मासूम नक़्शबन्दी मुजद्दिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब मैं हरम में दाख़िल हुआ और तवाफ़ शुरू किया तो मर्दों और औरतों की एक

जमाअत को बहुत ही सुन्दर शक्ल में देखा जो मेरे साथ शौक़ और बहुत ही मुहब्बत व अक़ीदत के साथ तवाफ़ कर रहे थे वे बैतुल्लाह के बोसे भी लेते थे और हर वक़्त उससे मुआनक़ा करते थे।(यानी उसको अपनी बाँहों में लेते थे)। उनके क़दम ज़मीन पर थे और सर आसमान को छू रहा था। मुझे मालूम हुआ कि मर्द तो फ़रिश्ते हैं और औरतें हूरें हैं। (जामे करामाते औलिया जिल्द 1 पेज 334)

फ़ायदाः फ़रिश्तों का बैतुल्लाह शरीफ़ (काबा शरीफ़) का तवाफ़ करने का ज़िक्र मैंने किसी हदीस में नहीं देखा, मगर उनका बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करना कोई अक़्ल से दूर की बात नहीं, इसकी पुष्टि में कोई हर्ज नहीं, जबकि इसको नक़ल करने वाले अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल बड़े बुज़ुर्गों में से गुज़रे हैं और हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद मासूम सरहन्दी मुजद्दिदी का विलायत का मुक़ाम और चमत्कारों की कसरत भी अहले सुन्नत 'उलमा-ए-देवबन्द' रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक मुसल्लम (मान्यता प्राप्त) है। यह हूरों का बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करना इबादत के लिए नहीं है बल्कि उनके मुक़ाम व रुतबे को इस शर्फ़ (सम्मान) के साथ आला व बुलन्द करना मक़सूद है, कि ये हूरें जिस जन्नती मर्द के निकाह में जाएँगी उनके सम्मान के इज़ाफ़े में हूरों को तवाफ़ कराया जाता होगा ताकि जन्नती बीवी को बैतुल्लाह का दीदार और तवाफ़ का शर्फ़ (सम्मान) हासिल हो, और हूरों के रुतबे व दर्जे में और तरक़्क़ी हो। वल्लाहु अअ्लम।

दुनिया के मियाँ-बीवी जन्नत में भी मियाँ-बीवी रहेंगे

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात मालूम हुई है कि जो शख़्स किसी औरत से शादी करता है, जन्नत में भी वह औरत उसकी बीवी होगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2061)

फ़ायदाः बशर्तेकि वे दोनों इस्लाम की हालत पर मरे हों और बीवी ने शौहर के मरने के बाद किसी और मर्द से निकाह न किया

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की बेटी अमा हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम की बीवी थीं हज़रत

ज़ुबैर उन पर सख़्ती फ़रमाते। यह अपने वालिद साहिकी ख़िदमत में शिकायत लेकर आईं तो आपने उनको तसल्ली देते हुए फ़रमाया,मेरी बेटी! सब्र करो अगर किसी औरत का शौहर नेक हो फिर वह उसको छोड़कर मर जाए और उसकी बीवी ने उसके मरने के बाद किसी और से निकाह न किया हो तो अल्लाह अल्लाह तआला उन दोनों जन्नत में इकट्ठे जमा फ़रमा देंगे (यानी वे जन्नत मे भी मियाँ बीवी रहेंगे, उनका मियाँ बीवी का रिश्ता ख़त्म नहीं करेंगे।) (तज़किरतुल क़रतीब जिल्द 2 पेज 481)

अल्लामा क़रतबी नक़ल करते हैं कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मे दर्दा को अपने साथ निकाह करने का पैग़ाम भिजवाया तो उन्होंने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि मैंने (अपने मरे हुए शौहर) हज़रत अबू दर्दा सुना है कि उन्होंने नबी करीम सल्ल0 से इस हदीस को नक़ल करते हुए फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में औरत अपने आख़िरी पति की बीवी बनेगी, इस लिए तू मेरे बाद (किसी से) निकाह न करना। (तज़किरतुल क़रतबी 2/482)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपनी बीवी से फ़रमाया था कि अगर तुम्हें यह बात पसन्द आए कि तुम जन्नत में मेरी बीवी बनो और अल्लाह हम दोनों को जन्नत में मिला दे तो तुम मेरे (मरने के) बाद और निकाह न करना क्योंकि (जन्नत में) औरत अपने दुनिया के आख़िरी शौहर की बीवी बनेगी। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 482)

कई शौहरों वाली औरत जन्नत में किसकी बीवी बनेगी?

वह औरत जिसने एक के बाद एक दुनिया में दो मर्दों या तीन मर्दों या इससे ज़्यादा से निकाह किये और उसके शौहर मरते रहे, किसी ने तलाक़ न दी, तो ऐसी औरत जन्नत में किसकी बीवी बनेगी। इसके बारे में हदीसें इस तरह हैं:

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः औरत आख़िरत में दुनिया के अपने आख़िरी पति की बीवी बनेगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2063)

फ़ायदाः यह रिवायत 'तारीख़े दमिश्क़ इब्ने असाकिर' में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गयी है। और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इसको इसी तरह से हुज़ूर सल्ल० से नक़्ल किया है, मगर इसकी सनद में एक रावी (रिवायत बयान करने वाला) ज़्यादा मोतबर नहीं है। (तारीख़े बग़दाद जिल्द 9 पेज 288)

फ़ायदाः इन हदीसों से यही मालूम होता है कि मज़कूरा ऐसी औरत का आख़िरी पति ही जन्नत में उसका पति होगा। लेकिन निम्नलिखित हदीस से मालूम होता है कि ऐसी औरत को अधिकार दिया जाएगा कि वह उन शौहरों में से जिसको चाहे अपना शौहर बना ले। चुनाँचे हदीस में है किः

हदीसः हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्ला! वह औरत जिसके दुनिया में दो शौहर होते हैं। यह औरत भी मर जाती है और वे भी मर जाते हैं। फिर ये सब जन्नत में दाख़िल हों तो औरत किस शौहर की बीवी बनेगी? (पहले की या दूसरे की)। आपने इरशाद फ़रमायाः

हदीसः जो दुनिया में उसके पास उन दोनों में से ज़्यादा अच्छे बर्ताव से उससे पेश आता था। अच्छा अख़्लाक़ दुनिया और आख़िरत की दोनों ख़ूबियाँ ले गया। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 482)

फ़ायदाः वह औरत जिसने दुनिया में कई मर्दों से निकाह किया और सबने उसको तलाक़ दी तो औरत को या तो इख़्तियार होगा, वह दुनिया के जिस नेक मर्द को जन्नत में शौहर चुनेगी उसके साथ उसका निकाह कर दिया जाएगा, या ख़ुद अल्लाह तआला ही उसका किसी जन्नती से ब्याह कर देंगे, या कोई जन्नती ख़ुद ऐसी औरत को अल्लाह तआला से आने निकाह में लाने की दरख़्वास्त करेगा। इन तीनों सूरतों में पहली सूरत ज़्यादा सही मालूम होती है।

अगर किसी औरत ने दुनिया में एक के बाद एक कई मर्दों से निकाह किये और सब उसे तलाक़ दी मगर आख़िरी ने उसको तलाक़ न दी, या आख़िरी शौहर की ज़िन्दगी में यह औरत मर गयी तो ज़्यादा

अन्दाज़ा यही है कि वह औरत जन्नत में इस आख़िरी शौहर की बीवी बनेगी।

इस सब सूरतों में अगर शौहरों ने उससे बदसुलूकी की और यह उन पर नाराज़ रही यहाँ तक कि जन्नत में उनके निकाह में रहने को न माना तो इन्शा-अल्लाह उसको जन्नत में कोई उससे भी बेहतर बदला अता किया जाएगा, या उसको उनमें से किसी एक के साथ जिसके साथ रहने पर वह राज़ी हो जाएगी, रज़ामन्द किया जाएगा।

दुनिया में जन्नती मर्दों और औरतों की सिफ़ात

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं तुम्हें जन्नत में जाने वाले मर्द हज़रात के बतलाऊँ। नबी भी जन्नत में जाएँगे, सिद्दीक़ भी जन्नत में जाएँगे, शहीद भी जन्नत में जाएँगे और वह

शख़्स भी जन्नत में जाएगा जो अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए शहर के किसी कोने में (सफ़र करके) जाए। और जन्नत में जाने वाली तुम्हारी औरते ये हैंः जो शौहर से ख़ूब मुहब्बत करने वाली हो, बच्चे ज़्यादा जनने वाली हो। जब शौहर उस पर नाराज़ हो या वह ख़ुद नाराज़ हो तो (शौहर के पास) जाकर अपना हाथ अपने शौहर के हाथ में दे दे और फिर कहेः मैं उस वक़्त तक आराम नहीं कर सकूँगी जब तक तू मुझसे राज़ी न हो जाए। (हादिल अरवाह)

फ़ायदाः 'सिद्दीक़' विलायत के सबसे ऊँचे दर्जे पर विराजमान होता है। नबी के मुकम्मल नक़्शे-क़दम पर चलता है। और शहीद वह है जो इस्लाम की सच्चाई और अल्लाह तआला की तौहीद को सच्ची दलीलों के साथ मुशाहदा करते हुए शरीअत और तौहीद की सच्चाई की गवाही दे, या जो इस्लाम के फ़ैलाने और मज़हब इस्लाम का झण्डा बुलन्द करने के लिए अपनी जान की कुरबानी पेश करे। और भी शहादत की बहुत-सी किस्में हैं जैसे किसी हादसे में मर जाना, यह दूसरे दर्जे की शहादत हैं

बहरहाल अल्लाह तआला की रहमत अपनी मख़्लूक़ के लिए बहुत बड़ी है। वह अपने फ़ज़्ल से हमे जन्नत में बेहतरीन मुक़ाम (दर्जे) अता फ़रमाए। (आमीन)

जन्नत के पेड़, बाग़ात और साए

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और जो दाहिने वाले हैं वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं। वे उन बाग़ो में होंगे जहाँ बिना काँटों की बेरियाँ होंगी और तह-बतह होंगे, और लम्बा-लम्बा साया होगा और चलता हुआ पानी होगा, और ख़ूब मेवे होंगे जो न ख़त्म होंगे और न उनकी रोक-टोक होगी।

(सूरः वाक़िआ आयत 27 से 33)

कुछ और आयतें

तर्जुमाः और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से (हर वक़्त) डरता रहता है उसके लिए (जन्नत में) दो बाग़ होंगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। (और वे) दोनों बाग़ बहुत शाख़ों वाले होंगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे कि बहते चले जाएँगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। उन दोनो बाग़ों में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। वे लोग तकिया लगाए ऐसे फ़र्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे और उन बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे।

उनमें नीची निगाह वालियाँ (यानी हूरे) होंगी कि उन (जन्नती) लोगों से पहले उन पर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। गोया कि वे याक़ूत और

मर्जान हैं। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। भला पूरी फ़रमाँबरदारी का बदला सिवाये इनायत के और भी कुछ हो सकता है? सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। और उन दोनों बाग़ों से कम दर्जे में दो बाग़ और हैं। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। वे दोनों बाग़ गहरे हरे-भरे होंगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे।

उन दोनों में दो चश्मे होंगे कि जोश मारते होंगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। उन दोनों बाग़ों में मेवे और ख़जूरे और अनार होंगे सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। अच्छी आदतों वाली, ख़ूबसूरत औरते होंगी (यानी हूरें)। सो ऐ जिन्नात व इनसा! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे।

वे औरतें गोरी रंगत की होंगी (और बाग़ों में) ख़ेमों में सुरक्षित होंगी। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। (और) उन (जन्नती) लोगों से पहले उन (हूरों) पर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। वे लोग सब्ज़ फूल-बूटों से सजे हुए और अजीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्शों) पर तकिये लगाए बैठे होंगे। सो ऐ जिन्नात व इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। बड़ा बरकत वाला नाम है आपके रब का जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है। (सूरः रहमान आयत 46 से 78)

तमाम जन्नत पर साया करने वाला पेड़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जन्नत में एक पेड़ ऐसा है कि साये में सौ साल तक सवार चलता रहेगा, अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लोः

तर्जुमाः और लम्बा-लम्बा साया होगा। (सूरः वाक़िआ आयत 30)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात हज़रत कअब रहमतुल्लाहि अलैहि को पहुँची तो फ़रमाया कि उन्होंने सच कहा। उस ज़ात की क़सम! जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान पर तौरात को नाज़िल किया और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की ज़बान पर क़ुरआन मजीद नाज़िल किया। अगर कोई आदमी किसी नौज़वान ऊँटनी या नौजवान ऊँट पर सवार होकर उस पेड़ की जड़ के चारो तरफ़ घूमे तो उसका चक्कर पूरा करने से पहले बूढ़ा होकर गिर पड़े। अल्लाह तआला ने उस पेड़ को खुद अपने हाथ से लगाया और उसमें अपनी तरफ़ से रूह फूँकी। उस पेड़ की शाखें (टहनिया) जन्नत की दीवार से बाहर पड़ती है जन्नत की हर नहर पेड़ की जड़ से निकलती है।

(हादिल अरवाह पेज 222)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु उस पेड़ की तफ़सील में (व ज़िल्लिम ममदूद) की तफ़सील में फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक पेड़ है जो इतनी मोटी जड़ पर क़ायम है कि तेज़ रफ़्तार सवार उसकी हर तरफ़ से सौ साल तक चल सकता है। जन्नत वाले और बालाख़ानों वाले और दूसरे जन्नती उस पेड़ के पास जमा होंगे और उसके साये में आपस में बातें करेंगे फ़रमाया कि उन जन्नतियों में से बाज़ को कुछ ख़्वाहिश होगी और वे दुनिया के खेलकूदको याद करेंगे तो अल्लाह तआला जन्नत से एक हवा भेजेंगे। वह पेड़ जो कुछ दुनिया में खेलकूद और तफ़रीह की क़िस्में थीं सब के साथ हरकत में आएगा।

(हादिल अरवाह पेज 222)

हर पेड़ का तना सोने का है

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियलल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में कोई पेड़ ऐसा नहीं जिसका तना सोने का न हो। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2525)

जन्नत की खजूर

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत की

खजूर के तने सब्ज़ ज़मर्रुद के हैं और खजूर के तने की टहनियाँ सुर्ख़ सोने की होंगी। उसकी शाख़ें जन्नतियों के बेहतरीन लिबास होंगे। उन्हीं में से उनके छोटे पकड़े और पोशाकें तैयार होंगी। उसके फल मटकों और डोल की तरह (बड़े-बड़े) होंगे। दूध से ज़्यादा सफ़ेद शहद से ज़्यादा मीठे झाग से ज़्यादा नरम, उनमें गुठली नहीं होगी। (तरग़ीब तरहीब जिल्द 4 पेज 523)

पेड़ों की कुछ और तफ़सील

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है, उसकी मिट्टी कस्तूरी की है, उसके पेड़ों की जड़ें सोने और चाँदी की हैं, जिनकी टहनियाँ लुअ्लुअ् ज़बर्जद और याक़ूत (मोतियों और क़ीमती पत्थरों) की हैं। पत्ते और फल उनके नीचे लगे होंगे। जो शख़्स खड़े होकर खाएगा तो उसको भी कोई परेशानी न होगी और जो शख़्स बैठकर खाएगा उसको भी कोई परेशानी न होगी, और जो शख़्स लेटकर खाएगा उसको भी परेशानी न होगी।

(इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 95)

जन्नत में पेड़ों की लकड़ियाँ नहीं होंगी

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारा क़ाफ़िला सिफ़ाह स्थान पर उतरा तो वहाँ एक आदमी पेड़ के नीचे सो रहा था। सूरज की धूप उस तक पहूँचने ही वाली थी। मैंने ग़ुलाम से कहा तुम उसके पास यह चमड़े का फ़र्श ले जाओ और उस पर साया कर दो। चुनाँचे वह चला गया और उस पर साया कर दिया। जब वह आदमी जागा तो वह हज़रत सलमान (फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु) थे। चुनाँचे मैं उनको सलाम करने के लिए आया तो उन्होंने फ़रमाया ऐ जरीर! अल्लाह के लिए इन्किसारी अपनाओ क्योंकि जो आदमी अल्लाह के लिए तवाज़ो(इन्किसारी) अपनाता है अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन बड़ी इज़्ज़त बख़्शेंगे। ऐ जरीर! क्या आपको मालूम है कि क़यामत के दिन के अंधेरे क्या चीज़ हैं? मैंने अर्ज़ किया मालूम नहीं। फ़रमाया लोगों का आपस में ज़ुल्म करना।

फिर उन्होंने एक छोटी-सी लकड़ी उठायी (इतनी छोटी) कि मैं

उसको उनकी दो उंगलियों के बीच देख नहीं पा रहा था। फ़रमाया ऐ जरीर! अगर तुम इतनी-सी लकड़ी भी जन्नत में तलब करो तो तुम्हें यह भी न मिले। मैंने कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! यह खजूर और पेड़ कहाँ जाएँगे? फ़रमाया कि जड़ें लुअ्लुअ् और सोने की होंगी, जिनके ऊपर के हिस्से में फल लगे होंगे। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 150)

जन्नत मोतदिल होगी

हज़रत अल्क़मा फ़रमाते हैं कि जन्नत मोतदिल (दरमियानी दर्जे की) होगी न उसमें गर्मी होगी न सर्दी होगी। (इब्ने अबी शैबा जिल्द 13 पेज 100)

तूबा पेड़

हदीसः हज़रत उत्बा बिन अब्द सलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि एक देहाती शख़्स नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप से हौज़ के बारे में और जन्नत के बारे में सवाल किया, फिर उस देहाती ने सवाल किया कि क्या जन्नत में मेवे भी होंगे? तो आपने इरशाद फ़रमाया, होंगे! और जन्नत में एक पेड़ होगा जिसको "तूबा" का नाम दिया जाता है। फिर आपने कुछ वज़ाहत (तफ़सील बयान) फ़रमाई मगर मुझे मालूम नहीं कि वह वज़ाह क्या थी। तो उस देहाती ने कहा हमारी ज़मीन का कौनसा पेड़ उसकी तरह का है? आपने इरशाद फ़रमाया, तेरी ज़मीन के किसी पेड़ से वह कुछ भी मेल नहीं खाता। नबी अकरत सल्ल0 ने फ़रमाया, तुम (मुल्क) शाम में गये हो? उसने कहा, नहीं तो। आपने फ़रमाया, यह शाम के एक पेड़ की तरह है जिसको नारियल का पेड़ कहते हैं। यह एक ही तने पर उठता है उसका ऊपर का हिस्सा फैल जाता उस (देहाती ने अर्ज़ किया, उसकी जड़ कितनी मोटी है? फ़रमाया, अगर तुम्हारे रिश्तेदारों का पाँच साला (नौजवान) ऊँट (इसके चारो तरफ़) चलता रहे तो उसकी जड़ के चारों तरफ़ न घूम सके बल्कि (चल-चलक) बूढ़ा हो जाने के वजह से उसकी हंसली की हड्डी भी टूट जाए। (निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 421)

तूबा पेड़ वाले जन्नती कौनसे होंगे

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम

सल्ल0 से रिवायत है कि एक आदमी ने आप सल्ल0 से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! उस आदमी के लिए (तूबा) खुशखबरी हो जिसने अपकी ज़ियारत की हो और आप पर ईमान लाया हो।आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया: उस शख़्स के लिए तूबा हो जिसने मेरी ज़ियारत (दर्शन) की और मुझ पर ईमान लाया, फिर तूबा हो, फिर तूबा हो जो मुझ पर ईमान लाया फिर तूबा हो फिर तूबा हो जो मुझ पर ईमान लाया मगर (मेरे मर जाने की वजह से) मुझे न देखा हो।

उस आदमी ने अर्ज़ किया यह "तूबा" क्या है? आपने इरशाद फ़रमाया "जन्नत में एक पेड़ है जिसकी मसाफ़त (फ़ासला और दूरी) सौ साल की है, जन्नत वालों के कपड़े उसके शगूफ़ों (गुच्छों) से निकलेंगे।(मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 71)

तूबा पेड़ से क्या-क्या नेमतें ज़ाहिर होंगी

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में पेड़ है जिसको तूबा कहा जाता है। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएँगे:

तर्जुमा मेरे बन्दे के लिए वह जिस नेमत को चाहे फट जा, तो वह जन्नती के लिए घोड़े की लगाम,ज़ीन और ख़ूबसूरती के साथ ऐसे फटेगा जैसे वह (बन्दा) चाहता होगा। और ख़ूबसूरती के साथ जैसे वह जन्नती चाहेगा और कपड़ों को भी (अपने से निकालेगा)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1862)

जन्नत की हर मन्ज़िल में तूबा की लड़ी झाँकती होगी

हज़रत मुग़ीस बिन सम्मी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: तूबा जन्नत में एक पेड़ है। अगर कोई आदमी लम्बी टाँगों वाली ऊँटनी पर सवार हो, फिर उसके चारों तरफ़ घूमे तो वह उस जगह तक नहीं पहुँच सकेगा जहाँ से रवाना हुआ था, यहाँ तक कि बूढ़ा होकर मर जाएगा जन्नत में कोई मन्ज़िल ऐसी नहीं है जहाँ उस पेड़ की टहनियों में से कोई न कोई टहनी जन्नतियों पर न लटकती हो। जब जन्नती फल खाने का इरादा करेंगे तो यह उनके सामने लटक जाएगी। वे जितना चाहेंगे उससे खाएँगे। फ़रमाया कि (उनके पास) परिन्दा भी पेश होगा यह उससे

सूखा गोश्त या भुना हुआ गोश्त जैसा जी चाहेगा खाएँगे। फिर(जब ये खा चुकेंगे तो वह ज़िन्दा होकर) उड़ जाएगा। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 4 पेज 62)

तूबा के फल और पोशाकें

अल्लाह तआला के फ़रमान (तूबा) की तफ़सीर में हज़रत मुजाहिद (मशहूर ताबिई मुफ़स्सिर रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि (तूबा) जन्नत में एक पेड़ है उसपर औरतों की छातियों की तरह फल लगे होंगे। उन्हीं में जन्नतियों की पोशाकें मौजूद होंगी।

(सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम पेज 410)

तूबा पेड़ के साये में मिल बैठने के लिए फ़रिश्ते की दुआ

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, कितने भाई ऐसे हैं जो अपने दूसरे भाई को मिलना चाहते हैं मगर उनके सामने मसरूफ़ियत रुकावट है। क़रीब है कि अल्लाह तआला उन दोनों को ऐसे घर में जमा फ़रमाएगा जहाँ जुदाई का नाम व निशान भी न होगा। फिर हज़रत मालिक ने फ़रमाया और मैं भी अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करता हूँ ऐ मेरे भाईयो! कि वह मुझे तुम से उस घर में तूबा के (पेड़ के) साये में और इबादतगुज़ारों की आरामगाह में मिला दे जहाँ कोई जुदाई न होगी। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया 58)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आपने फ़रमाया हब्शी ज़बान में 'तूबा' जन्नत का नाम है।

(तफ़सीर इब्ने जरीर जिल्द 13 पेज 99)

एक पेड़ की लम्बाई की मात्रा

हदीसः हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक तने पर एक पेड़ क़ायम है। उसके तने की चौड़ाई बहत्तर साल के (सफ़र के) बराबर है। (तिबरानी जिल्द 7 पेज 320)

शजरतुल् ख़ुल्द

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक पेड़ है, बहुत तेज़ सवार उसके साये में सत्तर साल या सौ साल तक सफ़र कर सकता है। उसका नाम 'शजरतुल् ख़ुल्द' (हमेशा रहने वाली जन्नत का पेड़) है। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 455)

सिद्रह (बेरी के) पेड़ की लम्बाई

हज़रत अस्मा बिन्ते हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सलल0 से सुना कि आपने सिद्रतुल-मुन्तहा का ज़िक्र किया और फ़रमायाः

तर्जुमाः बेहतरीन सवार उसकी शाख़ों के साए तले सौ साल तक चलेगा या सौ साल तक साए में बैठेगा। उसका फ़र्श सोने का है (और) उसके फल मटकों की तरह हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1848)

सिद्रतुल् मुन्तहा पर रेशम का स्टॉक

सिद्रतुल् मुन्तहा की तफ़सीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह जन्नत के बीच में है। उस पर सुन्दुस और अस्तब्रक़ (के रेशम) का स्टॉक रहेगा।(दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 125)

सिद्रह (बेरी) का पेड़

हदीसः हज़रत सुलैम बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि सहाबा-ए-किराम फ़रमाया करते थे, अल्लाह तआला हमें देहातियों से उनके (नबी करीम सल्ल0 से) सवालात करने से बहुत फ़ायदा पहुँचाते थे। चुनाँचे एक दिन एक देहाती हाज़िर हुआ और बोला या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने जन्नत में एक मूज़ी (तकलीफ़ देने वाले) पेड़ का ज़िक्र किया है। मेरा ख़्याल नहीं है कि जन्नत में कोई ऐसा पेड़ हो जो जन्नती को तकलीफ़ पहुँचाए। आपने पूछा वह कौनसा पेड़ है? उसने अर्ज़ किया बेरी का। क्योंकि उसके काँटे होते हैं, तकलीफ़ देने वाले आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क्या अल्लाह तआला "फ़ी सिदूरिम् मख़्ज़ूद" नहीं फ़रमा रहे। अल्लाह तआला ने उसके काँटों को ख़त्म कर दिया है और हर काँटे की जगह फल लगा दिया है। (हादिल अरवाह पेज 220)

सिद्रतुल-मुन्तहा के फल, पत्ते और नहरें

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मुझे (मेराज की रात) सातवें आसमान में सिदरतुल-मुन्तहा की तरफ़ लेजाया गया तो उसके बेर हज्र के मटकों की तरह (बड़े और मोटे) थे। और उसके पत्ते हाथी के कानों की तरह थे। उसके तने से दो ज़ाहिरी नहरें निकलती हैं और दो बातिनी। मैंने पूछा ऐ जिब्राईल! यह (बातिनी और ज़ाहिरी नहरे)क्या हैं? फ़रमाया बातिनी तो जन्नत में है और ज़ाहिरी (नहरे दुनिया में) दरिया-ए-नील और दरिया-ए-फ़ुरात है।(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 450)

मुसीबत वालों के लिए 'शजरतुल-बलवा'

हदीसः हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक पेड़ है जिसका नाम "शजरतुल!-बलवा" है। क़यामत के दिन मुसीबत के मारों को पेश किया जाएगा तो उनके आमालनामे को (हिसाब-किताब के लिए) पेश नहीं किया जाएगा और उनके लिए आमाल की तराज़ू को स्थापित नहीं किया जाएगा। पस उन पर अज्र व इनाम की बारिश ही होती रहेगी। फिर आप सल्ल0 ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः मुसीबतों पर सब्र करने वालों को पूरा-पूरा इनाम व सम्मान मिलेगा बग़ैर हिसाब व किताब के।

(सूरः ज़ुमर आयत 10)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1881)

वे आमाल जिनसे जन्नत में पेड़ लगते हैं

सुब्हानल्लाहिल्-अज़ीम

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी (एक बार) 'सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम' कहता है तो उसके लिए जन्नतत में एक पेड़ लग जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3464)

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहुह अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स (एक बार) 'सुब्हालल्लाहि व बिहम्दिही' कहता है तो उसके लिए जन्नत में एक पेड़ लग जाता है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1868)

नीचे लिखे गये हर कलिमे के बदले में एक पेड़

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायतत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 एक बार उनके पास से गुज़रे जबकि ये पेड़ लगा रहे थे। आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं तुम्हें इससे बेहतर पेड़ लगाना न बतलाऊँ? मैंने अर्ज़ किया वह क्या है? आपने इरशाद फ़रमाया "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" में से हर एक (कलिमे) के बदले में तेरे लिए एक पेड़ लगाया जाएगा।

(इब्ने माजा शरीफ़ हदीस 3807)

जन्नत में पेड़ों का लगाना

हदीसः हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस रात मुझे मेराज करायी गयी मैंने हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की ज़ियारत की, आपने फ़रमाया ऐ मुहम्मद! आप मेरी तरफ़ से अपनी उम्मत को सलाम कहना और उनको सूचित करना कि जन्नत की ज़मीन बहुत पाकीज़ा है। उम्दा पानी वाली है और हमवार मैदान है, और उसमें पेड़ लगाना 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर' कहना है। इमाम तिबरानी ने "ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्लाह बिल्लाहि" का ज़िक्र भी किया है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3131)

एक हदीस

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो शख़्स अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करे या उसकी तारीफ़ व प्रशंसा बयान करे या उसकी तकबीर (बड़ाई) बयान करे या उसकी तहलील (कलिमा तय्यिबा बयान) करे, उनकी जगह उस शख़्स के लिए जन्नत में एक पेड़ लगा दिया जाता है जिसका तना सोने का होगा और उसका ऊपर का हिस्सा जौहर और याक़ूत के ताज का होगा। और उसके फल कुंवारियों की छातियों की तरह होंगी। झाग से ज़्यादा नरम और शहद से ज़्यादा मीठे। जब भी उससे कोई फल तोड़ा जाएगा दूसरा लग जाएगा। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई

"ला मक़्तुअतिंव् व ला मम्नूअतिन्" (और कसरत से मेवे होंगे) जो न ख़त्म होंगे (जैसे दुनिया के मेवे फ़स्ल ख़त्म होने से ख़त्म हो जाते हैं) और न उनकी रोक-टोक होगी (जैसे दुनिया में बाग़ वाले उसकी रोकथाम करते हैं)। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1872)

कुरआन पाक ख़त्म करने पर जन्नत के पेड़ का तोहफ़ा

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कुरआन के ख़त्म होने के वक़्त दुआ क़बूल होती है और (इनाम में) जन्नत का एक शानदार पेड़ अता किया जाता है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1877)

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने कुरआन को देखकर या याद से तिलावत फ़रमाएँगे कि अगर कोई कौआ उसकी टहनियों को छोड़कर उड़े तो उसके पत्ते का फ़ासला तय करने से पहले उस पर बुढ़ापा आ जाए।

(कामिल इब्ने अदी जिल्द 3 पेज 1295)

फ़ायदाः यह फ़ज़ीलत हाफ़िज़ा और नाज़िरह पढ़ने वाले दोनों के

लिए है। जो भी कुरआन पाक को ख़त्म करेगा उसको इनाम में इतना बड़ा पेड़ अता किया जाएगा कि हदीस पाक में कौए की मिसाल इसलिए दी गयी है कि कौआ दूसरे परिन्दों के मुक़ाबले में बड़ी उम्र रखता है। कहा जाता है कि एक कौए की उम्र औसतन ढाई सौ साल होती है। यहाँ हदीस में पेड़ की लम्बाई निश्चित करना मक़सद नहीं है बल्कि उसकी लम्बाई के ज़्यादा होने की तरफ़ इशारा करना मक़सद है।

जन्नत में पेड़ लगाने का वकील मुक़र्रर है

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सलल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत का जन्नत में एक वकील है। अगर वह कुरआन पाक की तिलावत करता (या करती) है तो फ़रिश्ता उसके लिए (जन्नत में महल) तामीर करता है। और अगर तस्बीह पढ़ता (या पढ़ती) है तो उसके लिए (जन्नत में) पेड़ लगाता है। और अगर वह (शख़्स तिलावत या तस्बीह करने से) रुक जाता है तो वह (फ़रिश्ता भी महलों के बनाने या पेड़ लगाने से) रुक जाता है।

मोअजम सग़ीर जिल्द 2 पेज 112

क़यामत में फ़ायदा देने वाला पेड़

हदीसः: हज़रत क़ैस बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने नफ़्ली रोज़ा रखा उसके लिए जन्नत में एक पेड़ लगा दिया जाता है उसका फल अनार से छोटा और सेब से बड़ा होगा। उसका स्वाद उस शहद वाला होगा जिससे मोम को साफ़ न किया गया हो और उसकी मिठास शहद वाली होगी। उससे क़यामत के दिन अल्लाह तआला रोज़ा रखने वाले को खिलाएँगे।

(तिबरानी कबीर जिल्द 18 पेज 366)

क़र्ज़-ख़्वाह के लिए जन्नत के पेड़

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी अपने क़र्ज़मन्द के पास अपने हक़ के लिए खाना होता है तो उसके लिए ज़मीन के जानवर और पानी की मछलियाँ रहमत की दुआ करती हैं और उसके लिए हर क़दम के बदले में जन्नत में एक पेड़ उगता है (उसके) गुनाह को माफ़ किया जाता है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1879)

जन्नत के बाग़ों के फल खाने का वज़ीफ़ा

हदीसः हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो आदमी यह पसन्द करता है कि वह जन्नत के बाग़ों से फ़ल खाए तो उसको चाहिये कि ख़ूब अल्लाह तआला का ज़िक्र करे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1880)

फूलदार पोधे और मेहंदी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेहंदी जन्नतियों के फूलदार पौधों की सरदार है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2111)

हदीसः हज़रत अबू उस्मान नहदी फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब तुम में से किसी को कोई ख़ुशबू दार फूल दिया जाए तो उसको वापस न करे क्योंकि यह (यानी ख़ुशबू) जन्नत से निकली है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2791)

जन्नत के पहाड़

उहुद पहाड़, तूर पहाड़ लब्नाना पहाड़ और जूदी पहाड़

हदीसः हज़रत उमर इब्ने औफ़ फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशद फ़रमायाः

तर्जुमाः (दुनिया के) चार पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से हैं, और

दुनिया की चार नहरें जन्नत की नहरों में से हैं, और (दुनिया की) चार जंगें, जन्नत की जंगों में से हैं। अर्ज़ किया गया कौनसे पहाड़ (जन्नत में से) हैं? इरशाद फ़रमायाः

1. उहूद पहाड़, यह हमसे मुहब्बत करता है और हम इससे मुहब्बत करते हैं।
2. तूर पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से एक पहाड़ हैं
3. लब्नान पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से एक पहाड़ है।
4. जूदी पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से एक पहाड़ है।

और (जन्नत की) नहरें 'दरिया-ए-नील' 'दरिया-ए-फ़ुरात' 'दरिया -ए-सीहून 'दरिया-ए-जीहून'। और जंगों में 'जंगे बद्र ' 'जंगे उहूद' 'जंगे ख़न्दक़' और 'जंगे ख़ेबर हैं। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज446)

ख़सीब पहाड़ और जन्नत की एक वादी

हदीसः हज़रत उमर बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने पहली जंग जो मुक़ाम "इबवा" में लड़ी थी उसमें हम आपके साथ थे। जब हम मुक़ाम 'रौहा' पर पहुँचे तो नबी पाक अलैहिस्सलातु स्सलाम ने "अर्क़े ज़ाबिय्या" के मुक़ाम पर पड़ाव किया और सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ाई फिर फ़रमाया आप हज़रात को मालूम है कि इस पहाड़ का नाम क्या है? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया यह "ख़सीब पहाड़" है जो जन्नत के पहाड़ों में से एक पहाड़ है। ऐ अल्लाह! आप इसमें बरकत फ़रमा दीजिए और इसके रहने वालों में भी बरकत फ़रमा दीजिए।

फिर आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया, इस मुक़ाम रौहा के कुछ दरमियानी हिस्से है जो जन्नत की वादियों में से एक वादी हैं। नमाज़ की इसी जगह पर मुझसे पहले सत्तर अम्बिया किराम ने नमाज़ अदा की है। इसके पास से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब गुज़रे थे तो उन पर खुशबूदार दो चोगे थे। आप ऊँटनी पर सवार थे और सत्तर हज़ार बनी इस्राईल के साथ सफ़र करके बैतुल्लाह शरीफ़ तक पहुँचे थे।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 446)

बादल और बारिश

अल्लाह तआला के दीदार में ख़ुशबू की बारिश

जन्नत के बाज़ार में कई हदीसें ऐसी गुज़री हैं जिनमें बयान किया गया है कि जिस दिन अल्लाह तआला की ज़ियारत हुआ करेगी तो उन पर एक बादल साया करेगा और उन पर ऐसी ख़ुशबू छोड़ेगा कि वैसी ख़ुशबू उन्होंने कभी न सूँघी और न देखी होगी।(हदीस का मफ़हूम)

जन्नती जो तमन्ना करेंगे उसी की बारिश होगी

हज़रत कसीर बिन मुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, जन्नत की नेमत "मज़ीद" में से एक यह है कि जन्नत वालों के ऊपर से एक बादल गुज़रेगा और कहेगा तुम क्या चाहते हो? मैं आप हज़रात पर किस नेमत के साथ बरसूँ? यानी वे जिस नेमत को चाहेंगे वही उन पर नाज़िल होगी। हज़रत कसीर बिन मुर्रा (हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआला ने हमें यह मन्ज़र दिखा दिया तो मैं कहूँगा कि हम पर बनी-संवरी लड़कियों की बारिश हो।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 498)

फ़ायदाः अल्लाह इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने दुनिया में बादल को रहमत का सबब और ज़िन्दगी का ज़रिया बनाया है और क़ब्रों पर भी बादल को ज़िन्दगी का सबब बनाया है, क्योंकि चालीस दिन तक अर्श के नीचे से लगातार बारिश होगी और ये मुर्दे खेती की तरह से ज़मीन के नीचे से उगेंगे और क़यामत के दिन जब उनको हश्र के मैदान में पेश किया जाएगा तो (ख़ास लोगों पर) हल्की-हल्की बूँदा-बाँदी करता होगा जैसा कि दुनिया में होता है। इसी तरह से जन्नत में जन्नती हज़रात के लिए बादल भेजे जाएँगे जो उन पर उसी चीज़ को बरसाएँगे। जिसको वे चाहेंगे ख़ुशबू वग़ैरह में से।

इसी तरह से दोज़ख़ियों के लिए भी बादल भेजे जाएँगे जो उनके अज़ाब पर और ज़्यादा (बेड़ियों का) अज़ाब गिराएँगे (और उनको उन

बेड़ियों में जकड़ दिया जाएगा) जिस तरह से कौमे हूद और कौमे शुऐब पर बादल को भेजा गया था और उसने उन पर अज़ाब की बारिश करके उनको तबाह व बरबाद किया था। अल्लाह की ज़ात पाक है चाहे तो बादल को रहमत के लिए पैदा करे और चाहे तो अज़ाब के लिए पैदा करे। (हादिल अरवाह पेज 347)

जन्नत की नहरें

पानी, दूध, शराब और शहद की नहरें

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जन्नतें हैं कि चलती होंगी उनके नीचे से नहरें।

(सूरः ब-क़रह् आयत 25)

तर्जुमाः उस (जन्नत) में बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिसमें ज़रा-सा भी बदलाव नहीं होगा (न गंध में न रंग में न ज़ायके में) और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायका ज़रा भी बदला हुआ न होगा। और बहुत-सी नहरें (पाक) शराब की हैं कि पीने वालों को बहुत मज़ेदार मालूम होंगी। और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल (मैल-कुचैल से पाक) साफ़ होगा और उनके लिए वहाँ हर तरह के फल होंगे और मग़फ़िरत होगी उनके रब की तरफ़ से। (सूरः मुहम्मद आयत 15)

दुनिया और आख़िरत की शराब में फ़र्क़

फ़ायदाः अल्लामा इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते है कि (इस आयत में) अल्लाह तआला ने ये चार क़िस्में बयान की हैं और उनमें से हर एक से हर कमी और नुक़सान दूर फ़रमाई जो उसको दुनिया में लगी होती है। पस पानी की कमी और नुक़सान यह है कि ज़्यादा देर तक ठहरे रहने से ख़राब और बदमज़ा और खराब रंग हो जाता है। और दूध की कमी और नुक़सान यह है कि उसका ज़ायक़ा बदलकर कड़वा और खट्टा हो जाता है और लोथड़े बन जाते है। और शराब की कमी और नुक़सान यह है कि पीने के लज़्ज़त में ज़ायके की चाश्नी बिगड़ी होती है। और शहद की कमी और नुक़सान उसका साफ़ न होना है।

(ज़िक्र हुई आयत में) यह अल्लाह तआला की निशानियों में से है कि उसने इसी तरह की नहरें जारी फ़रमाईं कि वैसे दुनिया में जारी नहीं कीं। उनको बग़ैर गढ़ों के जारी कर दिया और उनको इन कमियों से सुरक्षित कर दिया जो उनसे पूरा फ़ायदा उठाने में बाधित बनती थी। जिस तरह से जन्नत की शराब से उन तमाम कमियों और ख़ामियों की नफ़ी फ़रमाई जो दुनिया की शराब में थीं जैसे कि यह दर्दे सर, मदहोशी या बदमस्ती बेलज़्ज़ती को पैदा करती है।

पस यह पाँच कमियाँ और नुक़सान हैं जो दुनिया की शराब में मौजूद होती हैं। उसका ज़ायक़ा भी बदमज़ा होता है और शैतान के कामों से एक गंदा काम है। लोगों के बीच दुश्मनी और बुग़ज़ पैदा करता है। अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से रुकावट बनता है। ज़िना की दावत देता है। बहुत-सी बार बेटी, बहन और मेहरमात से गुनाह पर उतारू करता है। ग़ैरत का सफ़ाया कर देता है। ज़िल्लत, नदामत और शर्मिन्दगी का सबब है। इसका पीने वाला सब से घटिया इन्सान बन जाता है। इस वजह से ये लोग दीवाने हो जाते हैं। उनसे उनका नेक नाम और नेकनामी को छीन लेती है और बदनामी और बुरी आदतों का लिबास पहना देती है। और जान को क़त्ल करने को और राज़ खोलने को जिससे दुख और जान की तबाही का ख़तरा हो, आसान कर देती है। और माल जिसको अल्लाह ने बन्दे के लिए और उसके बाल-बच्चों के लिए ज़िन्दगी गुज़ारने का वसीला बनाया था, को फुज़ूल-ख़र्च बनाकर शैतान का भाई बनाती है। खुफ़िया बातों पर रुस्वा करती है, भेदों को ज़ाहिर करती है, शर्मगाहों के रास्ते दिखाती है, गन्दे काम और गुनाहों के करने को हल्का-फुलका कर देती है। दिल से क़रीबी रिश्तों के सम्मान व एहतिराम को ख़त्म कर देती है। कितने अमीरों को फ़क़ीर बना दिया है और कितने इज़्ज़त वालों को रुस्वा किया है और कितने शरीफ़ों को कमीना बनाया है और कितनी नेमतें छीनी हैं और कितने बदले लिये हैं और कितनी मुहब्बतों पर पानी फेरा है, कितनी दुश्मनी पैदा की है, कितने आदमियों के और उसके प्यारों के बीच जुदाई पैदा की और दीवाना कर गयी। अक़्ल ले गई। कितनी हसरतों को जन्म दिया और

कितने आँसू बहाए और पीने और ख़्वाहिश की तकमील करने में जल्दी करायी (या जल्दी से मौत के घाट उतारा) और कितनी रुस्वाइयों में मुब्तला किया। और शराबी पर मुसीबतों के पहाड़ ढाए और बेवकूफ़ी के काम कराए।

बहरहाल यह बहुत-से गुनाहों को अपने अन्दर लिए हुए और बहुत-सी बुराइयों का दरवाज़ा है और नेमतों के छिन जाने का सबब और अज़ाबों को मुस्तहिक़ बनाने वाली है। और अगर इसकी बुराइयों में सिवाए इसके और कुछ न होता कि दुनिया की शराब और जन्नत की शराब किसी बन्दे के पेट में जमा नहीं होगी जैसा कि हुज़ूर सल्ल0 से साबित है कि आपने इरशाद फ़रमया:

तर्जुमा: जिसने दुनिया में शराब पी, वह उसको आख़िरत में नहीं पी सकेगा। (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 22)

नहरों के फूटने की जगह

हदीस: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: जन्नत की नहरें मुश्क (कस्तूरी) के पहाड़ से फूटती हैं (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1911)

नहरों के निकलने की हालत

हदीस: हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: जन्नत की नहरें जन्नते अद्न से निकलकर गढ़े में पड़ती हैं। फिर बाद में नहरों की शक्ल इख़्तियार करती हैं (बुदूरे साफ़िरह 1912)

नहरें बग़ैर गढ़ों के चलती होंगी

हदीस: हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: शायद तुम समझते हो कि जन्नत की नहरें ज़मीनी गढ़ों में चलती होंगी। नहीं अल्लाह की क़सम! वे तो ज़मीन की पीठ बहती हैं।

उनके किनारे लुअ्लुअ् के खेमों के हैं, उनकी मिट्टी कस्तूरी की है जो अज़्फ़र की है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अज़्फ़र क्या है आपने फ़रमाया ख़ालिस (कस्तूरी) जिसमें किसी और चीज़ की मिलावट न हो।(हादिल अरवाह पेज 242)

चारों नहरों के चार समुन्द्र

हदीसः हज़रत मुआविया बिन हैदह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 को इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः जन्नत में ऐक समुन्द्र पानी का है, एक समुन्द्र शहद का है, एक समुन्द्र दूध का है और एक समुन्द्र शराब का है। फिर उन्हीं से बाद में नहरें फूटती हैं। (हादिल अरवाह पेज 241)

नहरों के फूटने का स्थान

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में सौ दर्जे हैं जिनको अल्लाह तआला ने अल्लाह के रास्तों में जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाया है। हर दो दर्जों के बीच आसमान व ज़मीन के फ़ासले जितना फ़ासला है। पस जब तुम अल्लाह तआला से सवाल करो तो उससे जन्नतुल् फ़िरदौस माँगा करो क्योंकि यह जन्नत के बीच में (बुलन्द हिस्सा) है, और सबसे आला दर्जे की जन्नत है। उससे ऊपर अल्लाह तआला का अर्श है। उसी से जन्नत की नहरें फूटती हैं। (हादिल अरवाह पेज 239)

दुनिया की चार नहरें जन्नत से निकलती हैं

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे सामने सिद्रतुल्-मन्तहा को (सातवें आसमान पर) पेश किया गया तो (मैंने देखा कि उससे) चार नहरें निकल रही थीं,दो ज़ाहिर में और दो बातिन में। ज़ाहिर की दो तो (नहर) नील और (नहर) फुरात हैं, और दो बातिन की जन्नत की दो नहरें हैं। (बुख़ारी हदीस 5610)

हर महल में चार नहरें

हदीसः इब्ने अब्दुल हकम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत के महलों में से हर महल में चार नहर चलती होंगी, एक नहर पानी की चलती होगी और उनसे उस वक़्त तक नहीं पिया जाएगा जब तक कि उनमें उन चश्मों को न मिलाया जाएगा जिनका अल्लाह तआला ने (कुरआन करीम में) ज़िक्र फ़रमाया है। (यानी) तस्नीम और ज़न्जबील और तल्सबील और काफ़ूर और ये (चारों) वे चश्में हैं जिनको ख़ालिस तौर पर (बग़ैर मिलावट के) सिर्फ़ अल्लाह तआला के क़रीबी ही नोश करेंगे। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 70)

कौसर नहर

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः हमने आपको कौसर अता फ़रमाई। (सूरः कौसर आयत 1)

दोनों किनारों पर लुअ्लुअ् के कुब्बे हैं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैं एक बार जन्नत की सैर कर रहा था कि मैं एक नहर पर पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर ख़ोलदार लुअलुअ् के कुब्बे थे। मैंने पूछा ऐ जिब्राईल! यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया यह कौसर (नहर) है, जो आपके रब ने आपको अता फ़रमाई है। हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि फिर एक फ़रिश्ते ने अपना हाथ (नहर पर) मारा तो उस की मिट्टी ख़ालिस कस्तूरी की (नज़र आ रही) थी। (बुख़ारी हदीस 6581)

मोतियों और जवाहिरात पर चलती है

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कौसर जन्नत में एक नहर है उसके दोनों किनारे सोने के हैं। उसके चलने का रास्ता जवाहिरात और मोती है। उसकी मिट्टी कस्तूरी

से ज़्यादा पाकीज़ा है। उसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 3361)

सत्तर हज़ार फ़र्सख़ (पाँच लाख साठ हज़ार किलो मीटर) गहरी है

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कौसर जन्नत में ऐक नहर है जिसकी गहराई सत्तर हज़ार फ़र्सख़ (पाँच लाख साठ हज़ार किलो मीटर) है। उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है, शहद से ज़्यादा मीठा है। उसके दोनों किनारे लुअ्लुअ् ज़बर्जद और याक़ूत (मोतियों) के हैं। सब अम्बिया-ए-किराम से पहले अल्लाह तआला उसको अपने एक नबी (यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल0)के लिए ख़ास कर दिया है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1916)

कौसर की आवाज़

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि कौसर जन्नत एक नहर है। जो शख़्स उसके चलने की आवाज़ सुनने को पसन्द करे तो वह अपनी उंगलियों को अपने कानों में देकर (उसकी आवाज़ का अन्दाजा) कर ले। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया)

कौसर के बरतनों की कसरत

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः क्या तुम्हें मालूम है कि कौसर क्या चीज़ है? हम (सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। (आपने इरशाद फ़रमाया) उसमें इन्तिहाई दर्जे की ख़ैर है। क़यामत के दिन मेरी उम्मत उसके पास आएगी (और उसके हौज़े कौसर से पानी पियेगी) उसके बरतन सितारों की तायदाद के बराबर हैं। (इब्ने अबी शैबा जिल्द 11 पेज 437)

हौज़े कौसर की तफ़सील

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते

हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरा हौज़ 'सन्आ' (शहर) से 'उर्दुन' तक लम्बा है। उसका पानी दूध से बहुत ज़्यादा सफ़ेद है और शहद से बहुत ज़्यादा मीठा है। और झाग से बहुत ज़्यादा नरम है। उसके किनारे जौहर और याक़ूत के टुकड़ों के हैं और उसके कंकर लुअ्लुअ् के हैं। उसकी ख़ाक ख़ालिस कस्तूरी की है। उसके सितारों की तायदाद में प्याले हैं। जो शख़्स उससे एक बार पियेगा फिर कभी वह प्यासा न होगा। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 24)

नहर बीदख़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक नहर है जिसका नाम बीदख़ है। उस पर याक़ूत के कुब्बे हैं जिनके नीचे लड़कियाँ उगती और ख़ूबसूरत आवाज़ में क़ुरआन पढ़ती हैं। जन्नती आपस में कहेंगे हमारे साथ बीदख़ की तरफ़ चलो। चुनाँचे वे आएँगे और लड़कियों से मुसाफ़ा करेंगे। जब कोई लड़की किसी मर्द को पसन्द आएगी तो वह उसकी कलाई को छू लेगा। वह लड़की उसके पीछे चल पड़ेगी और उसकी जगह दूसरी लड़की उग आएगी। (हादिल अरवाह पेज 243)

हज़रत मोअतमिर बिन सुलैमान फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक नहर है जो लड़कियाँ उगाती है। (हादिल अरवाह पेज 304)

शिम्र बिन अतिया रहमतुल्लाहि अलैहिं फ़रमाते हैं कि जन्नत में कुछ नहरें ऐसी हैं जो लड़कियाँ उगाती हैं ये लड़कियाँ अलग-अलग आवाज़ों से अल्लाह तआला की तारीफ़ व प्रशंसा करती हैं कि वैसा ख़ूबसूरत आवाज़ें कानों ने कभी नहीं सुनी। वे कहती हैं:

तर्जुमाः हम हमेशा रहने वालियाँ हैं कभी नहीं मरेंगी। हम लिबास पहनने वालियाँ हैं कभी बेलिबास न होंगी। हम हमेशा नेमतों में पलने वालियाँ हैं कभी भूखी न होंगी। और हम हमेशा नेमतों में रहने वालियाँ हैं कभी रंज व तकलीफ़ में न जाएँगी। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम 3/ 172)

फ़ायदाः शहीदों को जब उसमें ग़ोता (डुबकी) दिया जाएगा तो ये अच्छी तरह से साफ़-सुथरे होकर चौदहवीं के चाँद की तरह चमकते हुए नज़र आएँगे। तफ़सील के लिए इस किताब के उनवान 'खाने-पीने के

बरतन' का अध्ययन करें।

नहर हरवल

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक नहर है जिसका नाम हरवल है। उसके दोनों किनारों पर पेड़ उगे हुए हैं। जब जन्नती कुछ सुनने की ख़्वाहिश करेंगे तो कहेंगे हमारे साथ हरवल की तरफ़ चलो ताकि हम पेड़ों से (ख़ूबसूरत और दिलकश आवाज़ें) सुनें। चुनाँचे वे ऐसी (ख़ूबसूरत) आवाज़ों में बोलेंगे कि अगर अल्लाह तआला ने जन्नतियों के न मरने का फ़ैसला न किया होता तो ये उन आवाज़ों के शौक़ और मस्ती में मर जाते।

पस जब उन ख़ूबसूरत आवाज़ों को (पेड़ों पर लगी हुई) लड़कियाँ सुनेंगी तो वे अरबी ज़बान में (बहुत ही ख़ूबसूरत आवाज़ के अन्दाज़ में कुछ) पढ़ेंगी। अल्लाह के वली उनके क़रीब जाएँगे और हर एक उन लड़कियों में से जिसको पसन्द करेगा तोड़ लेगा। फिर अल्लाह तआला उन लड़कियों की जगह वैसा ही और लड़कियाँ (उस पेड़ पर) लगा देंगे। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 3 पेज 163)

शराब की नहर

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी को यह बात अच्छी लगे कि अल्लाह तआला उसको आख़िरत (जन्नत) में शराब (तहूर) पिलाए तो उसको चाहिए कि वह इस (शराब) को दुनिया में छोड़ दे (न पिये)।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 362)

फ़ायदाः जो आदमी दुनिया में शराब पीने के बाद उससे तौबा कर ले तो वह शख़्स इस धमकी से अलग रहेगा।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 449)

नहर बारिक़

शहीद इस नहर पर रहते हैं

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः शहीद हज़रत जन्नत के दरवाज़े पर सब्ज़ कुब्बे में एक नहर बारिक़ है, उसमें रहते हैं। उनकी तरफ़ जन्नत से सुबह व शाम रिज़्क़ पहुँचता है। (मुसनद अहमद जिल्द 1 पेज 266)

नहर रय्यान

मर्जान का सत्तर हज़ार दरवाज़ों का शहर

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक नहर है जिसका नाम 'रय्यान'' है। उस पर एक शहर मर्जान (मातियो) से बनाया गया है जिसके सत्तर हज़ार सोने और चाँदी के दरवाज़े हैं और यह कुरआन के हाफ़िज़ के लिए है।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1925)

जन्नत के बराबर लम्बी नहर

अबू सालेह कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में जन्नत की लम्बाई के बराबर एक नहर है जिसके दोनों किनारों पर कुंवारी लड़कियाँ एक-दूसरे के आमने-सामने खड़ी हैं, और जिन ख़ूबसूरत आवाज़ों को मख़्लूक़ात सुनती है उनमें ज़्यादा हसीन आवाज़ों में गाती हैं। यहाँ तक कि जन्नती जन्नत में ऐसी लज़्ज़त और न पाएँगे मैंने पूछा ऐ अबू हुरैरह! यह किस चीज़ के गाने गाएँगी? उन्होंने फ़रमाया इन्शा-अल्लाह तस्बीह और अल्लाह की तारीफ़ और पाकीज़गी और परवर्दिगार की प्रशंसा करेंगी।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 1 पेज 38)

नहर रजब

रजब के महीने को रजब इसलिए कहते हैं कि जन्नत में एक नहर है जिसका नाम नहरे रजब है। उस नहर से वही हज़रात पियेंगे जो रजब के महीने में रोज़े रखा करते थे। (कन्ज़ुल मदफ़ून पेज 140)

दुनिया की वे नहरें जो जन्नत से निकलती हैं

सीहून, जीहून, फ़ुरात और नील

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सीहून, जीहून, फ़ुरात और नील सब जन्नत की नहरें हैं।

(मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2839)

दुनिया की पाँच नहरें

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जन्नत से पाँच नहरें नाज़िल फ़रमाई

1. सीहून- और यह हिन्दुस्तान की नहर है।
2. जीहून- यह बल्ख़ (रूस) की नहर है।
3. 4. दजला और फ़ुरात- और ये दोनों इराक़ की नहरें हैं।
5. नील- और यह मिस्र की नहर है।

अल्लाह तआला ने इनको जन्नत के चश्मों में से एक चश्मे से उतारा है जो जन्नत के दर्जों में से एक मामूली दर्जे पर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के दोनों परों पर स्थित है। फिर इन नहरों को अल्लाह तआला ने पहाड़ों के सुपुर्द किया, ज़मीन पर ज़ारी किया, फिर उनमें ज़िन्दगी की ज़रूरतों के मुताबिक़ लोगों के लिए फ़ायदा रख दिये। इसी के बारे में अल्लाह तआला (कुरआन में) इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः और हमने आसमान से मिक़्दार के साथ पानी को उतारा। फिर हमने उसको ज़मीन में ठहराया और हम उसको ख़त्म कर देने की

ताक़त रखते हैं। (सूरः मोमिनून आयत 18)

पस जब (क़ौम) याजूज-माजूज के निकलने का समय होगा तो अल्लाह तआला हज़रत जिब्राईल को नाज़िल फ़रमाएँगे। वह ज़मीन से क़ुरआन पाक को और दीन के तमाम इल्म को और बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) के कोने से हज्रे-अस्वद को, मक़ामे इब्राहीम को और हज़रत मूसा के ताबूत को उसके अन्दर की तमाम चीज़ों के साथ, और इन पाँच नहरों को, इन सबको वह आसमान की तरफ़ उठाकर ले जाएँगे। यही मतलब है अल्लाह तआला के फ़रमान का कि हम उसके ख़त्म कर देने पर क़ादिर हैं। पस जब इन चीज़ों को ज़मीन से उठा लिया जाएगा तो ज़मीन पर बसने वाले लोग दुनिया और आख़िरत की ख़ैर व बरकत से मेहरूम हो जाएँगे। (हादिल अरवाह पेज 242)

नील, दजला, फ़ुरात और सीहून जन्नत में किस-किस चीज़ की नहरें हैं

हज़रत कअब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि नील जन्नत में शहद की नहर है। और दजला जन्नत में दूध की नहर है। और फ़ुरात जन्नत में शराब की नहर है। और सीहून जन्नत में पानी की नहर है।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 49)

फ़ायदाः अल्लामा क़ुरतबी ने इस रिवायत के आगे यह बढ़ाया है कि फिर ये चारों नहरें कौसर से निकलती हैं।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 446)

नहर फ़ुरात में जन्नत की बरकत नाज़िल होती है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता मगर जन्नत की बरकत में बहुत-सी भारी बरकतें नहर फ़ुरात में नाज़िल होती हैं। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 27)

नोटः ये दुनिया की जितनी नहरें आपने उक्त हदीसों और रिवायतों में पढ़ी हैं उनको आज की दुनिया बड़े-बड़े मशहूर दरियाओं में गिनती है और वैज्ञानिकों की खोज के बावजूद उनकी निकलने की असल जगहों

की खोज नहीं कर सकी।(जहाँ-दीदा मौलाना तक़ी उस्मानी)।

जन्नत के चश्में

चश्मा सल्सबील

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और हाँ! (जन्नत में) उनको ऐसा शराब का जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ मिली हुई होगी। यानी ऐसे चश्मे से जो वहाँ होगा जिसका नाम सल्सबील होगा।(सूरः दह्र आयत 17 से 18)

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि सल्सबील की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि यह चश्मा (हर दम) ताज़ा-ताज़ा जारी होता होगा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1926)

अर्श के चार चश्मे

ज़न्जबील, तफ्जीर, सल्सबील और तस्नीम के चश्मे

हदीसः हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया

तर्जुमाः जन्नत में चार चश्मे (ऐसे) हैं कि उनमें से दो चश्में तो अर्श के नीचे से फूटते हैं। एक का ज़िक्र तो अल्लाह तआला ने (आयत) 'युफ़ज्जिरुनहा तफ़जीर' में फ़रमाया है। और दूसरा चश्मा जन्जबील है। और दो चश्मे अर्श के ऊपर से फूटते हैं उनमें से एक तो वह है जिसका तस्नीम है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1932)

चश्मा तफ्जीर

अल्लाह तआला के इरशाद 'व युफ़ज्जिरूनहा तफ़जीरा' की तफ़सीर इब्ने शोहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के पास सोने की लाठियाँ होंगी। उनके साथ इशारा करके उस चश्मे को बहाएँगे और यह चश्मा उनकी उन लाठियों के इशारे पर उसी तरफ़ को बहता होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1931)

चश्मा तस्नीम

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि तस्नीम वह चश्मा है जिसमें शराब की मिलावट की जाएगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1927)

जोश मारने वाले दो चश्मे

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये दोनों चश्मे जन्नतीयों के महलों पर मुश्क व अम्बर की फुहारे डालेंगे जिस तरह से दुनिया वालों के घरों पर बारिश की फुहारे पड़ती है।

(हादिल अरवाह पेज 237)

और तरह-तरह के मेवे भी बरसाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1930)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये दोनों चश्मे पानी की फुहार डालेंगे।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1929)

लगातार बहने वाले चश्मे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो बहते चले जाएँगे।

(सूरः रहमान आयत 50)

इसकी तफ़सीर में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये दोनों चश्मे 'जोश मारने वाले चश्मों' से अफ़ज़ल हैं।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1928)

जन्नत के जानवर और सवारियाँ

मुहार वाली ऊँटनियाँ

हदीसः हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी मुहार वाली ऊँटनी लेकर हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया यह अल्लाह तआला के रास्ते में है। नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तेरे लिए क़यामत के दिन सात सौ ऊँटनियाँ होंगी (और) सब की सब मुहार वाली होंगी। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 486)

एक जानवर के बदले में सात सौ जानवर

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया गया है कि वह एक बार जिहाद के लिए निकले तो एक शख़्स को ग़मगीन देखा इसलिए कि उसका घोड़ा मर गया था और उसको ग़मगीन कर गया था। हज़रत इब्ने मुबारक ने उससे फ़रमया तुम यह (मरा हुआ घोड़ा) मुझे चार सौ दिर्हम में बेच दो। उसने बेच दिया। फिर उसने उसी रात ख़्वाब में देखा गोया कि क़यामत क़ायम है और उसका घोड़ा जन्नत में मौजूद है जिसके नीचे सात सौ घोड़े और हैं। उस शख़्स ने इरादा किया कि अपने घोड़े को पकड़ ले मगर आवाज़ दी गयी कि उसको छोड़ो यह इब्ने मुबारक का घोड़ा है, यह कल तुम्हारा था।

जब सुबह हुई तो वह शख़्स हज़रत इब्ने मुबारक के पास आया और सौदा फेरना चाहा, हज़रत इब्ने मुबारक ने पूछा कि तुम यह क्यों कर रहे हो? उसने आपके सामने वह क़िस्सा (ख़्वाब) कह सुनाया। हज़रत इब्ने मुबारक ने उससे फ़रमाया कि अब तुम चले जाओ, तुमने जो कुछ ख़्वाब में देखा है उसको हमने जागते हुए देखा है।

(तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 486)

नोटः हमने यह हदीस अबू मसऊद अभी ऊपर ज़िक्र की है जिससे मालूम होता है कि अल्लाह तआला के रास्ते में एक जानवर सदक़ा करने से सात सौ जानवर मिलते हैं। (घोड़ों के बदले में घोड़े और ऊँटों के बदले में ऊँट मिलते हैं)।

हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का दुंबा

क़ुरआन पाक में हैं:

तर्जुमाः और हमने (हज़रत इसमाईल की जान बचाने के लिए जन्नत का बड़ी शान वाला दुंबा) उनके बदले में दिया।

(सूरः साफ़्फ़ात आयत 107)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उस दुंबे को बड़ी शान वाला इसलिए फ़रमाया गया क्योंकि यह जन्नत में चालीस साल तक चरा था। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 488)

बकरियाँ जन्नत के जानवर हैं

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः बकरियाँ जन्नत के जानवर हैं। (तारीख़े बग़दाद जिल्द 7 पेज 453)

बकरी से अच्छे सुलूक

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः बकरी से अच्छा सुलूक करो और उससे तकलीफ़ को दूर करो, क्योंकि यह जन्नत के जानवरों में से हैं।

(तारीख़ बग़दाद जिल्द 9 पेज 145)

फ़ायदाः यह हदीस सनद के एतिबार से बहुत ही कमज़ोर है मगर तिबरानी की इसके समान-अर्थी दूसरी हदीस की वजह से इसकी ताईद हो जाती है और कमज़ोरी दूर हो जाती है।

बकरियाँ रखा करो

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम बकरियों को (अपने पास) रखा करो क्योंकि यह जन्नत के जानवरों मे से है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2132)

फ़ायदाः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु भी फ़रमाते हैं कि बकरी जन्नत के जानवरों में से है।(तारीख़े बग़दाद जिल्द 7 पेज 432)

घोड़े और ऊँटनियाँ

जन्नत में घोड़े और ऊँटनयाँ भी होंगी। उनकी तफ़सील "अल्लाह का दीदार और जन्नतियों की आपसी मुलाक़ातों के बाबों" में पढ़ें।

जन्नत में जाने वाले दुनिया के बारह जानवर

इब्ने नजीम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जानवरों में से पाँच जानवर जन्नत में जाएँगे।

1. अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता।
2. हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का दुंबा।
3. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी।
4. हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का गधा।
5. नबी करीम सल्ल० की बुराक़।

(अल-इश्बाह वन्नज़ाइर जिल्द 4 पेज 131)

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि के हवाले से पाँच जानवरों का और ज़िक्र किया है।

6. हुज़ूर सल्ल० की ऊँटनी मुबारक।
7. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की गाय।
8. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की मछली।
9. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की चींटी।
10. हज़रत बिलकीस का हुदहुदा।

(अल-अश्बाह वन्नज़ाइर जिल्द 4 पेज 131)

और अल्लामा सुयूती ने 'दीवानुल-हाफ़िज़' में हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के भेड़िये का भी ज़िक्र किया है। और अल्लामा सुयूती के शागिर्द अल्लामा दाऊदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इमाम सुयूती के हवाले से हुज़ूर सल्ल० के दुलदुल ख़च्चर का भी ज़िक्र किया है कि वह भी जन्नत में जाएगा। और किताब 'मिश्कातुल अनवार' शरह 'शिरअतुल् इस्लाम' में है कि ये सब जानवर दुंबे की शक्ल में जन्नत में दाख़िल होंगे। (अल-इश्बाह वन्नज़ाइर जिल्द 4 पेज 131)

जन्नत के परिन्दे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: और परिन्दों का गोश्त होगा जो उनको पसन्द होगा।

(सूरः वाक़िआ आयत 21)

बुख़्ती ऊँट के बराबर बड़े-बड़े परिन्दे

हदीस: हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सलल० ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः जन्नत में बुख़्ती ऊँट के बराबर (बड़े-बड़े) परिन्दे होंगे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! फिर तो वह (जन्नत में) बड़े ऐश व आराम में रहेगा? आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया उससे ज़्यादा ऐश में वह शख़्स होगा जो उसको खाएगा और ऐ अबू बक्र आप भी उन लोगों में से हैं जो उससे खाएँगे।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2124)

हदीसः हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में बुख़्ती ऊँट के बराबर बड़े-बड़े परिन्दे होंगे। जब वे जन्नती के पास आएँगे तो जन्नती उससे खाएँगे। फिर वह परिन्दा इस हालत में उड़ जाएगा गोया कि उससे कुछ भी कम नहीं हुआ।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2126)

सत्तर लज़्ज़तों का मुलायम और मीठा गोश्त

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक परिन्दा होगा जिसके सत्तर पर होंगे। यह आकर जन्नती के तबाक़ पर बैठेगा। फिर हिलेगा तो उसके हर पर से बर्फ़ से भी ज़्यादा सफ़ेद किस्म का खाना निकलेगा जो झाग से ज़्यादा मुलायम और शहद से ज़्यादा मीठा होगा। उसमें कोई खाना ऐसा नहीं होगा जो दूसरे (पर वाले) खाने से मिलता हो। फिर वह परिन्दा उड़कर चला जाएगा। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 155)

यह परिन्दा किस जगह का होगा

हज़रत मुग़ीब बिन सम्मी रहिमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं तूबा जन्नत में एक पेड़ है। जन्नत में कोई महल ऐसा नहीं जिस पर उसकी टहनियों में से कोई टहनी साया न करती हो। उस पर तरह-तरह के फल लगे हुए हैं। उस पर बुख़्ती ऊँट के बराबर (बड़े-बड़े) परिन्दे बैठते हैं। जब कोई मर्द किसी परिन्दे का गोश्त खाना चाहेगा तो उसको बुलाएगा। वह उसके दस्तरख़्वान पर आ गिरेगा और वह जन्नती उसके एक तरफ़

से भुना हुआ गोश्त खाएगा। और दूसरी तरफ़ से शोरबे वाला। फिर यह परिन्दा अपनी असल हालत में वापस आकर उड़कर चला जाएगा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2128)

फ़ायदाः तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस से साबित होता है कि कौसर नहर पर भी परिन्दे होंगे जन्नती जिनके गोश्त खाएँगें

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 485)

परिन्दों की चरने की जगहें और चश्मे

हदीसः हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में बुख़्ती ऊँट की तरह ऊँचे-ऊँचे परिन्दे होंगे जो अल्लाह के वली के सामने आकर बैठेंगे। उनमें से एक कहेगा ऐ अल्लाह के दोस्त! मैं अर्श के नीचे ख़ूबसूरत जन्नत में चरता रहा हूँ और तस्नीम के चश्मों से पीता रहा हूँ। आप मुझ में खाएँ। फिर वह अल्लाह के दोस्त के सामने (अपनी) तारीफ़ करने में लगा रहेगा, यहाँ तक कि जन्नती के दिल में उन परिन्दों में से किसी के के खाने का इरादा होगा तो वह परिन्दा उस जन्नती के सामने तरह-तरह के ज़ायकों के साथ गिर पड़ेगा और वह उससे अपनी इच्छा के अनुसार खाएगा। और जब सैर होगा तो परिन्दे की हड्डियाँ जमा हो जाएँगी और वह उड़कर जन्नत में जहाँ चाहेगा चरना शुरू हो जाएगा।

हज़रत उमर ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के नबी! यह परिन्दा तो बड़े मज़े में होगा? आपने इरशाद फ़रमाया उस परिन्दे को खाना उससे भी ज़्यादा मज़े और ऐश की बात होगी। (तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 485)

ज़न्जबील और सल्सबील का परिन्दा

हज़रत बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़नी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि जन्नत का कोई मर्द जब गोश्त की इच्छा करेगा तो उसके पास एक परिन्दा आएगा और उसके सामने गिर पड़ेगा और कहेगाऐ अल्लाह के दोस्त! मैंने चश्मा सल्सबील से पिया है और ज़न्जबील से चरा है और अर्श व कुर्सी के पास नाज व नेमत में पला

हूँ। आप मुझमें से खाइए। (सिफ़तुल जन्नत अबू नुऐम जिल्द 2 पेज 125)

भुना हुआ गोश्त बनकर पेश होने वाला परिन्दा

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में तू किसी परिन्दे की तरफ़ देखेगा और उसकी तलब करेगा तो वह तेरे सामने भुना हुआ गोश्त होकर पेश हो जाएगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 7 पेज498)

फ़ायदाः यह परिन्दा इस हालत में भुना हुआ गोश्त होकर पेश होगा कि न तो उसको धुआँ पहुँचा होगा न ही आग, जैसा कि हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत इमाम इब्ने अबी दुनिया ने नक़ल किया है।(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिाया पेज 123)

खाना पीना और फल,जन्नतियों की पहली मेहमानी ज़मीन रोटी होगी और बैल व मछली सालन होगा

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः ज़मीन क़यामत के दिन एक रोटी की शक्ल में होगी जिसको गर्म करने के लिए गर्म रेत पर रख दिया जाएगा। अल्लाह तआला उसको अपने हाथ में इस तरह से उलट-पुलट करेंगे जिस तरह से तुम में का कोई एक अपनी रोटी को सफ़र में उलट-पुलट करता है। यही (जन्नत में) जन्नत वालों की (सबसे पहली) मेहमानी होगी। उनका सालन 'बालाम' और 'नून' का होगा। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ये क्या चीज़ हैं? आपने इरशाद फ़रमाया, बैल और मछली होगी। (और ये इतने बड़े होंगे कि) उस मछली और बैल के जिगर का अलग लटकने वाला टुकड़ा सत्तर हज़ार जन्नती खाएँगे। (तज़्किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 520)

मछली का जिगर

हदीसः हज़रत तारीक़ बिन शहाब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यहूदी जनाब नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहाः

आप हमें यह बताएँ कि जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होंगे तो सबसे पहले क्या खाएँगे? आपने फ़रमाया वे सबसे पहले मछली का जिगर खाएँगे। (मजमउज़्ज़वायद जिल्द 10 पेज 413)

हज़रत कअब फ़रमाते हैं कि जब जन्नती जन्नत् में दाख़िल होंगेतो उनको अल्लाह तआला फ़रमाएँगे हर मेहमान के लिए कुछ तोहफ़ा होता है, मैं भी आपको आज तोहफ़ा दूँगा। फिर बैल और मछली को पेश किया जाएगा और जन्नत वालों के लिए उसको ज़िबह कर (के खिला) दिया जाएगा। (हादिल अरवाह पेज 211)

खाना-पीना और पेशाब-पाख़ाने की ज़रूरत

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

तर्जुमाः परहेजगार लोग सायों में और चश्मों में और पसन्दीदा मेवों में होंगे। (और उनसे कहा जाएगा कि) अपने (नेक) आमाल के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ-पियो हम नेक लोगों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (सूरः मुर्सलात आयत 41,42, 43)

अल्लाह तआला एक दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमाः फिर जिस शख़्स का आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह तो (ख़ुशी के मारे आस-पास वालों से) कहेगा कि मेरा आमालनमा पढ़ लो, मेरा (तो पहले ही से) एतिकाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है। ग़रज़ वह शख़्स पसन्दीदा ऐश (यानी) जन्नत के आला दर्जों में होगा जिसके मेवे (इस क़द्र) झुके होंगे (कि जिस हालत में चाहेंगे ले सकेंगे, और हुक्म होगा कि) खाओ और पियो मज़े के साथ, उन आमाल के सिले में जो तुमने सिले की उम्मीद में पिछले दिनों (यानी दुनिया में रहने के ज़माने में) किये हैं।

(सूरः अल-हाक़्क़ह् आयत 19 से 24)

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले खाएँगे भी और पियेंगे भी, मगर नाक नहीं सिनकेंगे और न ही वे पाख़ाना और पेशाब करेंगे। उनका तस्बीह और तारीफ़ ऐसे ही ज़ेहन में डाली जायेगी जैसे तुम लोगों को साँस लेने का

एहसास रहता है। (यानी इसके लिए किसी सोचने की ज़रूरत नहीं।)

(मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2835)

खाना और पेशाब-पाख़ाने की जरूरत

हदीसः हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक यहूदी जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा ऐ अबुल क़ासिम (मुहम्मद सल्ल0) आपका ख़्याल है कि जन्नती खाएँगे भी और पियेंगे भी? आपने इरशाद फ़रमाया मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नतियों में से हर शख़्स को खाने-पीने सोहबत करने (संभोग) और ख़्वाहिश में एक सौ आदमियों की ताक़त अता की जाएगी। उसने अर्ज़ किया फिर जो शख़्स खाता और पीता है उसको हाजत भी तो होती है? आपने इरशाद फ़रमाय, उनकी (पेशाब-पाख़ाने की) हाजत एक तरह का पसीना होगा जो उनकी खालों से बह जाएगा कस्तूरी की खुशबू की तरह। जब यह (पसीना) निकल जाएगा तो उनका पेट सिकुड़ जाएगा। (मुसनद अहमद जिल्द 4 पेज 371)

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से नबी करीम सल्ल0 से इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः

तर्जुमाः तमाम जन्नतियों में सबसे कम दर्जे के जन्नती के सामने से हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे। हर एक के हाथ में दो बड़े प्याले होंगे एक सोने का होगा दूसरा चाँदी का होगा। हर एक में ऐसे रंग का खाना होगा जो दूसरे में न होगा। जन्नती आख़िरी प्याले से भी वैसे ही चाहत से खाएगा जैसा कि पहले वाले से, (और) आख़िरी प्याले से भी ऐसी ही पाकीज़गी और लज़्ज़त महसूस करेगा जैसी कि पहले प्याले से करेगा। फिर यह खाना कस्तूरी की ख़ुशबूदार हवा हो जाएगा। जन्नती न तो पेशाब करेगा न पाख़ाना करेगा नाक सिनकेगा। आपसी भाई-बन्दी के अन्दाज़ से शाहाना तख़्तों पर आमने-सामने बैठते होंगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1900)

रिज़्क़ के हदिये-तोहफ़े सुबह व शाम पहुँचेंगे

हदीसः हज़रत हसन और हज़रत अबू क़लाबा रहमतुल्लाहि

अलैहिमा दोनों हज़रात बयान करते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या जन्नत में रात भी होगी? क्योंकि अल्लाह तआला अपनी किताब में फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जन्नतियों के लिए जन्नत में रिज़्क़ होगा सुबह व शाम। (सूरः मरियम आयत 62)

तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः वहाँ पर कोई रात नहीं होगी बल्कि वहाँ ऐसी रोशनी और नूर होगा। सुबह शाम पर तारी होगी और शाम सुबह पर। उनके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से नमाज़ के वक़्तों में जिनमें वे नमाज़ अदा किया करते थे तोहफ़े आया करेंगे और उन पर फ़रिश्ते सलाम करते होंगे। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 4 पेज 278)

जन्नत में पहली मेहमानी

हदीसः हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि यहूदियों के एक आलिम ने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से सवाल किया कि जिस दिन इस ज़मीन के अलावा कोई और ज़मीन तब्दील की जाएगी तो लोग कहाँ जाएँगे? रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जवाब में इरशाद फ़रमाया, पुलसिरात के नीचे अंधेरे में होंगे। उसने पूछा लोगों में से पहले (पुलसिरात से) कौन गुज़रेगा? फ़रमाया ग़रीब लोग और मुहाजिरीन उसने पूछा जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे उनको क्या मेहमानी दी जाएगी? फ़रमाया मछली के जिगर का बढ़ा हुआ हिस्सा।

उसने पूछा उस मेहमानी के बाद उनको सुबह की पहली मेहमानी क्या दी जाएगी?फ़रमाया उनके लिए जन्नत का बैल ज़िबह किया जाएगा और जन्नती उसके चारों तरफ़ से खाएगा। उसने पूछा जन्नती उसको खाने के बाद क्या पियेंगे। इरशाद फ़रमाया जन्नत के उस चश्मे से जिसका नाम 'सल्सबील' रखा गया है। उसने अर्ज़ किया आपने बिल्कुल सच फ़रमाया है। (मुसनद अहमद जिल्द 4 पेज 367)

हज़ार ख़ादिम खाना खिलाएँगे

हज़रत मुक़ातल बिन हयान रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब

जन्नतियों को खाने के लिए बुलाया जाएगा वे सुब्हानकल्लाहुम्-म कहेंगे। हर एक जन्नती की ख़िदमत के लिए दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे। उनमें के हर एक ख़ादिम के पास सोने का बड़ा प्याला होगा जिसमें ऐसा खाना होगा कि दूसरे प्याले में वैसा न होगा। वह जन्नती उनमें से हर प्याले से खाएगा। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 50)

अदना दर्जे के जन्नती का खाना-पीना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में अदना दर्जे का वह शख़्स होगा जिसके सात दर्जे होंगे, यह छठे दर्जे में होगा। उससे ऊपर सातवा दर्जा होगा और उसके तीन सौ ख़ादिम होंगे। उसके सामने रोज़ाना सुबह व शाम का खाना तीन सौ बड़े प्यालों में पेश किया जाएगा। रिवायत बयान करने वाला कहता है कि मुझे मालूम नहीं, मगर उसने यही कहा था कि वे (प्याले) सोने के होंगें हर प्याले में इसी तरह का खाना होगा जो दूसरे में न होगा, और यह जन्नती उसके पहले खाने से भी वैसी ही लज़्ज़त पाएगा जैसी कि आख़िरी से पाएगा। और पीने की चीज़ों के भी तीन सौ बरतन होंगे हर बरतन में ऐसा शरबत और पानी होगा जो दूसरे में न होगा और उसके पहले बरतने से भी वैसे ही आनन्दित होगा जैसे कि आख़िरी से आनन्दित हो, बल्कि यह(तमन्ना करते हुए) कहता होगा या रब! अगर आप मुझे इजाज़त देते तो मैं तमाम जन्नत वालों को खिलाता पिलाता और जो कुछ मेरे पास है उससे कुछ भी कम न होता।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 526)

पहली दावत बैल और मछली की होगी

हज़रत इमाम मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उन्होंने सुना है कि जन्नत वालों को जो सबसे पहले मेहमानी खिलाई जाएगी वह मछली और बैल होगा। (बैल) जन्नत में बग़ैर किसी चरवाहे के जन्नत के पेड़ों से चरता रहेगा और मछली जन्नत के नहरों में तैरती रहेगी। जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो बैल और मछली दोनों

को बुलाया जाएगा। ये दोनों जन्नतियों के सामने हर तरह का खेल करेंगे और एक-दूसरे से ख़ूब मुक़ाबला करेंगे जिससे जन्नती ख़ूब मज़ा लेंगे। फिर मछली बैल को अपनी दुम मारेगी और बैल मछली को अपना सींग मारेगा और यही उनका ज़िबह होना होगा। फिर वे लोग उनके गोश्त को खाएँगे जितना दिल चाहेगा उन दोनों के गोश्त में जन्नत की हर चीज़ का मज़ा पाएँगे। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 79)

जन्नती के खाने में ख़्वाहिश के पूरा होने की इन्तिहा

हदीसः इब्ने अब्दुल हकम रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वालों में से एक शख़्स लुक़्मा लेकर अपने मुँह में डालेगा, फिर अपने दिल में किसी और खाने का ख़्याल करेगा तो वह लुक़्मा उस खाने में बदल जाएगा जिसकी उन्हे तमन्ना की होगी।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 80)

एक दस्तरख़्वान पर सोने के सत्तर हज़ार प्याले

हज़रत कअब रहतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जन्नतियों में से हर एक के पास दस्तरख़्वान पर सोने के सत्तर हज़ार बड़े प्याले होंगे।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 81)

डकार और पसीना क्यों आएगा

हदीसः हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों की डकार मुश्क की ख़ुशबू की तरह होगी यह क़ज़ा-ए-हाजत (पाख़ाना करने) के स्थान पर होगा और उनको पसीना मुश्क के ख़ुशबू की तरह होगा और यह पेशाब के स्थान पर होगा।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 86)

पीने की चीज़ें

पीने की लज़्ज़तों की तफ़सील

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैंः

तर्जुमा व तफ़सीरः नेक लोग बड़े ऐश व आराम में होंगे मसहरियों पर (बैठे जन्नत की अजीब-अजीब चीज़ों को) देखते होंगे। ऐ मुख़ातब! तू उनके चेहरों में राहत व आराम की ताज़गी और ख़ुशी को पहचानेगा और उनको पीने के लिए ख़ालिस शराब मुहर-बन्द जिस पर मुश्क की मुहर लगी हुई होगी, मिलेगी। और हिर्स करने वालों को ऐसी ही चीज़ की हिर्स करनी चाहिये (कि हिर्स के लायक़ यही है। चाहे सिर्फ़ शराब मुराद ली जाए चाहे जन्नत की कुल नेमतों यानी शौक़ व रग़बत की चीज़। ये नेमतें है न कि दुनिया की नाक़िस और फ़ानी लज़्ज़तें। और उनके हासिल करने का तरीक़ा नेक आमाल हैं। पस उनमें कोशिश करनी चाहिये) और उस शराब की आमेज़िश (मिलावट) तस्नीम के पानी से होगी। (अरब के लोग आम तौर से शराब में पानी मिलाकर पीते थे तो उस शराब की मिलावट के लिए तस्नीम का पानी होगा। तस्नीम की शरह यह है कि यह) एक ऐसा चश्मा है जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे (यानी अल्लाह से ख़ास तल्लुक़ और निकटता रखने वाले हज़रात को तो तस्नीम का ख़ालिस पानी मिलेगा और नेक लोगों को उसका पानी दूसरी शराब में मिलाकर मिलेगा। और यह मुहर लगना सम्मान और ऐज़ाज़ की अलामत है वरना वहाँ ऐसी हिफ़ज़ात की ज़रूरत नहीं होगी, और मुश्क की मुहर का मतलब यह है जैसा क़ायदा है की लाख वग़ैरह लगाकर उस पर मुहर करते हैं और ऐसी चीज़ को 'तीने ख़िताम' कहते हैं। वहाँ शराब के बरतन के मुँह पर मुश्क लगाकर उस पर मुहर कर दी जाएगी)।

(सूरः अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन आयत 24 से 28) (तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

हज़रत अबू दर्दा "मुश्क की मुहर" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि यहा चाँदी की शक्ल की सफ़ेद शराब होगी जिसके ऊपर कस्तूरी की मुहर लगी होगी। अगर दुनिया वालों में से कोई शख़्स उसमें अपना हाथ डालकर बाहर निकाले तो (पूरी दुनिया में) हर जानदार उसकी ख़ुशबू सूँघ सके। (तफ़सीर इब्ने जरीर जिल्द 30 पेज 107)

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि तस्नीम एक चश्मे का नाम है जिसमें शराब की मिलावट की जाएगी।

(हादील अरवाह पेज 250)

अल्लाह तआला यह भी इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा व तफ़सीर: और उनके पास (खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाने के लिए) चाँदी के बरतन लाए जाएँगे और आबख़ोरे (प्याले) जो शीशे के होंगे (और) वे शीशे चाँदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा। यानी उसमें पीने की चीज़ ऐसे अन्दाज़ से भरी होगी कि न उस वक़्त की ख़्वाहिश में कमी रहे और न उससे बचे, क्योंकि दोनो में बेलुत्फ़ी होती है। और चाँदी में आर-पार नज़र नहीं आता और शीशे में यहाँ ऐसी सफ़ेदी नहीं होती। पस यह एक अजीब चीज़ होगी और वहाँ उनको ऊपर ज़िक्र हुए शराब का जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी (कि बदन की क़ुदरती गर्मी को बढ़ाने और मुँह का ज़ायका बदलने के लिए शराब में इसको भी मिलाते थे)यानी ऐसे चश्मे से (उनको पिलाया जाएगा) जिसका नाम (वहाँ) सल्सबील (मशहूर) होगा। (सूर: दह्र आयत 15 से 18)

और उनके पास ये चीज़ें ले-लेकर ऐसे लड़के आएँ-जाएँगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। और वे इस क़द्र हसीन है कि ऐ मुख़ातब! अगर तू उनके चलते-फिरते देखे तो यूँ समझे कि मोती हैं जो बिखर गये हैं। मोती से सफ़ाई और चमक-दमक में तश्बीह दी और बिखरे हुए का गुण उनके चलने-फिरने के लिहाज़ से जैसे बिखरे हुए मोती बिखर कर कोई इधर जा रहा है, कोई उधर जा रहा है और यह बेहतरीन दर्जे की तश्बीह (मिसाल दी) है और इतना ही नहीं बल्कि वहाँ और भी हर सामान इतना ज़्यादा होगा कि ऐ मुख़ातब! अगर तू उस जगह को देख ले तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी बादशाहत दिखलाई दे। (तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: नेक लोग पियेंगे शराब के जाम जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी। यानी ऐसे चश्में से (पियेंगे) जिससे ख़ुदा के ख़ास बन्दे पियेंगे। (और) जिसको वे (ख़ास बन्दे जहाँ चाहेंगे) बहाकर ले जाएँगे।

(सूर: दह्र आयत 5, 6)

(और यह) जन्नतियों की एक करामत (बड़ाई और चमत्कार) होगी कि जन्नत की नहरें उनके ताबे होंगी जैसा कि 'दुर्रे मन्सूर' में इब्ने शोज़ब से रिवायत है कि जन्नतियों के हाथ में सोने की छड़ियाँ होंगी, वे छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा कर देंगे नहरें उस तरफ़ चलने लगेंगी। और यह काफ़ूर दुनिया का काफ़ूर नहीं है बल्कि जन्नत का काफ़ूर है जो सफ़ेदी और ठंडक और सुकून देने और दिल व दिमाग़ को ताक़त देने में उसका हिस्सेदार है। शराब में ख़ास कैफ़ियत हासिल करने के लिए आदत है कि कुछ मुनासिब चीज़ों को मिलाने की, पस वहाँ उस गिलास में काफ़ूर मिलाया जाएगा और वह शराब का जाम ऐसे चश्मे से भरा जाएगा जिससे अल्लाह के ख़ास बन्दे पियेंगे, तो ज़ाहिर है कि वह आला दर्जे का होगा। (तफ़सीर बयानुल कुरआन, सूरः दह्र आयत 5, 6)

चश्मा तस्नीम

हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि 'तस्नीम' जन्नत की सबसे आला क़िस्म की शराब है जो अल्लाह के ख़ास बन्दों को ख़ालिस पिलाई जायेगी और नेक लोगों को मिलावट के साथ। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1938)

शराब की छागल

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जन्नतियों में से हर शख़्स जन्नत की शराब में से जब भी किसी पीने की चीज़ की इच्छा करेगा उसके पास छागल पेश हो जाएगी और उसके हाथ में आ मौजूद होगी। चुनाँचे वह उससे पियेंगे और वह फिर अपनी जगह लौट जाएगी।(तरग़ीब तरहीब जिल्द 4 पेज 524)

हुस्न में बढ़ोतरी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती के पास जब कोई गिलास (किसी पीने की चीज़ का) पेश किया जाएगा और वह उसको नोश करेगा फिर अपनी बीवी की तरफ़ मुतवज्जह होगा तो वह कहेगी अब आप मेरी नज़र से सत्तर गुना ज़्यादा

ख़ूबसूरत हो गये हैं। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 138)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं हूरे-ऐन में से जब भी कोई औरत एक गिलास पियेगी और उसका शौहर उसकी तरफ़ देखेगा तो वह शौहर की नज़र में हुस्न में सत्तर दर्जे बढ़ जाएगी।

(सिफ़तुल जन्नत इब्ने अबी दुनिया पेज 142)

बरतन के अन्दर की चीज़ बाहर से नज़र आएगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर तुम दुनिया की चाँदी से कुछ लेकर उसको इतना बारीक करो कि उसको मक्खी के पर की तरह कर दो तब भी उसके पीछे से तुम्हें पानी नज़र नहीं आएगा लेकिन जन्नत के बरतन चाँदी की तरह सफ़ेद होंगे और शीशे की तरह साफ़ होंगे। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 309)

जाम की छीना-झपटी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः वहाँ (जन्नत में) आपस में (दिल्लगी के तौर पर) शराब के जाम में छीना-झपटी भी करेंगे कि उस (शराब) में न बक-बक लगेगी (क्योंकि नशा न होगा) और न कोई बेहूदा बात (अक़्ल व संजीदगी के ख़िलाफ़) होगी। (सूरः तूर आयत 23)

शराब के मज़े की इन्तिहा

हदीसः नबी करीम सल्ल0 इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः अगर अल्लाह तआला जन्नतियों के लिए यह फ़ैसला न फ़रमाते कि वे आपस में जाम की छीना-झपटी करेंगे तो वे लज़्ज़त की वजह से उस जाम को कभी अपने मुँह से अलग न करते।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 26)

शराबे तहूर

अल्लाह तआला के इरशादः

तर्जुमाः और उनका रब उनको पाकीज़ा शराब को देगा।

(सूरः दह्र आयत 21)

इब्ने अब्दुल हकम रहमतुल्लाहि अलैहि रिवायत करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से इस आयते मुबारक के बारे में सवाल किया गया तो आपने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती अपने खाने-पीने के बाद जो सबसे आख़िरी शराब पियेंगे वह ऐसा पानी होगा जिसको तहूर कहा जाता होगा। जब जन्नती उससे पियेंगे तो उनका खाना-पानी सब हज़्म हो जाएगा यहाँ तक कि वे फिर खाने की ख़्वाहिश करने लगेंगे और उनका हमेशा यही तरीक़ा रहेगा। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 26)

दुनिया में प्यासे को पानी पिलाने पर क़यामत में 'रहीक़े मख़्तूम' मिलेगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो मोमिन किसी मोमिन को प्यास की हाल में एक घूँट पानी का पिलाएगा अल्लाह उसको क़यामत के दिन 'रहीक़े मख़्तूम' से पिलाएँगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2449)

जन्नत की शराब से कौन मेहरूम होगा?

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जिस आदमी ने दुनिया में शराब पी और उससे तौबा न की तो उसके लिए आख़िरत में शराब हराम होगी। (यानी उसको जन्नत में शराबे तहूर से मेहरूम रखा जाएगा।) (मुस्नद अहमद जिल्द 2 पेज 19)

हज़ीरतुल् क़ुदुस की शराब का मुस्तहिक़

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो शख़्स शराब पीने की ताक़त रखने के बावजूद शराब को न पियेगा मैं उसको हज़ीरतुल् क़ुदुस (अपने मख़्सूस और क़रीबी मुक़ाम) से (पाकिज़ा) शराब पिलाऊँगा। और जो रेशम पहनने की ताक़त

रखने के बावजूद रेशम न पहनेगा मैं उसको हज़ीरतुल् कुदुस की (ख़ास) शराब पिलाऊँगा। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 3 पेज 262)

खाने-पीने के बरतन

सोने-चाँदी के बरतन

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं

तर्जुमा: और उनके पास चाँदी के बरतन लाए जाएँगे और आबख़ोरे (प्याले) जो शीशे के होंगे। वे शीशे चाँदी के होंगे, जिनको भरने वालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा, और वहाँ उनको ऐसा शराब का जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी। (सूरः दह्र आयत 15 से 17) दूसरी जगह इरशाद है:

तर्जुमा: उनके पास सोने की रकाबियाँ और गिलास लाए जाएँगे।(सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 71)

चाँदी के बरतनों की चमक और सफ़ाई

हज़रत इक्रिमा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: अगर तुम दुनिया की चाँदी में से कुछ चाँदी लो। फिर उसको इतना बारीक करो कि मक्खी के पर की तरह कर दो फिर भी तुम्हें उसके पीछे बारीक करो कि उसके पीछे से पानी नज़र नहीं आएगा। लेकिन जन्नत की चाँदी के बरतन सफ़ाई में आईने की तरह होंगे और सफ़ेदी में चाँदी की तरह। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2105)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत में जो कुछ भी है उसकी मिसाल तुम्हें दुनिया में अता फ़रमाई गयी मगर चाँदी आईने जैसी अता नहीं की गयी।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2106)

सोने के सत्तर प्याले

अल्लाह पाक के इरशाद: 'युताफ़ु अलैहिम बिस्हिाफ़िम्-मिन ज़-हबिन्' की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के सामने सत्तर क़िस्म के बड़े प्याले पेश किये जाएँगे। हर प्याले में ऐसे रंग और ऐसी क़िस्म का खाना वग़ैरह होगा जो दूसरे में न होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2107)

सोने-चाँदी के बरतनों से कौन लोग मेहरूम रहेंगे?

हदीसः हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम (मुसलमान) सोने और चाँदी के बरतनों में न पियो और न ही उनके प्यालों (और बरतनों) में खाओ क्योंकि ये दुनिया में ख़ुदा के दुश्मनों के लिए हैं। (तुम पर उनका इस्तेमाल करना हराम है। यह) तुमको आख़िरत (जन्नत) में मिलेंगे। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 5426)

जन्नत में शहीदों की ख़ातिर-तवाज़ो के बरतन

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं नबी करीम सल्ल0 को अच्छे ख़्वाब पसन्द आते थे। पस जब कोई शख़्स कोई ख़्वाब देखता और उसकी ताबीर का इल्म न होता तो वह नबी करीम सल्ल0 से उसकी ताबीर मालूम करता था। अगर उसका ख़्वाब अच्छा होता तो आप उसके ख़्वाब को पसन्द करते थे चुनाँचे एक औरत हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैंने देखा है कि जैसे मैं दाखिल हुई और मैंने एक धमाके की आवाज सुनी जिससे जन्नत गूज़ उठी तो मैंने देखा फ़लाँ फ़लाँ के बेटे को लाया गया है। यहाँ तक कि उसने बारह आदमी गिन दिये जिनको नबी करीम सल्ल0 ने पहले से किसी जगह एक फ़ौज के दस्ते में भेज रखा था। उनको (जन्नत में) इस हालत में लाया गया कि उनके कपड़े ग़ुबार से भरे हुए थे। गर्दन की रगों से ख़ून के फ़व्वारे फूट रहे थे।

हज़रत अनस फ़रमाते हैं उनके लिए कहा गया कि उनको नहरे बीदख़ की तरफ़ ले जाओ। चुनाँचे उनको उसमें ग़ोता दिया गया। जब वे उससे बाहर निकले हैं तो उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह रोशन नज़र आ रहे थे। वह औरत कहती है कि फिर सोने की कुर्सियाँ लायी गई जिन पर ये हज़रात बैठे। फिर एक बड़ा प्याला लाया गया जिसमें ताज़ा खजूरें थीं। चुनाँचे उन्होंने उससे खाया। पस जितना उन्होंने चाहा ताज़ा खजूरों से खा लिया। फिर वे जिस तरफ़ को उलटते-पलटते थे और जो मेवे चाहते थे उससे खाते थे। मैंने भी उनके साथ खाया।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उसके बाद उस

फ़ौजी दस्ते से एक शख़्स ख़ुशख़बरी लेकर आया और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे साथ ऐसा-ऐसा मामला पेश आया है और फ़लाँ-फ़लाँ आदमी शहीद हो गये, यहाँ तक कि उसने बारह आदमी गिना दिये जिनको उस औरत ने गिना था। नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया उस औरत को मेरे पास बुला लोओ। जब वह हाज़िर हो गयी तो आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया तुम अपना ख़्वाब इस (ख़ुशख़बरी सुनाने वाले) के सामने दोहराओ। उसने दोहरा दिया। उस शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! वाक़ई ऐसा ही हुआ है जैसा इस औरत ने बयान किया है। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 135)

जन्नत के फल

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जब कभी ये लोग उन जन्नतों में किसी फल की ग़िज़ा दिये जाएँगे तो कहेंगे (हर बार) यह तो वही है जो हमको इससे पहले मिला था, और उनको (दोनों बार का फल) मिलता-जुलता मिलेगा।

(सूरः ब-क़रह् आयत 25)

तर्जुमाः और कसरत से मेवे होंगे जो न ख़त्म होंगे (जैसे दुनिया के मेवे मौसम ख़त्म होने से ख़त्म हो जाते हैं) और न रोक-टोक होगी (जैसे दुनिया में बाग़ वाले उसकी रोक-थाम करते हैं)

(सूरः वाक़िआ आयत 32 से 33)

तर्जुमाः उन दोनों बाग़ों में मेवे और खजूरें और अनार होंगे।

(सूरः रहमान आयत 68)

तर्जुमाः और उनके लिए वहाँ हर तरह के फल होंगे।

(सूरः मुहम्मद आयत 15)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से कुछ हज़रात मज़कूरा पहली आयत की तफ़सीर में इरशाद फ़रमाते हैं कि जन्नतियों को जन्नत में जो फल मिलेंगे वे उनको देखकर कहेंगे कि यह तो हम दुनिया में दिये जा चुके हैं, हालाँकि उनको रंग और देखने में मिलते-जुलते मिलेंगे, ज़ायके में उन जैसे नहीं होंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1882)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो कुछ जन्नत में है उसमें से दुनिया में सिर्फ़ उसके नाम ही हैं। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1883)

अल्लाह तआला के इरशादः

तर्जुमाः उन दोनों बाग़ों में हर मेवे के जोड़े-जोड़े होंगे।

(सूरः रहमान आयत 52)

इसकी तफ़सीर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं दुनिया में कोई फल मीठा या कड़वा ऐसा नहीं है जो जन्नत में न हो, यहाँ तक कि इन्द्राईन(हन्ज़ल) भी होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1884)

हदीसः हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नतियों में से जो शख़्स उसका फल तोड़ेगा तो वहाँ पर वैसा ही फल दोबारा लगा दिया जाएगा। (मुस्नद बज़्ज़ार हदीस 3530)

जन्नत का अंगूर

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैं उससे एक गुच्छा तोड़ने गया ताकि तुम्हें दिखाऊँ लेकिन मेरे और उसके बीच रुकावट आड़ कर दी गयी। एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप हमें मिसाल से स्पष्ट करें कि (जन्नत का) अंगूर कितना बड़ा होगा? आपने इरशाद फ़रमाया उस डोल से बड़ा होगा जिसको तेरी माँ ने (बकरी वग़ैरह की खाल से) कभी काटकर तैयार किया हो। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 522)

गुच्छा

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु शाम मुल्क में तशरीफ़ फ़रमा थे तो (आपके) साथियों ने जन्नत का आपस में तज़किरा किया। आपने फ़रमाया जन्नत के गुच्छों में से एक गुच्छा यहाँ (मुल्क शाम) से लेकर ख़ीफ़ा (मदीने के क़रीब एक जगह) या सन्आ (जैसा कि इब्ने अबी दुनिया और तरग़ीब में है) जितना लम्बा है। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 522)

हदीसः कुसूफ़ की नमाज़ वाली हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास

रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमने आपको यहाँ इसी जगह पर किसी चीज़ को उठाते हुए देखा है, मगर फिर हमने देखा कि आप पीछे हो गये हैं। आपने फ़रमाया:

तर्जुमाः मैंने जन्नत को देखा है और उसके एक गुच्छे को पकड़ा है। अगर मैं उसको तोड़ लेता तो जब तक दुनिया क़ायम रहती तुम उससे खाते रहते। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 907)

फल की लम्बाई

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत के फलों में से (तक़रीबन) हर फल की लम्बाई बारह हाथ है। उनमें गुठली नहीं होगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1889)

अनार

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नत के अनारों में से एक अनार के चारों तरफ़ बहुत-से हज़रात बैठकर उससे खाया करेंगे। जब उनमें से किसी के सामने किसी चीज़ का ज़िक्र छिड़ेगा जिसकी उसको चाहत होगी तो वह उसको अपने हाथ में मौजूद पाएगा। जहाँ से वह खा रहा होगा। (तरग़ीब तरहीब जिल्द 4 पेज 528)

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने जन्नत में देखा तो उसके अनारों में से एक अनार पलान कसे हुए ऊँट की तरह (मोटा) था। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 6 पेज 150)

जन्नत के अनार का दाना दुनिया में

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनार के एक दाने को उठा लिया और उसको खा लिया। उनसे कहा गया आपने यह क्यों किया? फ़रमाया मुझे यह बात पहुँची है कि ज़मीन के हर अनार में जन्नत के दानों में से एक दाना डाला जाता है, शायद कि यह वही हो।(बुदूरे साफ़िरह हदीस 1892)

फ़ायदाः इस इरशाद को नबी करीम सल्ल0 से भी रिवायत किया

गया है। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 1893)

दुनिया के फलों की असल जन्नत से आई है

हदीसः हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को जन्नत से बाहर निकाला तो उनको जन्नत के फलों का तोशा अता फ़रमाया और हर चीज़ के बनाने (और तैयार करने) की तालीम दी। पस तुम्हारे ये फल जन्नत के फलों में से हैं सिवाय इसके कि ये ख़राब हो जाते हैं और जन्नत के फल ख़राब नहीं होंगे। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 1 पेज 56)

जन्नत के मेवे क़यामत में कौन खाएँगे?

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जो मोमिन किसी मोमिन को भूख की हालत में खाना खिलाये अल्लाह तआला उसको क़ियामत के दिन जन्नत के मेवों से खिलाएँगे। और जो मुसलमान किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाए अल्लाह तआला उसको 'रहीके़ मख़तूम' से पिलाएँगे। और जो मोमिन किसी मोमिन को जब उसके पास कपड़ा नहीं था कपड़ा पहनाएगा अल्लाह तआला उसको जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएँगे।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 2449)

फल खाने के हालात

हज़रत बरा दिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: जन्नत वाले जन्नत के फल खड़े होकर और बैठकर और लेटकर जिस हालत में चाहेंगे खाएँगे। (हादिल अरवाह पेज)

नीबू और अनार

हज़रत ख़ादिल बिन मअदान रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अनार और लीमूँ जन्नत के मेवों में से हैं। जन्नती उससे अनार या नीबू को जितना दिल चाहेगा खाएगा। फिर वह उसको जिस रंग में चाहेगा बदल जाएगा। (इब्ने अबी दुनिया पेज 113)

जन्नत का बाज़ार

मर्द व औरत के हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ौतरी

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार होगा जिसमें कस्तूरी के टीले होंगे। हर जुमे को जन्नती वहाँ जाएँगे और उत्तर की हवा चलेगी जो उनके चेहरों और कपड़ों पर पड़ेगी तो वे लोग हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ जाएँगे और अपने घर वालों की तरफ़ से हालत में लौटेंगे कि उनका हुस्न व ख़ूबसूरती बहुत बढ़ चुकी होगी। उनकी बीवियाँ उनसे कहेंगी क़सम है ख़ुदा की! हमारे बाद आप हज़रात हुस्न व ख़ूबसूरती में ख़ूब बढ़ गये हो। वे कहेंगे और तुम भी तो अल्लाह की क़सम! हमारे बाद हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ चुकी हो। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 284)

जन्नती अपनी शक्ल बदल सकेंगे

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें कोई ख़रीद व फ़रोख़्त न होगी बल्कि मर्द व औरतों की शक्लें होंगी। जब कोई मर्द किसी शक्ल को पसन्द करेगा तो वह उसमें दाख़िल हो जाएगा (और उस मर्द की वैसी ही शक्ल हो जाएगी) और वहीं पर हूरे-ऐन की महफ़िले होंगी जो ऐसी ऊँची और ख़ूबसूरत आवाज़ों में गाने गाएँगी कि वैसे गाने मख़्लूक़ात ने नहीं सुने होंगे। वे कहेंगीः

तर्जुमाः हम हमेशा ज़िन्दा रहेंगी कभी फ़ना न होंगी। हम नेमतों में पलने वाली हैं कभी ख़स्ताहाल न होंगी। हम राज़ी रहने वाली हैं (अपने शौहरों पर कभी) नाराज़ न होंगी। ख़ुशख़बरी और मुबारक हो उसको जो हमारा शौहर है और हम उसकी बीवियाँ हैं। (इब्ने अबी शैबा 13/100)

बाज़ार से लौटने के बाद शौहरों और बीवियों के जिस्मों की ख़ुश्बुओं में बढ़ौतरी

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

जन्नती (आपस में) कहेंगे कि चलो जन्नती की तरफ़ चलें। जब वे टीलों या पहाड़ों पर पहुँचेंगे फिर वापस अपनी बीवियों के पास लौटेंगे तो कहेंगे हम तो तुमसे ऐसी ख़ुशबू महसूस कर रहे हैं जो पहले तुम से नहीं आती थी जब हम तुम्हारे पास से गये थे? वे कहेंगी आप भी ऐसी ख़ुशबू के साथ लौटे हैं जो इससे पहले नहीं थी जब तुम हमारे पास से गये थे।

(हादिल हरवाह पेज 339)

बाज़ार की नेमतें

हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि उनकी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह तआला हमें और आपको जन्नत के बाज़ार में मिला दे। हज़रत सईद बिन मुसैयब ने अर्ज़ किया ऐ अबू हुरैरह! क्या जन्नत में बाज़ार भी होगी? फ़रमाया हाँ! मुझे जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बताया है कि जन्नत में एक बाज़ार होगा जिसको फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा। उसमें ऐसी-ऐसी नेमते होंगी जिनको आँखों ने नहीं देखा और न दिलों में उनका ख़्याल गुज़रा, और न ही उनको कानों ने सुना है। चुनाँचे ये जन्नती उस बाज़ार से जिस चीज़ को दिल चाहेगा ले लेंगे। उस बाज़ार में लोग एक-दूसरे से मुलाक़ात करेंगे यहाँ तक कि उन लोगों में से हर एक शख़्स उस शख़्स से भी मुलाक़ात कर सकेगा जो उसके ऊपर के दर्जे में होगा। जब यह उसके लिबास को देखेगा तो उसको घबराहट होगी। उसका ताज्जुब अभी ख़त्म न हुआ होगा कि उस (अदना जन्नती) पर भी वैसा ही लिबास पहना दिया जाएगा या उससे भी ज़्यादा खुबसूरत लिबास पहना दिया जाएगा इसलिए कि वहाँ किसी शख़्स के लिए मुनासिब न होगा कि वह जन्नत में ग़मगीन हो जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 49)

फ़ायदाः अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में यह इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और (वहाँ जन्नत में दाख़िल होकर) कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमसे (हमेशा के लिए रंज व) ग़म दूर किया। बेशक हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला बड़ा क़द्र-दान है, जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के स्थान में ला उतारा, जहाँ न हमको कोई तकलीफ़ पहुँचेगी और न हमको कोई ख़स्तगी पहुँचेगी।

(सूरः फ़ातिर आयत 34, 35)

हर वक़्त नेमत और शान व शौकत में बढ़ौतरी

हदीसः हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें कस्तूरी के टीले हैं जो बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हैं। जब जन्नती हज़रात उसमें दाख़िल होंगे तो अल्लाह तआला उन पर एक हवा चलाएँगें। उस हवा का नाम "मुसीरह" होगा जो उन पर मुश्क बरसायेगी। फिर जब ये हज़रात अपनी बीवियों के पास जाएँगे और उन पर पाकीज़ा ख़ुशबू और चमकने-दमकने वाली रंगीनियाँ ज़ाहिर हो रही होंगी (तो वे कहेंगी कि) तुम इतनी खुबसूरतियों के साथ तो हमसे रवाना नहीं हुए थे? वे कहेंगे और तुम भी तो अल्लाह की क़सम! हमारे सामने पाकीज़गी और हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ रही हो। फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से एक फ़रिश्ता मुनादी करेगा कि आप लोग अल्लाह के बन्दे और दोस्त हो, इसी तरह पर तुम्हारे लिए हर वक़्त नेमत और शान व शौकत में तजदीद (नयापन) की जाती रहेगी। (वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 61)

मियाँ-बीवी की पसन्दीदा शक्लें

हज़रत उबैद बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें जन्नती हज़रात के लिए ख़ूबसूरत शक्लों की मिसालें बनायी गई हैं। जन्नतियों कें में से जब कोई किसी शक्ल को पसन्द करेगा तो वह उसी शक्ल में हो जाएगा। फिर वह अपनी बीवी की तरफ़ लौटेगा जब वह उसको देखेगी तो कहेगी ऐ अल्लाह के दोस्त! मैंने आपको आज से ज़्यादा हसीन कभी नहीं देखा, आप कहाँ थे? वह कहेगा मैं अल्लाह के दोस्तों के साथ जन्नत के बाज़ार में था। अल्लाह तआला ने हमारे लिए उस बाज़ार में हसीन सूरतें जमा फ़रमायी थीं। हम में से हर एक आदमी ने जो सूरत अपने लिए पसन्द की वह उसी शक्ल में तब्दील होकर गया है। चुनाँचे मैंने भी अपने लिए एक सूरत पसन्द की जिसमें अब नज़र आ रहा हूँ। ऐ

अल्लाह की बन्दी! मैं तुम्हें कैसा लग रहा हूँ? वह कहेगी ऐ अल्लाह के वली! मैंने आज आप से ज़्यादा कोई चीज़ हसीन नहीं देखी, और वह जन्नती भी कहेगा कि क़सम ख़ुदा की! मैंने भी ऐ अल्लाह की बन्दी! तुम से ज़्यादा हसीन कोई नहीं देखा। वह कहेगी कि आपके चले जाने के बाद जन्नत के लिबासों और पहनने की चीज़ों में से कुछ पोशाकें अल्लाह तआला ने हमारे पास भेजीं थीं, और मुझे यह शक्ल व सूरत अता फ़रमाई। ऐ अल्लाह के दोस्त! अब आपको कैसी लग रही हूँ? वह कहेगा मैंने आज तुम से ज़्यादा हसीन कोई चीज़ नहीं देखी।

(वस्फ़ुल फ़िरदौस पेज 176)

बाज़ार का सामान

हदीसः अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हकम रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें कोई ख़रीद व बेच नहीं होगी। उसमें पोशाके होंगी, मोटा रेशम होगा, बारीक रेशम होगा, सादा रेशम होगा, बिछौने होंगे, उम्दा फ़र्श होंगे, जौहर (जवाहिरात) होंगे, याक़ूत होंगे, लटके हुए ताज होंगे। जन्नती हज़रात उनमें से जिस चीज़ को दिल चाहेगा ले लेंगे मगर फिर भी बाज़ार में कोई कमी नहीं आएगी।

उस बाज़ार में सूरतें होंगी जैसा कि मर्दों की ख़ूबसूरत सूरते हो सकती हैं। उनमें से हर सूरत के सीने पर यह लिखा होगा जो शख़्स यह तमन्ना करे कि उसका हुस्न मेरी सूरत जैसा हो अल्लाह तआला उसकी सूरत को मेरे हुस्न के मुताबिक़ बना देंगे। जो शख़्स तमन्ना करता हो कि उसके चेहरे का हुस्न मेरी सूरत के मुताबिक़ हो अल्लाह तआला उसकी सूरत को मेरे हुस्न के अनुसार कर देंगे। चुनाँचे जो शख़्स तमन्ना करेगा कि उसके चेहरे का हुस्न उस सूरत की तरह हो जाए तो अल्लाह तआला उसको उस सूरत के अनुसार कर देंगे। (वस्फ़ुल फ़िरदौस हदीस 177)

बाज़ार की तिजारत

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अगर अल्लाह तआला जन्नत वालों को तिजारत करने की

इजाज़त दें तो वे रेशम और इत्र की तिजारत करेंगे।

(तिबरानी सगीर जिल्द 1 पेज 249)

अल्लाह तआला का दीदार

अल्लाह का दीदार जन्नत की तमाम नेमतों से ज़्यादा महबूब होगा

हदीसः हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो चुके होंगे तो अल्लाह तआला उनसे इरशाद फ़रमाएँगे। कोई और नेमत चाहते हो तो मैं तुम्हें अता करूँ? वे अर्ज़ करेंगे क्या आपने हमारे चेहरे रौनक़दार नहीं फ़रमाएँ? क्या आपने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं किया और (क्या) दोज़ख़ से हमें नजात नहीं बख़्शी? रसूलुल्लाह सल्ल0 फ़रमाते हैं कि फिर अल्लाह तआला पर्दा हटाएँगे तो जन्नत वालों को कोई ऐसी नेमत नहीं दी गयी जो उनको अल्लाह तआला के दीदार से ज़्यादा पसन्द होगी। फिर आप सल्ल0 ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः अल्लामा क़ुरतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि इस हदीस में पर्दा हटाने का मतलब यह है कि उनकी आँखों के सामने के वह पर्दे और आड़ दूर कर दिये जाएँगे जो अल्लाह तआला का दीदार होने से अज़मत व जलाल समेत ज़ियारत कर सकेंगे। यह पर्दा मख़्लूक़ का अपना होगा न कि अल्लाह तआला के सामने होगा।

(तज़किरतुल क़ुरतबी जिल्द 2 पेज 492)

क़यामत के दिन अल्लाह तआला का दीदार

अल्लाह तआला का फ़रमानः

तर्जुमाः हरगिज़ नहीं! काफ़िर क़यामत के दिन अपने रब के सामने से रोक दिये जाएँगे। यानी अल्लाह तआला का दीदार नहीं कर सकेंगे। (सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन आयत 15)

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब क़यामत का दिन होगा तो अल्लाह तआला ख़ुद ज़ाहिर

होंगे। सारी मख़्लूक़ अल्लाह तआला का दीदार करेगी मगर काफ़िरों के सामने पर्दा कर दिया जाएगा। वे अल्लाह तआला का दीदार नहीं कर सकेंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2220)

इमाम शाफ़ई इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इस आयत में इस बात की दलील मौजूद है कि औलिया-अल्लाह क़यामत के दिन अपने रब का दीदार करेंगे।

अल्लाह तआला का दीदार निश्चित और यक़ीनी है

इमाम लालकाई रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत मुफ़ज़्ज़ल बिन ग़स्सान से नक़ल करते हैं कि मैंने हज़रत इमाम यहया बिन मुईन रहमतुल्लाहि अलैहि से सुना आपने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला के दीदार के बारे में सत्रह हदीसें आयी हैं जो सबकी सब सही दर्जे की हैं।

(किताबुस्सुन्नत लालकाई)

अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि यह बात नक़ल करके फ़रमाते हैं, मैं कहता हूँ कि अल्लाह तआला के दीदार के सुबूत में 1. हज़रत अनस 2. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह 3. हज़रत जरीर बिजली 4. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान 5. हज़रत ज़ैद बिन साबित 6. हज़रत सुहैब 7. हज़रत उबादा बिन सामित 8. हज़रत इब्ने अब्बास 9. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर 10. हज़रत इब्ने मसऊद 11. हज़रत लक़ीत बिन आमिर 12. हज़रत इब्ने अबी रज़ीन उक़ैली 13. हज़रत अली बिन अबी तालिब 14. हज़रत बिन हातिम 15. हज़रत अम्मार बिन यासिर 16. हज़रत फ़ुज़ाल बिन उबैद 17. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी 18. हज़रत अबू मूसा अश्अरी 19. हज़रत अबू बक्र 20. हज़रत बरीदा 21. हज़रत अबू उमामा 22. हज़रत आयशा 23. अम्मारा बिन रुबैबा 24. हज़रत सलमान फ़ारसी 25. अब्दुल्लाह बिन उमर 26. हज़रत उबई इब्ने कअब 27. हज़रत कअब बिन उजरह 28. और एक शख़्स जिसके नाम का ज़िक्र नहीं 29. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम इन सबसे रसूलुल्लाह सल्ल0 की हदीस बयान की गयी हैं। (हादिल अरवाह पेज 373)

हदीस की ये रिवायतें बहुत मज़बूत हैं इसलिए अल्लाह तआला का दीदार यक़ीनी है। इसका इनकार गुमराही बल्कि कुफ़्र है। और अल्लाह तआला की ज़ियारत होना बहुत-सी आयतों से भी साबित है। नीचे हम

उपरोक्त हदीसों में से कुछ रिवायतें नक़ल करते हैं।

नाबीना का इनाम अल्लाह का दीदार

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इस हदीस को हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से और उन्होंने अल्लाह तआला से नक़ल किया कि अल्लाह फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः ऐ जिब्राईल! उस बन्दे का क्या इनाम है जिसकी मैं (दुनिया में) दोनों आँखें ले लूँ? उन्होंने अर्ज़ किया आपकी ज़ात पाक है। हमें मालूम नहीं, मगर जितना आपने हमें इल्म अता फ़रमाया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया उसका इनाम यह है कि वह मेरे घर (जन्नत) में दाख़िल होगा और मेरे चेहरे का दीदार करेगा।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 2 पेज 302)

जन्नतियों को अल्लाह का सलाम

जन्नत की नेमतों में सबसे ज़्यादा मज़ा अल्लाह तआला के दीदार में आएगा

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती हज़रात अपनी-अपनी नेमतो में मज़े ले रहे होंगे कि अचानक उन पर एक नूर चमकेगा और वे अपने सर उठाएँगे तो अल्लाह तआला को देखेगे कि उसने ऊपर से उन पर झाँका होगा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगेः

तर्जुमाः ऐ जन्नत वालो! अस्सलामु अलैकुम। इसी के बारे में अल्लाह तआला का यह इरशाद हैः

तर्जुमाः उनको परवर्दिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (सूरः यासीन आयत 58)

हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखेंगे और वे अल्लाह तआला की तरफ़ देखेंगे। और जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ देखते रहेंगे जन्नत की किसी भी नेमत की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उनसे पर्दे में चले जाएँ। लेकिन

अल्लाह तआला का नूर और बरकत (का असर) उन पर उनके महलों में बाक़ी रहेगा (और अल्लाह तआला का ज़ाहिर होना और झाँककर देखना किसी जगह या किसी चीज़ में दाख़िल होने से पाक है)।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 5 पेज 466)

अल्लाह के दीदार में कोई शुब्हा नहीं

हदीसः हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम जनाब रसूलुल्लाहह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आपने चौदहवीं के चाँद की तरफ़ देखा और इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सुन लो! तुम जल्द ही (क़यामत और जन्नत में) अपने रब की ज़ियारत इसी तरह से करोगे जैसे इस चौदहवीं के चाँद को देख रहो हो, और इसके नज़र आने में तुमहें कोई तकलीफ़ और परेशानी महसूस नहीं करते। पस अगर तुम हिम्मत करो कि तुम फ़ज्र और अस्र की नमाज़ को न छूटने दो, इसकी पाबन्दी कर लो।

फिर हज़रत रज़ि० ने क़ुरआन पाक की यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः और तुम सूरज निकलने से पहले और सूरज छुपने से पहले अपने रब की तारीफ़ बयान करो। (सूरः तॉहा आयत 130)

यानी फ़ज्र और अस्र की नमाज़ अदा करो।

(मुसनद अहमद जिल्द 4 पेज 362)

अल्लाह के दीदार की लज़्ज़त के लिए हुज़ूर सल्ल० की दुआ

हदीसः हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ माँगा करते थेः

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से मरने के बाद सुकून की ज़िन्दगी की दुआ करता हूँ और आपके चेहरे मुबारक की तरफ़ निगाह करने की लज़्ज़त का सवाल करता हूँ। और आप से मुलाक़ात के शौक़ की दुआ करता हूँ बग़ैर किसी दुख-तकलीफ़ के, और बेराह करने वाले फ़ितने के।

(मुसनद अहमद जिल्द 5 पेज 191)

अल्लाह का दीदार मरने के बाद ही होगा

हदीसः हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु नबी पाक सल्ल0 से नक़ल फ़रमाते हैं कि आपने दज्जाल का ज़िक्र किया, फिर फ़रमायाः

तर्जुमाः तुम जान लो, तुम से वक़्त तक अपने परवर्दिगार का दीदार नहीं कर सकते जब तक कि तुम वफ़ात न पा लो।

(मुसनद अहमद जिल्द 5 पेज 324)

क़रीब से कौन दीदार करेंगे?

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियलल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले काफ़ूर के टीलों पर बैठकर हर जुमे को अपने रब का दीदार करेंगे। उसमें सबसे ज़्यादा क़रीब (से ज़ियारत करने) वाला वह आदमी होगा जो जुमे के दिन जल्दी जाएगा और सुबह को जल्दी उठता होगा। (हादिल अरवाह पेज 407)

आला दर्जे का जन्नती अल्लाह तआला का सुबह व शाम दीदार करेगा

हदीसः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा जो अपनी जन्नतों बीवियों, नेमतों, ख़िदमतगारों और तख़्तों को एक हज़ार साल के फ़ासले तक देखता होगा और उनमें से ज़्यादा रुतबे वाला शख़्स अल्लाह तआला के नज़दीक वह होगा जो अल्लाह तआला के चेहरे मुबारक का सुबह व शाम दीदार करेगा। फिर नबी करीम सल्ल0 ने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः उस दिन (क़यामत) में और जन्नत में बहुत-से चेहरे तरोताज़ा और ख़ुश होंगे, अपने परवर्दिगार की तरफ़ देखते होंगे।

(सूरः क़ियामह् आयत 22, 23)। (दुर्रे मन्सूर जिल्द 2 पेज 509)

अदना दर्जे के जन्नती का अल्लाह तआला का दीदार करने का हाल

हदीसः रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अदना दर्जे का जन्नती वह आदमी होगा कि जब वह जन्नत के दरवाज़े से दाख़िल होगा तो उसके ख़ादिम उसका स्वागत करेंगे और कहेंगे हमारे आक़ा का आना मुबारक हो! आपको इजाज़त अता हो गई तो आप हमसे मुलाक़ात फ़रमाएँ। फिर उसके लिए चालीस साल के सफ़र के बराबर क़ालीन बिछाए जाएँगे। फिर वह अपने दाएँ-बाएँ देखेगा और पूछेगा यह सब किसके लिए है? कहा जाएगा यह सब आपके लिए है यहाँ तक कि जब अपनी मन्ज़िल तक पहुँचेगा तो उसके सामने सुर्ख़ याक़ूत और सब्ज़ ज़बर्जद को पेश किया जाएगा जिसके सत्तर हिस्से होंगे और हर हिस्से में सत्तर बालाख़ाने होंगे, और हर बालाख़ाने के सत्तर दरवाज़े होंगे। कहा जाएगा तिलावत करते जाओ और बालाख़ानों में चढ़ते जाओ। चुनाँचे वह चढ़ेगा यहाँ तक कि अपनी बादशाहत के तख़्त पर विराजमान होगा और उसकी टेक लगाएगा। उस तख़्त की लम्बाई-चौड़ाई एक एक मील होगी। फिर उसके सामने फ़ौरन सोने के बरतन पेश होंगे। उनमें से कोई बरतन अपने दूसरे बरतन की तरह खाना नहीं रखता होगा। उनमें से आख़िर वाले की लज़्ज़त भी उसको वैसी ही मालूम होगी जैसी कि पहले वाले की मालूम होगी। फिर उसके सामने पीने की तरह-तरह की चीज़ें पेश की जाएँगी और उनसे अपनी इच्छा के अनुसार जितना चाहेगा ले लेगा। फिर ख़ादिम कहेंगे कि इसको इसकी बीवियों के लिए छोड़ दो। चुनाँचे ख़ादिम तो चले जाएँगे और फ़ौरन हूरों में से एक हूर अपने तख़्ते-शाही पर बैठी नज़र आएगी और उस पर सत्तर पोशकें होंगी, हर पोशाक का रंग दूसरी से अलग तरह का होगा। जन्नती उसकी पिंडली के गूदे को भी गोश्त, हड्डी और लिबासों के अन्दर से एक साल के अर्से तक (हुस्न व लज़्ज़त व पाकीज़गी की वजह से) देखता रहेगा।

फिर उस हूर की तरफ़ नज़र करेगा तो वह कहेगी मैं उन हूरों में से हूँ जो आपके लिए तैयार की गयी हैं। फिर वह जन्नती उस हूर की तरफ़ चालीस (साल) के अर्से तक देखता रहेगा, उससे नज़र नहीं हटाएगा। फिर

अपनी निगाह बालाख़ाने की तरफ़ उठाएगा तो उसमें पहली से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत हूर नज़र आएगी। वह कहेगी आपके नज़दीक हमारे लिए अभी वक़्त नहीं आया कि हम आपके कुछ हिस्सा पाएँ? उसके पास चालीस साल तक इस हालत में पहुँचेगा कि उससे अपनी निगाह को नहीं फेरता होगा। फिर जब उस तक हर तरह की नेमतों की बोहतात होगी और ये जन्नती समझेंगे कि अब उनसे अफ़ज़ल नेमत कोई नहीं रही तो उस समय अल्लाह तआला तजल्ली फ़रमाएँगे। और वे अल्लाह तआला के चेहरे मुबारक की तरफ़ निगाह करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ जन्नत के रहने वालो! मेरा कलिमा तय्यिबा पढ़ो। वे अल्लाह तआला को 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के साथ जवाब देंगे। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ दाऊद (अलैहिस्सलाम)! आप मेरी वैसी ही बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करें जिस तरह से दुनिया में किया करते थे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने रब की बुज़ुर्गी बयान फ़रमाएँगे। (हादिल अरवाह पेज 403)

अल्लाह के दीदार के वक़्त अम्बिया, सिद्दीक़ीन और शहीदों का सम्मान

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मेरे पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया जन्नत में एक वादी है जो सफ़ेद कस्तूरी को फैलाती है। जब जुमे का दिन होगा तो अल्लाह तआला 'इल्लिय्यीन' स्थान से अपनी कुर्सी पर नाज़िल होंगे, फिर उस कुर्सी के चारों तरफ़ नूर के मिम्बर स्थापित होंगे और अम्बिया-ए-किराम तशरीफ़ लाकर उन पर बैठेंगे। फिर उन मिम्बरों को (सोने की कुर्सियाँ) घेरे में लेंगी जिन पर जौहर के ताज सजाए गए होंगे। हज़रात सिद्दीक़ीन और शहीद लोग तशरीफ़ लाकर उनको ज़ीनत बख़्शेंगे। फिर बालाख़ानों वाले हज़रात तशरीफ़ लाएँगे और (कस्तूरी के) टीलों पर तशरीफ़ रखेंगे। अब उनके सामने (अल्लाह तआला) ज़ाहिर होंगे और इरशाद फ़रमाएँगे मैं हूँ वह ज़ात जिसने तुम्हारे साथ अपना वायदा पूरा किया, और तुम पर अपनी नेमत को मुकम्मल फ़रमाया। यह मेरी बुज़ुर्गी का मक़ाम है तुम मुझसे माँगो। चुनाँचे (ये

तमाम हज़रात) अल्लाह तआला से इतना तलब करेंगे कि उनकी रग़बत और शौक़ पूरा हो जाएगा।

उसके बाद इन हज़रात के लिए (इनामों के ऐसे दरवाज़े खुलेंगे जिनको न किसी आँख ने देखा होगा और न किसी इन्सान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा होगा। उनको ये नेमतें आईन्दा जुमे तक के लिए इनायत होंगी।) (फिर अल्लाह तआला) अपनी कुर्सी पर (अपनी शान के मुताबिक़) तशरीफ़ फ़रमा होंगे। इसके साथ ही शहीद और सिद्दीक़ भी तशरीफ़ ले जाएँगे। मेरा ख़्याल है कि आप हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने यह भी फ़रमाया है कि फिर बालाख़ानों वाले अपने बालाख़ानों में जो एक सफ़ेद मोती से बने होंगे, न उनमें कोई जोड़ होगा और न फटन होगी, में लौट जाएँगे, या ये सुर्ख़ याक़ूत से बने होंगे और सब्ज़ ज़बर्जद से बने होंगे। (उन्हीं में बालाख़ाने भी होंगे और उनके दरवाज़े भी होंगे) उनमें नहरें चलती होंगी और उनके (पेड़ों के) फल लटकते होंगे। उनमें उनकी बीवियाँ होंगी, ख़िदमतगार होंगे मगर सबसे ज़्यादा उनको जुमे के दिन के आने की तलब होगी (ताकि उनकी इज़्ज़त और रुतबे में और बढ़ौतरी हो) और अल्लाह तआला के दीदार का (भी) इज़ाफ़ा हो। (इसी लिए इस जुमे के दन को यौमे-मज़ीद कहा गया है)। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 553)

अल्लाह तआला की जन्नतियों से बातचीत

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला जन्नत वालों को पुकार कर फ़रमाएँगे जन्नत वालो! तो वो अर्ज़ करेंगे हम हाज़िर हैं हमारे परवर्दिगार! आओ और नेक-बख़्ती आपकी तरफ़ से है और ख़ैर आपके क़ब्ज़े में है। वह फ़रमाएगा क्या तुम राज़ी हो गये? वे अर्ज़ करेंगे हमें क्या हो गया हम क्यों राज़ी न होंगे जबकि आपने हमें इतना नवाज़ा है कि अपनी मख़्लूक़ में से इतना किसी को नहीं नवाज़ा। वह फ़रमाएगा मैं तुम्हें इससे बेहतर नेमत अता न करूँ? वे अर्ज़ करेंगे ऐ रब! इससे अफ़ज़ल कौनसी नेमत है? वह फ़रमाएगा आप सब हज़रात को अपनी रिज़ा और ख़ुशनूदी अता करता हूँ। अब के बाद (तुम पर) कभी नाराज़ नहीं हूँगा। (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 557)

जन्नतियों पर तजल्ली फ़रमा कर अल्लाह तआला का मुस्कुराना

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला (जन्नत में) मोमिनों की तरफ़ मुस्कुराते हुए तजल्ली फ़रमाएँगे। (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 1 पेज 305)

फ़ायदाः अल्लाह तआला के मुस्कुराने का अर्थ इल्मे अक़ायद के अनुसार यह है कि अल्लाह तआला जन्नत वालों पर अपने फ़ज़्ल, नेमत, इज़हारे शराफ़त को नाज़िल फ़रमाएँगे। (मुश्किलुल हदीस पेज 40)

कामिल नेमत क्या है?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं (अल्लाह तआला की) कामिल नेमत जन्नत में दाख़िल होना और जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार करना है। (हादिल अरवाह पेज 409)

अल्लाह तआला का दीदार किस तरह की जन्नत में होगा

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः बेशक जब अल्लाह तआला जन्नत वालों को जन्नत में और दोज़ख़ वालों को दोज़ख़ में दाख़िल कर चुकेंगे तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को जन्नती हज़रात के पास भेजेंगे। हज़रत जिब्राईल (पुकारकर) फ़रमाएँगे ऐ जन्नत वालो! आपका रब आपको सलाम फ़रमाता है और आपको हुक्म देता है कि तुम जन्नत के मैदान में उसके दीदार को निकलो। यह मैदान जन्नत का हमवार हिस्सा होगा, उसकी मिट्टी मुश्क की होगी और कंकर याक़ूत के होंगे और पेड़ हरे-भरे सोने के होंगे जिसके पत्ते ज़बर्जद के होंगे। चुनाँचे जन्नत वाले हज़रात ख़ुशी और सुरूर के साथ सलामती और ग़नीमत में निकलेंगे। उनको अल्लाह तआला की शान व शौकत और चेहरे मुबारक के दीदार के साथ सम्मानित किया जाएगा। यही अल्लाह तआला के वायदे का मुकाम होगा जिसको अल्लाह तआला पूरा फ़रमाएँगे।

उस वक़्त ये रब्बुल-आलामीन के चेहरे मुबारक के दीदार से आनन्दित होंगे और कहेंगे: आपकी ज़ात पाक है, हमने आपकी इबादत इस तरह से नहीं की जिस तरह से आपकी इबादत का हक़ था।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे मेरी शान और बड़ाई के लायक़ यह है कि मैंने तुम्हें अपने क़रीब जगह दी और अपने घर में रहने को दिया। (हाकिम जिल्द 4 पेज 560)

हज़रत दाऊद की ख़ूबसूरत आवाज़, अल्लाह का दीदार और माइदतुल्-ख़ुल्द

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती जन्नत में रहने लगेगें तो उनके पास एक फ़रिशता आकर कहेगाः अल्लाह तआला आप हज़रात को हुक्म दे रहे हैं कि तुम लोग उसकी ज़ियारत (दीदार) करो। जब सब हज़रात दीदार के लिए जमा हो जाएँगे तो अल्लाह तआला हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को हुक्म फ़रमाएँगे कि वह बुलन्द आवज़ से 'तस्बीह' और 'तहलील' अदा करें। फिर 'माइदतुल्-ख़ुल्द' को बिछाया जाएगा। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! माइदतुल्-ख़ुल्द क्या है? आपने इरशाद फ़रमाया कि उसके किनारों में से एक किनारा पूरब व पश्चिम के बीच के हिस्से से भी ज़्यादा बड़ा होगा। ये जन्नती उसमें से खाएँगे, फिर पियेंगे, फिर लिबास पहनेंगे, फिर कहेगे अब कोई बात बाक़ी नहीं सिर्फ़ अल्लाह तआला के मुबारक चेहरे का दीदार ही रह गया है। उस वक़्त अल्लाह तआला उनके सामने तजल्ली फ़रमाएँगे। जन्नती सज्दे में गिर पड़ेंगे मगर उनसे कहा जाएगा तुम अमल करने की जगह में नहीं रहते हो बल्कि इनाम व सम्मान की जगह में रह रहे हो। (इसलिए सज्दे से सर उठा लो और जन्नत की नेमतों में ख़ुश रहो)। (हादिल अरवाह पेज 342)

फ़ायदाः 'तस्बीह' अल्लाह तआला की पाकीज़गी बयान करने को कहते हैं जबकि 'तहलील' ला इला-ह इल्लल्लाहु कहने को कहते हैं।

अल्लाह तआला को सब मुसलमान देखेंगे

हदीसः हज़रत अबू रज़ीन (लक़ीत रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया

या रसूलुल्लाह! क्या हम सब अपने रब को क़यामत के दिन व्यक्तिगत तौर पर देखेंगे? आपने इरशाद फ़रमाया, हाँ! मैंने अर्ज़ किया इसकी क्या निशानी होगी? आपने इरशाद फ़रमाया कि क्या तुम में से हर एक निजी तौर पर चाँद को नहीं देखता? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया क्यों नहीं? आपने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला (तो इस चाँद से) बहुत ज़्यादा बड़ाई वाले हैं। (हादिल अरवाह पेज 395)

अल्लाह के दीदार में एक इनाम यह होगा

हदीसः हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती हज़रात काफ़ूर के टीलों पर जिसके दोनों किनारे नज़र न आएँगे, बैठकर हर जुमे को अल्लाह तआला का दीदार किया करेंगे। काफ़ूर के इस टीले पर एक नहर जारी होगी जिसके दोनों किनारे मुश्क के होंगे, उस पर लड़कियाँ होंगी जो बहुत ही ख़ूबसूरत आवाज़ में कुरआन की तिलावत करेंगी जिसको न अगले लोगों ने सुना है न पिछले लोग सुनेंगे। जब ये हज़रात अपने महलों की तरफ़ वापस जाने लगेंगे तो इनमें से हर शख़्स उन लड़कियों में से जिसको चाहेगा उसके हाथ से पकड़ ले जाएगा। फिर ये अपने घरों में जाने के लिए मोतियों के ढेरों से गुज़रेंगे। अगर अल्लाह तआला उनको उनके घरों तक पहुँचने की हिदायत न करें तो वे उन तक कभी न पहुँच सकें। ये उन नेमतों की वजह से होगा जो उनके लिए अल्लाह तआला ने हर जुमे को तैयार की होंगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2251)

अल्लाह के दीदार की शान व शौकत और इनामों की भरमार

हदीसः इमाम मुहम्मद बाक़र रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत में एक पेड़ है जिसका नाम तूबा है। उसके साए में तेज़-रफ़्तार सवार सौ साल तक चल सकता है। उसके पत्ते सब्ज़ चादरों के हैं। उसके फूल मुलायम उम्दा हैं। उसकी टहनियाँ बारीक और मोटे रेशम की हैं। उसके फल पोशाकें हैं। उसकी गोन्द ज़न्जबील और शहद

है। उसकी वादी सुर्ख़ याक़ूत और सब्ज़ ज़मर्रुद की है। उसकी मिट्टी मुश्क, अम्बर और ज़र्द काफ़ूर की है। उसकी घास चमकदार ज़ाफ़रान की है। उसकी ख़ुशबू की लकड़ी बग़ैर जलाने के ख़ुशबू देती है।

उसकी जड़ से सल्सबील चश्मा, मईन चश्मा और रहीक़ चश्मा फूटते हैं। उसकी जड़ जन्नतियों की मजलिसों की जगह है जहाँ वे एक-दूसरे से मुहब्बत का इज़हार करेंगे और उनके इकट्ठा होकर बातचीत करने की जगह है। चुनाँचे वे हज़रात इसी तरह से उसके साए में बातचीत में मशगूल होंगे कि उनके पास फ़रिश्ते हाज़िर होंगे और याक़ूत से पैदा-शुदा (ऊँट की) उम्दा सवारियों को खींचकर लाएँगे। फिर उन (ऊँटों) में रूह फूँक दी जाएगी (और वे ज़िन्दा हो जाएँगे)। उनकी बाँगें सोने की कड़ियों की होंगी, चमक-दमक और हुस्न की वजह से उनके चेहरे गोया कि चमकने वाले सितारे होंगे। उनकी ऊन लाल रेशम की होगी और सफ़ेद पत्थर की तरह मिलती-जुलती होगी। देखने वालों ने हुस्न और चमक-दमक में वैसी (सवारियाँ) नहीं देखी होंगी। ख़ुद से ताबेदार होंगे बग़ैर मशक़्क़ात के इताअत करेंगी। उन पर कजावे होंगे, क़ीमती मोती और याक़ूत के, उनको लुअ्लुअ् और मर्जान के नगीने जड़े होंगे। उनके सर की इड्डियाँ लाल सोने की होंगी। उनको ऐसा लिबास पहनाया जाएगा जो ताज्जुब में डालने वाला होगा।

ऐसी ख़ूबसूरत सवारियाँ (ये फ़रिश्ते) उनके लिए बिठाएँगे और उनसे कहेंगे आपका रब आपको सलाम कहता है और तुम्हारी नेमतों में बढ़ौतरी करना चाहता है ताकि तुम उसके दीदार (दर्शन) कर सको और वह तुम्हारी ज़ियारत करे। तुम उससे बातचीत करो और वह तुम से बातचीत करे। और वह अपने फ़ज़्ल के साथ और वुसअत के साथ तुम्हारे इनामों में तरक़्क़ी बख़्शे। उन हज़रात में से हर आदमी अपनी-अपनी सवारी पर सवार हो जाएगा और एक सीधी लाईन की शक्ल में चलेंगे। ऊँटनी का कान दूसरी ऊँटनी के कान से आगे न बढ़ेगा। ये जन्नत के पेड़ों में से जिस पेड़ के पास से गुज़रेंगे वह उनको अपने फल का तोहफ़ा पेश करेगा और उनके रास्ते से हट जाएगा। इस बात को नापसन्द करते हुए कि उनकी सफ़ न टूट जाए और कोई दोस्त दूसरे दोस्त से जुदा न हो जाए।

फिर जब ये अल्लाह तआला के सामने पेश होंगे तो वह इनके लिए

अपने मुबारक चेहरे को ज़ाहिर कर देंगे और इनके सामने तजल्ली फ़रमाएँगे अपनी अज़ीम महानता के साथ। इनका तोहफ़ा जन्नत में सलाम होगा। चुनाँचे ये अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! आप ही सलाम हैं और आप ही के लिए जलाल और इकराम का हक़ है। उनका रब उनसे फ़रमाएगा मैं ही सलाम हूँ और मेरी ही तरफ़ से सलामती है, और जलाल व इकराम मेरा ही हक़ है तुम्हारा आना मुबारक है मेरे बन्दो! जिन्होंने मेरी वसीयत की हिफ़ाज़त की और मेरे अहद की पासदारी की और पीछे मुझसे ख़ौफ़ खाया और मुझसे डरते रहे। वे अर्ज़ करेंगे हमें आपकी इज़्ज़त की क़सम! जिस तरह से आपकी क़द्र का हक़ है हमने वैसी क़द्र नहीं की और न ही आपका हक़ अदा किया। आप हमें सज्दा करने की इजाज़त अता फ़रमाएँ। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएँगे मैंने तुमसे इबादत करने की मशक़्क़त ख़त्म कर दी है और तुम्हारे बदनों को राहत में कर दिया है। वह ज़माना लम्बा हो गया है जो तुमने अपने बदनों को (नमाज़ व इबादत वग़ैरह में) खड़े रखा और चेहरों को झुकाया। अब तुम मेरे ऐश मेरी रहमत और शान व शौकत की मन्ज़िल तक पहुँच चुके हो। अब तुम जो चाहे मुझसे माँगो, मेरे आगे तमन्ना करो, मैं तुम्हारी तमन्नाएँ पूरी करूँगा। आज मैं तुम्हारे नेक आमाल के अनुसार इनाम व सम्मान से नहीं नवाज़ूँगा बल्कि अपनी रहमत शान व शौकत और वुस्अत व जलाल के अनुसार अता करूँगा।

चुनाँचे जन्नती हज़रात ख़्वाहिशें करने और तोहफ़े और भेंट की वसूली में मसरूफ़ रहेंगे यहाँ तक कि उनमें सबसे कम दर्जे का जन्नती जब से अल्लाह तआला ने दुनिया बनायी है क़यामत तक की तमाम दुनिया के बराबर तमन्ना करेगा। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएँगे तुमने अपनी इच्छाओं में कभी काफ़ी कसर छोड़ी है, जो कुछ तुमने माँगा और कामना की है वह सब तुम्हें प्रदान करता हूँ। तुमने जो अपनी इच्छाओं में कमी छोड़ी है उसका (और) इज़ाफ़ा करता हूँ। अब तुम उन इनायतों और आतियो की तरफ़ देखो जो तुम्हारे रब ने तुम्हें अता किये हैं।

बड़े ऊँचे-ऊँचे और बुलन्द कुब्बे होंगे और मोतियों और मर्जान के बालाख़ाने बने होंगे। उनके दरवाज़े सोने के होंगे। उनके मिम्बर ऐसे नूर के होंगे जो बालाख़ानों के दरवाज़ों और सहन को रोशन कर रहे होंगे।

सूरज की किरणों की तरह और कुछ और महल होंगे जो 'आला इल्लिय्यीन' में जुड़े होंगे, याक़ूत से बने होंगे। उनका नूर ख़ूब चमकता होगा। अगर अल्लाह तआला उनके नूर को बाते न करते तो वह निगाह की रोशनी छीन लेता। उन महलों में से जो याक़ूत से बने होंगे उनमें सफ़ेद रेशम बिछा होगा और जो सुर्ख़ याक़ूत से बना होगा। उसमें लाल रेशम बिछा होगा और जो सब्ज़ याक़ूत से बना होगा, उनमें बारीक सब्ज़ रेशम बिछा होगा और ज़र्द याक़ूत से बना होगा। उसमें पीला रेशम बिछा होगा। उसका लेप सब्ज़ ज़मर्रुद और लाल सोने और सफ़ेद चाँदी का होगा। उसकी दीवारें और सतून याक़ूत के होंगे। उसकी गुंबदी लुअ्लुअ् के गुंबद की होगी। उसके बुर्ज मर्जान के बालाख़ाने होंगे। जब वह अल्लाह तआला के इनामों की वसूली करके वापस होगे तो तुर्की घोड़ों (की तरह के टट्टू) सफ़ेद याक़ूत के बने हुए पेश किये जाएँगे जिनमें रूह फूँक दी गयी होगी। उन घोड़ों के एक तरफ़ हमेशा रहने वाले लड़के होंगे उनमें से एक हाथ में उस घोड़ें की लगाम होगी। उनकी लगामें सफ़ेद चाँदी की होंगी जिन पर मोतियों और याक़ूत जड़े होंगे। उनकी ज़ीनें तह-बतह बारीक और मोटे रेशम की होंगी। चुनाँचे ये घोड़े (टट्टू) उनको लेकर के चलेंगे और तेज़ रफ़तारी दिखाएँगे और जन्नत के बाग़ों की सैर करेंगे।

जब ये अपने घरों में पहुँचेंगे तो वहाँ वह सब कुछ मौजूद पाएँगे जो उनको उनके रब ने अता किया था और उन्होंने उसका सवाल और तमन्ना की थी। फिर अचानक उन महलों में से हर महल के दरवाज़े पर चार तरह के बाग़ होंगे। दो बाग़ बहुत-सी शाख़ों वाले होंगे और दो बाग़ गहरे हरे जैसे सियाह। फिर जब ये अपने घरों और ठिकानों में पहुँचेंगे और आराम से बैठेंगे तो उनसे उनका रब पूछेगा जिसका तुम्हारे रब ने तुमसे वायदा फ़रमाया था क्या तुमने उसको सच पाया? वे अर्ज़ करेंगे, जी हाँ हम राज़ी हो गये, आप भी हमसे राज़ी हो जाएँ। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुम मेरी रिज़ा ही से मेरे घर में पहुँचे हो, और मेरे चेहरे को देखा है और मेरे फ़रिश्तों से मुसाफ़ा किया है। पस मुबारक हो, मुबारक हो। यह कभी ख़त्म न होने वाली अता है। इसमें कोई नागवारी नहीं होगी। फिर उस वक़्त जन्नती कहेंगे।

तर्जुमाः सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमसे ग़म को दूर

किया है बेशक हमारा रब बख़्शिश करने वाला और क़द्र-दान है। जिसने हमे अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने वाली जन्नत में ठिकाना दिया। न तो हमें इसमें कोई परेशानी होगी और न इसमें हमें कोई थकावट पहुँचेगी। (सूरः फ़ातिर आयत 34, 35) (तरग़ीब व तरहीब जिल्द 4 पेज 546)

अल्लाह तआला को सबसे पहले अन्धे देखेंगे

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि सबसे पहले जो शख़्स अल्लाह तआला के चेहरे मुबारक का दीदार करेगा वह अन्धा होगा। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2258)

अल्लाह के दीदार के वक़्त जन्नत की सब नेमतें भूल जाएँगे

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला जन्नत वालों के सामने तजल्ली फ़रमाएँगे और जन्नती अल्लाह का दीदार करेंगे तो जन्नत की तमाम नेमतें भूल जाएँगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2259)

अ ज ब तेरी है ऐ मूहबूब सूरत
नज़र से गिर गये सब ख़ूबसूरत
तेरी निगाह ने मख़्मूर कर दिया
क्या मयकदे को जाऊँ तुझे देखने के बाद

सत्तर गुना हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ोतरी

हज़रत कअब अहबार रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं जब भी अल्लाह तआला जन्नत की तरफ़ देखते हैं तो फ़रमाते हैं कि तू अपने लोगों के लिए और बेहतर हो जा। वह पहले से कई गुना हसीन व ख़ूबसूरत हो जाती है यहाँ तक कि उसके अन्दर रहने वाले उसमें दाख़िल हों और दुनिया में जो दिन लोगों की ईद का होता है उसमें वे जन्नती भी जन्नत के बाग़ों में उसी मीयाद के अनुसार निकला करेंगे और उन पर जन्नती की पाकीज़ा ख़ुशबू जला करेगी। ये अपने परवर्दिगार से जिस चीज़ का सवाल करेंगे अल्लाह तआला वह सब कुछ उनको उनके हुस्न व ख़ूबसूरती वग़ैरह में सत्तर गुना ज़्यादा अता करेगा। फिर जब ये अपनी

बीवियों के पास लौटकर वापस आएँगे तो वे भी इसी तरह से हुस्न व ख़ूबसूरती में बढ़ चुकी होंगी। (हादिल अरवाह पेज 413)

अल्लाह का दीदार न होने से बेहोश होने वाले हज़रात

हज़रत बा-यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाहरु तआला बन्दों में कुछ ऐसे ख़ास बन्दे हैं, उनके सामने जन्नत में अल्लाह तआला के दीदार में रुकावट पड़ जाए तो वे उसी तरह से फ़रियाद करने लगें जिस तरह से दोज़ख़ी फ़रियाद करेंगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2263)

रोज़ाना दो बार देखने वाले कौन होंगे

इमाम अअ्मश रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में सबसे आला दर्जे पर वे लोग विराजमान होंगे जो अल्लाह तआला को सुबह व शाम देखा करेंगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2264)

कौनसा मुसलमान अल्लाह के दीदार से मेहरूम होगा

हज़रत यज़ीन बिन मालिक दमिश्क़ी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कोई बन्दा ऐसा नहीं जो अल्लाह तआला पर और क़यामत पर ईमान रखता हो मगर वह क़यामत के दिन अपनी आँखों से अल्लाह तआला का दीदार करेगा। वहाँ वह आलिम अल्लाह का दीदार नहीं कर सकेगा जो जुल्म का हुक्म करता हो, क्योंकि उसके लिए हलाल नहीं होगा कि वह अल्लाह तआला का दीदार कर सके, बल्कि वह अन्धा होगा।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2265)

रियाकार भी अल्लाह के दीदार से मेहरूम

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः जो शख़्स अल्लाह तआला से मुलाक़ात (और दीदार) की उम्मीद रखता है उसको चाहिये कि वह नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (सूरः कहफ आयत 110)

इस आयत के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैहि से सवाल किया गया तो आपने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स

अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) के चेहरे मुबारक का दीदार करना चाहता है उसको चाहिये कि वह नेक अमल करे, और उसकी किसी को ख़बर न करे। (यानी रियाकारी न करे)। (हादिल अरवाह पेज 414)

मैं ही अपना हिजाब हूँ वरना तेरे मुँह पर कोई नक़ाब नहीं

हज़रत अबू बक्र के लिए अल्लाह का खुसूसी दीदार

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला तमाम उम्मतियों के लिए आम तजल्ली फ़रमाएँगे और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के लिए ख़ास तजल्ली फ़रमाएँगे। (हादिल अरवाह पेज 398)

अल्लाह के दीदार के कुछ और तफ़सीली हालात

जो हज़रात अल्लाह तआला के दीदार और तजल्ली के कुछ और तफ़सीली हालात को जानना चाहते हैं तो वे हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम की किताब 'हादिल अरवाह' के बाब नम्बर पैंसठ का अध्ययन करें। उन्होंने उसमें साठ पृष्ठों पर मुश्तमिल तफ़सील से दलीलें और हदीसें बयान की हैं। हमने इस किताब में अल्लाह के दीदार के बारे में कुछ चुनी हुई दिलचस्प और जामे हदीसों को ज़िक्र कर दिया हैं (इमदादुल्लाह अनवर)

विभिन्न चीज़ें

अल्लाह तआला क़ुरआन सुनाएँगे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बरीदा फ़रमाते हैं कि (आला दर्जे के) जन्नती जन्नत में रोज़ाना दो बार अल्लाह तआला के दीदार से सम्मानित हुआ करेंगे और अल्लाह तआला उनके सामने क़ुरआन पाक पढ़कर सुनाएँगे और क़ुरआन सुनने वालों में से हर जन्नती अपनी उस जगह पर बैठा होगा जहाँ वह बैठा करता होगा। हीरे, याक़ूत, ज़बर्जद, सोने और ज़मर्रुद के मिम्बरों पर अपने-अपने आमाल के दर्जों के मुताबिक बैठेंगे और उस क़िराअत (क़ुरआन पढ़ने) से उनकी आँखें ठंडी होंगी, और उससे बढ़कर कोई अज़मत (शान और बड़ाई) वाली और हसीन

चीज़ नहीं सुनेंगे। उसके बाद वे अपनी सवारियों पर बैठकर अपनी खुश आँखों के साथ ऐसी ही कल तक के लिए वापस लौट आया करेंगे।

(हादिल अरवाह पेज 328)

अल्लाह तआला की और जन्नतियों की आपस में बातचीत

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: यक़ीनन जो लोग मुआवज़ा (यानी दुनियावी नफ़ा) ले लेते हैं उस अहद के मुक़ाबले में जो (उन्होंने) अल्लाह तआला से किया (जैसे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर ईमान लाना) और अपनी क़स्मों के (मुक़ाबले में जैस बन्दों के हुकूक़ और मामलात के बाब में क़सम खा लेना) उन लोगों को कुछ हिस्सा आख़िरत में (वहाँ की नेमत का) न मिलेगा, और न खुदा तआला उनसे (मेहरबानी का) कलाम फ़रमाएँगे और न उनकी तरफ़ (मुहब्बत की नज़र से) देखेंगे, क़यामत के रोज़, और न उनको (गुनाहों से) पाक करेंगे, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब

(तजवीज़) होगा।(सूरः आलि इमरान आयत 77)

फ़ायदाः इस उपरोक्त लोगों से चूँकि अल्लाह तआला नाराज़ होंगे इसलिए उनसे मुहब्बत से बात नहीं करेंगे, और जन्नत वालों से चूँकि राज़ी होंगे इसलिए उनसे बात करेंगे। यह बात उपरोक्त आयत से साबित होती है।

अल्लाह तआला जन्नतियों को सलाम करेंगे

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: उनको परवर्दिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (सूरः यासीन आयत 58)

हज़रत जाबिर की हदीस में है कि जन्नती हज़रात के सामने अल्लाह तआला झाँक कर उनको फ़रमाएँगे "अस्सलामु अलैकुम या अहलल् जन्नति" (ऐ जन्नत वालो! तुमपर सलाम हो)।(हादिल अरवाह पेज 424)

इस बारे में और ज़्यादा तफ़सील 'अल्लाह तआला का दीदार' के अध्ययन में पढ़ें।

अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बागों का वायदा किया है जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। और उम्दा मकानों का जो उनमे हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे, और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी सबसे बड़ी चीज़ है, यह बड़ी कामयाबी है। (सूरः तौबा आयत 72)

अल्लाह की रज़ामन्दी सबसे बड़ी नेमत होगी

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: अल्लाह तआला जन्नत वालों से फ़रमाएँगे ऐ जन्नत वालो! वे अर्ज़ करेंगे हम हाज़िर हैं और नेक-बख़्ती आप ही की तरफ़ से है। अल्लाह तआला पूछेंगे क्या तुम राज़ी हो गये? वे अर्ज़ करेंगे: हमें क्या है, हम किस वजह से राज़ी न हों जबकि आपने हमें इतना अता फ़रमाया है कि अपनी मख़्लूक़ में से इतना किसी को अता नहीं किया। (अल्लाह तआला) फ़रमाएँगे क्या मैं आप हज़रात को इससे भी अफ़ज़ल नेमत अता न करूँ? वे अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! कौनसी नेमत इससे बढ़कर बाक़ी रह गयी है? अल्लाह तआला फ़रमाएँगे मैंने तुम्हारे लिए अपनी रिज़ा निछावर की। अब इसके बाद मैं कभी भी आप हज़रात पर नाराज़ नहीं हूँगा। (मुसनद अहमद जिल्द 3 पेज 88)

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमा: जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ मेरे बन्दो! तुम मुझसे कुछ माँगते नहीं कि मैं तुम्हारी (नेमतों में) बढ़ौतरी करूँ? वे अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब! जो कुछ आपने हमें नवाज़ा है उससे बेहतर क्या नेमत हो सकती है? अल्लाह फ़रमाएँगे मेरी रिज़ा और ख़ुशनूदी सबसे बड़ी नेमत है।

(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 385)

अल्लाह का दीदार किसी नेक अमल के बदले नहीं होगा

अल्लाह तआला जन्नत तो जन्नत वालों को उनके नेक अमल (ईमान और इबादतों) के बदले में इनायत फ़रमाएँगे, मगर अपने चेहरे मुबारक के दीदार को इज़ाफ़ी तौर पर अता फ़रमाएँगे। इसको किसी अमल के सवाल का बदला क़रार नहीं देंगे। चूँकि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: "लिल्लज़ी-न अह्सनुल् हुस्ना व ज़ियादतुन्" में "लिल्लज़ी-न अह्सनुल् हुस्ना" से मुराद तो जन्नत है और "व ज़ियादतुन्" से मुराद अल्लाह तआला का दीदार है। इस दीदार को "ज़ियादतुन्" इय लिए कहा क्योंकि यह "ज़ियादतुन्' बहुत अज़ीम (बड़ी और शान वाली चीज) है। आमाल में से कोई चीज़ इसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। इसलिए कि यह जन्नत से भी अफ़ज़ल है।

अल्लाह तआला का दीदार दुनिया में क्यों नहीं कराया गया

अल्लाह तआला दुनिया में हमसे पर्दे में क्यों हैं जबकि क़ुरआन व हदीस में आया है कि हम आख़िरत में उसके दीदार से सम्मानित होंगे। दुनिया में भी अल्लाह तआला की ज़ियारत (दीदार) होती तो क्या ही अच्छा होता?

इसकी आलिमों ने बहुत-सी वजहें (कारण) लिखी हैं:

1. दुनिया में इसलिए दीदार नहीं कराया ताकि बन्दे के शौक़ और मुहब्बत में और ज़्यादा बढ़ौतरी हो जैसा कि कहा गया है कि वतन में वापसी का मज़ा लम्बे समय तक सफ़र में रहने के बाद ही आता है।
2. एक वजह अल्लाह तआला के डर और ख़ौफ़ में बढ़ौतरी कराना मक़सूद है। (यानी बन्दा अल्लाह से डरे और बुरे कामों से बचे)।
3. ताकि चाहने वालों को न चाहने वालों पर बरतरी हासिल हो।
4. अगर उनसे पर्दा उठा दिया जाता और वे दुनिया में ही उसका दीदार कर लेते तो वे अल्लाह तआला के जमाल में ही डूब जाते और अपने आप से और दुनिया में नेक आमाल की तरक़्क़ी की प्राप्ति से लापरवाह हो जाते। आपने अज़ीज़े मिस्र की उन औरतों को (जिन्होंने उसको हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर फ़रेफ़्ता हो पर उंगली उठायी थी) हर एक को एक-एक छुरी दी और दूसरी तरफ़

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि उनके सामने निकलो और औरतों को कहा कि लीमूँ काटों। उस समय में जब उन्होंने हज़रत यूसुफ़ के हुस्न को देखा तो अपने आपको भूल गईं यहाँ तक कि अपने हाथों को छुरियों से काट बैठीं और तकलीफ़ का ज़र्रा बराबर एहसास न हुआ। तो जब उनकी यह हालत मख़्लूक़ को देखने से हुई, तुम्हारा क्या गुमान है जब तुम ख़ालिक़ के जमाल को देखोगे तो तुम्हारा क्या हाल होगा।

5. फ़ना होने वाला बाक़ी रहने वाली ज़ात को कब देख सकता है। और यह बात ज़ेहन में बैठा लो कि अल्लाह तआला पर्दे में नहीं है अगर वह पर्दे में हो तो इसका मतलब यह है कि किसी चीज़ ने उसको छुपा रखा है (और छुपाने वाली चीज़ के लिए ख़ुदा की अज़ीम ज़ात को छुपाने की कैफ़ियत हासिल हो गयी और यह बात बिल्कुल ग़लत है)। हालाँकि अल्लाह तआला के लिए न तो कोई सम्त (दिशा) है और न कोई मकान, बल्कि ऐ देखने वाले तू ही हिजाब (पर्दे) में है (कि अल्लाह तआला ने तेरे अन्दर दुनिया में ऐसी ताक़त नहीं रखी कि तू उसको देख सके)।(कन्ज़ुल मैदफ़ून पेज 142)

फ़रिश्ते अल्लाह तआला का दीदार करेंगे?

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि ने ज़िक्र किया है कि कुछ इमामों की राये में इस बात का ज़िक्र आया है कि अल्लाह तआला का दीदार सिर्फ़ मोमिन इनसानों के साथ ख़ास है। फ़रिश्ते अल्लाह तआला का दीदार नहीं कर सकेंगे। उन हज़रात ने अल्लाह तआला के इरशादः "ला तुदरिकुहुल् अब्सारु" से नतीजा निकाला है कि उसको आँखें नहीं देख सकती यह आयत आम है जिसको मोमिनों के हक़ में दूसरी आयत की वजह से ख़ास किया गया है जिससे मालूम हुआ कि फ़रिश्ते न देखने वाली आयत के उमूम में दाख़िल हैं, जबकि इमाम बैहक़ी रह0 न इससके ख़िलाफ़ लिखा है। चुनाँचे आप "किताबुर्-रुअयत" में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया, उनमें से बहुत-से ऐसे हैं जिनको अल्लाह तआला ने

जब से पैदा किया है हाथ जोड़े खड़े हैं और अल्लाह तआला के चेहरे मुबारक को देख-देखकर "सुब्हान-क" कह रहे हैं। (यानी ऐ अल्लाह! आपकी ज़ात तमाम ऐबों और कमियों से पाक है)।

(हादिल अरवाह पेज 407)

फ़रिश्ते क़यामत के दिन अल्लाह का दीदार करेंगे

हदीसः हज़रत अदी बिन अर्तात रहमतुल्लाहि अलैहि एक सहाबी से रिवायत करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जिनके कन्धे के गोश्त ख़ौफ़ के मारे काँपते हैं। उनमें से कोई फ़रिश्ता ऐसा नहीं कि उसकी आँखों से कोई आँसू निकले मगर (फ़रिश्तों की अधिकता की वजह से) वह खड़ा होने की हालत में तस्बीह पढ़ने वाले किसी न किसी फ़रिश्ते पर जा गिरता है। और कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जब से अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है तब से वे सज्दे में हैं। उन्होंने कभी सर नहीं उठाया और न क़यामत तक सर उठाएँगे। और कुछ फ़रिश्ते लाईन से खड़े हैं जो अपनी लाईनों से कभी नहीं हटे और न क़यामत तक हटेंगे। जब क़यामत का दिन होगा तो अल्लाह तआला उनके सामने ज़ाहिर होंगे तो ये अल्लाह तआला का दीदार करेंगे और कहेंगे कि आपकी ज़ात पाक है, जिस तरह से आपके लायक़ था हमने उस तरह से आपकी इबादत नहीं की। (हादिल अरवाह पेज 409)

हज़रात अम्बिया-ए-किराम और औलिया-अल्लाह का दीदार

हदीसः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक शख़्स नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बोला या रसूलुल्लाह! मैं आपसे अपनी जान और बीवी बच्चों से ज़्यादा मुहब्बत करता हूँ और जब मैं घर में होता हूँ और आपको याद करता हूँ तो मुझसे सब्र नहीं होता, यहाँ तक कि मैं हाज़िर होकर आपकी ज़ियारत कर लेता हूँ लेकिन जब मैं अपनी मौत को और आपके इन्तिक़ाल को याद करता हूँ और इसको जानता हूँ कि जब आप जन्नत में दाख़िल होंगे तो आपका दर्जा अम्बिया-ए-किराम के साथ होगा इसलिए मुझे डर है कि मैं जन्नत में

दाख़िल हुआ तो आपको नहीं देख सकूँगा। नबी करीम सल्ल0 ने उन सहाबी को इस बात का कोई जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम यह आयत लेकर उतरे

तर्जुमाः और जो शख़्स अल्लाह और रसूल का कहना मानेगा (चाहे ज़्यादा इबादत करने से ऊँचा दर्जा हासिल न कर सके) तो ऐसे लोग भी (जन्नत में) उन हज़रात के साथ होंगे जिनपर अल्लाह ने (कामिल) इनाम (दीन, अपनी नज़दीकी और क़बूलियत का) फ़रमाया है। यानी अम्बिया (अलैहिस्सलाम) और सिद्दीक़ीन (जो कि अम्बिया की उम्मत में सबसे ज़्यादा दर्जे के होते हैं जिनमें कमाले बातिनी भी होती है, जिनको उर्फ़ में औलिया-अल्लाह कहा जाता है) और शहीद (जिन्होंने दीन की मुहब्बत में अपनी जान दे दी) और नेक लोग (जो शरीअत पर पूरी तरह चलने वाले होते हैं, वाजिबात में भी और मुस्तहब्बात में भी, जिनको नेक-बख़्त दीनदार कहा जाता है) और ये हज़रात (जिसके साथी हों), बहुत अच्छे साथी हैं। (सूरः निसा आयत 69-तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, मौलाना अशरफ़ थानवी)

यार-दोस्तों और रिश्तेदारों से मुलाक़ातें और उनकी सवारियाँ

जन्नती की जन्नतियों और दोज़ख़ियों से मुलाक़ात

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः फिर (जब सब लोग एक जलसे में जमा होंगे तो) उन (जन्नत वालों) में से एक कहने वाला (मजलिस वालों से) कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मुलाक़ाती था। (मुझसे ताज्जुब के तौर पर) कहा करता था कि क्या तू (मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होकर उठने के) मानने वालों में से है? क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम (दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे और ज़िन्दा करके) जज़ा व सज़ा दिये जाएँगे (यानी वह आख़िरत का इनकार करने वाला था इसलिए ज़रूर वह दोज़ख़ में गया होगा। अल्लाह तआला का) इरशाद होगा कि (ऐ जन्नत वालो) क्या तुम झाँक कर (उसको) देखना चाहते हो? (अगर चाहो तो तुमको इजाज़त है)। सो वह शख़्स (जिसने किस्सा बयान

किया था) झाँकेगा तो उसको वह जहन्नम के दरमियान में (पड़ा हुआ) देखेगा। (उसको वहाँ देखकर उससे) कहेगा कि खुदा की क़सम! तू तो मुझको तबाह ही करने को था (यानी मुझको भी आख़िरत का इनकारी बनाने की कोशिश किया करता था)। और अगर मेरे रब का (मुझ पर) फ़ज़्ल न होता (कि मुझको सही अक़ीदे पर क़ायम रखा) तो मैं भी (तेरी तरह) अज़ाब में गिरफ़्तार लोगों में होता। (और उसके बाद जन्नती मजलिस वालों से कहेगा कि) क्या हम सिवाय पहली बार मर चुकने के (कि दुनिया में मर चुके हैं) अब नही मरेंगे और न हमको अज़ाब होगा। (ये सारी खुशी के इस जोश में कही जाएँगी कि) अल्लाह तआला ने सब आफ़तों और कुलफ़तों से बचा लिया और हमेशा के लिए बेफ़िक्र कर दिया। (आगे अल्लाह तआला का इरशाद है कि जन्नत की जितनी जिस्मानी और रूहानी नेमतें ऊपर की आयत में बयान की गयी हैं) यह बेशक बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी (हासिल करने) के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिये। (यानी ईमान लाना और इताअत करनी चाहिये)। (सूरः साफ़्फ़ात आयत 50 से 61-तफ़सीर बयानुल कुरआन, मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

जन्नतियों का दुनिया की आप-बीतियों का आपस में जिक्र करना

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः वे (जन्नती) एक-दूसरे की तरफ़ ध्यान देकर बात करेंगे (और बात-चीत के बीच में) यह भी कहेंगे कि (भाई) हम तो इससे पहले अपने घर (यानी दुनिया में अपने आख़िरत के अन्जाम से) बहुत डरा करते थे, सो खुदा ने हमपर बड़ा एहसान किया और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया (और) हम इससे पहले (यानी दुनिया में) उससे दुआएँ माँगा करते थे (कि हमको दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में ले जाए। सो अल्लाह तआला ने दुआ क़बूल कर ली) वह वाक़ई बड़ा एहसान करने वाला, मेहरबान है। (सूरः तूर आयत 25 से 28)

इल्मी महफ़िलें भी क़ायम होंगी

अ ल्लामा इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि जब

जन्नत वाले आपस की आप-बीतियाँ एक-दूसरे को सुनाएँगे तो उनमें इल्म के मसाईल, कुरआन व हदीस के समझने और हदीसों पर गुफ़्तगू ज़्यादा क़रीने क़यास है। क्योंकि दुनिया में इसका आपसी तज़किरा खाने पीने और संभोग से ज़्यादा लजीज़ है, तो इसका जन्नत में ज़िक्र करना भी बहुत ही लज़ीज़ (और मज़ेदार) होगा। और यह लज़्ज़त सिर्फ़ इल्म रखने वालों के साथ ख़ास होगी। जो लोग इल्म वालों में से न होंगे वे उन महफ़िलों में शरीक होने वाले भी न होंगे। वल्लाहु अअ्लम।

(हादिल अरवाह पेज 489)

मुलाक़ात और बातचीत का अन्दाज़

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो वे अपने भाईयों (और मोमिनों और दोस्तों) की मुलाक़ात का शौक़ करेंगे। एक जन्नती के पलंग को लाकर के दूसरे जन्नती के पलंग के बराबर में रख दिया जाएगा। चुनाँचे वे दोनों आपस में बातें करते रहेंगे। इसने भी तकिया लगाया होगा और उसने भी तकिया लगाया होगा। ये दोनों हज़रात दुनिया में जो कुछ हुआ उसके बारे में बातें करते रहेंगे। उनमें से एक अपने दोस्त से कहेगा ऐ फ़लाँ! आपको मालूम है कि फ़लाँ दिन फ़लाँ और फ़लाँ जगह अल्लाह तआला ने हमारी बख़्शिश फ़रमायी जब हमने अल्लाह तआला से दुआ माँगी थी तो उसने हमें माफ़ कर दिया था। (लिसानुल मीज़ान जिल्द 3 पेज 91)

दीदार करने के लिए सवारियाँ

हदीसः हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती हज़रत याक़ूत की तरह-तरह की ख़ूबसूरत सवारियों पर बैठकर एक-दूसरे के दीदार को जाएँगे जबकि जन्नत में ऊँट और परिन्दे (या घोड़े) के अलावा कोई जानवर (सवारी का) नहीं होगा। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 335)

मुश्क का गुबार उड़ाने वाले ऊँट

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जन्नती हज़रात एक-दूसरे की मुलाक़ात (में जाने) के लिए भूरे रंग के ऊँट को इस्तेमाल करेंगे जिनपर पेड़ मीस की लकड़ी के कजावे होंगे। उसके पाँव के तलवे मुश्क का गुबार उड़ाते होंगे। उनमें के हर ऊँट की (ख़ाली लगाम) (ही) दुनिया और जो कुछ इसमें है, से बेहतर होगी।

(हादिल अरवाह पेज 335)

उम्दा घोड़े और ऊँट

हदीसः हज़रत शफ़ी बिन माते रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत की नेमतों में से एक यह है कि जन्नती हज़रात एक-दूसरे के दीदार और मुलाक़ात के लिए ऊँट और ख़ूबसूरत सवारियाँ इस्तेमाल करेंगे, और ये जुमे के दिन ज़ीन और लगाम वाले घोड़े पर सवार होकर आएँगे, जो न तो लीद करता होगा न पेशाब करता होगा। जहाँ अल्लाह तआला चाहेंगे। यह उसपर सवार होगा। बादल की तरह की कोई चीज़ उनके पास आयगी जिसमें ऐसी नेमतें होंगी जिनको न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है। ये जन्नती कहेंगे तुम हमपर बरसो तो वह उनपर बरसती रहेगी यहाँ तक कि बिल्कुल उनकी इच्छाओं के पूरा हो जाने पर रुकेगी।

फिर अल्लाह तआला एक हवा चलाएँगे जो मुश्क के टीले उखेड़ कर दाएँ-बाएँ रख देगी। फिर मुश्क (कस्तूरी) उड़कर जन्नतियों के घोड़ों की पेशानियों, चेहरों और उनके सरों में सजेगी। हर एक जन्नती के लिए जो कुछ उसका जी चाहेगा बहुत कुछ मिलेगा। और यह मुश्क उन तमाम चीज़ों में शामिल हो जाएगी यहाँ तक कि घोड़े में भी, इसके अलावा कपड़ों में भी। फिर ये जन्नती वापस मुड़ेंगे यहाँ तक कि जो कुछ अल्लाह तआला चाहेगा उन नेमतों की इन्तिहा को पहुँचेंगे कि अचानक एक औरत इन हज़रात में से किसी एक को पुकारेगी, ऐ ख़ुदा के बन्दे! क्या तुम्हें हमारी ज़रूरत नहीं? वह पूछेगा तू कौनसी नेमत है? तू कौन है? वह

कहेगी मैं तेरी दुल्हन हूँ और तेरी मुहब्बत हूँ। वह कहेगा मुझे मालूम नहीं तू कहाँ थी? वह कहेगी क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

तर्जुमा: सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं जो-जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने (जन्नत) में मौजूद है। यह उनको उनके आमाल का सिला मिला है।(सूर: सज्दा आयत 17)

वह कहेगा क्यों नहीं! मुझे मेरे रब की क़सम! पस शायद कि वह जन्नती उस मजमे के बाद चालीस साल तक इधर-उधर तवज्जोह नहीं करेगा और न उसको ऐसी कोई चीज़ उससे हटा सकेगी, इस हालत में वह नेमत और शान व शौकत में रहेगा। (हादिल अरवाह पेज 334)

शहीदों की सवारियाँ

हदीस: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से इस आयत के बारे में पूछा:

तर्जुमा: और सूर में फूँक मारी जाएगी तो तमाम आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएँगे मगर जिसको खुदा चाहे।

(सूर: ज़ुमर आयत 68)

ये कौन लोग होंगे अल्लाह तआला जिनके होश क़ायम रखना चाहेंगे? तो उन्होंने बताया कि ये शहीद होंगे। अल्लाह तआला उनको इस हालत में उठाएगा कि उन्होंने अपनी तलवारें अल्लाह तआला के अर्श के इर्द-गिर्द लटकाई होंगी। फ़रिश्ते उनसे जब मैदाने हश्र में मिलेंगे तो ये याक़ूत की उम्दा सवारियों पर सवार होंगे। उनकी लगामें सफ़ेद मोती की होंगी। कजावे सोने के होंगे। लगामों की रस्सियाँ बारीक और मोटे रेशम की होंगी और लगामें रेशम से ज़्यादा मुलायम होंगी। उनके क़दम मर्दों की नज़र की सीमा तक पड़ेंगी। ये अपने घोड़ों पर जन्नत की सैर करते होंगे। जब सैर-तफ़रीह लम्बी हो जाएगी तो कहेंगे चलो हमारे साथ परवर्दिगार की तरफ़, हम उसको देखें कि वह अपनी मख़्लूक़ के दरमियान किस तरह से फ़ैसला करते हैं। अल्लाह तआला उनको

देखकर (उनको खुश करने के लिए) हंस पड़ेंगे और जब अल्लाह किसी बन्दे की तरफ़ किसी मौके पर देखकर हंस पड़ें तो उससे (क़यामत के दिन आमाल का) (हिसाब व किताब नहीं होगा।

(हादिल अरवाह पेज 330)

आला दर्जे के जन्नती का घोड़ा

हदीसः हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से इरशाद फ़रमाते सुना हैः

तर्जुमाः जन्नत में एक पेड़ है जिसके ऊपर के हिस्से से पोशाकें निकलेंगी और निचले हिस्से से याक़ूत और जवाहिरात की ज़ीन और लगाम समेत सोने का घोड़ा निकलेगा। यह न तो लीद करेगा न पेशाब उसके कई पर होंगे। उसका क़दम नज़र की सीमा तक पड़ेगा। जन्नती उसपर सवार होंगे और जहाँ चाहेंगे यह उनको लेकर उड़ेगा। वह जन्नती जो उनसे निचले दर्जे में होंगा वह कहेगा ऐ रब किस अमल ने तेरे इन बन्दो इस शान व शौकत तक पहुँचाया है? उनसे कहा जाएगाः

1. ये लोग रात को नमाज़ पढ़ते थे जब तुम सो रहे होते थे।
2. ये लोग रोज़े में होते थे जबकि तुम खा रहे होते थे।
3. ये लोग सदक़ा-ख़ैरात करते थे जबकि तुम कन्जूसी करते थे।
4. ये लोग जिहाद करते थे जबकि तुम बुज़दिली दिखाते थे।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 5 पेज 336)

जन्नत के घोड़े और ऊँट

हदीसः हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या जन्नत में घोड़ा भी होगा, आपने इरशाद फ़रमाया अगर अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएँगे तू जब चाहेगा कि सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार हो और वह तुम्हें जन्नत में उड़ाता फिरे तो तू सवार होगा (और जन्नत की इस तरह सैर कर सकेगा)। एक और सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या जन्नत में ऊँट होगा? आपने उसको वैसा जवाब न दिया जैसा कि पहले सहाबी को दिया था बल्कि फ़रमाया अगर आपको अल्लाह तआला जन्नत में

दाख़िल फ़रमाएँगे तो आपके लिए जन्नत में वह सब कुछ होगा जिसको तुम्हारा दिल चाहेगा और तुम्हारी आँखों को लज़्ज़त मिलेगी।

(मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 352)

अल्लाह तआला के दीदार के लिए ले जाने वाला घोड़ा

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो उनके पास सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पेश होंगे जिनके पर भी होंगे। जो न तो लीद करेंगे न पेशाब। ये हज़रात उनपर सवार होंगे और ये घोड़े उनको उठाकर उड़ेंगे। अल्लाह तआला उनके सामने तजल्ली फ़रमायेंगे (यानी ज़ाहिर होंगे)। ये हज़रात अल्लाह तआला के दीदार से सम्मानित होते ही सज्दे में गिर जाएँगे। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएँगे अपने सर उठा लो क्योंकि यह अमल करने का दिन नहीं है। यह नेमतों इज़्ज़त व रुतबे पाने का दिन है। हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि वे जन्नती अपने सर उठाएँगे और अल्लाह तआला उनपर ख़ुशबू बरसायेंगे। फिर ये मुश्क के टीलों के पास से गुज़रेंगे तो अल्लाह तआला उन टीलों पर ऐसी हवा चलाएँगे कि वह उन जन्नती हज़रात को ख़ुशबू से भर देगी यहाँ तक कि जब अपने घर वालों की तरफ़ वापस लौटेंगे तो ये बाल खुले हुए मुश्क से भरे हुए होंगे।

(निहाया इब्ने कसीर जिल्द 2 पेज 515)

जन्नतियों के कुछ और हालात

जन्नती उलमा-ए-किराम के जन्नत में भी मोहताज होंगे

हदीसः हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले जन्नत में भी आलिमों के मोहताज़ होंगे, और वह इस तरह से कि जन्नती हर जुमे को अल्लाह तआला का दीदार करेंगे। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएँगे तुम जो चाहो तमन्ना करो। उस वक़्त ये उलमा-ए-किराम की तरफ़ मुतवज्जह होंगे और पूछेंगे कि हम

अपने रब के सामने किस चीज़ की इच्छा करें? वे बताएँगे कि तुम इस-इस तरह की इच्छा करो। चुनाँचे ये हज़रात जन्नत में उलमा-ए-किराम के उसी तरह से मोहताज़ होंगे जिस तरह से ये उनके दुनिया में मोहताज हैं। (लिसानुल मीज़ान जिल्द 5 पेज 55)

हज़रत सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि जन्नत वाले लोग जन्नत में उलमा-ए-किराम के मोहताज होंगे जिस तरह से वे दुनिया में उलमा के मोहताज होते हैं। (वह इस तरह से कि) उनके पास उनके रब तआला की तरफ़ से ऐलची हाज़िर होंगे और कहेंगे कि आप हज़रात अपने रब से (नेमतें) माँगें। वे कहेंगे कि हम नहीं जानते कि हम क्या माँगे। फिर उनमें से एक दूसरे से कहेगा चलो उन उलमा की तरफ़। जब हमें दुनिया में कोई मुश्किल मसला पेश आता था तब भी तो हम उनके पास जाया करते थे। फिर वे (उन उलमा के पास जाकर) कहेंगे कि हमारे पास हमारे रब की तरफ़ से ऐलची तशरीफ़ लाए हैं कि अल्लाह तआला हमें कुछ माँगने का हुक्म फ़रमाते हैं जबकि हमे इल्म नहीं कि हम क्या माँगे? अल्लाह तआला उलमा सामने (उन नेमतों का) इज़हार कर देंगे। उलमा उन जन्नत के अवाम को बताएँगे कि तुम ऐसा-ऐसा सवाल करो। चुनाँचे वे (वैसे ही) सवाल करेंगे और उनको वे चीज़ें अता की जाएँगी। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2191)

जन्नतियों की भाषा

जन्नतियों की भाषा अरबी होगी

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नती हज़रात जन्नत में हज़रत आदम के लम्बे क़द के बराबर अल्लाह तआला के हाथ के हिसाब से साठ हाथ के होंगे हज़रत यूसुफ़ के हुस्न पर होंगे। और हज़रत ईसा की तैंतीस साल की उम्र में होंगे। और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की भाषा (अरबी) पर होंगे। न तो जिस्म पर बाल होंगे न दाढ़ी होगी आँखों में सुर्मा लगाए गए होंगे।

(मुसनद अहमद जिल्द 5 पेज 243)

नोटः अल्लाह तआला का हाथ उसकी शान के एतिबार से है।

उसको किसी महसूस हाथ से मिसाल नहीं दी जा सकती। अगर हाथ से अल्लाह तआला की कुदरत मुराद ली जाए तो कुछ बड़ी बात नहीं जैसा कि इब्ने फ़ोरक रहमतुल्लाहि अलैहि ने "हाथ" से कुदरत का अर्थ लिया है। (मुश्किलुल हदीस इब्ने फ़ोरक)। (फिर मतलब यह होगा कि अल्लाह अपनी कुदरत से जितना उनका क़द मुनासिब समझेंगे उनको अता करेंगे।) इमाम ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत वालों की भाषा अरबी होगी। (हादिल अरवाह पेज 476)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसे ही नक़ल किया गया है। (मुस्तदरक हाकिम जिल्द 4 पेज 87)

हदीसः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अरब वालों से तीन कारणों से मुहब्बत रखो, क्योंकि मैं भी अरबी हूँ। कुरआन भी अरबी में है, और जन्नत वालों की (आपसी) भाषा भी अरबी में होगी। (मुस्तदरक हाकिम जिल्द 4 पेज 87)

फ़ायदाः अल्लामा क़रतबी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नती जब क़ब्रों से उठेंगे तो उनकी भाषा सुरयानी होगी और हज़रत सुफ़ियान बिन उऐना रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हमे यह बात पहुँची है कि लोग क़यामत के दिन जन्नत में दाख़िल होने से पहले सुरयानी भाषा बोलेंगे और जब जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो अरबी भाषा में बातचीत करेंगे। (सिफ़तुल जन्नत इब्ने कसीर पेज 193)

फ़ायदाः यह सुरयानी और अरबी भाषा बग़ैर सीखने के खुद-बखुद आ जाएगी।

मोमिनों और मुश्रिकों की औलाद

मोमिनों की औलाद अपने माँ-बाप के साथ होगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला मुसलमान आदमी की औलाद का दर्जा बुलन्द कर (के उनको आला दर्जे के जन्नती आदमी के दर्जे तक) पहुँचा देंगे हालाँकि वे अमल में उस जन्नती से कम होंगे, ताकि उसकी आँखों को ठंडा कर दें। फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ीः

तर्जुमाः यानी जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया (उन मोमिन बापों के सम्मान और उनको खुश करने के लिए) हम उनकी औलाद को भी (दर्जे में) उनके साथ शामिल कर देंगे। (इस शामिल करने के लिए) हम उन (जन्नत वालों जिनकी इन्होंने पैरवी की थी) के अमल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे। (सूरः तूर आयत 21)।(बुदूरे साफ़िरह पे 1714)

यानि यह न करेंगे कि उन आला दर्जे वाले जिनकी इन्होंने पैरवी की होगी, के कुछ आमाल लेकर उनकी औलाद को देकर दोनों को बराबर कर दें। जैसे मिसाल के तौर पर एक शख़्स के पास छह सौ रुपये हों और एक के पास चार सौ, और दानों को बराबर करना मक़्सूद हो तो उसकी एक सूरत तो यह हो सकती है कि छह सौ रुपये वाले से एक सौ रुपये लेकर उस चार सौ वाले को दे दिये जाएँ कि दोनों के पास पाँच-पाँच सौ हो जाएँ। और दूसरी सूरत जो करीमों (कृपा वालों) की शान के लायक़ है, यह है कि छह सौ वाले से कुछ न लिया जाए बल्कि उस चार सौ वाले को दो सौ रुपये अपने पास से दे दें और दोनों को बराबर कर दें। पस मतलब यह है कि वहाँ पहली वाली सूरत नहीं होगी।

मुश्रिकों की औलाद जन्नतियों की ख़ादिम होगी

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 से मुश्रिकों की (नाबालिग़) औलाद के बारे में पूछा। उनके गुनाह तो नहीं होंगे (क्योंकि वे नाबालिग़ होने की वजह से शरीअत के मुकल्लफ़ नहीं हुए थे) इसलिए उनको सज़ा तो नहीं दी जाएगी कि उनको दोज़ख़ में दाख़िल किया जाए। और उनकी नेकियाँ भी नहीं होंगी कि उनको जन्नत का मालिक बनाया जाए। (इसलिए वे कहाँ जाएँगे?) रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया, वे जन्नतियों के ख़ादिम होंगे। (तज़किरतुल क़रतबी जिल्द 2 पेज 516)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मैंने अपने रब से मुश्रिकों की औलाद को तलब किया तो

अल्लाह तआला ने उनको मुझे जन्नत वालों के ख़िदमतगार बनाकर अता फ़रमाया क्योंकि वे शिर्क तक नहीं पहुँचे थे जिस तरह से उनके माँ-बाप पहुँचे हैं, बल्कि ये उस अहद से जुड़े हुए हैं जो 'रूहों के आलम' में अल्लाह ने तमाम रूहों से लिया था कि 'क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ' और सब रूहों ने जवाब दिया था 'बेशक आप हमारे रब है'। तो इस तरह अभी बालिग़ होने से पहले इनकी मौत हो गयी है और ये एक तरह से उसी अहद से जुड़े हुए हैं। (नवादिरुल उसूल)

मोमिनों की औलाद की परवरिश कौन कर रहे हैं?

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मोमिनों की औलाद की जन्नत में इब्राहीम अलैहिस्सलाम कफ़ात (और परवरिश) कर रहे हैं। (मुसनद अहमद जिल्द 2 पेज 326)

फ़ायदाः हज़रत मकहूल रिवायत करते हैं कि मुसलमानों के बच्चे जन्नत के पेड़ पर सब्ज़ चिड़ियों की शक्ल में हैं और उनके अब्बा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनकी कफ़ालत (पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी अदा) करते हैं। (मोअजम सग़ीर तिबरानी)

हज़रत सुलैमान से रिवायत है कि मोमिनों के बच्चे जन्नत के एक पहाड़ में हैं। हज़रत इब्राहीम और (उनकी बीवी) हज़रत सारा उनकी परवरिश करते हैं। (तिबरानी सग़ीर)

हम शुरू ही से जन्नत में क्यों नहीं पैदा किये गये

हम शुरू ही से जन्नत में क्यों नहीं पैदा कियो गये? इस सवाल के आलिमों ने तीन जवाब दिये हैं:

1. नेमत की अज़मत (बड़ाई और शान) को पहचानना ज़रूरी है। अगर हम दुनिया में पैदा न किये जाते तो उन नेमतों की क़द्र व दर्जे से परिचित न होते।
2. ताकि हम अन्जामकार जन्नत में आला बदले के हक़दार बन सके

और ज़वाल (पतन) से सुरक्षित हो जाएँ।

3. ताकि जन्नत वालों को इज़्ज़त की तिजारत हासिल हो, न कि सवाल करने की ज़िल्लत। (और इज़्ज़त की तिजारत यह है कि हम दुनिया में शरीअत के अनुसार अल्लाह तआला को राज़ी करें और उससे इस फ़रमाँबरदारी के बदले में आख़िरत में जन्नत को हासिल करें।) (कन्ज़ुल मदफ़ून पेज 134)

जन्नत की ताबीरें

कभी-कभी अल्लाह तआला मोमिन को उसकी ईमानी बसीरत (समझ और नूर) के अनुसार और नेक कामों के अनुसार ख़्वाबों में जन्नत की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाते रहते हैं। नीचे वे ख़्वाब और उनकी ताबीरें ज़िक्र की जाती हैं जो अक्सर तौर पर मोमिन को नज़र आते हैं। चुनाँचे 'तर्जुमा कामिलुत्ताबीर' में है।

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि ख़्वाब में जन्नत का देखना हक़ तआला की तरफ़ से ख़ुशी और ख़ुशख़बरी है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

तर्जुमाः इसमें सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ।

(सूरः हिज्र आयत 46)

और अगर देखे कि जन्नत के मेवे लिये या किसी ने दिये और खाए तो दलील है कि जिस क़द्र मेवे खाए हैं उसी क़द्र इल्म व समझ और दीन की ख़सलत सीखेगा लेकिन फ़ायदा न उठाएगा।

और अगर कोई शख़्स ख़्वाब में हूरों को भी देखे तो दलील है कि मरने का वक़्त उसपर आसान होगा। और अगर देखे कि जन्नत में रह रहा लेकिन वीरान है तो दलील है कि बिगाड़ और गुनाह की तरफ़ माईल होगा।

और अगर ख़्वाब में देखे कि जन्नत उसपर बन्द कर दी गयी है तो दलील है कि उसके माँ-बाप उससे नाराज़ हैं। और अगर देखे कि जन्नत के पास जाकर वापस हुआ है तो यह दलील है कि मौत की बीमारी में गिरफ़्तार होगा लेकिन ठीक हो जाएगा।

और अगर देखे कि फ़रिश्ते हाथ पकड़कर उसको जन्नत में ले गये

हैं और वक़्त पर तूबा के साए में बैठा है तो दलील है कि दोनों जहान की मुराद पाएगा। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

तर्जुमाः उनके लिए ख़ुशख़बरी और अच्छा ठिकाना है।

(सूरः रअद आयत 29)

और अगर देखे कि उसको शराब और दूध के पीने से मना किया है तो यह उसके दीन की तबाही की दलील है। अल्लाह का फ़रमान है:

तर्जुमाः और जो शख़्स अल्लाह तआला के साथ शिर्क करेगा तो अल्लाह ने उसपर जन्नत को हराम कर दिया है। (सूरः मायदा आयत 72)

और अगर देखे कि जन्नत के मेवे उसको किसी ने दिये हैं तो दलील है कि उसको उसके इल्म से हिस्सा हासिल होगा।

और अगर देखे कि जन्नत में आग डाली है तो दलील है कि किसी के बाग़ से हराम की चीज़ खाएगा। और अगर देखे कि हौज़े कौसर से पानी पिया है तो दलील है कि दुश्मन पर फ़तह पाएगा। और अगर देखे कि उसको जन्नत का महल मिला है तो दलील है कि माशूक़ा या बाँदी उसको मिलेगी और उससे निकाह करेगा।

हज़रत जाबिर मग़रिबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि अगर देखे कि रिज़वान (जन्नत के दारोग़ा) उसके बराबर ख़ुश है तो दलील है कि किसी से ख़ुश होगा और नेमत पाएगा। अल्लाह पाक का फ़रमान है:

तर्जुमाः तुम पर सलाम हो, ख़ुश रहो, इसमें हमेशा के लिए दाख़िल हो। (सूरः ज़ुमर आयत 73)

और अगर देखे कि अच्छी बुलन्द जगह पर है कि जन्नत की सूरत है और वह जानता है कि यह जन्नत है तो दलील है कि इन्साफ़ करने वाले बादशाह के साथ या अमीर के साथ या बुज़ुर्ग आलिम के साथ हमनशीन रहेगा, और अगर देखे कि जन्नत की तरफ़ जाता है तो दलील है कि हक़ रास्ते पर रहेगा।

हज़रत जाफ़रे सादिक़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि ख़्वाब में जन्नत का देखना नौ वजहों पर है:

1.इल्म 2.दुनिया की बे-रग़बती 3.अल्लाह का ताल्लुक 4.ख़ुशी 5.ख़ुशख़बरी 6.अमन 7.ख़ैर व बरकत 8.नेमत 9.नेक-बख़्ती

अगर कोई शख़्स ख़्वाब में देखे कि जन्नत में है तो दलील है कि दोनों जहान की मुरादें पाएगा और उसके हाथ से बहुत-सी ख़ैरात होगी। अगर कोई इस्लाह करने वाला (सुधारक) देखे तो दलील है कि बीमारी या बला में मुब्तला होगा। चुनाँचे जन्नत वालों का सवाब पाएगा और आलिम होगा और लोग उसके इल्म से नफ़ा पाएँगे। (कामिलुत्ताबीर)

जन्नत की खेती और काश्तकारी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः और वहाँ (जन्नत में) वे चीज़ें मिलेंगी जिनको दिल चाहेगा और जिनसे आँखों को लज़्ज़त हासिल होगी (इसलिए अगर कोई जन्नत में काश्तकारी की इच्छा करेगा तो वह भी इस आयत की रोशनी में साबित होती है)। (सूरः ज़ुख़रुफ़ आयत 71)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 एक दिन कुछ बयान फ़रमा रहे थे। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल0 के पास एक देहाती आदमी भी बैठा था। (आपने फ़रमाया) जन्नतियों में से एक शख़्स अपने परवर्दिगार से खेती करने के लिए दरख़्वास्त करेगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएँगे तुमने जो चाहा है वह तुम्हें नहीं मिला? वह अर्ज़ करेगा क्यों नहीं! लेकिन मैं पसन्द करता हूँ कि काश्तकारी करूँ। वह काश्तकारी करेगा और बीज बोएगा तो वह फ़ौरन ही उग जाएगा और बराबर (खड़ा) हो जाएगा और काट लिया जाएगा, और उसका ज़ख़ीरा पहाड़ों की तरह ढेर की शक्ल में नज़र आएगा। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे ऐ इनसान! यह ले तुझे तो कोई चीज़ सेर नहीं कर सकती। यह (सुनकर) देहाती बोला या रसूलुल्लाह! वह (यानी जन्नत में खेती की इच्छा करने वाला) कोई क़ुरैशी या अन्सारी ही होगा क्योंकि यही हज़रात काश्तकारी करते हैं, हम लोग तो खेतों वाले हैं ही नहीं। रसूले ख़ुदा सल्ल0 (यह सुनकर) मुस्कुरा दिये।

(हादिल अरवाह पेज 234)

इस हदीस से साबित होता है कि अगर कोई जन्नती जन्नत में

काश्तकारी करना चाहेगा तो उसकी यह इच्छा भी पूरी होगी।

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जन्नत वाले जब जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो एक शख़्स खड़े होकर अर्ज़ करेगा या रब! आप मुझे खेती करने की इजाज़त दे दें तो उसको जन्नत में खेती की इजाज़त दी जाएगी। वह उसमें बीज बोएगा, अभी वह मुड़ा नहीं होगा कि उसकी बालें बारह हाथ की हो चुकी होंगी। अभी वह वहीं पर होगा कि (कटकर) पहाड़ों की तरह उसके ढेर लग जाएँगे। (बुदूरे साफ़िरह हदीस 2141)

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक शख़्स अपने तकिये की टेक लगाये लेटा हुआ होगा और अपने होंठ हिलाए बग़ैर अपने दिल में कहेगा काश! अल्लाह तआला मुझे इजाज़त इनायत फ़रमाते तो मैं काश्तकारी करता। उसको मालूम भी न होगा कि जन्नत के दरवाज़ों को थामे हुए बहुत-से फ़रिश्ते आ मौजूद होंगे और अर्ज़ करेंगे "सलामुन अलै-क" वह सीधा बैठ जाएगा। वे उससे कहेंगे "आपका रब फ़रमाता है कि आपने अपने दिल में एक चीज़ की इच्छा की है जिसको वह जानता है। उसने ये बीज भेजे हैं और फ़रमाया है कि इनको बो दें। वह (उनको) अपने दाएँ-बाएँ और आगे पीछे डाल देगा। वे पहाड़ों की तरह फूट पड़ेंगे। उसकी इच्छा के अनुसार जैसे वह चाहता होगा। फिर अर्श के ऊपर से अल्लाह तआला उसको फ़रमाएँगे ऐ आदम के बेटे! ख़ूब खा ले तू सेर नहीं होगा। (हादिल अरवाह पेज 235)

मौत और तरह-तरह की तकलीफ़ों से छुटकारा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा व तफ़सीरः और तू (उस वक़्त) पहाड़ों को ऐसी हालत में देख रहा है जिससे तुझको ख़्याल होता है कि ये हमेशा (यूँ ही रहेंगे और कभी अपनी जगह से) नहीं हिलेंगे हालाँकि (क़यामत क़ायम हो जाने के समय उनकी यह हालत होगी कि) वे बादलों की तरह (हलके और टुकड़े-टुकड़े होकर आसमान की फ़िज़ा में) उड़े-उड़े फिरेंगे। यह ख़ुदा का काम होगा जिसने हर चीज़ को (मुनासिब अन्दाज़ पर) बना रखा है

(क्योंकि शुरू में किसी चीज़ में कोई मज़बूती नहीं थी क्योंकि ख़ुद उस चीज़ की ज़ात ही न थी। यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है (जो जज़ा और सज़ा के लिए पहली शर्त है और दूसरी शर्तें जैसे क़ुदरत वग़ैरह मुस्तक़िल दलाइल से साबित हैं। पस जो शख़्स नेकी (ईमान) लाएगा सो उस शख़्स को उससे बेहतर (अज्र) मिलेगा और वे लोग बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे।

(सूरः नह्ल आयत 88, 89 तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा व तफ़सीरः और तुम्हारे माल व औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो कि तुमको दर्जे में हमारा ख़ास और क़रीबी बना दे। हाँ! मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम करे (ये दोनों चीज़ें अलबत्ता अल्लाह की नज़दीकी का सबब हैं)। सो ऐसे लोगों के लिए उनके (नेक) अमल का दो गुना सिला है (यानी अमल से ज़्यादा चाहे दोगुने से भी ज़्यादा) और वे (जन्नत के) बालाख़ानों में चैन से बैठे होंगे। (सूरः सबा आयत 37- तफ़सीर बयानुल क़ुरआन मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

तर्जुमा व तफ़सीरः बेशक ख़ुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। यानी बाग़ों में और नहरों में, (और) वह लिबास पहनेंगे बारीक और मोटे रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे। (और यह) बात इसी तरह है। और हम उनका गोरी-गोरी बड़ी आँखों वालियों से ब्याह कर देंगे, (और) वहाँ इतमीनान से हर क़िस्म के मेवे मंगाते होंगे, (और) वहाँ सिवाए इस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का ज़ायक़ा भी न चखेंगे (यानी मरेंगे नहीं)। और अल्लाह तआला उनको दोज़ख़ से भी बचा लेगा (और) यह सब कुछ आपके रब के फ़ज़्ल से होगा, बड़ी कामयाबी यही है। (सूरः दुख़ान आयत 51 से 57 तफ़सीर बयानुल क़ुरआन मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

जन्नत में ज़र्रा बराबर भी तकलीफ़ न होगी

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः बेशक ख़ुदा से डरने वाले (ईमान वाले) बाग़ों और चश्मों

में (बसते) होंगे। तुम उन (जन्नतियों और चश्मों) में सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ। (यानी इस वक़्त भी हर नागवार बात से सलामती है और आईन्दा भी किसी बुराई का अन्देशा नहीं) और (दुनिया में तबई तक़ाज़े से) उनके दिलों में जो कीना था हम वह सब (उनके दिलों से जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही) दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह (उलफ़त व मुहब्बत से) रहेंगे। तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे, वहाँ उनको ज़रा भी तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। (सूरः हज्र आयत 45 से 48- तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, मौलाना अशरफ़ अली थानवी)

दिलों से कीने निकाल दिये जाएँगे

हज़रत अब्दुल करीम बिन रशीद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं: जब जन्नती जन्नत के दरवाज़े तक पहुँचेंगे तो वे (आपस के मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों को) ऐसे देखेंगे जैसे आग आग को देखती है। लेकिन जब वे जन्नत में दाख़िल होंगे तो अल्लाह तआला उनके दिलों में मौजूद कीनों को ख़त्म कर देंगे और वे आपस में भाई-भाई बन जाएँगे।

(बुदूरे साफ़िरह हदीस 2115)

आपस की मुख़ालफ़त की सफ़ाई किस जगह होगी

हदीसः हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब मोमिन हज़रात दोज़ख़ से छुटकारा पा लेंगे तो उनको जन्नत और दोज़ख़ के बीच रोक दिया जाएगा। चुनाँचे वे लोग एक-दूसरे से अपना-अपना बदला लेंगे। जो उनके बीच दुनिया में रन्ज और दुख पहुँचा था। यहाँ तक कि जब वे पाक-साफ़ हो जाएँगे तब उनको जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी। मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, उनमें से हर एक जन्नत में अपने-अपने ठिकाने और महल से ज़्यादा वाक़िफ़ है दुनिया के अपने मकान के एतिबार से। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 13)

जन्नतियों और दोज़ख़ियों के बीच मौत को ज़िबह कर दिया जाएगा

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः (जन्नतियों के जन्नत में और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में दाख़िल होने के बाद) मौत को इस शक्ल में बुलाया जाएगा गोया कि वह नीले रंग का दुंबा है। उसको जन्नत और दोज़ख़ के बीच खड़ा किया जाएगा। फिर पुकारा जाएगा ऐ जन्नत वालो! क्या तुम इसको पहचानते हो? वे गर्दन लम्बी करके देखेंगे और कहेंगे हाँ! यह मौत है। फिर दोज़ख़ियों को पुकारा जाएगा ऐ दोज़ख़ वालो! क्या तुम इसको पहचानते हो? वे भी गर्दन लम्बी करके देखेंगे और कहेंगे हाँ! यह मौत है।

फिर उसके लिए हुक्म होगा तो उसको ज़िबह कर दिया जाएगा फिर ऐलान किया जाएगा ऐ जन्नत वालो! अब तुमको हमेशा रहना है, तुमपर कभी मौत नहीं आएगी। और ऐ दोज़ख़ वालो! तुमको भी हमेशा रहना है, तुमपर भी कभी मौत नहीं आएगी। उसके बाद नबी करीम सल्ल0 ने यह आयत मुबारक तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः और इन इनसानों को उस हसरत के दिन से डराइये जब (हमेशा के लिए जन्नत या दोज़ख़ में रहने का) फ़ैसला कर दिया जाएगा हालाँकि ये लोग ग़फ़लत में है, ईमान नहीं लाते। (सूरः मरियम आयत 39)

फ़ायदाः हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लहु अन्हु की हदीस में है कि जब जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के सामने मौत को ज़िबह कर दिया जाएगा तो जन्नत वालों की ख़ुशी में (इन्तिहाई) इज़ाफ़ा यानी बढ़ौतरी हो जाएगी और दोज़ख़ वालों का ग़म भी बहुत हो जाएगा।

(बुख़ारी शरीफ़ हदीस 6548)

मौत से अमान पर जन्नतियों का शुक्राना

आयते करीमाः

तर्जुमाः सब तारीफ़ें उस अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमसे हर तरह के रंज व ग़म को दूर कर दिया। (सूरः फ़ातिर आयत 34)

हज़रत यज़ीद रक़ाशी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया जन्नत वाले मौत से महफ़ूज़ हो जाएँगे, उनका ऐश ख़ूब पाकीज़ा और मज़ेदार हो जाएगा। ये बीमारियों से महफ़ूज़ हो जाएँगे। हम उनको अल्लाह तआला के पड़ोस में लम्बे वक़्त तक ठहरने की मुबारकबाद देते हैं। फिर आप रोने लगे यहाँ तक कि उनके आँसू उनकी दाढ़ी पर बहने लग गए।

(हादिल अरवाह पेज 487)

जन्नत छोड़ने को दिल ही न चाहेगा

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमः बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिए फ़िरदौस (यानी जन्नत) के बाग़ होंगे जिनमें वे हमेशा रहेंगे। (न उनको कोई निकालेगा) और न वे वहाँ से कहीं और जाना पसन्द करेंगे। (सूरः कहफ़ आयत 107 से 108)

सिर्फ़ शहीद ही दुनिया में वापसी की इच्छा करेगा

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः कोई जन्नती ऐसा नहीं जिसको यह बात अच्छी लगे कि वह दुनिया में लौट जाए और उसको दस गुना दुनिया का मालिक बना दिया जाए मगर शहीद। क्योंकि यह इसकी ख़्वाहिश करेगा कि यह दुनिया में लौट जाए और दस बार शहीद किया जाए। इस वजह से कि जो उसने (शहादत के सवाब में) सम्मान व रुतबा पाया होगा।

(मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 251)

जन्नत के हुस्न और ख़ूबियों की तफ़सीलात को अपनी तौफ़ीक़ व तलाश के मुताबिक इन्हीं मज़ामीन पर ख़त्म करता हूँ वरना हज़रत शैख़ सअदी रहमतुल्लाहि अलैहि के बक़ौलः

तर्जुमाः न उसके हुस्न की कोई इन्तिहा है और न 'सअदी' की ज़बान में इतनी ताक़त कि उसकी तमाम ख़ूबियों को बयान कर सके। प्यास का बीमार तो प्यासा ही मरता है और दरिया अभी भी बाक़ी है।

शुक्र के कलिमात और गुज़ारिश

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उस ज़ाते पाक ने उर्दू ज़बान में जन्नत के हसीन व ख़ूबसूरत मनाज़िर को हदीस व तफ़सीर और तारीख़ की सैकड़ों किताबों से जमा करने, तरतीब देने, आसान अन्दाज़ में तर्जुमा करने और हदीसों तथा सहाबा और नेक लोगों की बातें और हालात को पेश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इस काम को पूरा करने के लिए यह नाचीज़ पिछले चार साल से इच्छुक था और इसके लिए दुआ और कोशिश में लगा हुआ था। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वक़्त दुनिया के तमाम बड़े कुतुब ख़ानों में जो कुछ किताबे जन्नत के मज़मून से मुताल्लिक़ मुहैया हो सकती हैं या उनमें जन्नत से मुताल्लिक़ मज़ामीन का ज़िक्र है तक़रीबन सभी कुछ मुख़्तसर या तफ़सीली तौर पर इस किताब, "जन्नत के हसीन मनाज़िर" में जमा कर दिया गया है।

चूँकि जन्नत से मुताल्लिक़ बड़े आलिमों की छोटी-बड़ी अक्सर किताबें छप चुकी हैं, उनको देखने और उन सबके मवाद (अंतर्वस्तु) को देखने के बाद बिना किसी बड़ाई के यह बात कही जा सकती है कि इस किताब से ज़्यादा जामे, तफ़सीली और मुदल्लल कोई किताब इस मौज़ू पर मुसलमानों की ख़िदमत में पेश नहीं हुई। यह अल्लाह तआला का ख़ास करम व एहसान है कि अहम ख़िदमत की तौफ़ीक़ मुझ नाचीज़ के हिस्से में आई। जिस तरह अल्लाह तआला ने इस किताब के लिखने में अपना फ़ज़्ल व एहसान फ़रमाया है, उसकी शाने रहमत से इससे कहीं ज़्यादा यक़ीन यह है कि वह इसको अपनी पाक बारगाह में क़बूलियत से नवाज़ेंगे। और जो-जो इनाम व फ़ज़्ल और जन्नत की नेमतें इस किताब में ज़िक्र हुई हैं या अल्लाह तआला के इल्म में हैं उनसे इस नाचीज़ को भी भरपूर तरीक़े से नवाज़ेंगे। जन्नत में अम्बियाए-ए-किराम, औलिया-अल्लाह और ख़ास तौर पर नबी करीम सल्ल0 का साथ नसीब फ़रमायेंगे।

अल्लाह तआला की बारगाह में इल्तिजा है कि मेरी इस ख़िदमत करने में जो ग़लतियाँ और कोताहियाँ हुई हों उनको माफ़ फ़रमायें और इस किताब को अवाम व ख़्वास मुसलमानों के तमाम हल्क़ों में मक़बूल फ़रमायें। और हम सब मुसलमान, इस किताब के पढ़ने वालों, किताब के लेखक के उस्तादों शागिर्दों औलाद और ख़ास तौर पर मेरे माँ-बाप को और मुझे जन्नतुल-फ़िरदौस में नबी करीम सल्ल0 का साथ नसीब फ़रमायें। और हमारे तमाम गुनहों की मग़फ़िरत फ़रमायें।

या अल्लाह अपने हबीब जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 पर बेशुमार-बेशुमार दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा और मुझ नाचीज़ की इस मेहनत को क़बूल फ़रमा। आमीन

इमदादुल्लाह अनवर

तारीख़ 15 सफ़र सन् 1419 हिजरी बाद नमाज़ मग़रिब

(इस किताब की शुरूआत मदीना मुनव्वरा में की गयी थी)